॥ श्री जिन दत्त सूरि गुरुवर नम ॥

जैन-कोकिला

लेखिका—

भँवर बाई रामपुरिया—खुजनेर

प्रकाशक—

पुण्य सुवर्ण ज्ञानपीठ—जयपुर

वीर सम्वत्	सन् १९६६	मूल्य
२४९२	विक्रम स० २०२३	३ ५० पैसा

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

सुखसागर सुवर्ण भण्डार
बीकानेर (राजस्थान)

राजमल रोशनलाल
११३, मनोहरदास कटरा,
कलकत्ता-७

इमलीवाली जैन धर्मशाला
कुन्दीगरों के भैरूँ का रास्ता
जोंहरी बाजार—जयपुर

द्रव्य सहायको की सूची

१००१) श्री शान्तीलालजी पारख, बड़ोदा
५०१) श्रीमती गुलाब सुन्दरी बाफणा, कोटा
५००) श्री अमरचन्दजी नाहर, जयपुर
५००) श्री छुटनलालजी वैराठी, जयपुर
२५१) श्रीमती मीनाबाई वैराठी, जयपुर
२५१) श्रीमती माणकबाई बोथरा, कलकत्ता
२५१) श्री धनराजजी मुणोत, अमरावती
२५१) श्री परतापमलजी सेठिया, मन्दसौर
२५१) श्री बड़ोदा श्री संघ
२५१) श्री इन्दौर श्री संघ
२०१) श्रीमती गेंदी बाई भाडचूड़, जयपुर
२०१) श्री कल्याण भवन, पालीताना
२०१) श्रीमती चन्द्रकान्ता बाई महाजन
१५१) श्री छोटमलजी देवीचन्दजी बुचा, अमरावती
१०१) श्री फतेचन्द प्रेमचन्द जवरी, बम्बई
१०१) श्री रतिचन्द भाई मोहनलाल भाई, पादरा
१०१) श्री फूलचन्दजी भवरलालजी मुथा, अमरावती
१०१) श्रीमती जसवन्ती बहिन जवेरी, इन्दौर
१०१) श्रीमती सूरजबाई बोहरा, देहली

१०१) श्री उगमराजजी अनोपचन्द सिंगवी, कुचेरा
१०१) श्री अम्बालाल भाई, बोरसद
१०१) श्रीमती ताराबाई कांकरिया, कलकत्ता
१०१) श्रीमती सुशीला देवी नीबाई, कोटा
१०१) श्रीमती गणेशबाई, अजमेर
१०१) श्रीमती सूरजबाई सुराणा, बीकानेर
१०१) श्रीमती धापू बाई नाहटा, बीकानेर
१०१) श्रीमती भंवरबाई गोलेछा, जयपुर
१०१) श्रीमती पांचीबाई, मालीवाड़ा

पुण्य सुवर्ण ज्ञानपीठ
जयपुर

द्रव्य सहायकों की सूची

२०१) नथमलजी मूलचन्दजी रामपुरिया
२००) गुलाबचन्दजी गोलेछा, मद्रास
२००) धर्मचन्दजी गोलेछा, टीडीवनम्
१००) लक्ष्मीचन्दजी प्रकाशचन्दजी समदड़िया, मद्रास
१००) रतनलालजी कठेड, जावरा
१००) चचल बैन, कच्छी
१००) मोहन देवी जैन, मदसौर
१००) मूलचन्दजी मारू, नीमच
१००) सोभागमलजी मेहता, कोटा
१००) दिलीपसिहजी कोठारी, कलकत्ता
१००) भवर बाई रामपुरिया, खुजनेर
१००) पदम कुमारी सकलेचा, कलकत्ता
१००) रतनलालजी राजमलजी, भालोट
१०१) भवरलालजी सेठिया, मद्रास
१०१) भगवती बैन गुजराती, मद्रास
१०१) केवलचन्दजी खटोल, मद्रास
१००) आशा बाई सुराणा, बीकानेर
१००) एक बहिन, मद्रास
१००) बसन्ती बाई, कलकत्ता
१००) रामलालजी लूणिया, अजमेर
१५१) रतनचन्दजी काठेड, जावरा
२००) जतनबाई, करजगांव
२००) नगीना बाई, मद्रास

विषय सूची

भूमिका—गोस्वामी मथुरेश्वरजी, वडोदा
भावना के दो फूल—सत मनोहरदासजी रामस्नेही
शासन उद्दीपिका—प्रोफेसर पृथ्वीराजजी जैन, M A
भावना लख समर्पित—चन्दनमलजी नागोरी
मीरा अर्वाचीन—प्यारेलालजी मुथा
लेखिका का परिचय—श्री विनीता श्री जी म०
अपनी बात—

विषय	पृष्ठाङ्क
१ प्रवेश	१
२ जन्म और बचपन	६
३ भावी का संकेत और सगाई	११
४ शिक्षा	१३
५ प्रथम आघात—वैराग्य के बीज	१५
६ स्वय बुद्धा स्वर्ण श्री जी	१६
७ इच्छा पूर्ति	३६
८ पालीताना की यात्रा, ताउजी का अवसान	४१
६ यात्राओं मे	४५
१० जीवन निर्माण की वेला	४८
११ दीर्घ दृष्टि	५२

विषय	पृष्ठाङ्क
१२ मनन और चिन्तन	५६
१३ दादाजी और बेटी	६०
१४ मोह आवरित अनुमति	६५
१५ दीक्षोत्सव में विघ्न	६८
१६ साम दाम दण्ड भेद	७०
१७ कठिन कसौटी पर	७६
१८ ठाकुर का न्याय	८१
१९ कल्याण पथ की ओर	८३
२० साध्वाचार की प्रथम पगडंडी	८८
२१ ज्ञानार्जन	९०
२२ गुरु कृपा	९३
२३ गुरु विरह	९५
२४ प्रसिद्धी की ओर	९९
२५ सिद्धाचल की ओर	१०५
२६ पालीताणा में	१०७
२७ वक्तृत्व—कला	१११
२८ पादरे में अध्यात्म रस की सरिता	११५
२९ वैराग्य-वर्षा	११८
३० योगीराज की छाया में	१२३
३१ अपरिचितों के बीच	१२८
३२ प्रवर्तनी महोदया की सेवा में	१३१

विषय	पृष्ठाङ्क
३३ गुरु सेवा मे	१३५
३४ लम्बी व्याधी	१३७
३५ बीकानेर मे	१४१
३६ कर्तव्य निष्ठा	१४४
३७ भावी के भण्डार मे कुछ और था	१४८
३८ अनुकरणीय उदाहरण	१५१
३९ जैन कोकिला	१५७
४० उच्चादर्श	१६१
४१ गुरु विरह का वज्रपात	१६५
४२ आघात पर आघात	१६७
४३ पूर्वजों की भूमि मे	१६९
४४ केसरिया नाथ के पथ पर	१७३
४५ केसरिया नाथ	१७६
४६ आचार्य देव की छाया मे	१७८
४७ धन्य भाग्य हमारे	१७९
४८ सच्चे भावों की शक्ति	१८३
४९ इन्दौर सघ का अपरिहार्य अनुरोध	१८९
५० फिर वही वैराग्य वर्षा	१९२
५१ पालीताणा मे	१९५
५२ अध्यापिका	१९७
५३ अष्टम शताब्दि महोत्सव	१९९

विषय	पृष्ठाङ्क
५४ कोटे में	२०२
५५ विरोध में से	२०५
५६ संयम क्या है ?	२०७
५७ अपूर्व वातावरण में	२११
५८ होनहार शिष्या वियोग	२१४
५९ संघ ऐक्य की प्रेरणा	२१६
६० पुनः जयपुर में	२२३
६१ व्याख्यान भारती	२२७
६२ सराणा में प्रतिष्ठा	२३३
६३ नानसी प्रतिष्ठा पर	२३८
६४ फूलिया में प्रतिष्ठा	२४०
६५ विश्व प्रेम प्रचारिका	२४२
६६ संयम का प्रभाव	२४९
६७ ग्रामीण जनता में	२५२
६८ सोचा क्या और हुआ क्या ?	२५५
६९ सादडी में पार्टी बाजी का अंत	२६३
७० देवनार बूचड़खाने के विरोध का प्रभाव	२६६
७१ जीरण में हमने क्या देखा	२७०
७२ रतलाम में महावीर जयन्ती	२७४
७३ भावी के मन और है मानव के मन और—	२७६
७४ दादा जयन्ती	२७९

विषय	पृष्ठाङ्क
७५ चतुर्मास मे	२८२
७६ श्री कृष्ण जन्मोत्सव	२८४
७७ समन्वय साधिका	२६३
७८ खाचरोद मे	२६७
७६ हृदय परिवर्तन	३०१
८० व्याख्यान वाचस्पति	३०५
८१ इन्दौर की चाल मे	३०८
८२ इन्दौर मे	३१२
८३ मालव से प्रस्थान	३१८
८४ राम भरत मिलाप	३२२
८५ महासती बनाम धोत्री	३३५
८६ जन्म भूमि मे	३३६
८७ कटु-मधु	३४८
८८ विनोवाजी के साथ	३५१
८६ जन्म दिवस	३५५
६० शुभारम्भ व अधिवेशन	३५८
६१ भव्य अभिनन्दन	३६५
६२ अभिनन्दन पत्र शासन प्रभाविका	३७५
६३ अखिल भारतीय स्वर्ण सेवा फड	३८४
६४ शतावधान प्रयोग	३८८
६५ गुरुदेव की चरण प्रतिष्ठा	३६०

विषय	पृष्ठाङ्क
९६ तपोत्सव	३९१
९७ श्री कृष्णजन्मोत्सव	३९२
९८ क्षमापना	३९७
९९ मैंने क्या देखा	३९९
१०० पिता पुत्र का मिलन	४०१
१०१ बिदाई	४०१
१०२ राष्ट्र संत तुकड़ोजी के साथ	४०३

भूमिका

अमरावती मे श्रीकृष्ण जयन्ती महोत्सव समिति द्वारा आयोजित समारोह मे मैंने विदुषी जैनआर्या श्री विचक्षण श्री जी का पहला प्रवचन सुना उनके हृदयवेधी शब्दों मे आत्मा की जो गम्भीर धडकन थी वह मुझे प्रभावित किये विना नही रह सकी धर्म और समाज के प्रति उनके यथार्थ विचार नवीन और प्राचीन के प्रति उनका सकलित दृष्टिकोण सुनने के पश्चात् उनके विचारों से बहुत ही निकटता और अपनत्व सा अनुभव होने लगा।

कुछ दिन पश्चात सावत्सरीक क्षमायाचना पर्व के उपलक्ष मे आयोजित सभा मे जब मुझे उपस्थित होकर अपने विचार प्रकट करने के लिये निमन्त्रित किया गया तो पुन॰ मैंने सगठन और शक्ति, प्रेम और निष्ठा के सम्बन्ध मे अपने विचारों से उन्हें बहुत ही समान और गतिशील पाया। इस प्रकार अमरावती मे उनका यह सम्पर्क बहुत ही स्मरणीय रहा उनके विचार और जीवन के सम्बन्ध मे जो कुछ पाया हूँ उनका सार यही है कि वह एक भारत की महान नारी है, सीता और सावित्री, मैत्रेयी और मदालसा, जयन्ती और चदनवाला को गरिमामयी परम्परा की उज्वल कडी है। उनका जीवन दर्शन पढने के बाद ऐसा लगा कि भगवान महावीर की अहिंसा, भगवान बुद्ध की करुणा और योगेश्वर श्रीकृष्ण का ज्ञान कर्मयोग

उनके जीवन का सूत्र है, भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में उन्होंने अपना जीवन लगा रखा है, भारत के अनेक भू भागों में वह पदयात्रा करती हुयी जनजीवन में जो जागृति और धर्म का सन्देश दे रही है वह निस्संदेह महान कार्य है।

वर्तमान धर्म के सम्प्रदायों में जो सबसे पहली आवश्यकता है, वह है प्रेम, समन्वय, सद्भाव और संगठन की ! प्रारम्भ से ही मैं इस दिशा में प्रयत्नशील रहा हूँ और जब मैंने श्री विचक्षण श्री जी के विचार और प्रचार में इसका तीव्रास्वर सुना तो ऐसा लगा कि अब समय का तकाजा है कि धर्म गुरु और धर्मानुयायियोंको समन्वय और सद्भाव के सूत्र में गुंथकर आज विश्व को धर्म का पवित्र सन्देश देने के लिए एक जूट हो जाना चाहिये। आज अनैतिक और अधार्मिक शक्तियाँ संगठित रूप से फैल रही है उनका मुकाबला करने के लिये धार्मिक शक्तियों को भी संगठित होना होगा, तभी हम अपनी संस्कृति और परम्परा को अक्षुण्ण रख सकेंगे। इस दिशा में श्री विचक्षण श्री जी बहुत ही सुन्दर कार्य कर रही है।

अन्तमें श्रीमती भंवरी बाई को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने श्री विचक्षण श्री जी के जीवनदर्शन व उनके विचारके प्रचार के लिये "जैन कोकिला" के माध्यम से एक सुन्दर प्रयत्न किया है, मुझे इसकी भूमिका लिखने का अवसर दिया इसके लिये भी मैं उन्हें पुनः धन्य-वाद देता हूँ। अमरावती के नागरिकों में श्री मुणोतजी एवं बुच्चाजी आदि कर्मठ व्यक्तियों ने श्री विचक्षण श्री जी के प्रचार कार्य को

सुव्यस्थित ढग से आगे वढाया है उनकी भी इस अवसर पर स्मृति हो ही रही है।

अन्त मे श्री वालकृष्ण से प्रार्थना करता हूँ कि भारत की यह नारीरत्न हमारी धर्म और सस्कृति का सन्देश घर घर पर पहुँचाती हुई चिरायुषी, स्वस्थ, प्रसन्न एव गतिशील रहे।

गोस्वामी मथुरेश्वर, वड़ौदा

भावना के दो फूल

वन्दनीय जैनधर्म में पहले भी महान् साधक साधिकाएं हो गए और वर्तमान में भी ऐसे मुनि और अर्जिकाएं जगत पवित्र करने विराजमान है। जिनके सदुपदेश तथा पवित्र चरित्र से मानव कृत-कार्य हो रहे है।

मान्या विचक्षण श्री जी म० से मिलने का सौभाग्य सर्वप्रथम लेखिका के ग्राम खुजनेर में मिला था। पश्चात् छापी हेडा, कोटा, जयपुर, उज्जैन, देवास प्रभृति मुकामों पर आपके दर्शन का वचनामृत पान करने का खूब लाभ मिला आपके भाषण से मुझे पुष्कल सन्तोष हुआ।

आप में विशेषताएं, सौम्य स्वभाव, चित्त की स्थिरता, हृदय की गम्भीरता, दुखियो के दुःख दर्शन से अधीरता, व्यवहार कुशलता, प्रश्न के उत्तर समझाने की शैली, अपने आप को भूले प्राणियों को चेतन का बोध कराने की युक्तियाँ, धर्म में दृढ़ता, जैनेतर धर्मो के साथ आदर भाव, सबके साथ समन्वयता प्रभृति गुण पूरित विशेषताएँ समलंकृत है। इसमें कोई अत्युक्ति नहीं।

आपकी उदात्त भावना प्राणी को सीखने की वस्तु है, आपकी समदर्शिता सम व्यवहार जीवन की अमूल्य निधि है जीवन में उतारने की मंहगी वस्तु है। आचार, सदाचार तो जीवन को प्रकाश में लाने की साधन सामग्री है। आपकी पक्षपात रहित वाक्सुधा में आकर्षण

ही ऐसा बलवान है कि खिचना ही पड़ता है। जहाँ सत्य है, त्याग है, तप है, सयम है, जिस हृदय मे परहित की कामना है, जो सदा जन कल्याण के हित मे रत है वहाँ क्या-क्या नही है? वहाँ तो सभी दैविक गुण अठखेलियाँ करते हैं। आप जैसी पाप विगत आर्याओं से ही देश का सिर ऊँचा है। देश का गौरव है। आपकी वाणी पामरो के लिये तो हृदय विकार को नाश करने मे अमोघ औषधि है।

ससारी माँ तो पर्याय जन्मदात्री व लौकिक शिक्षा ही देकर रह जाती है पर उससे कर्म बन्धन का नाश तो नही होता प्रत्युत बढता ही है। पर आप जो कल्याण मूर्त्ति, कल्याणदायिनी माँ है। ज्ञान का पय पिलाकर अमर बना देती है। आपको अव्यक्त ने भेजा ही जन कल्याण को है।

जिस उपदेश, जिम आचरण, जिस विचार चिन्तन द्वारा सत्स्व रूप का ज्ञान हो, दर्शन हो, वही मत है, वही पथ है। नही तो कहने दिखाने में तो बड़ा झीणा ज्ञान और आचरण मे अज्ञान वही राग द्वेष, पद प्रतिष्ठा, अह् का नाटक। मत पथ केवल विडम्बना मात्र है। भोली जनता मे ऊँचे ज्ञान की आड मे राग द्वेष का ही पाठ पढाना है। अन्य राग द्वेष नहीं किया मत का ही सही पर कषाय से पीछा तो नही छूटा।

लेखिका ने आपकी जीवनी लिखकर सभी समाज के साधक साध्वियों को बड़ा लाभ पहुँचाया है। महज्जनों के जीवनचरित्र मे ही हमे अपने जीवन निर्माण मे प्रेरणाएं मिलती है, साधन मे

बल मिलता है बुद्धि में पवित्रता आती है। श्री गुरुवर्या का इस पर्याय को निकट से अध्ययन करने का खूब सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं सभी धर्मावलम्बियों से अनुरोध करता हूँ कि ऐसी उत्तम जीवनी को पढ़कर अपने जीवन को कृतकार्य करें। लेखिका सचमुच धन्यवाद की पात्र है जिसने ऐसे पुण्य श्लोका का जीवन चरित्र लिखकर समाज का बड़ा उपकार किया।

जैन कोकिला पुस्तक मैंने पढ़ी, पुस्तक स्तुत्य है। कल्याण कांक्षियों को उपादेय है। साहित्य शीलों को भी आदरणीय है। विशेषता यह है कि अत्युक्ति को पुस्तक में स्थान नहीं मिला। लेखिका ने निकट रहकर चरित्रनायिका का जैसा अध्ययन किया ठीक वैसा शुद्ध सरल साहित्य भाषा में सुन्दर वाक्य रचना—तथा चित्रण किया। अतएव लेखिका महोदया को बारम्बार धन्यवाद, साधुवाद।

राम द्वारा
भवानी मण्डी
राजस्थान

भवदीय
मनोहरदास साधु रामस्नेही

शासन-उद्दीपिका

लगभग ढाई वर्ष पूर्व मेरी धर्मभगिनी श्रीमती भंवरी बाई ने राखी भेजते हुए मुझे पत्र लिखा कि वह वन्दनीया साध्वी श्री विचक्षण श्री जी का जीवन-वृत्त लिख रही है और मुझे उसका सम्पादन करना होगा। मैं लेखिका तथा चरित्र नायिका से बहुत दूर के प्रदेश में हूँ। अतः विधिवत् सम्पादनका उत्तर दायित्व सम्पन्न करना शक्य न था! किन्तु साध्वीजी के तेजस्वी व्यक्तित्व, आदर्शचर्या एवं श्लाघनीय शासनसेवा भावना के प्रति व्यक्तिगत परिचय के आधार पर भी मेरी हार्दिक निष्ठा थी। भ्रातृस्नेहसिक्ता स्वसा के अनुरोध की उपेक्षा करना भी सम्भव न था। अतः मैंने वचन दिया कि पाण्डुलिपि देखकर स्वबुद्धि-अनुसार यत्र तत्र शक्य संशोधन कर दूंगा तथा भाषा की अशुद्धियों को भी यथाशक्ति ठीक करने का भरसक प्रयास करते हुए कतिपय सुझाव भेज दूंगा। येन केन प्रकारेण मैं इस कार्य को करने मे सफल हुआ। तदपि मैं अनुभव करता हूँ कि मुझे अन्तिम प्रूफ देखने का अवसर मिल जाता तो अधिक अच्छा होता। परिस्थिति वश इसकी सम्भावना न थी। अतः मैं त्रुटियों के लिए पाठकों से क्षमा याचना करता हूँ।

अद्यावधि मेरा कार्य क्षेत्र सामाजिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक सीमाओं में ही बद्ध रहा है। चतुर्विध संघ के अनेक व्यक्तियों से यथावसर अल्पाधिक परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य यदाकदा प्राप्त होता

रहा है। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि वर्तमान युग में जिन साधु साध्वियों ने जैन शासन को समुन्नत एवं उद्दीपन करने का निःस्वार्थ निष्ठा से, शुद्ध भावना से तथा अन्तःस्फुरित प्रेरणा से मनसा, वाचा, कर्मणा भगीरथ प्रयत्न किया है, उनमें शासन उद्दीपिका साध्वी श्री विचक्षण श्री जी का नाम प्रथम श्रेणी के शासनोन्नायकों में हमारे इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा। किसी भी समाज या राष्ट्र के महान् पुण्योदय से ही ऐसे त्यागी और सेवा भावी महिला-रत्न इस वसुधातल पर अवतरित हो जनता-जनार्दन की सेवा में अपना अमूल्य मानव-भव समर्पित किया करते हैं।

बीस वर्ष पूर्व मैं बीकानेर की जैन संस्था में प्रधानाध्यापक था। उस अवधि में चरित्र-नायिका के दो चतुर्मास वहाँ हुए। श्रीमती भँवरी बाई के माध्यम से मुझे चरित्र नायिका के दर्शनों का पुण्यावसर उपलब्ध हुआ। उनकी आचार निष्ठा, स्वाध्यायशीलता, गुरुभक्ति, सहज स्वाभाविक मधुरता, भावों की मृदुता, जैन शास्त्रों के अध्ययन की अनन्य रुचि, सुधास्यन्दिनी प्रभाववाहिनी वक्तृता, जनमनोहारिणी व्याख्यान शैली, समन्वय दृष्टि, समत्व साधना, गम्भीरता और सतत स्मितता ने मेरे हृदय पर एक स्थायी भाव डाला। मैं यह देखकर चकित हुआ कि उनके अन्तर में यह उत्कट कामना थी कि उनका शिष्य परिवार केवल संयमयात्रा का ही पथिक न रहे, मात्र बाह्यतप का शुष्क आराधक ही न रहे, प्रत्युत युगानुकूल उच्च शिक्षा प्राप्त कर, वक्तृत्व और लेखनकला में भी दक्ष बनकर अभ्यन्तर स्वाध्याय आदि तप की भी आराधना करता हुआ इस पञ्चम आरे में

भी जैन श्रमणत्व का वह आदर्श जन मानस के सम्मुख उपस्थित करे जिसका स्वरूप जैनागमों मे दृग्गोचर होता है। दो तीन महीने तो मुझे भी उनकी दो शिष्याओं के यत् किञ्चिन अध्यापन का अवसर मिला था।

चरित्र नायिका के प्रति मेरी श्रद्धा इस जीवन चरित्र के सम्पादन के कारण ही हो, यह बात नही है। मैं उनके विचारों और शासन सेवा के कार्यो से परिचयक्षण से ही प्रभावित हुआ था। गत ग्रीष्मावकाश मे पुरानी पुस्तकों और कुछ अन्य सामग्री को देखते हुए मुझे १९४८ ई० के प्रारम्भिक दिनों की अपनी दैनन्दिनी (डायरी) मिली। कुछ स्थलों पर चरित्र नायिका के सस्मरण भी है। १५ फरवरी को रामपुरिया भवन बीकानेर मे 'मानव जीवन की उपयोगिता' पर उनका सार्वजनिक भाषण हुआ था और भूमिका रूप मे इसी विषय पर २० मिनट मुझे भी विचार प्रकट करने का अवसर मिला था। "उनका भाषण अत्यन्त मार्मिक था और उन्होंने अधिक बल इस विषय पर दिया कि ओसवाल जाति भगवान महावीर की सच्ची सन्तान बने और सघ के चारों अङ्ग सगठित हो उन्नति करें।" १० अप्रेलको पजाब देशोद्धारक श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वरजी (प्रसिद्ध नामश्री आत्मारामजी महाराज) का जन्म दिन बीकानेर मे पजाब केसरी श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी की निश्रा मे मनाया गया था। ये आदर्श गुरभक्त पाकिस्तान के बाद पजाब से विहार कर उस समय बीकानेर पधारे ही थे। उस उत्सव मे चरित्र नायिका का भी प्रभावशाली भाषण हुआ। मैं उस दृश्य का प्रत्यक्ष

रहा है। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि वर्तमान युग में जिन साधु साध्वियों ने जैन शासन को समुन्नत एवं उद्दीपन करने का निःस्वार्थ निष्ठा से, शुद्ध भावना से तथा अन्तःस्फुरित प्रेरणा से मनसा, वाचा, कर्मणा भगीरथ प्रयत्न किया है, उनमें शासन उद्दीपिका साध्वी श्री विचक्षण श्री जी का नाम प्रथम श्रेणी के शासनोन्नायकों में हमारे इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा। किसी भी समाज या राष्ट्र के महान् पुण्योदय से ही ऐसे त्यागी और सेवा भावी महिला-रत्न इस वसुधातल पर अवतरित हो जनता-जनार्दन की सेवा में अपना अमूल्य मानव-भव समर्पित किया करते है।

बीस वर्ष पूर्व मैं बीकानेर की जैन संस्था में प्रधानाध्यापक था। उस अवधि में चरित्र-नायिका के दो चतुर्मास वहाँ हुए। श्रीमती भँवरी बाई के माध्यम से मुझे चरित्र नायिका के दर्शनों का पुण्यावसर उपलब्ध हुआ। उनकी आचार निष्ठा, स्वाध्यायशीलता, गुरुभक्ति, सहज स्वाभाविक मधुरता, भावों की मृदुता, जैन शास्त्रों के अध्ययन की अनन्य रुचि, सुधास्यन्दिनी प्रभाववाहिनी वक्तृता, जनमनोहारिणी व्याख्यान शैली, समन्वय दृष्टि, समत्व साधना, गम्भीरता और सतत स्मितता ने मेरे हृदय पर एक स्थायी भाव डाला। मैं यह देखकर चकित हुआ कि उनके अन्तर में यह उत्कट कामना थी कि उनका शिष्य परिवार केवल संयमयात्रा का ही पथिक न रहे, मात्र बाह्यतप का शुष्क आराधक ही न रहे, प्रत्युत युगानुकूल उच्च शिक्षा प्राप्त कर, वक्तृत्व और लेखनकला में भी दक्ष बनकर अभ्यन्तर स्वाध्याय आदि तप की भी आराधना करता हुआ इस पञ्चम आरे में

भी जैन श्रमणत्व का वह आदर्श जन मानस के सम्मुख उपस्थित करे जिसका स्वरूप जैनागमों मे दृग्गोचर होता है। दो तीन महीने तो मुझे भी उनकी दो शिष्याओं के यत् किञ्चित अध्यापन का अवसर मिला था।

चरित्र नायिका के प्रति मेरी श्रद्धा इस जीवन चरित्र के सम्पादन के कारण ही हो, यह बात नही है। मैं उनके विचारों और शासन सेवा के कार्यों से परिचयक्षण से ही प्रभावित हुआ था। गत ग्रीष्मावकाश मे पुरानी पुस्तकों और कुछ अन्य सामग्री को देखते हुए मुझे १६४८ ई० के प्रारम्भिक दिनों की अपनी दैनन्दिनी (डायरी) मिली। कुछ स्थलों पर चरित्र नायिका के सस्मरण भी है। १५ फरवरी को रामपुरिया भवन बीकानेर मे 'मानव जीवन की उपयोगिता' पर उनका सार्वजनिक भाषण हुआ था और भूमिका रूप मे इसी विषय पर २० मिनट मुझे भी विचार प्रकट करने का अवसर मिला था। "उनका भाषण अत्यन्त मार्मिक था और उन्होंने अधिक वल इस विषय पर दिया कि ओसवाल जाति भगवान महावीर की सच्ची सन्तान वने और सब के चारों अङ्ग सगठित हो उन्नति करें।" १० अप्रैलको पजाब देशोद्धारक श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वरजी (प्रसिद्ध नामश्री आत्मारामजी महाराज) का जन्म दिन बीकानेर में पजाब केसरी श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी की निश्रा मे मनाया गया था। ये आदर्श गुरुभक्त पाकिस्तान के बाद पजाब से विहार कर उस समय बीकानेर पधारे ही थे। उस उत्सव मे चरित्र नायिका का भी प्रभावशाली भाषण हुआ। मैं उस दृश्य का प्रत्यक्ष

दर्शी साक्षी हूँ जब उनके विचारों से प्रभावित हो आचार्य श्री जी ने फरमाया कि मैं विचक्षण श्री जी को जैन समाज की सरोजनी नायडू समझता हूँ और उस रूप में वे जैन कोकिला है! मैंने उस दिन अपनी डायरी में लिखा कि "आप (श्री विचक्षण श्री जी) की वक्तृता की तुलना अन्य साध्वी नही कर सकती। ऐसे प्रभावशाली व्याख्याता साधु भी विरले है। यदि समय की स्थिति को समझने वाले साधु-साध्वी समाज में एकता स्थापन का बीड़ा उठा लें तो इस कार्य की सफलता में सन्देह नहीं। अन्यथा श्रावकों को इस विषय में चेतना चाहिए।" और भी अनेक ऐसे प्रसंग है जहाँ उनके भाषण हुए और उन्होंने सन्मान पूर्वक मुझे भी अनेक स्थानों पर आमन्त्रित किया।

जीवन चरित्र पढ़कर पाठक भी अनुभव करेंगे कि चरित्र नायिका के प्रवचन तर्क संगत, प्रेरक, विद्वत्तापूर्ण और प्रभावशाली होते हैं। वैर-विरोध का शमन, मतभेदों की उपेक्षा, एकता की प्रेरणा, समन्वय की भावना, सहिष्णुता, उदारता और तुलनात्मक दृष्टिकोण की प्रधानता उनकी व्याख्यानशैली के समुज्ज्वल अङ्ग हैं। १९६३ के चतुर्मास में रतलाम में भगवान कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर उनका मार्मिक उपदेश किस पाठक को उनके प्रति नतमस्तक न करेगा। शाकाहार, मद्य निषेध और स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार तथा ऐक्य सम्मेलन उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण मिशन बन चुके है। उनकी विनय उच्च कोटि की है। एक सिंधी परिवार उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हो जब चरण वन्दन करने लगा तो उन्होंने उत्तर दिया,

"चरण धोकर पीना है तो भगवान महावीर की वाणी का पान करो। मेरे और आपके पावों मे क्या अन्तर है ?" यदि कभी कोई उनकी प्रशसा करे तो वे निष्कपट कोमल हृदय से कहती है कि "माता-पिता बच्चे का प्रोत्साहन कर रहे हैं। "समय गोय मा पमाए' सूत्र की वे साक्षात् जीवित प्रतिमा है। वे शिक्षा का एकमात्र साधनीय आदर्श यह समझती हैं कि मानव मानव से प्यार करें और शक्ति सम्पन्न व्यक्ति दीनों व पददलितों का उत्कर्ष करना अपना परम कर्त्तव्य समझें।

मेरा विश्वास है कि उनके अन्तर मे बाल्यावस्था मे ही सच्चे वैराग्य की जो ज्योति प्रकाशित हुई उनकी नीव जन्म जन्मान्तर के सस्कार है। सयम और आचार की कठोरता तथा शिष्याओं को विदुषी बनाने का सतत प्रयास करते हुए भी उन्हें अनुशासन और मर्यादा की सीमा मे बद्ध रखना सरल कार्य नही। मैं समझता हूँ कि नारी के हृदय मे स्नेह, वात्सल्य और कोमल करुणा की जो गहनता है, उसका साक्षात् दर्शन आपके अनुपम व्यक्तित्व मे आबालवृद्ध नर-नारी सरलतया कर सकते हैं। आपके कार्यकलाप, सौम्य आकार तथा विचार-औदार्य को देखकर सहज ही यह कल्पना यथार्थ हो जाती है कि भारतीय सस्कृति ने विश्व की प्रमुख शक्तियों को देवी का रूप देकर एक तथ्य की ही यथार्थता प्रगट की है। जैन तीर्थंकरों ने नारी को समानाधिकार प्रदान कर इसी तथ्य को साकार रूप प्रदान किया था।

लेखिका ने जो कुछ लिखा है वह प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर।

लेखिका गत २२ वर्ष से उनके सतत सहवास में रही है, अतः उसे उनका जीवन वृत्तान्त लिखने का पूर्ण अधिकार है। वह अपने प्रयास में कहाँ तक सफल हुई है, इसका निर्णय पाठक ही कर सकेंगे। विवरण निश्चयरूपेण विस्तृत है। किन्तु जीवन विषयक सभी घटनाओं का शक्य संग्रह अनिवार्य था। जिज्ञासु डुबकी लगाकर इष्ट रत्नों की उपलब्धि कर सकते हैं।

पुस्तक में रही त्रुटियों के लिए मैं पाठकों से पुनः क्षमार्थी हूँ। आशा है यह जीवन-वृत्त संघको अभीष्ट प्रेरणा प्रदान करने में सहायक होगा।

श्री आत्मानन्द जैन कालिज,
अम्बाला शहर,
२६-११-१९६५

पृथ्वीराज जैन
एम० ए० शास्त्री

भावना लख समर्पित

लेखक—चन्दनमल नागोरी, छोटी सादडी (मेवाड)

भगवन्त परमात्मा ने सघ स्थापना करते समय दूसरे क्रम पर साध्वी का स्थान दिया, महाव्रत के पालन मे साधु नियमानुसार साध्वी को भी पालने की आज्ञा है, अतः जैन शासन मे साध्वी को भी उच्च कक्षा पर माना है, अत' पूज्या वर्ग द्वारा शासन की अनुपम सेवा हुई है, महान प्रभाविक शासन शिरोमणि श्री हरिभद्र सूरिजी महाराज का व्यावहारिकमद नष्ट कर तात्त्विक मार्ग-पथ प्रदर्शित करने मे साध्वी शिरोमणि याकिनी महत्तरा का नाम आज भी चमक रहा है, वैसे देखें तो मोक्ष के द्वार खोलनेवाली मे पहिला नाम मरुदेवी माता का है, ऐसे प्रसग के कारण ही भगवन्त परमात्मा ने सघ स्थापना मे दूसरे क्रम पर स्थान दिया और महत्त्व बढाया, वर्तमान मे शासन हितकारिणी विदूषीरत्न श्री विचक्षण श्री जी साहिबा शासन की उन्नति मे योग दे रही है। आपकी व्याख्यान शैली, सरलता, लघुता, प्रभाविकता, सहृदयता देख सहस्रों जन सख्या उपस्थित हो लाभ लेती है, जैन अजैन आपकी मृदुता सरलता की प्रशसा करते हैं, तात्त्विकता वक्तृत्वता के कारण सरकारी वर्ग भी लाभ लेने है, आप सार्वजनिक व्याख्यान से धर्ममार्ग—पथ प्रदर्शक हो आत्म विकास की ओर जाने की प्रेरणा करती है, अमरावती चतुर्मास मे श्रावकोद्धार के हेतु एक व्याख्यान मे ही आपके सदुपदेश से सहस्रों रुपए एकत्रित

हो गये, आपकी वक्तृत्व कला से सन्तुष्ट हो भिन्न भिन्न स्थानों के संघ ने आपको पदस्थ कर आनन्द पाया संघ ने चाहा था कि गण-धर महाराजा प्रणीत "प्रवर्तिनी" पद से आपको विभूषित किया जाय, किन्तु आपने स्वीकृति नहीं दी और श्री परमपूज्या ज्ञान श्री जी महाराज की छत्रछाया में रहने की घोषणा की यह आपकी निस्पृहता और गुरु सेवा का उदाहरण है।

जैन शासन में साध्वियों का स्थान दूसरे क्रम पर है, तथापि चौवीस भगवान के शासन काल में संख्या बल से प्रथम श्रेणी में रहा, क्योंकि चौवीस भगवान के शासन काल में साधु संख्या २८४८००० थी और साध्वी समुदाय की संख्या ४४०१४०६ थी जिनके द्वारा शासनसेवा हो पाई, श्री परमपूज्या बाल दिक्षित विदुषी सर्व समुदाय से समन्वय इच्छुक शासन सेवा में योग देनेवाली अनुपम व्यक्ति है अतः प्रशस्ति समर्पित कर आनन्द मानता हूँ।

मीरा अर्वाचीन

एक रेखा चित्र—

प्रिय, पाठक,

सुज्ञ ससार जिसे पद-पद पर यश की चुनरिया ओढाते आ रहा है उस प्रियम्वदा साध्वीरत्न के बारे मे हम अधिक क्या लिख सकते हैं। किन्तु एक यथार्थ गुणवान के प्रति आदर व्यक्त करने के कर्त्तव्य लोभ का सवरण करना, हमे हमारे कर्त्तव्य से वचित रख सकता है। और यह हम नही चाहते। अस्तु!

महापुरुष उन गम्भीर मेघों की तरह होते हैं आकर जाते-जाते सुखद जल की वर्षा कर देते हैं उन वृक्षों की तरह होते हैं जो चोट और कष्ट सहकर भी फल और छांह देते हैं और एवज मे जगति से कुछ नही चाहते।

ससार सदा काल से अविरत चक्रकी नाई चलता आया है। यहाँ आनेवाला हर प्राणी निश्चित रूप से खाली हाथ जाता है। चाम चला जाता है। सिर्फ चाम जन्य काम और काम जन्य नाम रह जाता है। यह नाम ही मनुष्य को अमरत्व प्रदान करता है। और उस व्यक्ति को महापुरुष की श्रेणी मे रखता है। जो लोहार के भाते की तरह

व्यर्थ ही में सांस लेते है और छोड़ते हैं उनका जीना मरण तुल्य है। ऐसे व्यक्तियों के लिए न श्रद्धा के फूल चढ़ाये जाते हैं और न कोई आंसू बहाता है।

पूज्या साध्वी विचक्षण श्री जी ने कर्मरत, अप्रमत्त रहकर, कर्म-रूपी कांटों को दूर करके संयम, त्याग, धर्मादि विविध भांति के सुर-क्षित फूलों से अपने जीवन की बगिया सजाई। यह एक ऐसी पनि-हारिन है जो जिन शासन की परब पर बैठकर आगम झरनों से संचित किया हुआ मीठा, सुखद, शीतल, भवरोगनाशक जल, भव वन में भटके हुए प्यासे मुसाफिरों को हमेशा से पिलाती आ रही है। वांछा न होने पर भी इनके गुणों से मोहित जगत ने इन्हें यथार्थ रूप में विश्वप्रेम प्रचारिका, समन्वय साधिका, मानव धर्म प्रचा-रिका, रत्नत्रयी आराधिका आदि विविध भूषणों से विभूषित करके, स्वयं के गुणों का प्रदर्शन किया है, गुण ग्राहकता दर्शाई है। बहु प्रशं-सिता विचक्षण श्री जी के बहुमान का रहस्य, कई विशेष गुणों के एक साथ एक ही व्यक्ति में इकट्ठे हो जाने में है। यदि हम कहें कि प्रेम एवम् भक्ति में लीन, यह साध्वीरत्न संसार की नारियों के, साध्वीयों के माथे का झूमर है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आत्म चिंत-वन में लीन, अखंड साधना का दीप संजोये, इष्टदेव की भक्ति रूपी रथ पर आरूढ़ होकर यह **अर्वाचीन मीरा** उस संत मीराबाई सी सावधान बनी हुई अपनी मंजिल पर पहुँचने हेतु ग्राम-ग्राम नगर-नगर भारंड पक्षी की तरह अप्रमत्त होकर विचरण कर रही है। 'न नाम का फिक्र, न तन का जिक्र।" कहीं कटु बचन एवम् ईर्ष्या रूपी जहर

का प्याला सामने आ गया तो हँसते हँसते पी गई और उसे क्षमादान दे दिया ईश भक्ति में तो सचमुच मीरा की लगन है।

किम अधिकम विशेषु, साध्वी श्री के हृदय वीणा के हरतार से, प्रत्येक रोम प्रदेश से कर्माच्छादित आत्म-वेदना का स्वरूप, मोक्ष प्राप्ति की तीव्रतर चाहत, भवभीरुता जन्य कपन, रोमाचित कर्त्री वाणी लालित्य, अमृत क्रिया का सूक्ष्माभास, कर्मपरायणता, चेतना, अप्रमत्तता, मौलिकोद्गार एवम् प्राज्ञिक बोधादि की मूक आवाजें निकलती हैं, सकेत होते हैं जिन्हें अन्य व्यक्ति के लिए सुनकर अनुभूति करना। प्राप्त करना, तो दूर रहा, समझना भी आसान नहीं है। किसी बात को बयान करने का ढग और समझाने की शैली, उनका अपना औरों से अलग ही व्यक्तित्व बताता है।

साध्वी श्री लकीर की फकीर न रहकर आगमवाणी को नूतनतम ढग से समझाने मे सिद्धहस्त है। यही कारण है कि आज के वैज्ञानिक युवक ही क्या, अपने आप को नास्तिक समझनेवाले युवक, आबाल वृद्ध उन्हे देख सुनकर, पढ़कर अहोभाग्य मानते हैं। आपकी मननशक्ति एक ओर पनडुब्बी और ड्राइव्हर की तरह आगमसागर की अथाह गहराइयों तक पहुँचकर ज्ञानरूपी रत्नों की तलाश करती है तो दूसरी ओर ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा आपको एक विहग सी, पर्वत-मालाओं के सर से उडाकर ऊपर नील गगन तक ले जाती है और स्वर्गलोक होकर उत्तरोत्तर सिद्धशिला तक पहुँचाती है। आप श्री के मुख से समझाये गये अनुयोग पूर्वाचार्यों के होते हुए भी एकदम नूतन मालूम होते हैं। ऐसा लगता है मानों साध्वी जी ठेठ ७वीं नरक से

लगाकर मोक्ष तक के सारे भेदों को अनंत काल से जानती चली आई है। वह परिस्थितियों को देखने वाली आँख और गूढ़ भेदों को समझनेवाला मस्तिष्क रखती है। शब्दों में एक विशेष खुबसूरती, मनोहर मिठास, सुगंध एवम् ताजगी होती है जो जन-जन को रिझाये बगैर नहीं रहती। आपके मौलिक विचार चिरस्थाई छाप छोड़ते हैं। व्याख्यान श्रवण कर ऐसा मालूम होता है कि हम कहाँ अंधेरे में आज तक भटकते रहे। अथवा यूँ कहिए कि वाणी का एक एक वाक्य दिमाग के दरवाजे खोल देता है। भावना, सत्य विचार और संयम की वह पूँजी है आपके पास कि दुनिया आकर्पित होकर श्रद्धाशील व धर्मदृढ़ बनती है।

अब हमारे सामने यह सवाल पैदा होता है कि इतनी जबर्दस्त तार्किक वुद्धि, मौलिक भावों की गूढता को उभारकर संवारने की कला, जबर्दस्त प्रतिभादि कहाँ से इन्हें मिली? हम कहेंगे कि पुन्याई से। ठीक है, आंशिक रूप से किन्तु शत प्रतिशत नहीं। इन्हें कुछ पुण्य ने दिया, कुछ विनय विवेक ने दिया, कुछ जिज्ञासा ने दिया, कुछ यत्न ने दिया, खुली आँख और खुले कान रखकर संसाररूपी पाठशाला में अध्ययन करने के प्रयास ने दिया। संयम ने दिया, ब्रह्मचर्य ने दिया। किन्तु गुरुपद सेवा ने बहुत कुछ दिया। धन्य है परिवार को, उन माता पिता को जिन्होंने जन्म दिया और उस सुवर्ण श्री, जतन श्री गुरुवर्या को, जिसने आशीष दी, सच्चे हृदय से चाहा।

'होनहार बिरवान के होत है चिकने पात।' संत मीराबाई की भाँति बाल्यकाल से ही परिवार में रहने पर भी भक्ति रंग मूखरित

हो रहा था। चरित्र और सयम भावना के बीज बचपन ही से दाखीबाई की उर्वरा हृदयभूमि मे विद्यमान थे ही। और मातु श्री रूपादेवी तो पहले ही से अनित्य ससार की असारता से अवगत हो वैराग्य भावना मे डूबी ही थी। केवल अवसर की प्रतीक्षा थी। प्रवर्तिनी सुवर्ण श्री जी म० श्री के बोधप्रद उपदेश ने जल का काम किया और फलतः सयम वृक्ष साकार रूप से उभर आया। फिर क्या था ? अनेक अनेक प्रलोभन दिये गये। हमारे परिवार ने कोठरी मे भी बन्द रखा। दादाजी श्री तो अफीम की कटोरी लेकर बैठे थे। भुवाजी धनराजजी सा० तथा भुवाजी सुगनीबाई जी मुणोत तो विरोध प्रदर्शन हेतु दीक्षा के अवसर पर भी वहा नही पधारे। येन केन प्रकारेण हर कोशिश दाखीबाई को गृह मे ही रोकने की की गई। परन्तु स्वच्छन्द विचरण करनेवाला मन का आजाद पछी कही पिंजरे मे कैद रहा है ? आखिरकार माता पुत्री घर मे न रही सो न रही। परिवार की हार हुई और इन दोनों की जीत। घर सूना सूना लगने लगा। बडा हृदय विदारक दृश्य दीख पडता था। घर के दायरे से निकलकर ये दो दीपिकाएँ ससार के विशाल प्रागण मे धर्म का प्रकाश फैलाती हुई, अज्ञानान्धकार को मिटाती हुई, सयम जीवन की कठिनाइयों के बीच निरन्तर भ्रमण कर रही हैं।

करवट बदलते लम्बा समय पसार हो गया। सारा परिवार हृदय पर पत्थर रखकर पुन आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। कितने ही बरसातों का पानी सर से निकल गया। कितनी ही सर्दियों से शरीर जम सा गया। कितनी ही गर्मिया सताप देकर चली गई।

आतुर नयन निरन्तर बरसते रहे, इसी आशा पर कि एक दिन वह अवसर अवश्य आयेगा जब शबरी के राम उसका आंगन पवित्र करेंगे, उस राहुल जननि के प्रिय गौतम फिर लौट आयेंगे, उस मीरा के कृष्ण उसे अवश्य ही दर्शन देंगे। कवि का यह दोहा साकार हो उठा,

"आंखड़ियाँ झांई पड़ीं, पंथ निहार निहार।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकार पुकार॥"

किन्तु श्यामल मेघ मालाओं में भी एकदिन बिजली चमक उठती है।

'जहाँ चाह है, वहां राह है' इस सूक्त्यानुसार बार बार विनती करते करते अहोभाग्य से ४१ वर्षों के बाद स्वर्णाक्षरों से लिखा जाने वाला अमरावती में ५ मार्च सन् १९६५ वह सु दिन आया, वह अवसर प्राप्त हुआ जब हमारे वर्षों के संचित पुण्य का उदय हुआ। हमारे नेत्र हर्षाश्रु से आर्द्र होकर तृप्त हुए। और तथाकथित हमारे परिवार की हार, आप श्री के यश महिमा के अंबार देखकर, हार न रहकर, जीत में परिणित हो गई। हमारे दिलों ने स्वीकार किया कि यदि उस वक्त हम जीत गये होते तो संसार साध्वी जी श्री के हितोपदेश से वंचित रह जाता।""""एतदर्थ वास्तविक दृष्टि से हमारी हार ही में हमारी जीत हुई। जन्म भूमि का सारा जन समूह उलट पड़ा साध्वी श्री के दर्शन करने, अपनी आँखों को तृप्त करने और साध्वी श्री द्वारा पिलाये गये उपदेशामृत के प्यालों से हम सबने अपनी युग युग की प्यास बुझाई।

श्वेत परिधान में सुशोभित सुवर्ण मंडल में साध्वी विचक्षण श्री ऐसी शोभायमान दीखती है मानों तारकावली में चन्द्र और कमलदल

मे लक्ष्मी शोभती है। मच पर बैठकर प्रसन्न मुद्रा मे प्रवचन का प्रकाश प्रसारित करती है तो ऐसा लगता है मानों साक्षात सरस्वती ही न बोल रही हो। निर्मल स्मित मुख मडल और श्वेत पक्तियाँ कुछ यूं शोभती है जैसे श्रोताओं को फूल और मोती के उपहार दिये जा रहे हों। अधर कपाट के खुलते ही फिमल फिमल कर मानों शाब्दिक मोती झर रहे हों। अस्तु।

हमारी कल्पना यह कहती रही कि हमारी माँ, हमारी बहन भूवा हमारी ही है, और अपने घर लौट आई है किन्तु यह ख्याल भ्रामक रहा। स्वीकृत रूप मे परवार के हर व्यक्ति को कहना ही पडा :—

'आई तो कुछ ऐसी आई, मेरी ही क्या, सब की होकर,
जाओ, जग उत्थान करो तुम, रह जायेंगे आसू रोकर।
बढ जाओ 'विज्ञान' 'विचक्षण', चरणों से भव पथ सजोकर,
जग सारा पाकर खोता है, हमने पाया तुमको खोकर॥"

बधुजन! सुश्री विचक्षण श्री आज भारत की धर्मप्राण प्रतिनिधि साध्वी है। क्षीर-नीर न्याय के तराजू पर तोलते हुए सर्व धर्म समन्वय की भावना को उभारने की दृष्टि से तो यह, ससार की अद्वितीय साध्वियों मे कही जा सकती है। जहा अन्य-अन्य विचारों मे खोये रहते हैं, यह विदुषी अपने आपको पाने मे लगी है। इहलोक परलोक का रास्ता दिखाने की वजह से इन्हें दो दुनिया की देहलीज का दीपक कह लीजिए। अपने सत्य विचारों को निखारने की कला और विश्व प्रेम सगीत के सरगम उभारने की विशाल दृष्टि जो इनमे पाई जाती है, वह अन्यत्र दुर्लभ ही क्या, असभव सी ही है। मस्तिष्क मजुषा

निर्मल ज्ञान से ओत-प्रोत होने पर भी इनकी जिज्ञासा वृत्ति कुछ ऐसी जबर्दस्त है कि एक मधुमक्षिका की तरह संसार वाटिका में घूम-घूमकर विभिन्न विद्या रूपी फूलो से रस ग्रहण करने की तलाश जारी ही रहती है। कोमल साध्वी के स्वभाव में जो कोमलता और कर्त्तव्य पालन में जो कठोरता है ; विचारों में जो चिंतन और गहराई है; विशिष्ठ संभाषण शैली के उद्गारों में जो प्रौढ़ता, नवीनता और फैलाव है; हृदय में जो दयाभाव और प्राणीत्व का हित समाया है, वह शायद सांप्रत युग के समसामयिक अन्य साध्वी में दुर्लभ ही है। प्रौढ़ विचारों में नवीनता होकर भी प्राचीन ख्यालो का कहीं भी उपेक्षाभाव नहीं हो पाया है, मूल तत्व कहीं छूटा नहीं है। माना कि युग पर आज भौतिकता का प्रभाव है परन्तु आप मूल कटु सत्य को भी आधुनिक विचारों के शक्कर का केपसूल चढ़ाकर जन जन के हृदय में उतारना अच्छी तरह जानती है। आपने धर्मतत्वो को आसान तरीकों से समझा कर परिवार, समाज, राष्ट्र को सच्चे सुख शांति की प्राप्ति हेतु धर्म से संलग्न करने का सदा प्रयास किया है।……और नया मोड़ देने के इस हिसाब से आपका, सारे देश पर अक्षुण्ण उपकार है। रहस्यवाद की क्लिष्ट ग्रंथियाँ खोलकर आपने अपनी प्रगतिवादिता का अभूतपूर्व परिचय दिया है।

(सामयिक टीप—इस वख्त तो मानों खुशियों का सागर अमरावती में हिलोरें ले रहा है। परन्तु जिसने म० श्री० को बार बार विनती करके अमरावती में चतुर्मास करवाने का तन मन धन से खूब प्रयास किया, वही श्रीमती सुगनीभुवासा, पूज्या साध्वी महोदय की

दर्शन सेवा की शुभ क्रिया भावना मे ही, १४ एप्रिल सन् १९६५ को प्रभात मे अपनी सुगध छोडकर ईश्वर की शरण मे चली गई। हा खेद! स्व० सुगनीबाई जी का अभाव बहुत खटकता है।)

पौद्गलिक सुख की आशा न जाने सितारों की तरह कब टूटकर गिर जाय। वास्तव मे ससार का हर प्राणी, उम्मीद के पतले धागे से बधा है जो किसी भी समय टूट कर गिर सकता है। अतः प्राणीमात्र के उद्धार की उदात्त भावना और जागृतावस्था की विलक्षण प्रतिक्रिया प्रतिध्वनि, हर कार्य कलाप मे, हर शब्द मे दिखाई सुनाई देती है जिनके, ऐसी नारी रूपेण नारायणी, साध्वीद्वय श्री विज्ञान श्री, विचक्षण श्री को धन्य है। आइये, दीर्घायुरारोग्य की मगल कामना करते हुए इनके सुवर्ण मडल के पुनीत पद चिन्हों के सहारे हम-आप सर्व, स्व-पर का कल्याण करने कटिबद्ध हो जायें। इति शुभम् भवतु।

सवत् २०२२ वैसाख सुदी १० श्री वीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	आपके अभिन्नोपासक आत्मज फूलचद, भवरलाल, प्यारेलाल भंडारीमुथा, अ म रा व ती

लेखिका का परिचय

वर्षो से मेरी तीव्र तमन्ना थी कि जैन शासन की दिव्य विभूति जिनके पुण्य पुंज पाद पंकजों में मुझे आश्रय मिला है। जिनकी करुण कृपा वात्सल्यमयी भावनाओं से मेरा अधम जीवन कृत कृत्य हो रहा है, ऐसी अनुपम मेरी श्रद्धेया गुरुवर्य्या का सांगोपांग जीवन चरित्र प्रकाशित करवाया जाय किन्तु इस कार्य के लिये मुझे एक ऐसे व्यक्ति की खोज थी जो गुरुवर्य्या को निकटता से जानता हो, उनसे काफी परिचित हो और जो बाह्य के साथ साथ अन्तरंग गुणों पर भी प्रकाश डाल सके, यानी जीवन चरित्र का सांगोपांग चित्रण कर सके। ऐसे अनेकों व्यक्ति गुरुवर्य्या के परिचय में आते है, आये है पर साथ में अपने हृदयगत भावो को अभिव्यक्त करने की कला भी तो चाहिये और इसके लिये घूम फिर कर मेरी नजर भंवर बाई के ऊपर ही आकर ठहरती। मैंने इनसे कहा पर ये साहस नहीं बटोर पाई और कुछ परिस्थितियाँ भी अनुकूल न रही। पर मुझे भी मेरी भावना पूर्ण करने जैसा अन्य कोई नहीं मिला अतः मैं भी प्रयत्न करती रही।

घटनाओ का संकलन हम दोनों ने खुजनेर भंवरबाई की ससुराल के चतुर्मास में किया था और आगे भी मै करती रही। यह सारा संकलन मैंने इसके पास भेजा और पुनः मेरी कामना पूर्ति के

लिये लिखा। इस वार परिस्थितियां अनुकूल थी सो इन्होंने स्वीकार कर कार्यारम्भ कर दिया और आज मेरी तीव्र तमन्ना पूर्ण हुई। इसके लिये इन्हें मैं अकिञ्चना धर्मलाभ रूप आशीर्वाद के सिवाय अन्य क्या दूं ? जैन कोकिला का लेखन किस हद तक सफल रहा है यह तो पाठकों पर ही निर्भर करता है। पर इतना तो मैं अवश्य ही कहूँगी कि इसे पढना शुरु करने के पश्चात् पूर्ण किये विना विराम असभव है। इन्होंने गुरुवर्य्या के जीवन की सागोपाग शब्द फिल्म उतार कर रख दी है। इनके पास भावनाएं भी हैं, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति भी है तो भावनाओंको व्यक्त करने की कला भी है एव लेखन शैली भी सरल, सरस, शब्दाडम्बर से रहित सहज है।

लेखिका के पिता श्रीमान राजमलजी कोचर बीकानेर निवासी है माता अजमेर निवासी सुप्रसिद्ध गोपीचन्दजी साहब धाडीवाल की बहिन सोहनवाई थी। इनका विवाह खुजनेर (म० प्र०) निवासी माणकचन्दजी रामपुरिया के सुपुत्र मागीलालजी के साथ हुआ था।

इनके पति १८ वर्ष की अल्पवय मे काल कवल बन गये थे जब कि ये मात्र १३ साल की थी। तबमे इन्होंने अपना जीवन धर्म साधना व अध्ययन मे लगा दिया और काफी सख्या मे धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन परिशीलन किया या हजारों पुस्तकें इन्होंने पढी होंगी। लेखन कलाका नमूना आपके हाथों मे है। कवित्व शक्ति भी अजोड है। गुरुवर्या के प्रति भक्ति वश हो अनेकों भजन आपने बनाये हैं जिनका प्रकाशन खुजनेर स्वर्ण विचक्षण महिला मडल ने विचक्षण गुण गजन के नाम से किया है। दूसरा विभाग तैयार पड़ा है। दादा

गुरु स्तवन की भाव भरी रचना गुरुवर्य्या श्री के आदेश से आपने की है जो प्रकाशित हो गई है।

महामहोपाध्याय श्रीमद् देवचन्द्रजी म० द्वारा रचित शान्तसुधारस नामका आध्यात्मिक ग्रन्थ जिसका गुजराती से हिन्दी अनुवाद इन्होंने साहित्य सेवी अगरचन्दजी नाहटा की प्रेरणा से केवल अपने स्वाध्यायार्थ किया था। जिसका प्रकाशन संभवतः मान्या ऋद्धि श्री जी म० की पुण्य स्मृति में हो रहा है। यो छोटी मोटी रचनाएं तो आप प्रायः करती ही रहती है, पर प्रकाशन की चेष्टा कभी नहीं करती है।

इनका समय अधिकतर पठन पाठन में ही जाता है। गुरुवर्य्या श्री की प्रेरणा से आप सहजानन्दजी म० के सत्संग में गई थी, वहां से इनको "श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृत" वांचन में खूब रस आया और अब प्रायः इनका यह अतिप्रिय वांचन बन गया है श्रीमद् के काफी पत्रों को इन्होंने कंठाग्र भी कर रक्खा है।

सादगीपूर्ण जीवन, शुद्ध खादी का परिधान, आडम्बरों के प्रति उपेक्षा, विशेषतया सहजता ही आपको पसन्द है। अधिक जन सम्पर्क से दूर, परिचय बढ़ाना आपको पसंद नहीं। स्वभाव में गुण ग्रहणता मिलन सारी, सौहार्द के साथ २ स्पष्टवादिता भी है मध्यमवर्ग व निम्नवर्गीय बन्धुओं के प्रति आपकी संवेदना अधिक रहती है।

इनकी उम्र कम होने पर भी विचारो में वृद्ध, कार्य में युवकों का सा उत्साह भरा है। जिस कार्य में हाथ डाल दिया फिर उसे पूर्ण कर ही दम लेती हैं। व्यवहार मार्ग व परमार्थ मार्ग दोनों में सफलता

प्राप्त है, घर मे भी अच्छा सम्मान, व नेतृत्व प्राप्त है पीहर सुसराल मे जो ये करती है वही होता है।

दोनों पक्ष वैभव सपन्न है एव स्वय ज्ञान सम्पन्न फिर भी आपके चेहरे पर निरहकार भाव एव निरभिमानता टपकती है। यथाशक्ति तपश्चर्या भी करती है नवपद ओली तप वीस स्थानक ओली तप, ज्ञान पचमी तप, कार्तिकपूर्णिमा तप आदि कई छोटे मोटे तप किये हैं और करती रहती हैं।

उत्साह तो आपके जीवन मे कूट कूटकर भरा है अपने उत्साह वल से ये अन्यों को भी काफी प्रेरणा वल देती है, निराश विचार, हताश भाव इनको जरा भी पसन्द नही है। मानव सब कुछ कर सकता है ऐसा इनका दृट मनोवल है, और इसी कारण तेरह वर्ष की अल्पवय से ही दु खोंके पहाड टूटने लगे, परिवार मे कई मृत्यु ऐसी दु'खद हुई, वैवव्य के साथ मातृ-वियोग आदि आपत्तियाँ आने पर भी इन्हें विचलित होते नही देखा गया, अपनी गति, अपने लक्ष से कभी भी नही डिगी।

हृदय विशाल, उदार, सद्भाव भरा व्यवहार होने से सम्पर्क मे आनेवालों के हृदय मे आपके प्रति सम्मान का स्थान वन जाता है। सच्चाई एव सत्य भापण इनकी वाणी की शोभा है। जो भी बात होगी स्पष्ट रूपेण सच्चाई के साथ कहेगी। इसमे लाग लगाव की पर्वाह नही। शासन भक्त देवों से यही प्रार्थना है कि लेखिका को साहित्य सेवा के लिये अधिक वल देवें। और ये चिरकाल तक अपनी लेखनी से हमे लाभान्वित करें।

पाठक इस अपूर्व जीवन का अध्ययन कर अपने जीवन को आदर्श बनावें यह जीवन प्रकाश पुंज सभी का मार्ग दर्शन करें। और लेखिका का परिश्रम सफल हो।

आज मेरा अन्तर आनन्द से भरा है। मैं भंवर बाई को पुनः धन्यवाद देती हूँ कि इन्हों ने मेरी वर्षो की तमन्ना को अथक परिश्रम कर पूर्ण किया। और देती हूँ पुनः पुनः धर्म लाभ।

बीकानेर
कार्तिक शुक्ला पंचमी

विचक्षणान्तेवासिनी
विनीता श्री

अपनी बात

जब मनुष्य अपने कर्त्तव्य को सीमित परिधि से निकलकर विश्व-प्रेम एव प्राणी मात्र के प्रति कर्त्तव्य पालन रूपी असीम क्षेत्र मे कूद पडता है, तब उसका सम्बन्ध एक घर से न रह कर अनेक घरों से जुड जाता है। वह व्यक्ति का न रहकर समष्ठि का बन जाता है। भाई, बहन, पिता पुत्रादि मिटकर, तारक, रक्षक मुनि किंवा महात्मा बन जाता है।

ऐसे जीवन की कल्पना बडी ही मधुर एव आकर्षक लगती है। परन्तु यथार्थता की भूमि बडी ही कठोर पैनी होती है। नियमबद्ध हो सयम सहित सभी प्रलोभनो से विरक्त हो कर, सावधानी पूर्वक, मुनि जीवन की पगडडी पर कदम बढाने पडते है। उसीका भक्त, उसी का शिष्य, उसीको तरण तारण हार मानने वाली समाज, जीवन की पगडडी से जरासा भी लडखडाता देख उसके कान खीचने मे देर नही करता।

मुनिको अपना समस्त जीवन अपने आदर्शो की रक्षा के लिए बलिदान करना पडता है। जहाँ आदर्श से विचलित हुआ कि गया समाज की नजरों से। सर्वथा चरित्रहीन, गया गुजरा व्यक्ति भी मुनि वेश धारी से उच्चतम आदर्श की आशा करता है। और इन्ही कठिनाइयोंके बीच ही साधु जीवन की साधना प्रतिपल चमकती, दमकती, निखरती है। जैनमुनि का निरतिचार शुद्धजीवन ही समाज की नवरचना, नवजागृति की आधारशिला है। जिस समाज के

गुरु का जीवन जिस स्तर का होगा उस समाज का जीवन भी उसी स्तर पर होगा।

जैन-समाज पर मुनियों का वर्चस्व आज भी वैसा का वैसा सुरक्षित है। वे चाहें तो आज भी समाज को नजरों के सबसे ऊँचे शिखर पर आसीन कर सकते हैं, और चाहें तो रसातल में ले जा सकते हैं। हमारे समाज के कर्णधार मुनि हैं। हमारे समाज की बागडोर आज भी मुनियों के हाथों में है। समाज का सुख, समाज की सुरक्षा आज भी समाज इन्हीं चरणों में खोजता है। संसार, समाज निर्मित के क्रूर विधानों से प्रतिक्षण-पीड़ित मानव आज भी मुनि-चरण में निस्तार पाने के अरमान रखता है, विश्वास रखता है।

महापुरुषों की पुण्य श्लोक जीवन गाथाओं में एक असाधारण शक्ति, अलौकिक प्रकाश, अनुपमप्रताप, एवं विरल स्वानुभूति भरी रहती है। भौतिक भोगों के प्रति उनकी सहज ही विरक्ति रहती है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसी विशाल मनोवृत्ति, सत्य शोध, सत्य निष्ठा, और सत्य परिशीलन ही उनका जीवन ध्येय होता है। मुनि जीवन की परिभाषा ही यदि हम करें तो विश्वबन्धुत्व, विश्व-वात्सल्य विश्वकल्याण, की परम भावना, चरम साधना का पावन व्रत ही होगी।

परिचय में आनेवाले विकासोन्मुख व्यक्तियोंको प्रोत्साहन देना, उन्मार्ग गामियों को सन्मार्ग पर लगाना, टूटते समाज को सम्भालना, बिखरते मोतियों को बीनकर प्रेम सूत्र में पिरोकर संगठित रखना, समाज में व्याप्त अनैतिकता को दूर करना, नैतिकता का प्रसार करना,

सघ की समस्त उलझी गुत्थियाँ सुलझा कर समाज के रुद्ध जीवन मार्गको सरल निराबाध साधन सम्पन्न सुखी बनाना, धार्मिकता का आदर्श सर्वत्र प्रचारित करना ऐसे लक्ष्यवाले विरल विभूति सतों के जीवनपर प्रकाश डालना, अथवा उनके पवित्र निरन्तर गतिशील जीवनको शब्द शृङ्खला मे आबद्ध कर चरित्र चित्रण का साहस करना एक अनधिकार चेष्टा ही है। मैं अपनी ऐसी बाल चेष्टा के विषय मे क्या लिखू? क्या कहू? और कहू तो किस मुह से कहूँ? फिर भी यह एक परम्परा सी बन गई है कि लेखक अपनी कृति के विषय मे कुछ लिखे ही। पर वह क्या लिखेगा? उसकी सफलता किंवा असफलता की कसौटी वह स्वय ही ही नही सकता।

"जैन कोकिला लिखने का प्रयास मैने चरित्र नायिका के मेरे अपने गाव खुजनेर के चतुर्मास के समय उनकी यथानाम तथागुण सम्पन्नाविदूषी, विनय की साक्षात् प्रतिकृति शिष्या श्री विनोता श्री जो महाराज की प्रेरणा से किया था। किन्तु मैंने इस कार्य के लिए अपनेको सर्वथा अयोग्य पाया, और मात्र घटनाओंका सकलन करके मैं मैदान छोडकर भाग खडी हुई।

परन्तु विनीता श्री जी म० ने मेरी भाग दौड पर जरा भी ध्यान नही दिया। वे दृढ सकल्प की धनी हैं, उन्होंने यह काम मुझ से ही करवाने की ठान ली थी, अत' मैंने साहस छोडा पर उन्होंने साहस बनाए रखा, और आज बारहवर्ष यानी पूरा एकयुग व्यतीत हो जाने पर भी उन्होंने मेरे एक भी बहाने को नही माना तथा काम करवा के ही दम लिया।

मेरे पास न तो इतनी योग्यता थी और नहीं मैंने विधिवत् शिक्षा प्राप्त की थी, न ठोस अध्ययन ही था, न भाषा एवं भावों पर अधिकार। केवल भावनाओं के बल पर काम नहीं बनता। लिखना भी था एक अनुपम जीवन के विषय में।

जिसने कभी एक सामान्य पुस्तक लिखने का भी प्रयास न किया हो यों ही कुछ आत्म-संतोषार्थ लिखकर फाड डालना ही जिसकी योग्यता का मापदण्ड रहा हो, ऐसी मैं अपनी अयोग्यता को जानते हुए भी किस प्रकार ऐसी पतित-पावनी जीवनी लिखने का साहस बटोरती ?

मैंने साहस छोड़ा पर विनिता श्री जी ने प्रयत्न नहीं छोड़ा। न मेरे टाल-मटोल की परवाह ही की। हरपत्र और हर मिलन की वेला में उनकी एक ही प्रेरणा रही "मेरी इच्छा कब पूर्ण करोगी।"

उनकी अदम्य भावना में सचाई का बल था, उनकी प्रेमभरी प्रेरणा में निस्वार्थ भावना थी, उनकी गुरुभक्ति निष्ठायुक्त थी, और उसी शक्ति ने मुझे अन्त में पुनः कलम उठाने को विवश किया।

श्री गणेश किया पर मेरा आत्मबल, मेरा अपना विश्वास मेरे साथ नहीं था। मेरा अन्तर गवाही नहीं दे रहा था कि मैं इतनी महान् जीवनी के प्रति न्याय कर सकूंगी।

थोड़ा सा लिखकर मैं फिर रुक गई। मेरी दशा ठीक उस अडि-यल टट्टू जैसी थी जो थोड़ा चलकर रुक जाता है, मालिक की थपकी खाकर फिर चलता है, फिर रुक जाता है। समय वीतने लगा, इतने में विनीता श्री जी का पत्र पुनः आ गया, मैं कुछ आगे बढ़ी कि कुछ

उपयोगी सकलन लेकर फिर पत्र आ गया। इस वार मुझे विशेष रूप से वल मिला सक्रियप्रेरणा तथा उत्साह मिला और अपने सकल्पको मजवूत वनाने मे सहायता मिली। मैंने कुछ पृष्ठ लिख कर भेजे उन्होंने उन्हें पसन्द किया, प्रोत्साहन दिया, और समय-समय पर घटी घटनाओंका सकलन जिनमे कि मैं अनुपस्थित थी भेजना शुरू किया। मेरा कार्य आगे बढा अव उसमे गति आई और काम चलने लगा। मेरा भी काम मे मन लगा, दिलचस्पी वढी। पीछे जव चरित्रनायिका से आपको यानी विनीता श्री जी म० को अलग विचरण करना पडा तवसे इस कार्यकी सहयोगिनी पू० मणिप्रभा श्री जी वनी—ये लगभग नीमच के चतुर्मास पश्चात् इसमे सहयोग देने लगी। इनकी भी प्रेरणा प्रवल रही। आज इसे पूर्ण कर मैं अपने हृदय मे सुख का अनुभव करती हूँ। मेरे इस आत्म सतोष का सारा श्रेय अधिकाशत. विनीता श्री जी के हिस्से मे जाना है, वचा खुचा मणिप्रभा श्री जी ले जाती है। मैं तो मात्र मुफ्त यश व आत्म सतोष की अधिकारी वनी हूँ।

मैंने यथाबुद्धि तथा शक्ति, इस जीवनी का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया है। इसका अतिशयोक्तियोंमे मैंने सर्वथा वचाव किया है। २१ वर्ष के सत्सग कालमे मैंने जो भी देखा, जाना, अनुभव किया उसका उसी प्रकार वर्णन किया है। महाराज श्री की जीवन गत विशेषताओं का उनके अन्तरग गुणों का वर्णन शब्दों मे आवद्ध किया जा सके ऐसी सामर्थ्य का मुझमें अभाव रहा, वे तो अनुभव

गम्य गहराइयाँ है। मैं तो मात्र आपके ऊपरी प्रताप प्रभाव व कार्यों का ही कुछ दिग्दर्शन करा पाई हूँ।

पूज्या गुरुवर्य्या के जीवनको मैं लगभग २१ साल के निकट सहवास से देखती व अनुभव करती आ रही हूं। फिर भी मैं स्वीकार करती हूँ कि आपमें रही यथार्थता की थाह मैं नहीं ले पाई हूँ। जितनी ले पाई हूं उसका सतांश भी चित्रण नहीं कर पाई हूँ।

जैसे सागर में ज्यों-ज्यों गहरी डुबकी लगाई जाती है, त्यों-त्यो अधिकाधिक बहुमूल्य रत्न हाथ में आते हैं। वैसे ही आपके गुण रत्नाकर जीवन के हम जितने अधिक निकट आते है उतना ही आपके अन्तर का निर्मल निष्कलंक रूप अनेक रूपों में सामने आता है। एक बार के बाद दूसरी बार आपके पास जाने पर आपका नया ही रूप दृग्गोचर होता है।

इधर कई वर्षो से आपकी मनोवृत्ति अध्यात्म-प्रधान बनती जा रही है। प्रतिपल प्रगति, प्रतिक्षण उत्थान आपकी जीवन गति का लक्ष्य बन गया है। आप परिपूर्णता की ओर बड़ी ही तीव्र गति से बढ़ रही है। आपके विषय में मै अधिक क्या लिखूं ? अधिक जिज्ञासावाले आपके सम्पर्कमें आकर देखें कि आपमें क्या है।

इस पुस्तक का अधिकांश लेखन मेरे अपने अनुभव के आधार पर हुआ है। घटनाओं के संकलन में जबकि मैं अनुपस्थित रही विनीता श्री जी म० ने व मणि प्रभा श्री जी म० ने सहायता की।

श्री विनीता श्री जी म० गुजरात में बडोदा के निकटवर्ती पादरा गाँव के सुप्रसिद्ध साहित्यकार आशुकवि मणिभाई पादराकर जी के

लघुभ्राता अध्यात्म प्रेमी वावूभाई की प्रथम सतान हैं। आप वाल-ब्रह्मचारिणी हैं। आपके प्रत्येक व्यवहार, वोलचाल मे विनय एव सरलता टपकती है। आप मे गुरुभक्ति भी अद्वितीय है। गुरुवर्या श्री की आज्ञा आपके लिये ब्रह्मवाक्य है। आपको जब भी जिस काम के लिए या जहाँ भी जाने की आज्ञा मिलती है, आप जरा भी ना नुच किये विना उसे स्वीकार कर लेती है। विदूषी तो आप है ही, पर आपका विनय गुण अनुकरणीय है। इसी गुण के आधारपर आप गुरु कृपा की महती भाजन वनी हुई हैं।

इस "जैन कोकिला" पुस्तक को आद्योपान्त पढकर मेरे धर्म वन्धु श्री आत्मानन्द जैन महासभा पजाव के मन्त्री, श्री आत्मानन्द जैन कालेज अम्बाला शहरके प्रोफेसर तथा विजयानन्द मासिक के सम्पादक, जैन समाजके प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता, योग्य लेखक व विख्यात वक्ता श्री पृथ्वीराजजी जैन एम० ए० शास्त्री ने इस मे रही त्रुटियों को निकाला उनका सशोधन करने का कष्ट उठाया। मैं तो उनकी छोटी धर्म वहन हूँ। उनके प्रति किन शब्दों मे आभार प्रगट करू यह नही जानती।

वे बीकानेर मे कुछ वर्ष प्रधान अध्यापक रहे थे। उस अवधि मे चरित्र नायिका के दर्शनो का उन्हे अवसर मिला और वे इनकी विद्वत्ता एव विचार धारा से प्रभावित हुए। चरित्रनायिका की शिष्याएँ श्री तिलक श्री जी म० एव विनीता श्री जी म० को कुछ काल तक आपने अध्ययन भी कराया था। मैंने यही उचित समझा कि वे इस पुस्तक पर आद्योपान्त दृष्टिपात कर उचित सशोधन कर

दें। उन्होंने अनेक व्यस्तताओं के बावजूद इस कार्यको सहर्ष स्वीकृत किया। अतः वहन भाई की आभारी है। अन्तिम कुछ फर्मे आपके हाथों में परिस्थिति वश नहीं जा सके।

वल्लभ कुल भूषण, माननीय श्रीमद् १०८ श्री महामना मथुरेश्वर जी महोदय, भागवत सप्ताह के आयोजन पर अमरावती पधारे, उनका व हमारी चरित्र नायिका का "श्रीकृष्ण जयन्ती" के अवसर पर व "क्षमापना समारोह" पर सम्मिलित प्रवचन हुए मथुरेश्वरजी भी पहुँचे हुवे विद्वान है, उनकी व्याख्यान शैली बड़ी सुन्दर है रोचकता के साथ तत्वचर्चा आपकी विशेषता है। हमारी चरित्र-नायिका और इनका विचार सामञ्जस्य निकला, वे भी समन्वय व संगठन विचारधारा के पोषक है। और चरित्र नायिका का सारा जीवन इसी विचारधाराके पोषण में लग रहा है।

हमने मथुरेश्वर जी के सामने हमारी इस "जैन कोकिला" पुस्तक की भूमिका लिख देने का प्रस्ताव रखा। हमारे मन में जरा शंका थी कि स्वीकार करेंगे या नहीं। किन्तु विद्वान सदैव सरल हृदय के होते है, उन्होने हमारी प्रार्थना को तुरन्त सहर्ष सम्मान के साथ स्वीकार किया और पुस्तक को पढ़ कर उन्होंने भूमिका लिख भेजी जिसके लिए हम उनको बहुत धन्यवाद देते है।

संत मनोहरदासजी का व चरित्रनायिका का सम्बन्ध बड़ा ही अपनत्व भरा है, मैंने उनसे दो शब्द लिख भेजने का आग्रह किया और उन्होंने मेरी इच्छा को मान देकर भावना के दो फूल लिख भेजे

इसके लिए मैं उनकी खूब-खूब आभारी हू, ये बडे ही सरल शान्त निर्भिमानी, विनम्र, विद्वान सत है।

पजावकेसरी आचार्यदेव विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराज ने आपको "जैन कोकिला" का सम्बोधन नागोर मे नही अपितु बीकानेर मे दिया था और हमने आचार्यदेवके सम्बोधन के नाम पर ही इस जीवन चरित्रका नामकरण किया है।

चरित्रनायिका के भतीजे श्री प्यारेलालजी जैन ने "मीरा अर्वाचीन" नामसे एक भावाञ्जली भेंट की हैं।

श्रीमान चन्दनमलजी नागोरी ने "भावना लख समर्पित" की है।

श्रीमान प्रतापमलजी सेठिया ने हमे और भी काफी सहयोग दिया है।

मेरे पूजनीय पिताजीने शारीरिक अस्वस्थता व कार्य व्यस्तता के रहते भी पूरी पुस्तक का प्रूफ शसोधन किया है। उनके लिए मैं छोटे मुँह क्या कहूँ।

प्रत्यक्ष परोक्ष सभी सहयोगियों की मैं अत्यन्त आभारी हूं।

सन्तचरण रज

भ्रमरी रामपुरिया

ॐ नम

॥ समर्पण ॥

परम पूज्येश्वरी !

आपके सीमातीत उपकार, आपकी महती कृपा, एव आपकी निःस्वार्थ वात्सल्य भावनाओं के विषय में कुछ कहना, अथवा प्रतिदान में कुछ समर्पण करने का साहस करना, उस परम-पवित्र करुणा का मूल्याकन करने की धृष्टता ही होगी।

फिर भी जैसे बालक अपनी बाल-चेष्टाएँ माता के सामने ही प्रस्तुत करने का साहस करता है, वैसे ही अपनी इस बाल-चेष्टा को आपके अतिरिक्त अन्य किसके चरणों मे समर्पित करूँ। अत इसे आप ही स्वीकृत करने का अनुग्रह करें।

भवदीया—
चरण कमल
भ्रमरी

कलकत्ता
१५-५-६६

प्रवर्तिनी महोदया सुवर्ण श्री जी म० की शिष्या

व्याख्यान भारती विचक्षण श्री जी म० सा०

जैन कोकिला

१—प्रवेश

सर्जन और विसर्जन संसार का अटूट नियम है। इस वसुन्धरा पर नित्य अनेक प्राणी जन्म लेते हैं, और मरते हैं। फिर भी संसार के किसी भी काम में गतिरोध उत्पन्न नहीं होता। अस्तव्यस्तता नहीं आती। कतिपय व्यक्तियों के सिवाय उनके जन्म-मरण में अन्य किसी का कुछ बनता बिगड़ता नहीं। "जैसे बन्ता घर भले वैसे भले विदेश"।

कभी-कभी प्रकृति की महती कृपा से संसार को कतिपय ऐसी विरल विभूतियाँ उपलब्ध होती हैं, जिन्हें पाकर धरा धन्य हो जाती है, गगन आनन्द से गर्जन करता है, दिशाएँ झूम उठती हैं, प्रकृति सौरभ सुषमा बिखेर कर उनका स्वागत करती है।

ऐसे दिव्य प्रभावशाली व्यक्ति ही संसार में सदेह भगवानवत् पूजे जाते हैं, आदर, सत्कार, सम्मान के योग्य माने जाते हैं। उन्हीं का जीवन इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो शदियाँ बीत जाने पर भी देदीप्यमान रहता है। उनका भव्य-व्यक्तित्व, अकृत्रिम सहज-जीवनचित्र मानव हृदय पटल पर मुद्रित रहता है। उनका प्रभावशाली जीवन प्रकाशस्तम्भ बनकर युगों तक भूली जनता

का पथ प्रदर्शन करता है, समाज की उलझी गुत्थियों को सुलझाने में सहायक होता है, अपने अनुभव ज्ञान की अमर ज्योति लिये आध्यात्मरसिक व्यक्तियों को नेतृत्व प्रदान करता है।

विश्वविमोहिनी भारत भूमि का यह परम सौभाग्य रहा है कि इसके रजकणों में ऐसे एक नहीं, अनेक महान् व्यक्तियों का आविर्भाव हुआ है, जिन्होने अपने निरुपम ज्ञानालोक से समस्त विश्व को प्रकाश दिया है। धर्मप्राण अध्यात्म-निमज्जित नाना विभूतियो ने सत्य-तत्व का साक्षात्कार कर, अपने पवित्र, अलौकिक अनुभूत प्रवचनों से, धरापर अध्यात्म रस की अजस्र धाराएँ प्रवाहित करते हुए सृष्टि का शोक, संताप, क्लेश, कंकास दूर कर, अनिर्वचनीय आनन्द-सुधा से जन मानस को अभिषिक्त कर, प्राणी जगत को विपत्तियों, संकटों, एवं कष्टों से बचाने के लिये अपने समस्त जीवन को खपा दिया है।

आज भी ऐसे संतों से वसुन्धरा का आंचल रिक्त नहीं है। यद्यपि नामधारी संतों का बाहुल्य है, तथापि समुद्र में रहे कंकरों के साथ रत्नो के समान सच्चेसन्त भी हमें क्वचित दृष्टिगोचर हो ही जाते है।

अपने विशद, बहुमुखी व्यक्तित्व के बलपर साध्वी श्री विचक्षण श्री जी महाराज भी ऐसे उच्चकोटि के संतों की पंक्ति में सहज ही आविराजती है। नारी होकर आदर्श सन्यास पथ का अनुगमन इनकी विशेषता है।

इनका जीवन भारतीय संत परम्परा की अविच्छिन्न कड़ी है। यद्यपि पुरुष सन्तों के वर्चस्व के कारण भारत भूमि विख्यात रही

है, तथापि नारी सन्तों के वर्चस्व से भी यह वसुन्धरा रिक्त नही रही। यही कारण है कि कटकाकीर्ण जैनमुनि का सयममार्ग, हमारी चरित्र नायिका के लिए *कोमल पुष्पों की शैया* के समान है।

उत्कृष्ट त्याग भाव, निरभिमान शुद्ध आचार, परिष्कृत-विचार, सरल स्वभाव, सरल व्यवहार, मृदु, मधुर, प्रभावशाली वाणी, आत्म-साधना मे सतत जागरूकता, अद्भुत गम्भीरता, सहनशीलता अनुपम क्षमा, विनय, विनम्रता आदि आपके मुनि जीवन के उज्वल—अलकार हैं।

गच्छनेतृत्व, विशालभक्तसमुदाय, एव यथेष्टशिष्या परिवार की सरक्षकता जैसी भारीजिम्मेवारी का भार वहन करते हुए भी, आपके चेहरे पर कभी उद्वेग की छाया दृष्टिगोचर नही होती, न कभी विषाद, न खेद, जब भी देखिए वही अन्तरानन्द अकित प्रसन्न मुखमुद्रा, स्मितभरी सौम्यकान्ति।

जब भी मिलने जाइए श्रावक श्राविका एव जैनेतर समाज के मध्य स्वाध्याय, शका समाधान करती, साक्षात सरस्वती-सी विराज-मान मिलेंगी। भले आप जाइए, चाहे मैं जाऊँ, किंवा कोई परिचित, अपरिचित, वा चिर परिचित हो, वही स्वागत भरी मुस्कान, वही वात्सल्य विखेरती वाणी। न कोई विशिष्ठ न कोई साधारण, न अपना न पराया, वहा तो समस्त विश्व ही कुटुम्ब बना है। न खाने की सुध न पीने की चिन्ता, घन्टों एक ही आसन पर धर्मचर्चा मे वीत जाते हैं। केवल स्वाध्याय! स्वाध्याय!! स्वाध्याय!!!

व्यर्थ बात नहीं, निरर्थक बकवाद नहीं, बेकार समय की बर्बादी नहीं। आपके सानिध्य में बैठनेवाला कभी ऊबता नहीं। बोलती है तो मन करता है बोलती ही रहें, मौन रहती है तो नयन उस प्रभावशाली सौम्यमुद्रा को निहारते हुए तृप्त ही नहीं होते। आप के सानिध्य से विलग होना जीवन की भारी विवशता है।

कोई भी वृद्ध, तरुण, किशोर बालक, पुरुष किंवा नारी, गरीब अथवा श्रीमंत, शिक्षित अथवा अशिक्षित आपके द्वार से निराश असंन्तुष्ट, अथवा उपेक्षित हो अपने को हीन मानकर नहीं लौटता। अपनत्व की तो वहां नदियां बहती है। वात्सल्य तो बिखरा पड़ा है। शत्रुता का नामोनिशान नहीं। मानो विश्व प्रेम मुत्तिमान ही प्रगट है। कभी भी किसी की निन्दा सुनने को नहीं मिलती, मिलेगा परगुण प्रमोद भाव। पराए छिद्रों का अन्वेषण नहीं, दूसरों के दोष दर्शन के लिए आप के अन्तरचक्षु बन्द मिलेंगे। पापी से पापी के प्रति भी दया करुणा के बहते स्रोत मिलेंगे। घृणा और तिरस्कार तो आप जानती ही नहीं।

साम्प्रदायिकता का जहर वहां सर्वधर्म-समन्वय व समादर के अमृत में परिवर्तित हैं। परस्पर विरोध की चर्चा वहाँ कभी नहीं होती। कौन क्या करता है, किसे क्या करना चाहिए इसकी बजाय मुझे क्या करना चाहिए इसकी चिन्ता आप को अधिक रहती है।

एक नही अनेकों बार मैंने स्वयं अनुभव किया है कि जहाँ आपके पवित्र चरण पड़े वहाँ से सर्वप्रथम साम्प्रदायिक विद्वेष

नौ दो ग्यारह हो जाता है। शैव, वैष्णव, मुसलमान, एवं श्वेताम्बर, दिगम्बर आदि जैन समाज की सभी शाखाओं को माननेवाले भाई बहिन आपको समान भाव से मानते व आदर देते है। कभी-कभी तो अपनत्व की प्रतिस्पर्धा से अपने अधिकार का दावा करते दिखाई देते हैं। सभी यह भूल जाते हैं कि आप केवल एक जैनसाध्वी है। आपके सम्पर्क मे आकर अपने आपको खो देना एक सहज बात है। सामाजिक झगडों की वर्षो से उलझी गुत्थियाँ आपके प्रभाव मात्र से सुलझ जाती है। घरों मे नित्य मचनेवाला कुहराम शान्त हो जाता है। वर्षो के वैमनस्य ग्रस्तभाई प्रेम से गले मिल जाते हैं। न जाने आपके व्यक्तित्व मे, वाणी मे ऐसा कौन-सा जादू है जिससे मानव-हृदय मे प्रेम का ज्वार उठने लगता है। द्वेष की दीवारें भूमि सात् हो जाती है।

प्रवचन शैली जितनी रोचक मनोहारी है, उतनी ही आकर्षक एव प्रभावशाली है। भले विद्वान बुद्धिशाली श्रोता हो, भले सामान्य जडमति वाला हो, आपकी वाणी सबके हृदय मे सीधी उतर जाती है। लोकोपयोगी भाषा, निर्मल, स्वच्छ भाव, न किसी का खण्डन, न किसी का मन्डन, न किसी का समर्थन, न निरर्थक आक्षेप वर्षण। आध्यात्मरसभरी रोचक प्रवचनशैली इतनी सरल, मधुर मनोज्ञ है कि अध्यात्म जैसे रूक्ष विषय मे भी उपन्यासों की सी सजीवता मिलती है। सभी धर्मों का समन्वय करती हुई आपकी अतिशय पूर्ण वाणी, अपने आप मे परिपूर्ण वीतराग आज्ञानुसार सर्व-दर्शन समन्वय-सागर मे स्वत. ही विलीन हो जाती है। आपके प्रवचनों

में जो सरलता, आनन्द, उल्लास, एवं अकृत्रिमता है वह अन्यत्र क्वचित ही सुलभ होती है।

आपने अपने व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास किया है। व्यवहार एवं परमार्थ दोनो की साधना आपने बराबर समझी है। मानव अपूर्ण है अतः आप प्रतिदिन पूर्णता की ओर बढ़नेमें प्रयत्नशील हैं। आपने पूर्णता की सीमा को बराबर जाना है। परिणामतः परिपूर्णता पाने के लिए सतत जागरित है।

ऐसी दिव्य विभूति कौन है? किस घर, कुटुम्ब किंवा माता पिता को ऐसी निरूपम सन्तान प्राप्त करने का परमसौभाग्य प्राप्त हुआ? किन व कैसी परिस्थितियों में से पसार होकर किस प्रकार यह एक घर का दीपक, एक घर का अमूल्यरत्न अगणित अंधकाराछन्न घरो का, मानव हृदयों का ज्ञान-प्रकाशपुंज, व कोहेनूर बना यह जिज्ञासा अस्वाभाविक नहीं।

२—जन्म और बचपन

राजस्थान के जोधपुर राज्यान्तर्गत पीपाड़ गांव में, ओसवालजैन समाज-रत्न श्रीमान् मगनमल जी भन्डारी मुथा निवास करते थे। चुन्नीलालजी एवं मिश्रीमल जी दो पुत्र, तथा हरखुबाई, लालीबाई और सुगनीबाई तीन पुत्रियाँ थी। आप थे तो मूल पीपाड निवासी, किन्तु व्यापारार्थ दक्षिण बरार के अमरावती शहर में आपके दोनों पुत्र आ बसे थे।

चुन्नीलाल जी का विवाह दानमल जी बोरा की सुपुत्री सुन्दर

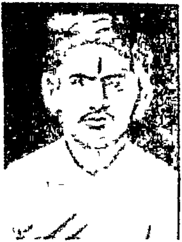

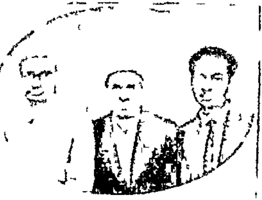

१ पिताजी मिश्रीमलजी २. ताऊजी चुन्नीलालजी ३ फूलचन्दजी

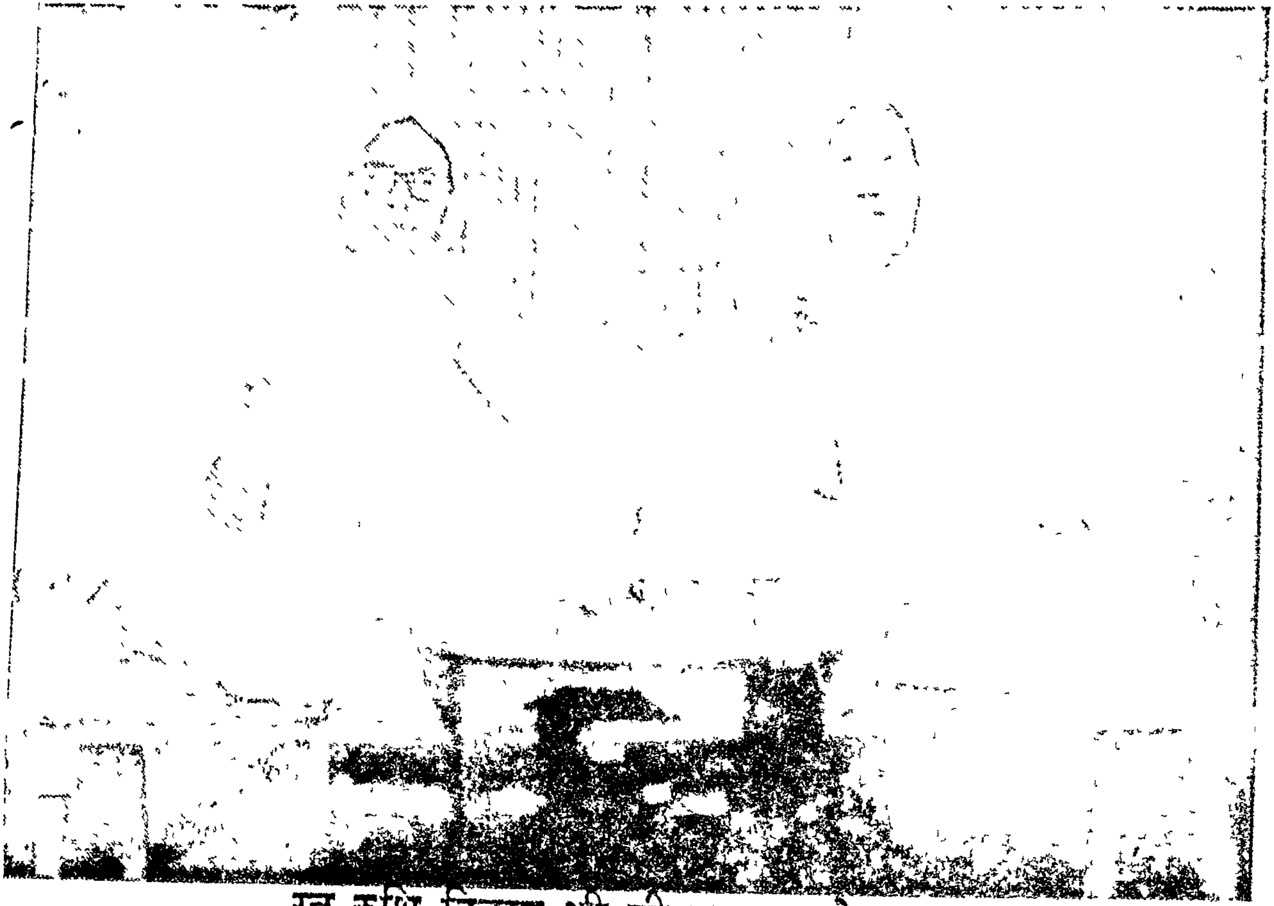

रत्न कुक्षि विज्ञान श्री जी महाराज के साथ

बाई के साथ एव मिश्रीमलजी का विवाह इन्द्रभाणजी बोरा की सुपुत्री नानी बाई (रूपाबाई) के साथ पीपाड मे ही कर दिया था। हरखू बाई व लालीबाई का भी सम्बन्ध पीपाड मे ही हो गया था। परन्तु छोटीपुत्री सुगनीबाई का विवाह अमरावती मे श्रीमान धनराजजी मुणोत के साथ किया था।

इसी अमरावती मे मिश्रीमलजी एव उनकी धर्मपत्नी रूपा देवी (नानी बाई) के घर विक्रम सम्वत १६६६ की आषाढ कृष्ण प्रतिपदा के दिन बालरवि की प्रथमकिरण के साथ-साथ ही एक बालिका ने जन्म लिया। जन्म बालिका का हुआ था। प्रचलित भारतीय प्रथानुसार यह हर्ष का विषय नही था। किन्तु महात्माओं का आगमन सहज ही आनन्द का वातावर्ण बना लेता है। घर का प्रत्येक प्राणी हर्षित था, क्योंकि चिरकाल का बाल किलकारियों से रिक्त घर का आंगन आज बालिका के मीठे रुदन से गूज उठा था। घर मे प्रथम सतान का पदार्पण हुआ था। अतः उस बाला को लक्ष्मीस्वरूपा मानकर उन्मुक्त हृदय से स्वागत किया गया ससारी प्राणी को लक्ष्मी ही सर्वाधिक प्रिय है। उसके बिना सभ्य-समाज मे उसकी गति भी तो नही।

परिवार की प्रथा के अनुसार ज्योतिषी को बुलाकर, कुण्डली बनवाई गई। ग्रहगोचर भी पूछे गए। कुण्डली की ग्रहव्यवस्था देखकर ज्योतिषी चकराया। सेठ के घर मे ऐसा उत्तम ग्रहयोग देखकर उसका मन असमजस में पड गया। उसे चकित देखकर दादाजी ने धड़कते हृदय से पूछा :—

"क्या बात है भाई ? ग्रह अधिक नेष्ट तो नहीं है ?" मानव हृदय अनिष्ट कल्पना अतिशीघ्र कर लेता है। क्योंकि उसका अधिक सम्पर्क अनिष्ट से ही रहता है।

ज्योतिषी ने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं-नहीं सेठ जी! ऐसी बात नही है। यह कन्या आपके घर में कैसे जन्मी यही मेरे आश्चर्य का विषय है। इसका जन्म तो क्षत्रिय-घर में होना था। तभी तो इसका यह राजयोग सफल होता। संभव है कि यह ग्रह बल इसे परम-प्रभाविका योगिनी बना दे, किन्तु यह भी तो शक्य प्रतीत नहीं होता! यही मेरी आश्चर्य विमूढ़ता का कारण है। मैं निश्चय नहीं कर पाता कि यह पुण्यशालिनी कन्या कौन सी असाधारणता प्राप्त करेगी ?

जन्म कुण्डली

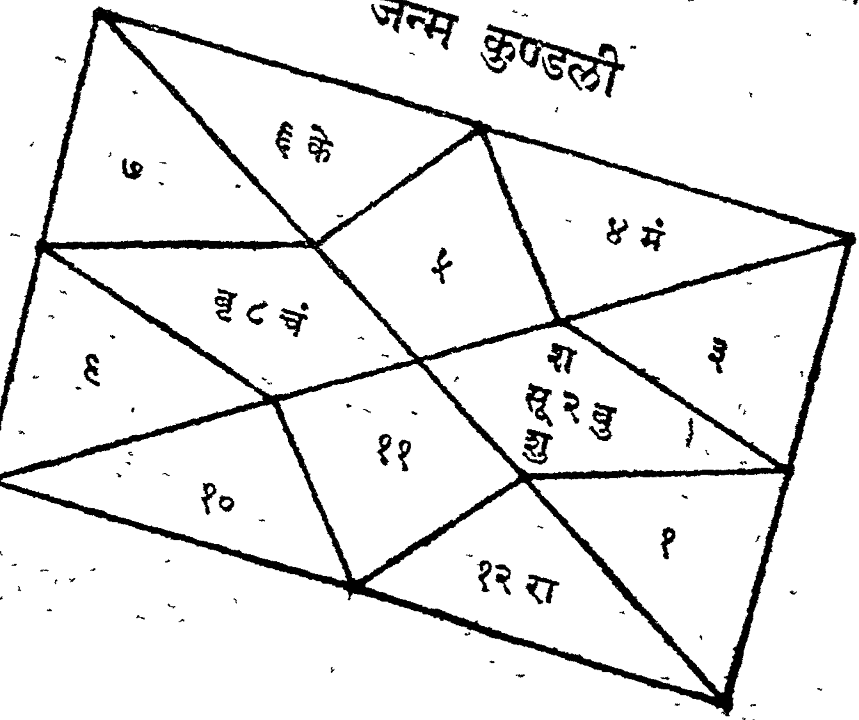

भला इसकी प्रतिभा के विस्तार को कौन रोक सकेगा। इसकी अलौकिक शक्ति से विश्व का कोना-कोना चमकेगा।"

ज्येष्ठा नक्षत्र मे जन्म लेने से अथवा ज्येष्ठ सन्तान होने से बालिका का नाम जेठी बाई रखकर हर्ष पुलकित पंडित राज अपनी भरपूर दक्षिणा लेकर घर गए।

उज्ज्वल गेहुआ रग सौम्य सुघड गोलचेहरा, सुडोलनासिका तेजस्वीनयन, सुगठितदेह, सुसस्कृतचपलता, मुखपर फैली हुई प्रसन्नता की स्निग्धछाया। कोई भी संवेदनशील हृदय ऐसा नही कि जिसे प्रथमदर्शन में ही यह बाला आकर्षित नही कर ले। ऐसी भाग्यशालिनी बाला अपने परिवार व जनेता की लाडली हो इसमे आश्चर्य ही क्या ?

शिशु की बाल चेष्टाएँ, चित्त का स्वाभाविक झुकाव, खेलने का ढग, रहनसहन प्राय· भावीजीवन का संकेत कर देते हैं, "पूतके लक्षण पालने मे ही दीख जाते हैं।"

धीरे-धीरे यह बालिका बढने लगी पूर्वजन्म के सस्कार भी साथ-साथ विकसित होने लगे। शैशवावस्था मे ही यह चपल, भावुक, विनम्र, दृढसकल्पी एव तीक्ष्णबुद्धिशालिनी थी। यही बाला आगे चलकर "श्री विचक्षण श्री जी" के नाम से प्रख्यात हुई।

दीन दुखियों को देखकर आपका हृदय करुणा मे भर जाता, विपदग्रस्तों का कष्ट आपके हृदय पर आघात करता। उदारता का तो पार नहीं था। शीत में ठिठुरते नन्हे भिखारी बालकों को अपने वस्त्र उतार कर दे आती। इसपर डांट-डपट भी सहनी पड़ती।

किन्तु दुखियों के दुःख मिटाने की अपनी लगन को आप दबा नहीं पाती।

मीठी-मीठी चतुराई पूर्ण बातें बनाने में आप कुशल थीं। चंचलता की सीमा नहीं, हाजिर जवाबी में दक्ष, इतने पर भी विनय, विनम्रता सन्मान, सेवा में भी सबसे आगे। घर में जो भी काम करते आप सभी का हाथ बटातीं। माँ, ताई भूवा में कोई भेद नहीं। मानो सभी आपकी माताएँ थीं, और आप थीं सबके वात्सल्य का केन्द्र। ताऊ जी की प्राणाधार, दादाजी की लाडली, पिताजी की दुलारी, परिवार की प्यारी ऐसी जेठीबाई को सभी कुटुम्बी, एवं पड़ोसी स्नेहवश दाखी (द्राक्षा) कहकर बुलाते थे।

जहाँ चार वर्ष की अवस्था के बालक को अपने शरीर को संभालने का भी होश नहीं होता, वहां दाखी बाई गृहकार्य में, सामायिक मन्दिर दर्शन उपासना आदि में सबके साथ होतीं। सवेरे बड़ों को नमस्कार करना आप का नित्यनियम था।

आपके पश्चात् एक बहन ने और जन्म लिया, ताऊ जी चुन्नीलालजी के फूलचन्द जी और भँवरलाल जी दो पुत्र व फूलीबाई, मनोहर बाई दो पुत्रियों ने जन्म लिया। उन सभी भाई बहनों पर आपका बड़ा स्नेह था। आपकी बहिन भी आपके अनुरूप ही थी। किन्तु आयुष्य बल कम होने से अधिक दिन जीवित नहीं रही।

अभी विद्यमानी में आपके ताऊजी श्री चुन्नीलाल जी के बड़े पुत्र फूलचन्दजी एवं छोटे भंवरलालजी है। श्रीमान् फूलचन्दजी समाज में प्रतिष्ठित एवं माने हुए व्यक्ति हैं। राजीबाई धर्मशाला एवं

मन्दिरजी के व्यवस्थापक भी हैं। फूलचन्दजी साहब के पुत्र प्यारेलालजी हैं।

श्रीमान चुन्नीलालजी एवं हमारी चरित्र नायिका के पिता श्री मिश्रीमलजी, इन दोनों भाइयों में परस्पर प्रगाढ़ प्रेम था। एक के बिना दूसरे का रहना असह्य था। फूलचन्दजी व भंवरलालजी इन दोनों भाइयों में भी वर्तमान में अपने पिताजीके अनुरूप ही परस्पर स्नेहपूर्ण व्यवहार है। भ्रातृ प्रेम का आदर्श उदाहरण अनुकरणीय बना है।

३—भावी का संकेत और सगाई

परिवार के सभी बालक ताऊजी द्वारा प्रतिदिन चार-चार पैसे पाते थे। यह जमाना मँहगाई का नहीं था। उस समय चार पैसे की बड़ी कीमत थी। एक व्यक्ति दो चार पैसे में तृप्त होकर भरपेट भोजन करता था। एक दिन ताऊजी ने ढेर सी रेजगारी फैलाते हुए सभी बच्चों से कहा कि "आओ आज जितनी जितनी इच्छा हो उतने पैसे उठा लो" सभी बालक ललचाए, हाथापाई करने लगे, हाथ बढ़ाने व खींचने लगे। किन्तु शान्तीबाई तो बिना संकोच अपने चार पैसे उठाकर चल दी, पीछे मुड़कर यह भी नहीं देखा कि कौन कितना उठाता है।

ताऊजी का हृदय अपनी लाड़ली मानस बेटी की ईमानदारी एवं सन्तोषवृत्ति देखकर बांसों उछलने लगा।

और भविष्यवक्ताओं की यह धारणा होती है कि वे समय-समय

पर अपने बालकों की मनोवृत्ति का अध्ययन किया करते है। उनके जीवन की कमियों अथवा विशेषताओ की परीक्षा कर उन्हें योग्य नागरिक बनाने हेतु अपना अमूल्य समय, श्रम प्रदान करते है। केवल शिक्षकों के ऊपर ही अपने बच्चों के जीवन-निर्माण का भार छोड़ निश्चिन्त नहीं होते।

दाखीबाई की अपरिग्रह वृत्ति ताऊ जी के हृदय में घर कर गई और इसी बहाने भावी भविष्य का संकेत भी कर गई।

दाखी बाई के पिता उदार सच्चरित्र, सरल एवं साधुस्वभावी पुरुष थे। माता धर्मनिष्ठा, प्रतिपरायणा सुसंस्कृत नारी थी। दोनों के विशिष्ठ गुणोके मिश्रण से आपके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ था। उनका दाम्पत्य जीवन भी सुखी था, इच्छाओं की गुल्मी द्रोपदी का चीर नहीं बनी थी। जीवन सन्तुष्ट व सुखी था।

दाखीबाई की सौरभ-सुषमा बिखेरती भोलीभाली सूरत, मधुर मीठी किलकारियों से भरा बचपन का हास्य अनूठाआकर्षण, मनोहारी छटा, फुदक फुदक कर इधर से उधर दौड़ना दम्पती एवं परिवार के हृदय को आनन्द से भर देता था।

उससमय बालविवाह का प्रचलन था, जिसका जितनी कम उम्र में विवाह हो जाता, समाज में उसकी उतनी ही अधिक प्रतिष्ठा होती। कभी २ तो दो चार वर्ष के बच्चों को हीं लग्नग्रन्थी में बाँध दिया जाता था। गर्भ में ही सगाई सम्बन्ध हो जाते थे। इसी प्रथा के अनुसार दाखीबाई का वाग्दान सम्बन्ध मांडोरी के एक श्रीमंत परिवार में बालक पन्नालाल मुणोत के साथ कर दिया गया।

श्रीमत कुटुम्ब माल्दार पितृपक्ष, शुभलक्षणी सुरूपा कन्या, सुयोग्य-वर, सोने मे सुहागे का काम कर रहा था। हर्ष व धूम-धाम का क्या कहना ? नन्ही सी दाखीबाई को जेवर, वस्त्रों से लाद दिया गया। पर विधी को यह सब कहाँ मजूर था ? उसने तो दाखी बाई को किसी और ही मन्तव्य से तैयार किया था। उत्सव महोत्सव कुछ और ही गुल खिलानेवाले थे। विधाता ने तो इस पवित्र देवीस्वरूपा बाला को त्याग वैराग्यमय श्वेतवस्त्र एव अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह रूप आभरणो से सजाने का निश्चय कर रखा था। जिस आत्मा मे दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप रत्नत्रयी चमक रही थी, उस पुण्यात्मा की शोभा ये मिट्टी के अलकार क्या बढाते ? अत विधि लक्ष्यसिद्धी की ओर अग्रसर होने लगी।

४–शिक्षा

उस समय लडको की शिक्षा पर ही समुचित ध्यान नही दिया जाता था, तब कन्याओ की तो बात ही क्या ? अक्षर-ज्ञान एव अकगणित मे योग्यता प्राप्त कर लेने पर शिक्षा की इतिश्री हो जाती थी। अमरावती मे भी कन्या शाला का नजदीक मे कोई खास प्रबध नही था, दूर मे एक कन्याशाला थी। पर उससमय कन्याओं को इतनी दूर भेज कर पढाने की सुविधा नही थी। किन्तु दाखीबाई का परिवार सुसस्कृत था, अत' घर पर ही आपके अक्षर-ज्ञान का प्रवन्ध करवाया गया। बुद्धिशाली होने से आपने शीघ्र ही अक्षर, मात्रा, सयुक्ताक्षर का ज्ञान प्राप्तकर पुस्तकावलोकन शुरू कर दिया।

कहानी की जो भी पुस्तकें वहाँ उपलब्ध होतीं, वे सब आप पढ़ लेतीं। आपको पढ़ने का बड़ा शौख था। जिसे शुरू किया, उसे समाप्त कर के ही दम लिया। इस प्रकार कालानुसार आपने घर में ही खासा अभ्यास कर लिया था।

लौकिक डिग्रीनुमा शिक्षा की ओर उपेक्षा होने पर भी उस समय बच्चों के अंतरंग गुणों के विकास पर समुचित ध्यान दिया जाता था। धार्मिकता के साथ नैतिकतापूर्ण जीवन उस समय की अलौकिक दैन थी। सरलता, सुसंस्कृतता, सेवाभावी, विनम्रजीवन, उस समय की सक्रिय शिक्षा थी। और इसी आधार पर भारत में स्वस्थ, संयुक्त-परिवार-प्रणाली सरलता से चलती थी। प्रायः सभी परिवार सुखी, सम्पन्न, सन्तुष्ट नजर आते थे। न तो आज की तरह राक्षसी खर्च थे न द्रौपदी का चीर बनी इच्छाएँ थीं न फैशन का भूत हर समय सिर पर सवार था। अतः परस्पर छीना-झपटी का कोई प्रश्न ही नहीं था।

न अश्लील चित्र, गन्दे उपन्यास थे, न कोलाहलपूर्ण वातावर्ण था। न असहिष्णु, ईर्षालु दम्भी मानस था। सब अपने-आप में सन्तुष्ट, अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक, एक दूसरे की अधिकार रक्षा में सचेष्ट, प्राप्त परिस्थिती में ही सुखी दिखाई देते थे।

आज शिक्षा से जहाँ लाभ भी हुआ है, वहाँ चारित्रिक हानि भी कुछ कम नहीं हुई। नैतिकता, प्रमाणिकता का नाम उठ रहा है। मानस तो इस कदर असहिष्णु हो गया कि भाई, भाई की उन्नति सहन नहीं करता।

साराश यह कि हमारी चरित्र-नायिका के जीवन-विकास मे शिक्षा से उपलब्ध सभी गुण एव योग्यताएँ प्रचुर मात्रा मे थी।

५—प्रथम आघात—वैराग्य के बीज

घात-प्रतिघातों का समूह ही तो मानव जीवन है। इसमे सुख-दु:ख की आँख मिचौनी का खेल धूप-छाया की तरह आता ही रहता है। अभी-अभी हँसने वाले नयन रोने और रोने वाले नयन मुस्कराने लगते हैं। कभी मन पीडित तो कभी तन पीडित, कभी पारिवारिक उपाधियाँ तो कभी सामाजिक रूढियाँ मानव को व्यथित करती ही रहती हैं। ऐसा कोई नेत्र नही, जिसने दु:ख के आँसू न गिराए हों, ऐसा कोई हृदय नही, जिसे सयोग वियोग ने आन्दोलित नही किया, ऐसा कोई मन नही, जिसे अभावो ने सताया नही, अथवा असन्तोष का भूचाल आया नही। ससार मे ऐसा कोई घर अथवा स्थान नही, जिस पर मृत्यु की छाया पडी नही। फिर हमारी रूपाबाई व दाखीबाई ही इसका अपवाद क्यों होती? किन्तु कभी-कभी आकस्मिक लगने वाला आघात मानव-हृदय की समस्त आशा, आकाक्षाओं का वेग रोक कर जीवन की दिशा ही बदल देता है। जीवन की भोग-विलासपूर्ण गतिशीलता, जीवन के सत्य-तथ्य की खोज मे तत्पर होकर त्याग, वैराग्य की ओर मुड जाती है, जिसमे महापुरुषों के जीवन की तो बात ही क्या?

ससरणात्मक ससार की क्रियाशीलता ने आठ साल की अबोध बालिका दाखीबाई के सिर पर से पितृ-वात्सल्य की सुखद छाया

अकस्मात ही सदा-सदा के लिए समेट ली। श्री मिश्रीमलजी का अल्पकालीन व्याधी के कारण पीपाड में देहावसान हो गया। इस असामयिक आघात ने घर, परिवार नगर को शोकाकुल बना दिया, जहाँ आठों पहर आनन्द अठखेलियाँ करता था, वहां आज दुःख का अट्टहास गूंज रहा था। वातावर्ण निष्प्राण प्रतीत होने लगा।

अपनी ही आंखों के सामने अपने तरुण, होनहार, सुयोग्य पुत्र की मृत्यु! इससे अधिक और क्या वज्रपात होता? दादाजी का हृदय टूट गया, अरमान बिखर गए। युवती पुत्रवधु का वैधव्य, मासूमपुत्री का पितृवियोग उनके कलेजे को चीर गया। वे जीवन से हताश हो गए, आयुष्य की लम्बी घड़ियाँ बीतनी भारी हो गई। पर विवशता थी।

ताऊजी श्री चुन्नीलाल जी के लिये यह आघात असह्य निकला। भाई की मृत्यु के पश्चात् किसी ने उन्हें हँसते, मुस्कराते नहीं देखा, भ्रातृवियोग की व्यथा का भार उन्हें निर्बल बनाता गया और अल्प समय पश्चात् उन्होने भी भाई की राह पकड़ी। दोनों भाई गए अब दादाजी की दशा का वर्णन करने को कौन लेखनी समर्थ होगी। पुत्रों के वियोग से जलता हृदय अभी धधक ही रहा था कि ऊपराऊपरी दोनों बड़े जमाता भी चल बसे। दोनों पुत्रियाँ और दोनों पुत्र वधुएँ वैधव्य ग्रसित हुई। अब दादा जी के पास न मरने की कोई राह थी और न जीवन की कोई चाह थी। भार स्वरूप जीवन किसी प्रकार बिताए बिना चारा नहीं था। सांसारिक दृष्टि से इससे बढ़कर और दुःख का विषय क्या था।

रूपा बाई की वेदना का माप ही क्या था ? उनका तो ससार ही उजड गया था, सचित स्वप्नों का भण्डार लुट गया था। मधुर कल्पनाओं से भरा भविष्य नियति के क्रूर हाथों से छिन्न-भिन्न हो सदा-सदा के लिए मिट गया था। उनके भाल का सौभाग्य सिन्दूर धुल गया। ससार शून्य हो गया था। इस समय आप गर्भवती भी थी। कुछ समय बाद कन्या का जन्म हुआ वह कुछ महीने ही जीवित रही।

महापुरुषों ने सदैव ही विप मे अमृत, अनिष्ट मे इष्ट, अमगल मे मगल ढूढ निकाला है।

पिताजी की मृत्यु ने दाखी बाई को विचार मग्न बना दिया। बाल-हृदय मे प्रतिक्षण "मौत क्या ? मौत क्यों ? जैसे गूढ प्रश्न उठने लगे। समाधान नही मिलता जिज्ञासा बढने लगी, पूछे भी तो किस से पूछे। सर्वत्र गम्भीर उदासीनता पूर्ण वातावरण था। न रोना न धोना, फीकी मुस्कान, प्रश्न भरी आँखें, विचारमग्न घर मे घूमना किंवा एकान्त मे बैठ प्रश्न की गूढग्रन्थी सुलझाने का प्रयत्न करना। आघात इतना क्रूर था कि उसे सहज मे भुला देना मानव के बस की बात नही थी।

"दु ख की दवा समय" के नियमानुसार ज्यो-ज्यों समय पसार होता गया, त्यों-त्यों सभी दु:ख सहनशील बनने लगे। घर की व्यवस्था धीरे धीरे पूर्ववत् जमने लगी, आनन्दहीन सामान्य वाता वरण बन गया। सच मे मरनेवाले के पीछे कोई मरता नही जानेवाला चला जाता है, रहनेवालो को सभी कुछ करना पडता है।

दाखीबाईकी मां के लिये अब चैन दुर्लभ हो गया। वे तो निराले ही विचारों में डूबने-तैरने लगीं।

अब इन झंझटों से मेरा क्या प्रयोजन ? जिसको लेकर संसार था वही जब चला गया तब इन संसारी राग रंगों से मेरा क्या नाता है। किसी सुयोग्य संत का समागम मिले तो मेरा यह निरर्थक जीवन सार्थक बन जाए। जीवन का क्या भरोसा है ? आज है, कल नहीं। कुछ आत्म-श्रेय क्यों न कर लिया जाए। पर यह बने कैसे ? कभी घर से बाहर कदम रखा नहीं, संतों का समागम पाया नहीं, फिर यह भावना पूरी कैसे हो ? हृदय-मंथन चलता रहा, समस्या ज्यों की त्यों सामने खड़ी थी। भावना बढ़ती गई। जब देखो तब मौन, निरीह विचारों में खोई दिखाई पड़ती।

मानव-जीवन की मंजिल विचारो में ही छिपी रहती है। रूपांबाई को भी विचार-मंथन में ही मार्ग की झलक मिल गई, परन्तु इस मार्ग तक पहुँचने में जो बाधाएँ-विघ्न थे, उन्हें देखकर उनका हृदय काँप जाता।

अहा ! मेरी ताऊजी की लड़की सुन्दरबाई ने भरापूरा परिवार, तरुण स्नेही पति एवं श्रीमन्त घर को त्याग कर १८ वर्षीय यौवन-वय में ही भागवती प्रव्रज्या अंगीकार की है। क्या उनकी छाया में मुझे शान्ति-लाभ नहीं होगा ? यह भी तो मुझे मालूम नहीं कि वे कहाँ हैं ? उनतक पहुँचने का मार्ग भी ज्ञात नहीं। घर में अनेक प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, ससुरजी का कठोर अनुशासन, हे भगवान ! मेरी अभिलाषा, मेरे ये अरमान कैसे पूर्ण होंगे ?

इस प्रकार मानसिक संघर्षों के बीच गोते लगाते हुए रूपाबाई के दिन बीतने लगे और दाखीबाई बनी रही माँ की भावनाओ का भावी योजनाओं का श्रोता, माँ साध्वी बहन की सयम-साधना की बातें करती, उनकी दिनचर्या व कठोर चारित्र पालन की व्याख्या करती, उनके शुद्ध सात्विक जीवन की रूपरेखा बनाती और दाखीबाई के बाल-हृदय मे उत्सुकता की उर्मियाँ उछलने लगती। वह तो साधु-जीवन से अपरिचित थी, परन्तु पूर्व भवों के आराधक जीव सामान्य निमित्तों से, परोक्ष परिचयो से भी पूर्ण परिचय जितना लाभ उठा लेते हैं। दाखीबाई का मन-मयूर कल्पना की थिरकने भरता हुआ नाच उठता। मुनि-जीवन की मधुर कल्पनाओं मे उनका मन रम जाता। माँ और बेटी इस प्रकार अपने भविष्य के अदृश्य निर्माण मे तल्लीन हो जाती, किन्तु अपनी बहन प्रवर्तनी साध्वी सुवर्णश्रीजी के पास पहुँचने की कोई भी युक्ति सूझ नही पड़ती थी।

६—स्वयं बुद्धा सुवर्ण श्री जी

दक्षिणभारत के सुप्रसिद्ध शहर अहमदनगर मे प्रतिष्ठित सेठ श्री योगीदास जी एव उनके लघुभ्राता श्री चन्द्रभाण जी बाहरा रहते थे। योगीदास जी की धर्मपत्नि दुर्गादेवी की कुक्षि से सुन्दरबाई का जन्म हुआ जो आगे जाकर प्रवर्तनी श्री सुवर्ण श्री जी के नाम से प्रख्यात हुई। चन्द्रभाण जी की पत्नि की कुक्षि से हमारी चरित्र नायिका की माता जी श्री रूपाबाई का जन्म हुआ जो वर्तमान में श्री विचार श्री जी के नाम से प्रसिद्ध है। बाहरा परिवार की इन पुत्रियों से धन्य

हुआ ही किन्तु जैन शासन भी इनकी अद्भुत सेवा से कृतकृत्य बना। रत्नकुक्षि विज्ञान श्री जी म० की कुक्षि से विश्व प्रेम प्रचारिका व्याख्यान भारती, समन्वय साधिका, जैन कोकिला हमारी चरित्र नायिका श्री विचक्षण श्री जी म० का जन्म हुआ था, जिनकी यशो-दुंदुभी भारत के कोने-कोने में बज रही है। जिन के जीवन-विकास में, जिनके जीवननिर्माण एवं कुशलता, सरलता, अध्यात्मज्ञान, समन्वय, एवं संगठन, विश्व प्रेम तथा करुणादि गुणों के आविर्भाव में श्री सुवर्ण श्री जी म० का पूरा-पूरा हाथ था। हमारी चरित्रनायिका के जीवन घाट को बनाने में श्री सुवर्ण श्री जी ने कहीं भी कमी नहीं रखी। जीवनविकास के सभी पहलुओ पर आपने दृष्टि देकर हमारी चरित्रनायिका के जीवन को साध्वाचार एवं शासन सेवा के योग्य बनाया। यदि हम चरित्रनायिका के शब्द एवं भावों में कहें तो जो भी कुछ वे आज है अपनी सुवर्ण गुरुवर्य्या की कृपा से ही है। ऐसी महत्तराप्रवर्तनी का जीवन जानने की जिज्ञासा सहज ही उत्पन्न होती है।

योगीदास जी एवं दुर्गा देवी का घर विवाह के कई वर्ष बीत जाने पर भी संतान की मीठी किलकारियों से रिक्त रहा। योगीदास जी पुरुष थे, उन्होंने भाग्य का लेख मान संतोष ग्रहण किया, पर दुर्गादेवी की संतानलालसा उन्हें विकल बनाती थी। वे हर समय उदास रहती। नारी के जीवन की सार्थकता संतान में ही निहित है। माँ की ममता जो नारी के हृदय ही में नहीं रोम-रोम में व्याप्त है, उस ममता का सबल आधार संतान ही तो है। वे ज्ञानी महात्मा नहीं

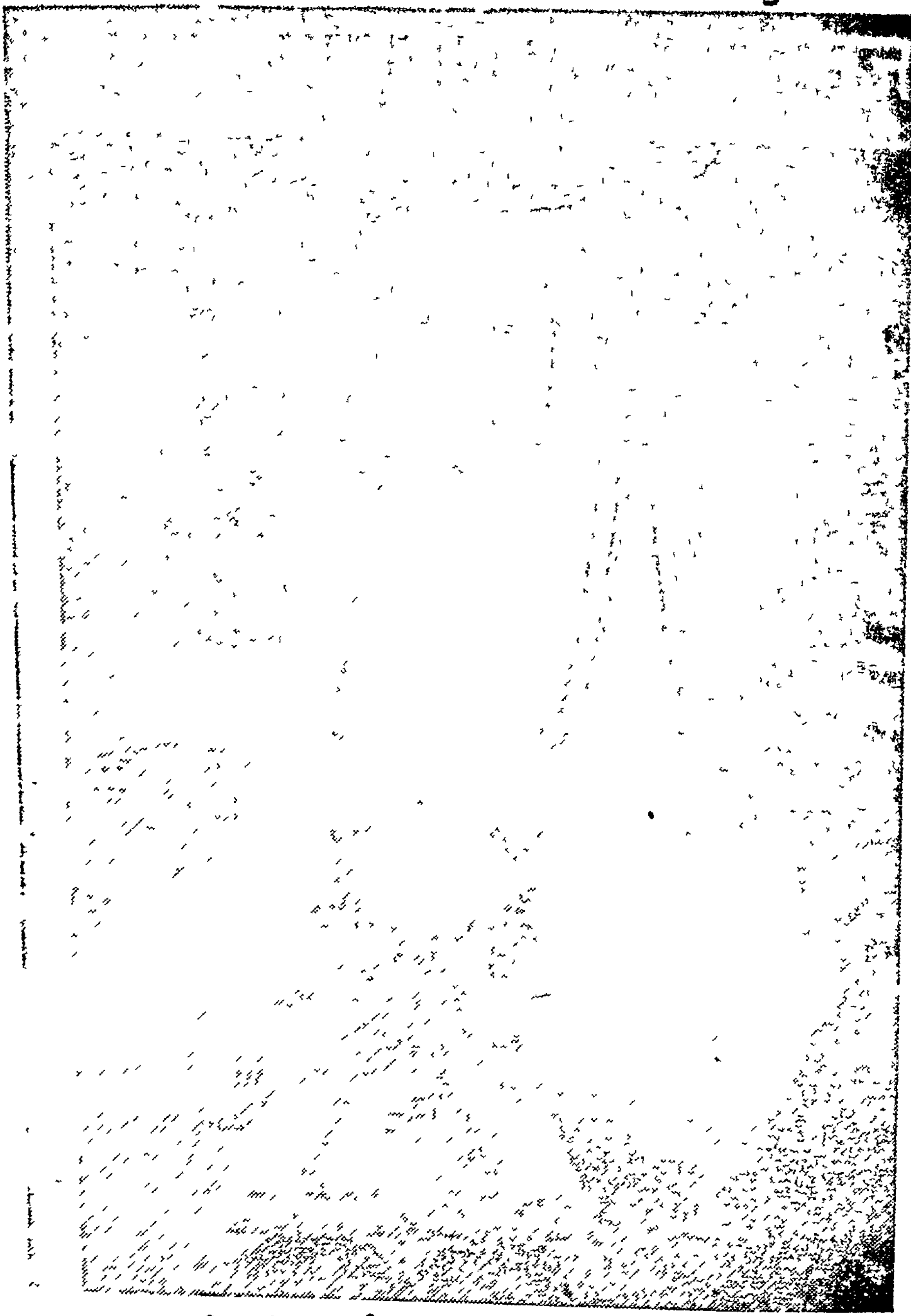

पू० गुरणी श्री स्वर्ण श्री जी महाराज पृष्ठ—२१

थी। उनके हृदय मे सतान प्राप्ति की तडप थी। और उसी तडपन मे उन्होंने गडा, तावीज, जप, तप सभी योग्य साधन अपनाए पर आखिर भाग्य न बदला सो न बदला। सभी उपाय व्यर्थ गए और सतान प्राप्ति की आशा निराशा मे बदल गई। तब दम्पती ने धर्म पर चित्त जमाया और दोनों धार्मिक साधना मे लगे रहने लगे।

निराशा मे आशा चमकी और यौवन एव बुढापे की सधीवेला मे दुर्गादेवी ने गर्भ धारण किया। हर्ष की सीमा नही थी, जीवन भर की सचित अतृप्त लालसा की तृप्ति का स्वर्ण समय आ गया था। गर्भ रक्षा के, गर्भ सवर्धन के अच्छे से अच्छे उपाय अपनाए जाने लगे, एव सतान मुख दर्शन की घडियाँ इस परिवार मे बडी बेसब्री से व्यतीत की जाने लगी।

आजकल ज्योतिष विद्या पर अधिकाश लोगों को विश्वास नहीं रहा, कारण इस विद्या के जानकार अब दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं, और इसे पेट भराई का साधन बनाकर गुजर करने वाले नामधारी ज्योतिषियों की बहुलता देखने मे आती है। योगीदास जी ने एक ज्योतिषी से गर्भ के विषय मे प्रश्न किया और उसने निम्न उत्तर दिया।

सेठसाहब! आपके पुत्र होगा और वह बडा ही प्रतापी, पुण्यशाली होगा। कदाच कन्या ने जन्म लिया तो आप मेरी विद्या को चुनौती देते हैं इसलिये मुझे सच ही कहना होगा कि कन्या के जन्म पश्चात् उसके पिता यानी आपका देहान्त शीघ्र हो जाएगा। आप

मेरी इन दोनो बातों को नोट कर रख दे। योगीदास जी ने इस बात को नोट करके रख दिया।

पूर्ण समय पश्चात् सं० १९२७ ज्येष्ठकृष्णा बारस शुक्रवार को दुर्गादेवी ने एक सुरुपा कन्या रत्न को जन्म दिया। चारों ओर हर्ष छा गया। जहाँ संतान प्राप्ति के लिए इतनी तड़प थी वहाँ पुत्री का स्वागत भी पुत्र से बढ़कर हुआ। कन्या का अपूर्वसौन्दर्य देखकर गुणनिष्पन्न सुन्दरबाई नाम रखा गया। दुर्गादेवी के हर्ष का पार नहीं था। परन्तु योगीदास जी का स्वास्थ्य इस दरम्यान खराब रहने लगा, वे अन्य विचारों में झूलने लगे। उनके मन में यह निश्चय हो गया कि मेरा जीवन अब शेष होने को है। अतः घर सम्पत्ति सब की पूर्ण व्यवस्था पहले ही कर दी। चान्दा निवासी इन्द्रचन्द ताराचन्द फार्म से अपने स्वजातीयबंधु नथमल दलीचन्द बोहरा को गोद लेकर सारी व्यवस्था कर स्वयं समाधी मरण से स्वर्ग गए। आनन्द शोक में बदल गया, हर्ष की जगह विषाद ने ले ली। दुर्गादेवी की हालात खराब थी, उनके दुःख का पार नहीं था। संतान की प्यास शमी पर पति वियोग का पहाड़ सिर पर आ पड़ा, यहाँ ही तो मानव विवश है। दुर्गादेवी का संसार फीका हो गया।

दत्तकपुत्र सुयोग्य था, हरतरह से वे आपके लिए शान्तिप्रद रहे। व्यापार आदि सब सुचारु रूप से चलते थे। घर का पोजीशन भी वही रहा, समाज में मान प्रतिष्ठा भी वही रही। सुन्दर बाईका लालन-पालन बड़े ही प्यार से किया जाने लगा। दुर्गाबाई के पास उनका मुख-देखकर समय पसार करने के सिवाय अब संसार में शेष ही क्या था।

समयानुसार सुन्दरबाई की शिक्षा भी अच्छी हुई। उस काल की रीत्यानुसार सुन्दरबाई के सम्बन्ध के प्रस्ताव भी खूब आने लगे। श्रीमत, खानदानी घर, सुन्दर सुशील कन्या, सम्बन्धों की मांग जोर पकड़ने लगी। पर कन्या का सम्बन्ध तो एक ही व्यक्ति से किया जाता है। सुन्दरबाई का भी सम्बन्ध कुचामण से नागोर गोद आए श्रीमान प्रतापमल जी से कर दिया गया। यथा समय शुभ लग्न मे विवाह हुआ, धन, दहेज का तो कहना ही क्या ?

भरे पूरे श्रीमत सुसराल मे सुन्दर बाई को भेजकर माँ निश्चिन्त बनी। सुन्दर बाई सभी प्रकार से सुखी थी। किन्तु महापुरुषों को ये भौतिक सुख कब सुखी बना पाने मे समर्थ बने है। चैतन्य सुख के अभिलाषी मनीषियों को इन जड सुखों मे आनन्द उपलब्ध नही होता। सभी सुखसामग्री के बीच सुन्दरबाई के हृदय मे एक अभाव बना रहता। उन्हें एक प्रकार की रिक्तता अनुभव होती। ये भोग सुख उन्हे भले प्रतीत नही होते। उनके हावभाव व्यवहारों मे औदासीन्यता की झलक थी। कर्तव्यनिष्ठा मे जरा भी फर्क न आने देकर भी उनका हृदय वैराग्यपूर्ण था। इस सुख को सुख मानकर वे न भोग सकी।

सास का प्यार दुलार माता से बढ़कर मिला। वे सुन्दर, सुशील, विनय मूर्ति बहू को देख-देखकर फूली न समाती थी। पति का तो पूछना ही क्या सुशीला, सुन्दर पत्नी भाग्य से ही मिलती है, वे सभी प्रकार से सुन्दर बाई को सुखी रखने का प्रयत्न करते। उनके प्रेम की गहराई का अनुमान इसी से लगता है कि सुन्दर बाई के सुख के लिये इन्होंने इन्हें संयम की अनुज्ञा तक प्रदान की और उनकी ही

आज्ञा से उनके ही हाथों अपना दूसरा सम्बन्ध भी कराया। सुन्दर वाई के धार्मिक क्रिया काण्डों के साथ-साथ ज्ञानाभ्यास भी चलता रहा और मनोमन वैराग्यभाव भी बढ़ता गया।

चाह वहाँ राह के अनुसार खरतरगच्छ समुदाय की परम प्रभावक आचार्य ऋद्धिसार सूरि के शिष्यरत्न सुखसागर जी महाराज जिनके नाम पर आज यह समुदाय चलती है की परम प्रभाविका पुण्य मूर्ति श्री पुण्यश्री जी महाराज का चतुर्मास नागोर में निश्चित हुआ।

सुन्दरबाई के मनोमन वांधे मनोरथों की सफलता का समय आया। आप प्रतिदिन प्रवचन में जाती। अन्य क्रियाओं में शामिल होतीं। सारा दिन आपका उपाश्रय में उपासना में ही व्यतीत होने लगा। एक दिन एकान्त पाकर सुन्दर वाई ने श्री पुण्य श्री जी म० के समक्ष अपने मनोमन वांधे मनोरथो की गठड़ी की गांठ खोलकर पसार दी और वोली।

माताजी! अव तो यह संसार नहीं सुहाता, ये भोग यह ऐश्वर्य, धन, परिवार नहीं भाता। यों देखने में मुझे कोई अभाव नहीं है पर मेरा मन अभावों से भरा है। मुझे इन भोगों में कष्ट होता है, मुझे त्याग में ही आनन्द की उपलब्धि दीख रही है। अतः मुझे दीक्षित करके आप मेरे मनोरथ पूर्ण करें। सुन्दर वाई की अन्तिम वात सुनकर महाराज श्री दंग रह गई। "अरे कैसी वात करती हो तुम्हें क्या कष्ट हैं?

माताजी! क्या कष्ट हो तभी दीक्षा लेनी चाहिए? क्या ये

भोग कष्टप्रद नहीं है ? कहिए इनसे बढ़कर संसार मे कष्टप्रद और कौन सी बात है ?

साध्वी जी ! विस्मयाभिभूत इस यथार्थ बात को सुन रही थी, बात सत्य थी पर इसका प्रकाशन ऐसे मुख से हो रहा था जिस मुख से ऐसी अपेक्षा कोई कर ही नही सकता था । यौवनवय की शुरुआत, धनवान घर की इकलौती बेटी श्रीमंत परिवार की इकलौती वधु सभी की प्यारी, पति की प्रिय ऐसी सुन्दर बाई के मुख से निकले ये दीक्षा के शब्द कम आश्चर्यकारी न थे ।

"माताजी ! आप मौन क्यों हैं ? क्या मैं इस मार्ग के उपयुक्त नही हूँ । साध्वी जी ने कहा :—

ऐसी बात नही है । हमारा लक्ष्य आत्म साधना है, इस साधना मे असीम सुख आनन्द भरा है । कोई भी मुमुक्षु यदि मार्ग दर्शन मांगे तो इस मार्ग का यथार्थ दर्शन कराना हमारा कर्तव्य है । तुम भी यदि इस मार्ग पर आना चाहो तो हमे क्या ऐतराज हो सकता है ? पर जानती हो संसार के इन बन्धनों को काटने जाने पर ये दूने जोर से जकड़ते हैं, और प्रायः अधिकांश मानव इनसे परास्त होकर बैठ जाते हैं । यह एक प्रकार की बलाय है जिसकी पकड़ से छूट पाना तुम जानती हो उतना सहज नहीं है । अतः समाज में व्यर्थ विद्रोह होगा तुम्हारी फजीहत एवं हमारी निन्दा होगी, और आना जाना कुछ नहीं । इससे अच्छा है तुम घर में ही आत्म साधना करो ।

माताजी ! आपका कहना ठीक है पर मुझे तो आपके चरणों में

बैठकर आत्म साधना करनी है। आप मात्र इतना कह दें कि मैं आप के उपयुक्त हूँ अथवा नहीं। आगे सारी परिस्थिति मैं स्वयं सम्भाल लूंगी। आपको तो मात्र मुझे स्वीकारना पड़ेगा।

पुण्य श्री जी म० ने उत्तर दिया कि—"यदि तुम्हारे पति और सास, तुम्हें सहर्ष दीक्षा देने की प्रार्थना करेंगे तो मैं तुम्हें अवश्य संयम प्रदान करूंगी। किन्तु उनसे कहना तूं तूं मैं मैं करवाना यह हमारा काम नहीं।

मैंने आप से मदद नहीं मांगी, मेरा आशय मात्र अपनी योग्यता जानने पूरता ही था। परिवार से मैं स्वयं निपट लूंगी।

"जाओ गुरुदेव तुम्हें अपने प्रयत्न में सफलता प्रदान करें। पर आज्ञा इतने सुन्दर ढंग से लेना जिससे समाज में तुम्हारी अथवा हमारी निन्दा का प्रसंग उत्पन्न न हो।

आपके समागम से पहले ही मेरे विचार ऐसे थे। आपके प्रवचनों से इन विचारों में दृढ़ता आई है। मेरी भावनाओं में प्रकाश भरा है, जो अब अंधकार नहीं बन सकता।

स्वयं बुद्धा, वैराग्य वासिनी के ऐसे वचन साध्वी जी को प्रभावित किये बिना न रहे, उन्होंने फिर कहा :—

बाई ! दीर्घ दृष्टि से काम करना, आगे पश्चाताप करना पड़े ऐसा मत करना। आवेश में आकर कोई भी काम नहीं करना क्योंकि आवेश में आकर किया काम आवेश समाप्ति पर मानव को बड़ी विकट स्थिति में डाल देता है। अभी मात्र १८ वर्ष की युवावस्था है यौवन बहुत शेष है। सोच समझ कर कदम उठाना।

सुन्दरबाई ने साध्वी जी को वन्दना की और कहा :—

माताजी ! मेरी यह प्रतिज्ञा रही कि जब तक सयम की सहर्ष आज्ञा नहीं प्राप्त होगी तब तक मै आपके दर्शनार्थ नही आऊँगी।

सुन्दर बाई के सामने जो सघर्ष उपस्थित हुआ उसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। सास और पति किसी भी तरह राजी नही हो रहे थे। सास ने रो-रो कर नेत्र लाल कर लिये, खाना पीना त्याग दिया। पति खिन्न और उदास रहने लगे, वे सुन्दरबाई को त्यागने के लिए तैयार नही थे। पर सुन्दरबाई का वैराग्य श्मसान वैराग्य नही था सच्चे वैराग्य की अदम्य शक्ति उनके पास थी। अत मे आपके वैराग्य का प्रभाव पडे बिना न रहा। पति व सास दोनों मान गए, उन्हे अपने अनुकूल बनाने मे सुन्दर बाई को काफी मुसीबत उठानी पडी, पर अन्त मे वे उन्हें अनुकूल बनाने मे कृतकार्य हो गई।

पति के लिये अपने मन पसन्द की लडकी भी उन्होने खोज दी। सास को बहू भी ला दी। पश्चात् पति को लेकर उपाश्रय मे आर्यारत्न पुण्यश्री जी म० के पास पधारी और आज्ञापत्र चरणों मे रख कर स्वय चरणों मे गिर पडी।

वास्तव मे आज्ञा प्राप्ति इसीका नाम है। रो रो कर, खाना पीना त्यागकर, क्लेश कषाय मचा कर घरवालों को परेशान कर दीक्षा लेना, सही मार्ग नहीं, इसमें वैराग्य की कमजोरी ही निहित है। स्वयं निन्दा पात्र बनती है। गुरुजनों को बनाती है। यह

आचरण दीक्षार्थी के योग्य नहीं। संयम भावों में प्रभाव चाहिए, सीना जोरी नहीं।

पीहर समाचार गए, माताजी का स्वर्गवास हो चुका था, बड़ी मां खूब रोई भाई आदि बड़े दुखी हुए पर जाने वाला कब रुका है। जिसे पति प्यार न बांध सका मां जैसी सास नहीं रोक पाई उस वैराग्य ज्वाला को अन्य कौन रोक पाने में समर्थ होता।

प्रतापमल जी साहेब की प्रार्थना पर साध्वी जी म० ने दीक्षा का मुहूर्त निकलवाया। पंडित मुहूर्त निकाल रहा था, प्रतापमल जी के नयन श्रावण भादो बन रहे थे। सास का हाल बेहालथा। पर सुन्दर बाई का प्रबल पुण्य उन्हें सहयोगी बना रहा था।

वि० सं० १९४६ मिगसर सुदी ५ बुधवार का मुहूर्त निश्चित रहा, और इसी शुभ दिन में धूमधान के साथ प्रातःकाल गौतम लग्न में हमारी सुन्दरबाई साध्वी दीक्षा लेकर गुणानुरूप सुवर्ण श्री जी (सोहन श्री जी) के नाम से प्रख्यात हुई।

इसी समय पुज्या पुण्य श्री जी ने प्रश्न किया कि—"तुम्हें किस की शिष्या बनाया जाए ? आप ने बड़ा ही सुन्दर उत्तर दिया :—

मातेश्वरी। मुझे आम खाने से काम है न कि पेड़ गिनने से ? मैंने संयम आत्मकल्याण के लिए लिया है। और आत्मकल्याण मानव के स्वयं के पुरुषार्थ पर निर्भर है। अमुक गुरु की शिष्या बनने से ही आत्म कल्याण होगा, ऐसा किसी भी धर्म में सिद्धान्त नहीं है। हाँ गुरु की योग्यता अवश्य देखी जानी चाहिए। गुरु मार्ग दर्शक का काम करते हैं, गलत मार्ग पर जाने से बचाते है, अतः सद्-

जैन-कोकिला

प्रवर्तनी महोदया

१००८ श्री पुण्य श्री जी म० सा०

गणाधीश्वर

१००८ श्री सुखसागरजी महाराज सा०

गुरु के आलम्बन की परम आवश्यकता है। किन्तु अमुक की शिष्या बनूंगी, अमुक की नही यह मिथ्या धारणा है, असदमोह एव खतरनाक दृष्टि राग है। मैंने अपना जीवन आपको सौंप दिया अब आप की इच्छा हो उसी की शिष्या बना दे।

पुण्य श्री जी म० ने आपको सभा समक्ष अपनी योग्यतम शिष्या श्री केसर श्री जी म० की शिष्या घोषित किया। आपने भावपूर्ण हृदय से केसर श्री जी म० को वन्दना कर गुरु स्वीकार किया।

दीक्षा पश्चात् आप गुरुणी जी के साथ नागोर से बीकानेर पधारी यहाँ आपका अध्ययन शुरू हुआ। साधु विधि, चारो प्रकरण, ५०० श्लोक वाली सग्रहणी आदि आपने इस प्रथम चतुर्मास मे सम्पूर्ण किए। आप की बुद्धि बडी तीक्ष्ण थी। स्मरण शक्ति के साथ २ विचार, चिंतन, मनन भी आपका असाधारण था। ज्ञान के साथ क्रिया एव तप से भी आप को बडा ही अनुराग था। प्राय॰ ज्ञान के साथ क्रिया का सुमेल मुनि सम्प्रदाय मे कम ही दृष्टि गोचर होता है। इस प्रथम चतुर्मास मे आपने १७ उपवास की तपस्या की। आप को मौन एव ध्यान से भी बडा प्रेम था। और ये दोनों ही क्रियाएं आत्म शक्ति को सबल बनाने वाली हैं।

दूसरा चौमासा फलोदी मे हुआ। वहाँ श्रीमद् ऋद्धिसागर जी म० के सयोग मे आपने सस्कृत व्याकरण एव सूत्र वाचन का अभ्यास किया एव २१ उपवास की तपस्या की। प्राय तपस्वी पढ़ते कम ही है, और पढने वाले तप से दूर भागते है। क्रियात्मक विद्यार्थी-जीवन

कम ही पाया जाता है। आपकी योग्यता चन्द्रकला सी प्रतिदिन बढ़ने लगी। गुरुभक्ति, विनय, सेवा भी आप में खूब थी।

आप पुनः गुरुणी जी के साथ नागोर पधारी, इस वर्ष भी ज्ञानाभ्यास के साथ-साथ आपने १६ उपवास किए। चौथा चौमासा ब्यावर पांचमा फलोदी ६ पालीताना में शत्रुंजयगिरी की छाया में व्यतीत किया, यहाँ आपने सिद्धी तप की आराधना की। १५--११—१०--६ उपवास एवं ३ अठाइयाँ की। ७ वाँ चौमासा पाटण ८वां पालनपुर ६वां फलोधी १०वां पुण्य श्री जी म० की आज्ञा से उनसे अलग बीकानेर में व्यतीत किया ११ वां जोधपुर उनके साथ में इस प्रकार लोहावट रतलाम आदि स्थानों में आप के चतुर्मास बड़े ही शानदार ढंग से हुए, सभी चौमासे आप के एक एक से बढ़कर हुए। शासन सेवा के साथ-साथ आत्म सेवा भी आपने खूब की, नियमित ६-७ घंटे मौन ध्यान आपका नियम था। किसी से भी व्यर्थ बातें आप नहीं करतीं, काम से काम आपका स्वभाव था।

आपका २२ वाँ चौमासा भाई के आग्रह पर जन्मभूमि अहमद नगर में हुआ। पश्चात् पूना, पश्चात् बम्बई ये सभी चौमासे शानदार रहे। प्रायः प्रत्येक चतुर्मास में २, ४—७, ८ दीक्षाएं आपके हाथों होती ही। आप जब दीक्षित हुई थी समुदाय में मात्र १५—२० साध्वी जी थीं किन्तु आपने उस संख्या को १५० तक पहुँचा दिया।

समुदाय में पहले पण्डितों द्वारा पढ़ने की प्रथा नहीं थी। किन्तु जब साध्वियों की संख्या बढ़ने लगी और बिना पढ़ाई धर्मप्रचार के कार्य में स्थान स्थान पर व्यवधान उपस्थित होने लगा। तब आपने

पुज्या गुरुणी जी से निवेदन किया कि—"विना ज्ञान सयम साधना भी चाहिए वैसी नही होती, और धर्म प्रचार भी नही, होता। केवल चुल्हा, वेलन चक्की त्याग कर गोचरी मांग कर खाने का नाम ही तो सयम नही है। यथार्थसयम पालन के लिए ज्ञान की परम आवश्यकता है। अत• आप श्री साहस करके पण्डितों द्वारा हमारी साध्वियों के पढने की व्यवस्था करने की कृपा करें तो वडा ही अच्छा हो।

आपकी समयानुकूल इस उचित माग के लिए मना हो ही कैसे सकती थी। गुरुणीजी ने इसे शीघ्र ही कार्यरुप मे परिणत कर दिया। परिणाम स्वरूप अनेकों साध्वियों ने प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा की सस्कृत परिक्षाएं अच्छे अंकों से पास की। अव तो आपका साध्वी मण्डल काफी विद्वान हो गया, सूत्र का अभ्यास भी सस्कृत प्राकृत ज्ञान के कारण सरल हो गया। समुदाय का ज्ञान सितारा चमकने लगा।

आपकी प्रवचन शैली वडी ही रोचक एव प्रभावशाली थी। प्रवचन मे लोगों की भीड लगी रहती, आपके उपदेश का असर भी वहाशीघ्र होता। वम्बई से आप सूरत पधारी और सूरत से गुरुणीजी की तवियत खराव के समाचार मिलने से आप सीधी जयपुर आकर ठहरी।

आपकी चारों ओर प्रसरी यश सुगध एव शासन सेवा की वज-रही दुंदुभी गुरुणीजी के मन को प्रसन्न कर रही थी। आप जहां पर पधारीं वहां से वाहवाही लेकर ही लौटी। पुज्य श्री जी आप जैसी

सुयोग्य शिष्या पाकर अपनी उत्तरा अवस्था में संघ एवं आर्यामण्डल की चिन्ता से सर्वथा मुक्त वनीं।

गुरुणीजी की बीमारी में आपने तन मन से खूब सेवा की और उनका खूब आशीर्वाद पाया। उस समय वहाँ ४०-४५ के करीब साध्वियाँ थी सभी गुरुणीजी की बीमारी के कारण खिन्न थीं। संघ भी उदास था। क्योंकि आज पुण्य सितारा आस्ताचल के किनारे पर चमक रहा था। मन को मजबूत बनाकर संघने गुरुणीजी से पूछा :—

आपके पश्चात् इस पाटका अधिकारी कौन होगा, और हमारी संभाल कौन करेगा ? गुरुणीजी ने कहा :—

तुम सब को सुवर्ण श्री जी संभालेंगी चिन्ता की क्या बात है, ये पूर्ण योग्य है। इन्हें पाकर मैं पीछे की चिन्ता से मुक्त बन गई हूँ।

पुण्य श्री जी के स्वर्ग पश्चात् आपने समुदाय का भार इतनी योग्यता से संभाला कि किसी के मन में गुरुणीजी के अभाव को नहीं खटकने दिया। संघ ने जबरदस्ती आपको गुरुणी जी के पाट पर बैठाकर चादर उढाकर प्रवर्तनी पद से भूषित किया।

जयपुर मोहनबाड़ी में गुरुणीजी का दाह संस्कार किया गया, वहाँ आपने उनका स्मारक बनवाया।

समस्त साध्वी समुदाय आप पर तन मन न्योछावर करती थीं। यह चतुर्मास सभी का शोकमय व्यतीत हुआ। जयपुर का चौमासा व्यतीत कर आप घसीटामल जी बोहरा के अत्यन्त आग्रह एवं गुरुणीजी के इशारे पर देहली पधारों। देहली में आपने वीरस्त्री

पाठशाला की स्थापना करवाई चौमासे मे बहुत ही ठाट बाट रहे। धर्मप्रचार हुआ। देहली से हापुड पधारी वहा आपके उपदेश मे सेठ मोतीलालजी बोरड ने सुमतीनाथ भगवान का मन्दिर एव दादा वाडी का निर्माण करवाया। हापुड धर्म भावना एव धर्मज्ञान से सर्वथा ही अनभिज्ञ था वहा आपने धर्मबीज बोए। पश्चात् हाथरस, धनवल्पुर आदि गावों शहरों मे विचरकर धर्मप्रचार करती आप आगरा पधारी।

यों तो आपको श्वास की बीमारी लगी ही थी कब्ज भी रहता था। किन्तु यहा परिश्रम अधिक पडने से बीमारी कुछ जोर दे रही थी। शोरिपुर तीर्थ के जीर्णोद्धार कार्य की प्रेरणा आप कर रही थी, और इसे पूरा कराने मे आपको अथक परिश्रम पड रहा था। देह चिन्ता छोड आपने इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया।

पश्चात् लक्ष्मीचन्द जी वैद का अपूर्व उद्यापन हुआ, सोरीपुर तीर्थ मे लश्कर वाले सेठ नथमल जी गोलेछा ने नवमदिर बनवाया था, उसकी प्रतिष्ठा महोत्सव भी हुआ। आगरा से आपका विचार आगे बढकर सम्मेत शिखर-पावापुरी आदि तीर्थों की यात्रा करने का था। रायबद्रीदास जी के परिवार का कलकत्ते पधारने के लिये आग्रह भी खूब था, किन्तु शारीरिक परिस्थिती वश आप का वापिस हापुड लौटना पडा। यहा एकान्तवास व मौन का समय अधिक मिलने से आप बडी प्रसन्न रहती। हापुड से देहली पधारी। अब आपने जाप, ध्यान, मौन का समय और बढाया करीबन १२ घन्टे का समय आप इसी मे पसार करने लगी। प्रमाद आप मे पहले ही नहीं था, अब

तो और भी अप्रमत्त रहने लगी। बीमार शरीर, वृद्धावस्था फिर भी आप रात में दो बजे उठ जाती शरीर निर्बल होने पर भी आप का आत्मबल बड़ा ही सबल था। अब आपकी शक्ति विहार योग्य नहीं रही थी, परन्तु एक स्थान पर बैठने की इच्छा न होने से आप धीरे धीरे चलकर जयपुर पधारीं, जयपुर में आप के दो चतुर्मास हुए शारीरिक कारण के साथ-साथ अन्य भी कारण थे।

पुराने जमाने की होने पर भी आप के विचार बड़े ही नवीन थे, वर्तमान समय को देखकर आप का विचार ऐसा था कि मुनि जीवन में बंधन अधिक हैं, व कठिनाइयाँ भी कम नहीं। आजकल लोगों का शारिरिक बल एवं मानसिक बल क्षीण होता जा रहा है। अतः अब पूर्ण वैराग्य से यथार्थ संयम का पालन एवं पर-कल्याण बराबर नहीं बन पाता। अतः कोई ऐसी संस्था की स्थापना हो जिसमें रहकर दीक्षार्थी बहने खूब पढ़ें पश्चात् यदि उनकी भावना दीक्षा की हो तो उन्हें दीक्षित करें। समाज सेवा की भावना हो वे समाज सेवा करें। कोई योग्यतम निकले तो उसे धर्मोपदेशिका बनावें और उच्च से उच्च शिक्षा देकर उसे तैयार करें, पश्चात् विदेशों में अथवा अन्यत्र धर्मपरिषदों का आयोजन हो, और साधु, साध्वी पहुँचने में असमर्थ हों, वहाँ जैनधर्म की प्रतिनिधी बनाकर धर्म प्रचारार्थ भेजा जा सके।

समाज में विधवाओं की दशा दयनीय थीं, अतः ऐसी स्त्रियों के लिए आप के हृदय में बड़ी करुणा थी। ऐसी बहनों के लिए एक आश्रम की स्थापना कर उन्हें शिक्षित किया जाए और वे अपना

जीवन सुख से व्यतीत कर पाएं। अतः आपने अपने विचार सघ के समक्ष प्रस्तुत किए सघ ने भी आपके उपदेश को मानकर "श्री जैन श्वेताम्बर श्राविकाश्रम" एव कन्या शाला की स्थापना की। पाठशाला तो आज भी चल रही है। पर श्राविकाश्रम कुछ वर्षों वाद समाज का सहयोग न मिलने से चल न सका। हमारे समाज का ढाचा बडा ही खराव हैं। घर में भले नारियो को वहू वेटियों को हम पेट भर खाना भी न देवे, भले सारादिन गाली गलौज कोसने में ही व्यतीत करें, पर किसी सस्था में उमे शान्ति पूर्ण जीवन यापन करते देख हमारे समाज के कर्णधारों की नाक कट जाती हैं। अत॰ कइयों ने साहस कर वहू बेटी को भेजा भी पर समाज के पूर्ण सहयोग विना चाहिए वैसा यह कार्य न वन सका। आप की वृद्धा वस्था थी इतनी ताकत आपके शरीर मे न थी। उत्साह अदम्य था पर केवल उन्साह से काम नही वनता। आज यह आश्रम "जैन वीर वाल्का विद्यालय" के नाम से चल रहा है। अच्छी उन्नति कर रहा है किन्तु वह ध्येय समाज के सहयोग विना पार न पड सका।

जयपुर से आप तेजकरण जी लूणकरण जी सेठिया के आग्रह पर बीकानेर पधारी उनके वीसस्थानक तप का उद्यापन करवा कर एव चतुर्मास पूर्ण कर आपने विहार किया, पर अब शरीर ने उत्तर दे दिया, अत बीकानेर से तीन कोस दूर उदरामसर में श्रावकों की प्रार्थना पर ठहरी। उदरामसर में उपाश्रय का जीर्णोद्धार हुआ, कुन्थुनाथ स्वामी का नया मदिर वना, प्रतिष्ठा हुई। वहा से आप

पुनः बीकानेर पधारीं। आप की इच्छा विहार की बहुत थी पर अब शरीर ने जवाब दे दिया था। बहुत जगह से आप को चतुर्मास की प्रार्थना आती पर आप विवश थी।

देहली वाले केशरीमल जी बोहरा की अपने उद्यापन पर देहली पधारने की बहुत प्रार्थना थी किन्तु आप अब विहार योग्य नहीं थी अतः अपनी योग्यतम शिष्या श्री जतन श्री जी म० को देहली भेजा।

अब आपके शरीर की हालत दिन प्रतिदिन शोचनीय होती जाती थी वृद्धावस्था का पूर्ण प्रभाव था। श्वास की व्याधी जोर पकड़ रही थी ४२ वा चतुर्मास बीकानेर में व्यतीत हुआ। आपने आनन्द सागर जी म० को बीकानेर पधार कर दर्शन देने की प्रार्थना की, दूसरा चौमासा आप का आनन्द सागर जी म० के साथ बीकानेर में वि० स० १९८८ की साल का हुआ। ८९ की साल में आपने विहार की बहुत कोशिश की पर शरीर ने मन का साथ देने से स्पष्ट इन्कार कर दिया, अबतो दो कदम चलाना भी भारी हो गया था।

जीवन का अन्तिम वर्षावास ४३वां चतुर्मास आपको बीकानेर में व्यतीत करना पड़ा, मनकी भावना एक भी काम न आई, भावी का किया सब हुवा। यह चतुर्मास सारा ही ध्यान, मौन जाप, आत्म साधना में व्यतीत हुआ। भयंकर अशाता, असीम वेदना को आपने बड़ी ही जागृति के साथ वेदा। कभी उफ तक मुंह से न निकाला

प्रतिपल अर्हं का जाप चलता। आप सोचती कर्म बन्धन जो पूर्व में किए है वे शान्ति से भोगने पर ही खत्म होंगे। हायतोबा मचाकर नए कर्मबन्धन कर कष्ट बढ़ाना मुनिको इष्ट नहीं। आने

दो ! जो भी वेदना आवे, आने दो ! इससे घबराना कैसा, अच्छा है कर्ज चूक रहा है आत्मा हल्का होता है। इस प्रकार ज्ञानपूर्ण विचारों मे आपने जीवन की अन्तिम समय की व्याधी को सहर्ष भोगा।

आपके जीवन मे सादगी का पूर्ण साम्राज्य था, कभी तन पर खादी एव देशी ऊन के वस्त्र सिवाय अन्य वस्त्र नही डाला, विदेशी किसी भी वस्तु का आपने व्यवहार नही किया। उदारता की सीमा नही थी। दया का भण्डार भरा था। नारी-जाती की दयनीय दशा की आपको भारी चिन्ता थी और उसके उत्थान के लिये आप जब तक जीवित रही, प्रयत्नशील रहीं। उदासीन वृत्ति, सयम-साधना, वैराग्य-भावना पराकाष्ठा पर थी। परोपकार सरलता, निष्कपटता, विद्या प्रेम आदि अनेकों गुण आप मे मौजूद थे और यही सब शिक्षा आप अपनी १५० शिष्याओं को दिया करती थी। माँ का असर बेटी मे आए बिना नही रहता तो गुरु का ज्ञान शिष्य मे आए बिना नही रहता। यही कारण है कि आपकी सभी शिष्याएँ आप के गुणों से विभूषित हैं। हमारी चरित्र-नायिका भी आप की प्रिय शिष्याओ मे एक थी। अत: आपने अपने ज्ञान का, अपनी साधना का एव अपने अधूरे रहे कार्यों का समस्त उत्तरदायित्व आप को ही सौंपा था। हमारी चरित्र-नायिका ने किस शान के साथ अपनी गुरुणीजी के स्वप्नों को साकार करने की ठानी, यह हम आगे देखेंगे।

आश्विन मास से आपकी व्याधी ने और जोर पकड़ा। जुखाम बिगड कर ज्वर आने लगा, साथ मे अतिसार भी हो गया। शरीर की स्थिति बद से बदतर होती गई, आतमबल, आत्मविश्वास बढ़ना

गया। माघ वदी अष्टमी के दिन संघ समक्ष साधु आलोयणा यानी साध्वाचार के नियम प्रतिकूल जान-अनजान में बने आचार के लिये प्रायश्चित्त किया।

माघ कृष्णा ६ के दिन समाधिस्थ, अर्हं पद के ध्यान में लीन आपने चित्त को एकाग्र बनाया। शरीर निसत्व होने लगा। शिष्या-मण्डल विकल आपको निहार रहा था। सभी निकट में बैठे थे, पर सभी के सामने, सभी के बीच से काल ने इस जगमगाते निर्मल स्वर्ण को झपट लिया। हमारी चरित्र-नायिका की परम साधनाशील गुरुणी-जी का स्वर्गवास हो गया। उपाश्रय का हाहाकार नगर में फैल गया, लोगों के झुण्ड-के-झुण्ड इधर दौड़ पड़े। सब से छोटी शिष्या हमारी चरित्र-नायिका ही थी, इनकी वेदना का क्या पार। मरते सभी हैं, मरना भी सब को है, पर पण्डितमरण, समाधीमरण विरलों को ही प्राप्त होता है।

नवकार मन्त्र का जाप आपने क्रोड़ों की संख्या में किया। क्रोड़ों ही जाप ऋषि-मण्डल के किए। सिद्धचक्र, अर्हंन् पद एवं सीमन्धर स्वामी के जाप की तो संख्या ही नहीं थी। प्रायः पहरदिन बिना आपने आहार नहीं किया। तपस्या में भी कोई कमी न रखी। प्रायः सभी पर्व उपवास से आराधे। स्वाध्याय ध्यान की भी कमी न रखी, सभी साधनाएँ खूब ही की। परमत्यागमय आदर्श-जीवन व्यतीत कर शासनसेवा करते हुए भी आत्मसेवा, आत्म-साधना को सदैव प्रधानता दी। ऐसा ज्ञान-क्रियापूर्ण जीवन हमें क्वचित ही सुलभ होता है। ऐसी थी हमारी चरित्र-नायिका की गुरुवर्य्या।

७—इच्छा-पूर्ति

जहा चाह होती है, वहाँ राह भी होती ही है। महापुरुषों के मनोरथ कभी भी निष्फल नही रहते।

राजस्थान मे आज भी ऐसी प्रथा है कि विधवा होने के पश्चात् सर्वप्रथम लडकी अपने पिता के घर ही जाती है, तत्पश्चात् अन्यत्र गमन सम्भव होता है। रूपा बाई के समक्ष भी वह अवसर आया। पीहर से बुलावा आया, जाना भी जरूरी था। इसी बीच आपने यह भी पता लगा लिया था कि पू० स्वर्ण श्री जी म० जयपुर मे हैं। उपर्युक्त प्रथानुसार आप पीहर गई। पश्चात् आपने ससुर जी से निवेदन किया कि मेरी इच्छा अपनी बहन आर्यारत्न श्री सुवर्ण श्री जी के दर्शनार्थ जयपुर जाने की है।

अनुभवी दादाजी का माथा ठनका, मन मे सकल्प-विकल्पों का सघर्ष मचा, आज यह बहन कहाँ से आ टपकी। आज तक जिसका नाम ही नही सुना उसके दर्शन की इतनी उत्सुकता निष्प्रयोजन तो हो नही सकती ? इसके अन्तर मे दीक्षा की भावना तो नही ? पुत्र को यमराज ने छीन लिया, क्या यह जीवित ही छोड जाने को उद्यत है ? इस प्रकार दादाजी के हृदय मे शका-आशकाओं का अम्बार लग गया। मन भेजने को तैयार नही था। इधर पुत्रहीन पुत्रवधु की इच्छा पर कुठाराघात करना भी इष्ट नही था। जाने से मना करने पर यह अपने को सर्वथा निराधार, असहाय समझ कर दुखी होगी। जाने दिया तो संभव है लौट कर न आए, यदि लौट भी

आई और दीक्षा का बखेड़ा लेकर आई तो क्या होगा ? समस्या विकट थी, समाधान कठिन था। विचार-विचार में थोड़ा समय और बीता पर समस्या तो समस्या ही बनी रही। अन्य कोई भी मार्ग न मिलने से विवश शीघ्र लौट आने की आज्ञा के साथ रूपां बाई को जयपुर जाने की अनुमति देनी ही पड़ी। कर्तव्य की मजबूत शृङ्खलाओं में आबद्ध मानव कभी-कभी अपने अन्तर की आवाज व मन के विपरीत आचरण करने के लिये मजबूर हो जाता है।

दाखी बाई भी माँ के साथ जाने के लिए मचलने लगी। बाल-हृदय में यात्रा की उमंग के साथ मौसी के दर्शनों के मनोरथ भी भरे थे। दादाजी बेचारे क्या करते ? उनके करते कुछ भी नहीं बन रहा था। दाखी बाई को भी हारकर भेजना पड़ा।

भावी अपने पैर पसार रही थी। भावी के प्रभाव में विवश बना अनुभवी मानव बहा जा रहा था। उसे क्या पता था कि यह जयपुर गमन पुत्रवधु के साथ-साथ दाखी को भी उसकी गोद से छीन संन्यास मार्ग पर आरूढ़ करा देगा। दाखी संन्यासिनी बनेगी ऐसी तो कल्पना ही नहीं की गई थी। उन्हें चिन्ता तो पुत्रवधु की थी, और भावी दाखी को भी छीनने के प्रयत्न में थी। माँ बेटी को बिदा कर थके-से दादाजी घर आए, पर दाखी बिना उनका घर काटने दौड़ रहा था।

इधर माँ के साथ-साथ दाखी बाई ने जयपुर के उपाश्रय में प्रवेश किया, न संकोच, न लज्जा, न भय-भीरुता, मानो अपना ही घर था, अपने ही लोग थे। दाखी बाई तो वहाँ साध्वी समुदाय को वन्दना, नमस्कार कर अपनी बाल-सुलभ मनोहारी सुषमा बिखेरने लगी।

मीठी-मीठी बातें सुसंस्कारी चपलता, विनम्र-मुद्रा, लपक-लपक कर इधर से उधर, उधर से इधर घूमने लगी। मानों यह स्थान उसके लिए चिर-परिचित अपना ही स्थान हो। दो-चार दिनों के सम्पर्क मे ही दाखी बाई ने समस्त साध्वी मण्डल के हृदय को जीत लिया। आगन्तुक भक्तों की दुलारी बन बैठी।

नव दीक्षित साध्वियो को पढाने के लिए पंडित आते, और दाखीबाई तैयार होती अपनी स्लेट, पुस्तक के साथ। पण्डितजी भी इस बुद्धि वैभव सम्पन्ना बालिका को पाकर प्रसन्न हो गए। खूब प्यार से पढाते। पण्डितजी अपने ज्ञान का पीयूष भर भर प्याले देते गए और दाखीबाई पीती गई। वास्तव मे जिनके पास बुद्धिबल होता है उनके लिए सभी कार्य सहज होते।

८ पालीताना की यात्रा ताऊजी का अवसान

जयपुर मे दो महीने तक आप रहीं, उपाश्रय के पास ही एक मकान लेकर माँ बेटी ने अपनी व्यवस्था जमाली पठन पाठन एवं शयन की व्यवस्था उपाश्रय मे करली गई। यहाँ पर आपको सभी साध्वी जी म० का प्यार मिला। आप सवेरे धार्मिक अभ्यास करती, दो पहर मे "श्री जैन पाठशाला" जिसकी स्थापना यहाँ के संघ के प्रमुख दीवान गोलेछा मानकचन्द जी लक्ष्मीचन्द जी गलीचे वालों की पुत्री इन्द्रबाई कोठारी ने पूज्या सुवर्ण श्री जी म० की प्रेरणा से अपनी हवेली (मकान) मे ही की थी जिसका संचालन उनके पुत्र पूनमचन्द जी करते थे। उसमें पढ़ने जाती थी। दो मास मे दो भाग कन्यावागिनी के सारे समाप्त कर लिए।

इधर दादाजी व ताऊजी के बुलाने के पत्र एक पर एक आने लगे थे। अतः अब घर लौट जाना आवश्यक था। रूपाबाई पीपाड़ लौटने की तँयारी करने लगी। पर दाखीबाई का मन वहाँ से हटने का जरा भी नहीं था। उनकी माँ से यही मांग रही "माँ मुझे यहीं छोड़ जाओ" मेरा मन घर जाने का नहीं है। पर माँ का मन छोड़कर जाने का नहीं था। अतः जाने के प्रथम दिन सायंकाल से ही आप आलमारी के नीचे छिप गई और वहीं पर नींद भी आगई। चान्दनी रात के प्रकाश में श्री कल्याण श्री जी म०, मनोहर श्री जी म०, आदि बाल साध्वियाँ सिद्धान्त कौमुदी व्याकरण का अध्ययन कर जब रात्रि में आलमारी के पास सोने की तय्यारी करने लगीं और निद्राधीन दाखी बाई के पैर को हाथ लगा तब सब को पता चला कि दाखी यहाँ विराजमान है। दाखीबाई भी आंखे मलती इधर उधर देखती हुई विचारने लगीं कि अब तो अपन पकड़ाई में आगए अतः कोई दूसरा ही उपाय रहने के लिये करना होगा। तत्काल बुद्धिसम्पन्ना दाखीबाई के मस्तिष्क में तुरंत एक विचार आया और बोली :—

अरे! महाराज साहेबा के दर्शन तो कर लेने दो, और दौड़कर श्री सुवर्ण श्री जी के पास चली गई। वहाँ जाकर कहा :—

"मुझे यहाँ ही रख लीजिए, मेरा मन यहाँ से जाने का नहीं है, मैं आप के पास रहूँगी। सुवर्ण श्री जी ने माताजी से कहा :—

इसे छोड़ जाओ मन लगेगा तब तक रहेगी न लगेगा तो आदमी के साथ भेज देगें तुम जाओ।

रूपाबाई आपको छोड़कर जाना नहीं चाहती थीं, पर श्री सुवर्ण

श्री जी के सामने मना भी नही कर पाती थी। अतः मनमसोस कर जाने को तैयार हुई। तांगा आया, रूपा वाई का सामान चढने लगा, दाखीवाई अपने कपडों की गठरी लिये मा का जाना आनन्द से देख रही थी।

रूपाबाई को पहुँचाने के लिये धर्मशाला मे काम करने वाले बासाव जाने वाले थे, सभी ने कहा :—

दाखी। बासाव के साथ साथ स्टेशन तक तो माँ को पहुँचा आओ। दाखीबाई बातों मे आगई, उन्होने सोचा कपडे तो मेरे पास है, इन्हे उपाश्रय मे रख दूं, और माँ को पहुँचा आऊँ। अतः तुरन्त कपडे उपाश्रय मे रखकर तागे पर बैठ गई। भोली बालिका यह नही सोच सकी कि बासाव तो माँ के साथ जानेवाले हैं, मैं स्टेशन से किसके साथ लौटूगी। दाखीबाई माँ की चाल मे फँस गई और रोतेधोते ठेठ पीपाड पहुँच गई। किसी प्रकार दिन बीतने लगे, पर मन तो गुरुवर्य्या के पास मडगता रहा। जैसे-तैसे थोडा समय पीपाड मे पसार कर माँ वेटी ने दादाजी से पालीताना जाने की आज्ञा मांगी। दादाजी दु:खी बहुको इन्कार नही कर पाए, और ये दोनों पालीताना चली गई। चतुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ, रूपाबाई ने सूत्र तपस्या की १६ दिन का निराहार व्रत भी किया। पश्चात् नवाणु यात्रा शुरू की, परन्तु पालीताणा आए समय काफी हो जाने से अब दादाजी व ताऊजी के पत्र ऊपराऊपरी घर आने के लिए आने लगे। अतः अब आपके लिये पीपाड लौटना अनिवार्य हो गया था।

आप पीपाड पधारी इसी दरम्यान ताऊजी श्री चुनीलालजी अधिक

बीमार हो गए, यों श्री मिश्रीमल जी के देहान्त पश्चात् आपका स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता ही जा रहा था। अनेक उपचार करने के बावजूद भी भावी के इस अटल लेख को मिटाने में सभी असमर्थ रहे और अमरावती में हमारी दाखी बाई के ताऊ जी श्री चुन्नीलाल जी का स्वर्ग वास हो गया। संयोगवश दादा जी भी पुत्र की बीमारी सुनकर तत्काल पीपाड़ से रवाना हुए परन्तु पुत्र मिलन की लालसा-लालसा ही रही, वे मार्ग में ही रहे, और पुत्र चल बसा। मृत्यु का संदेश आए बाद प्राणी एक सेकेण्ड भी रुक नहीं सकता। दुखी परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। परिवार व शहर में हाहाकार मच गया, दोनों पुत्रों का निकट में अवसान दो-दो पुत्र वधुओं का वैधव्य, दो दो पुत्रियाँ पहले ही विधवा बैठी थी। दादा जी के शोक संतप्त हृदय का वर्णन किस लेखनी से किया जाए। पर स्वयं संचालित इस कर्म तंत्र के विधान के समक्ष आज तक मानव परास्त रहा है। इसकी अटल व्यवस्था में जरा भी फर्क नहीं आया। हमारा विज्ञान भी मरण पर विजय पाने में असमर्थ है। विज्ञान ने मानव को आकाश में पक्षियों की तरह उड़ाया, सागर के वक्ष पर मछलियों सा तिराया, उसके लिये सभी सुख साधन जुटाए, परन्तु इस मृत्यु नागिन के डंक से मानव को बचाने में विज्ञान भी असफल रहा, और इससे न बचा पाया तो आज सभी साधन-भौतिक सुख सामग्री व्यर्थ रही। मानव की अन्तर्दाह मिटी नहीं मानव निर्भय सुख भोग नहीं पाता। एक दिन सभी साधन, परिजन छोड़ उसे जाना ही पड़ता है। संसार में उसका अपना कोई नहीं जो साथ जा सके। दादा जी व परिजन

शोक सतप्त तड़पते रहे और जाने वाला बिना कुछ कहे चला गया। कितनी विवशता, कितनी निरीहता।

रूपाबाई भी दाखीबाई के साथ अमरावती आई, रास्ते मे अजमेर मे श्री सुवर्ण श्री जी म० की शिष्या जतन श्री जी म० के दर्शन भी करती आई। कई महीने दुखी परिवार के बीच व्यतीत कर माँ बेटी पुन. पीपाड लौटी।

६—यात्राओं में

इस समय पू० जतन श्री जी म० फलौदी मारवाड मे विराजमान थीं, व उनके समाचार आए कि पूज्य गणाधीश्वर हरिसागर जी म० सा० एव साध्वी वर्या श्री रतन श्री जी म० प्रसन्न श्री जी म० आदि के सानिध्य मे श्री जेसलमेर का सघ श्रीमती राधाबाई निकाल रही हैं अत तुम लोग भी यात्रा करने के लिये आ जाओ। दादा जी की आज्ञा प्राप्त कर माँ बेटी फलौदी आई और सघ के साथ खूब ही आनन्द पूर्वक इस कठिनतम मार्ग पर स्थित महान तीर्थ की यात्रा कर वापिस सघ के साथ फलौदी लौटी, एव आसपास के गावों के मदिरों के दर्शन किए।

यहाँ पर पूज्या जतन श्री जी म० को पीपाड के लिए चतुर्मास की प्रार्थना की गई और सवत १९७८ का चतुर्मास श्री जतन श्री जी म० का पीपाड मे ही निश्चित हुआ। इस ससर्ग मे आप की वैराग्य भावना को और बल मिला कहावत है कि—"सग जैसा रग"। पीपाड़ मे आप के तीन चार मकान होते हुए भी, आप उपाश्रय के

नजदीक अन्य मकान में रहीं। कारण दूर से आना जाना मारवाड़ की उस समय की पर्दा प्रथा में उचित न होता। और आए बिना आप लोगों से रहा नहीं जाता।

यह चतुर्मास श्री सुवर्ण श्री जी म० का हापुड़ में था अतः कार्तिक वदी में आप देहली में विराजमान साध्वी वर्या श्री ज्ञान श्री जी म० हीर श्री जी म० के दर्शन करती हुई हापुड़ पहुँची। दीपावली का समय था, श्री सुवर्ण श्री जी म० के मौन व जाप चलता था। श्री सुवर्ण श्री जी ने संकेत से जनाया कि कल ही बम्बई से पाटण वाले सेठ पन्नालाल भाई की धर्म पत्नी सेठाणी माँ समस्त परिवार के साथ यहां से होते हुए पूर्व देश स्थित श्री सम्मेत शिखर आदि यात्रा के लिए रवाने हुई है, उनके साथ हमारा रामचन्द्र पंजाबी भी गया है। (जो आगे जाकर रामसागर जी मुनि कहाए) तुम्हें भी यात्रा कर लेनी चाहिए। अतः माँ बेटी दोनों ही यात्रा के लिये चल दीं।

सभी के साथ में तीर्थाधिराज श्री सम्मेतशिखर की यात्रा कर दीपावली के दिन भगवान महावीर की निर्वाण-भूमि पावापुरी में निर्वाण महोत्सव मनाने पावापुरी आए। यहाँ सेठाणी माँ ने हीरा, पन्ना, मोती आदि से सुशोभित चन्द्रवा भगवान के जल मंदिर में चढ़ाया। पावापुरी से आप राजगिरी, क्षत्रिय कुण्ड, नालन्दा, पटना आदि की यात्रा कर कार्तिक पुनम पर महोत्सव देखने कलकत्ता आए कलकत्ता से भागलपुर, चम्पापुरी, नाथनगर, एवं बनारस आदि की यात्रा कर प्रवर्तनी महोदया श्री सुवर्ण श्री जी की सेवा में पुनः हापुड़

पहुँचे। श्री सुवर्ण श्री जी हापुड से तीन कोस दूर अनवलपुर गाव मे श्री रिखवदास जी जवाहरलाल जी नाहटा परिवार के आग्रह से विराजी हुई थी। वहाँ प्रवर्तनी महोदया की सेवा मे रहकर आप अध्ययन करने लगी। हापुड से विहार होने पर आप दोनों माँ बेटी एव रामचन्द्र जी (रामसागर जी म०) साथ मे ही थे। श्री सुवर्ण श्री जी मार्ग मे आने वाले गावों नगरों मे धर्म प्रचार करती हुई हाथरस पधारी हाथरस मे एक मास पर्यन्त स्थिरता रही। यहाँ साध्वी रत्न सिद्धि श्री जी, मनोहर श्री जी आदि साध्वियों ने सस्कृत की उत्तमा परीक्षा के लिये जोर शोर से तय्यारी शुरु की, इन सब की कृपा भाजन दाखी बाई भी अपना अध्ययन खूब ही सुचारु रीत्या करने लगी।

घर से आए अधिक समय हो गया था। बुलाने के पत्र आने लगे, रूपा बाई के लिये अवघर जाना लाजमी हो गया था। पर दाखी तो किसी भी मूल्य पर तैयार नही। इधर श्री सुवर्ण श्री जी म० भी आगरा श्री सघ एव लक्ष्मीचन्द जी वैद, बीकानेर वाले तेजकरण जी चान्दमल आदि सज्जनों के अत्याग्रह पर हाथरस से मथुरा आदि नगर, गावों मे धर्म प्रचार करती हुई आगरा पधारी। आगरा सघ मे बडा ही उत्साह था और बडा ही शानदार प्रवेश कराया गया था। ज्ञान श्री जी, हीर श्री जी, लाल श्री जी, उपयोग श्री जी आदि कई शिष्या-मण्डल के साथ श्री सुवर्ण श्री जी म० बेलनगज मे सेठ लक्ष्मीचन्द जी की धर्मशाला मे विराजी।

१०–जीवन-निर्माण की वेला

प्रवर्तिनीवर्या पूज्या सुवर्ण श्री जी म० प्रवचन करतीं दाखीबाई एकाग्रचित्त से श्रवण करतीं। अमृतमेघ अनवरत बरसता और ज्ञान-पिपासाकुल चातकी-सी दाखी बाई पीयूष पान कर भाव-विभोर हो जातीं। सुवर्ण श्री जी पाट पर से नीचे उतर कर निवासस्थान की ओर बढ़तीं, इधर दाखीबाई विराजमान हो जातीं पाट पर। मधुर, मीठीवाणी से प्रवचन की पुनरावृत्ति करने लगतीं, बुद्धि की तरह आप की ग्रहणशक्ति भी बड़ी तीव्र थी। भावी इसी बाललीला के माध्यम से भविष्य का स्पष्ट संकेत दे रही थी कि इन विचारों की वास्तविक उत्तराधिकारिणी यही दाखी बाई होंगी। किन्तु भविष्य-ज्ञान से अनभिज्ञ सभी इसे बालचेष्टा मानकर मनोविनोद करते थे।

साध्वी समुदाय की वैराग्यपूर्ण पवित्र दिनचर्या, निर्मल संयम-साधना, सुवर्ण श्री जी की अध्यात्मसिक्त वैराग्यमयी प्रवचनधारा, मां बेटी की हृदयभूमि को काम, क्रोधादि कंकड़-कांटों से मुक्त कर कोमल बनाने में सचेष्ट थी।

जिस प्रकार बीज की वृद्धि में हवा, पानी, धूप, मिट्टी आदि सहायक होते है, उसी प्रकार संतों का सहवास उनकी साधना, दिनचर्या, उनका उपदेश, उनका भव्य-व्यक्तित्व पूर्वाराधक जीवों के लिए जीवन-निर्माण में बड़े ही उपयोगी सिद्ध होते हैं। दाखीबाई पर भी इस विशुद्ध वातावर्ण का प्रभाव पड़े बिना न रहा। वाग्दान हुआ सो हुआ, अब पाणीग्रहण तो किसी भी मूल्य पर नहीं करना है। मुझे तो दीक्षा लेकर आत्मकल्याण करना है।

पारस जैसे निर्जीव पाषाण के स्पर्श से यदि लोहे जैसी कठोर धातु स्वर्ण बन सकती है, तो सत्सग के प्रभाव से मानव महात्मा बनें इसमे कौन-सी नवीनता है ?

दाखीबाई के व्यवहार, हावभाव, एव शब्दों मे सन्यास के सकेत थे। फिर भी आप की माता एव साध्वी जी इससे सर्वथा अनभिज्ञ ही रही। उनकी दृष्टि मे यह सब बाललीला ही थी।

क्रमश धीरे-धीरे दाखीबाई के जीवन मे परिवर्तन आने लगा, साज-सज्जा, अलकार त्यागने लगी। माता की ममता, कभी वार-त्योहार कुछ पहनने के लिए कहती भी तो आप तुरत बोल उठती :—

"मुझे जिस घर मे बहु बनकर जाना ही नहीं, उस घर के गहनों से मेरा क्या प्रयोजन ? मुझे अब इनकी कोई आवश्यकता नही, लो ! "तुम्ही सहेजो, सम्भालो।"

कहाँ तो वस्त्राभूषणो के लिए रुठने मचलने वाली बालिका, और कहाँ आज प्राप्त आभरणों को त्यागने वाली यही बालिका। जमीन आसमान जितना अन्तर आ गया था।

उसकी इस प्रकारकी लीला देखकर कभी-कभी माता जी भयभीत हो उठती। "हे भगवान ! कदाचित इसने यह सब सच कर दिखाया तो क्या होगा ? ससुरजी बडे नाराज होंगे, मैं उन्हे क्या जवाब दूगी ? वे तो मुझे ही दोषी ठहरावेंगे, और मैं ही उनकी कोपभाजन बनूगी। इसे कौन दीक्षा देगा ? जिस दाखी के बिना घर सूना लगता हो, सारा परिवार जिसे सिर आँखो पर उठाए फिरता हो, उस दाखी को कौन दीक्षा देगा ? अलबत्ता मेरा सकट बढ़ जाएगा।"

वे वेर-वेर वेटी को समझातीं किन्तु समझदार वेटी को समझाने में माँ असफल रही। ज्यों-ज्यों माँ समझाती, दाखी वाई त्यों-त्यों दृढ़तर वनती जाती।

माताजी की भावना ऐसी थी कि यह नौ वर्ष की हो जाएगी तव इसका विवाह कर के मैं दीक्षा लूंगी। अभी इसे अविवाहित छोड़ कर गृहत्याग करना अपने कर्तव्य से विमुख होना है। पर दाखी वाई तो माँ से भी पहले तय्यार थी घर त्याग ने को। "गुरु गुड रह गए चेले शक्कर वन गए" वाली उक्ति चरितार्थ हो रही थी।

माताजी ने प्रसंगवश एक दिन वात ही वात में कहा :—

"दाखी! अव तेरा विवाह करके मुझे दीक्षा लेनी है।"

दाखी वाई के नयन भर आए, वे रुद्धकंठ से वोली :—

"माँ! जिस संसार के पापपंक से स्वयं निकलने को उद्यत हो, उस पापपंक में मुझे ढकेलने को इस कदर क्यों उतावली वनी हो? आप मेरा विवाह करना चाहती हैं; किन्तु मुझे तो विवाह नहीं करना है। मैं अद्यपर्यन्त कुमारी हूँ और समस्त जीवन भर ब्रह्मचारिणी ही वनी रहूँगी। समस्त संसार के पुरुष मेरे पिता व भाई हैं। अव मैं निश्चय से डिगने वाली नहीं हूँ। आज तक आपने मुझे वालिका मानकर मेरी प्रत्येक वात की उपेक्षा की है, और कर रही हैं। पर आपका ऐसा करना उचित नहीं है। मैंने ऐसा कदम सुचारु रूप से सोच समझ कर उठाया है। आप जैसी माता के लिए यही शोभास्पद है कि आप मेरी भावना को बल दें—मेरी मदद करें। आप जिस मार्ग को सर्वोत्तम मार्ग मानकर उसपर चलने को दृढ़प्रतिज्ञ वनी

हैं, उसी मार्ग पर मुझे ले चलने मे हिचकती क्यों हैं ? मैं आपके लिए बन्धन कभी नही बनूगी।"

अपनी ही कुक्षी से उत्पन्न पुत्री के ऐसे पावन ओजस्वी शब्द सुनकर किस माता का हृदय नाच नही उठता। रूपाबाई स्तब्ध बन गई। उसके आश्चर्य का क्या पार जिसकी अपनी सतान वाद-विवाद मे अकाट्य तर्कों से अपनी माँ को निरुत्तर कर दे। रूपाबाई का हृदय हर्ष-विभोर हो उठा। दाखीबाई के एक-एक शब्द उनके हृदय मे गहरे पैठ गए।

वस्तुतः वे भी मोहग्रथिल सामान्य माता नही थी जो अपनी बेटी को गुडिया बनाकर आनन्द मनाती। वह स्वय त्याग वीर थी, और थी वीर प्रसूता, उन्हे हर्ष क्यों न होता ? रूपा बाई ने अब दाखी बाई की मदद करने की मन मे ठान ली, पर परिवार का भय तो कलेजे मे समाया ही था। "वे लोग हर्गिज नही मानेंगे और इसके साथ मेरी भी भावना मूर्त्तिमती नही हो सकेगी।

यह भी अभी छोटी है, सयमी जीवन का इसे क्या ज्ञान है ? अभी नाचती है, पर आगे चल कर पूर्णत सयम साधना न कर सकी तो फिर क्या होगा ?" इस प्रकार मनोमथन मे रूपा बाई के कई दिन बीत गए, माँ बेटी अपनी साधना, आराधना मे तल्लीन थी। भविष्य की चिन्ता छोड कर वर्तमान मे लीन होकर रूपा बाई भी निश्चिन्त-सी हुई।

११—दीर्घ-दृष्टि

दादाजी के सामने अभी तक इनके गृह-त्याग का प्रस्ताव नहीं रखा गया था। भाग्य का दुःख मिटाना उनके वश में नहीं था, किन्तु ऊपरी कष्ट एवं वेदना इन दोनों को कम से कम हों, इसी भावना वश दादाजी जब भी इनकी इच्छा होती आने जाने की तुरत आज्ञा दे देते।

आपके आगरा आने के पश्चात् अमरावती में आपकी ताऊजी की पुत्री बहन मनोहर कुमारी का विवाह निश्चित हुआ। आपको शीघ्र अमरावती पहुँचने का तार मिला, माताजी पहले ही पीपाड़ चली गई थी, समय कम था, अतः माताजी ने आपको समाचार भेजा कि तुम तय्यार रहो मैं आ रही हूँ, जल्दी अमरावती पहुँचना है। दाखी बाई विचार में पड गई। "मेरी और मनोहर की सगाई एक ही परिवार में हुई है।" वे लोग भी बरात में आएँगे, उस समय सम्भव है मेरे भी विवाह का कुछ निश्चय किया जाए, अथवा जबरन विवाह कर दिया जाए, तब मेरा क्या वश चलेगा?" अतः मुझे यहाँ से नहीं जाना चाहिए। रूपां बाई आई, आपको बहुत समझाया, पर आपने माँ की एक न चलने दी। हार कर रूपां बाई को अकेले ही जाना पड़ा।

जिनका हृदय शुद्ध होता है, उनके हृदय-पटल पर भविष्य की तस्वीर स्पष्ट अंकित हो जाती है। अदृश्य शक्ति उन्हें सचेत करती रहती है। यदि दाखी बाई माँ के साथ जाती तो होता वही जिसकी

उन्हें आशंका थी। किन्तु अभागों के मनोरथ—मनोरथ रूप मे ही पडे रहते हैं। यह तो प्रबल पुण्य लेकर उत्पन्न हुई थी, इनके अरमान अधूरे क्यों रहते ?

उधर अमरावती मे रूपा बाई को अकेली आई देखकर दादाजी का कलेजा काप उठा। दाखी का क्या कर आई, ऐसी शका के साथ ही वे रूपा बाई पर गर्जने लगे।

"तुम अकेली कैसे आई ? दाखी कहाँ है ? उसे किसके पास छोडा है ? अब तुम्हारी नीयत अच्छी तरह से समझ गया। तुम तो जाओगी ही, साथ मे मेरी दाखी को भी लेकर जाओगी ! पर भूलना मत, मैं भी कोई कच्ची गोटें नही खेला हूँ" मैं बराबर तुम्हारे रग-ढग देख रहा हूँ, तुम्हें जितनी सहूलियत दी गई उसका उतना ही तुमने दुरुपयोग किया है। शीघ्र बता दे मेरी बेटी कहां है ? ममत्व एव दु:खावेग मे वे रो पडे, निर्दोष रूपाबाई भी सिसकने लगी। दोनों को सब ने समझाया, वातावरण को शान्त किया एव माँ की सख्त बीमारी का तार देकर एक व्यक्ति को दाखी बाई को लाने के लिए आगरा रवाने किया।

तार एव व्यक्ति को आगरा आया देखकर दाखी बाई सब बात समझ गई आगन्तुक ने कहा :—

"बेटी ! शीघ्र तैयार हो जाओ माँ सख्त बीमार है, तुमको घर चलना है। भला यह झूठ दाखीबाई से कहाँ छिपने वाला था। वे तुरन्त बोली :—

दादा ! इस प्रकार छल बल से मुझे नहीं ले जा सकोगे। बीमारी

आदि कुछ नहीं, केवल वहानेवाजी है। जब मुझे विवाह करना ही नहीं है तब विवाह में शामिल होने का क्या प्रयोजन ?

"अरे ! तुम चलो तो सही, वहाँ कौन तुम्हारा विवाह कर रहा है ?"

"ना, ऐसा नहीं होगा। जिस गांव जाना ही नहीं, उसका मार्ग जान कर क्या होगा ? मुझे ऐसा नश्वर पति नहीं चाहिए, यहाँ तो अमर पति वरना है। जो न मरेगा, न कभी छोड़ेगा, ऐसा लग्न तो कराने में ये पूज्या साध्वी जी सुवर्ण श्री जी म० ही समर्थ हैं।

आगन्तुक ने बड़े प्यार से कहा :—"अरे एक वार चलो तो सही, यह सब फिर सोच लेंगे।"

"मैंने कह दिया ना कि मुझे नहीं चलना है। तुम लौट जाओ, व्यर्थ समय बर्वाद करने से कोई लाभ नहीं। वहाँ काम में हर्ज होगा, मैं तो अभी चल नहीं सकूंगी। यहाँ पर सेठ लक्ष्मीचन्दजी उद्यापन करेंगे, साथ में प्रतिष्ठा महोत्सव भी होगा, इस पुण्य प्रसंग पर आचार्य प्रवर विजयधर्म सूरिश्वर जी म० (काशी वाले) का विद्वान शिष्य मण्डल श्री विजयेन्द्र सूरि म०, मंगलविजय जी म०, न्याय-विजय जी एवं विद्याविजय जी म० आदि शिवपुरी से पधारेंगे, व अन्य साध्वी जी म० हमारी गुरुवर्य्या की शिष्याएँ भी पधारेंगी। देहली, कलकत्ता, जयपुर, बीकानेर आदि स्थानों के महानुभाव भी इस धार्मिक महोत्सव में सम्मिलित होने आवेंगे। ऐसे अवसर पर मैं कैसे चलूं ? क्या ऐसे मौके बेर-बेर आते हैं। विवाह तो अपने परायों में होते ही रहते हैं। दादाजी से प्रणाम कहना, मेरी ओर से क्षमा

याचना करना, और कहना कि महोत्सव पश्चात् दाखी एक वेर जरूर आवेगी।

नन्ही-सी वालिका के तेजस्वी नयन, प्रखर व्यक्तित्व, एव प्रभावशाली पुण्यवल के सामने आने वाले व्यक्ति की बोलती जवान बन्द हो गई। वह तो इस जाज्वल्यमान दीपशिखा को देख स्तब्ध हो गया। दाखी बाई न तो रोई, न चिल्लाई, न चीखी। मात्र प्रौढ विचारों से शान्तिपूर्वक जवाब दिया। आगन्तुक के सभी प्रयत्न विफल होने पर वे निराश लौट गए।

उसे खाली हाथ अकेला आया देखकर दादा जी परेशान हो बोले :—

दाखी कहाँ है रे ?

उन्होंने सब हाल अथ से इति तक कह सुनाया। इस पर दादा जी बोले :—

क्यों रे ! एक वालिका तेरे से उठाई नही गई, सो खाली हाथ लौट आया ? इतनी कमजोरी क्यों रखी गई ?

—सेठजी ! वह वालिका नही है, वह तो प्रचण्ड प्रतापी देवी है। मै चौबा छब्बे बनने के अरमान भूलकर केवल दुब्बा बनकर रह गया। आप उठाने की बात करते हैं, मैं कहता हूँ कि उसकी मर्जी के बिना उसे छू पाना भी अशक्य है। वह तो वैराग्य-ज्वाला मे तपा तपाया निखालिस स्वर्ण है। उसे अपने निश्चय से डिगाना, आपकी व मेरी कोई की भी सामर्थ्य की बात नही है। उसके सामने बोल पाना ही शक्य नही, वहा वाणी स्तब्ध हो जाती है। आपने अभी

उससे बात नहीं की है, वर्ना उसके अकाट्य तर्क-वितर्क देखते।

"अब उनके पास निराशा के सिवाय मार्ग ही क्या था ?"

१२—मनन और चिन्तन

विधी दाखी बाई का जीवन घाट चार हाथों से घड़ रही थी। सुयोग्य संत का सहवास, यथार्थ संयम का पर्यवलोकन, ज्ञान पीयूष का अनवरत पान आत्म संतुष्टि, आत्मविकास एवं आत्मानन्द का आस्वादन व आत्म पुष्टि कर रहे थे। आयु की अपेक्षा से वह मात्र ग्यारह साल की अबोध बालिका थी। किन्तु जन्मान्तर के संस्कार बल से वह एक अनुभवी प्रोढ़ा के समान थीं।

प्रवचन के समय उसके आत्म जिज्ञाषा भरे प्रश्न, तर्क वितर्क, निष्टा पूर्वक श्रवण की मुख मुद्रा देख श्रोतागण दांतों तले अंगुली दबा लेते। एक-एक प्रश्न इतना संगत, ऐसा जरूरी और इतना ज्ञान वर्धक होता कि सुनने वाला, उत्तर देने वाला चकरा जाए। दाखी बाई के बिना अब श्रोता वक्ता को रस नहीं आता।

दाखीबाई की प्रतिभा का बहुमुखी विकास हो रहा था। वे मनन और चिन्तन के अमूल्य क्षणों में से गुजर रही थीं।

"दाखी बाई ने पु० प्रवर्तनी जी श्री सुवर्ण श्री जी म० को इतनी त्वरा से अपनी ओर आकर्षित किया कि इस का विश्लेपण करना कठिन है। वे स्वयं ही कुछ प्रकाश डालतीं तो संभव है कुछ पता चलता। चारों ओर से आपको प्रोत्साहन मिलने लगा। आप भी अहर्निश स्वाध्याय रत रहने लगीं, निवृत्ति के क्षणों में आप शय्या

पर अपने आपको आत्मतुला पर तोलती, सयम सुखकर है अथवा दुष्कर, यह आपका मुख्य विचार केन्द्र था। ज्यों-ज्यों आप विचारती त्यों-त्यों हृदय मे उल्लास ही उल्लास भर जाता। सयम सुखकर, फूलों की शय्या-सा कोमल सौरभ मय प्रतीत होता, हृदय मे एक मीठी तालावेली लग जाती, कब सयमी बनूं? कब मुनि जीवन से जोऊं। सयम का अन्तरग एव बाह्य रूप आकृष्ट कर रहा था। जहाँ अनिर्वचनीय निर्विकल्प समाधि सुख भरा था।

आत्मानन्द निमग्न सतो को सयम के बाह्य कष्टों का अनुभव नही होता। इसी कारण वे अपने ध्येय के प्रति निराकुल बढते जाते हैं। दाखी बाई का समय बडे ही आनन्द से बीत रहा था।

निश्चित मुहूर्त पर प्रतिष्ठा, उद्यापन महोत्सव सानन्द धूमधाम से सम्पन्न हुए, ऐसा महोत्सव आगरे के लिए प्रथम ही था। विभिन्न प्रान्तों के यात्री गण एव शिवपुरी जैन गुरुकुल के विद्यार्थी भी आए थे। मुनिराजों के साथ-साथ विद्यार्थियों के भी भाषण होते थे। विदूषी साध्वियाँ कल्याण श्री जी० सिद्धि श्री जी, मनोहर श्री जी, एव सज्जन श्री जी आदि जिन्होंने मात्र २१-२२ वर्ष की वय मे ही सस्कृत प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास कर ली थी उनके भी भाषण होते। हमारी असीम उत्साही दाखीबाई भी लिख कर भाषण देती। निर्भय, निस्सकोच, धाराप्रवाह बोलने का ढग, मीठी वाणी, सुनकर सभी मुनिराज पूज्य स्वर्ण श्री जी म० से फरमाया करते कि "साध्वी जी ! इसे खूब पढावो यह बडी ही सफल उपदेशिका बनेगी, यह बहुत अच्छा बोल सकेगी। मुनिराजों के सुब-

चन आज हम यथार्थ रूप में फलित देख रहे है। मुनि वचन आशीर्वाद रूप ही होते हैं। आचार्य विजयेन्द्र सूरि तो आज भी आपकी बड़ी प्रशंसा करते हैं।

उधर अमरावती में विवाह सानन्द सम्पन्न हुआ। बराती व महमान अपने घर गए, रूपांबाई वहीं पर ही रही।

अहमदनगर में रूपांबाई की बहिन सुगनीबाई का विवाह मुल्तानमल जी सिन्घी के साथ हुआ था। उनके द्वितीय पुत्र प्रेमराज जी का विवाह था, इसलिये रूपांबाई अमरावती से नगर चली गई थी, दाखीबाई को भी बुलाने के लिये पत्र आने लगे, रूपांबाई ने भी पत्र दिए कि बहुत समय हो गया है एक बेर आ जाओ, वैसे इस विवाह में दाखीबाई को यह भी भय नहीं था कि मेरा भी विवाह जबरन कर दिया जाएगा। प्रतिष्ठा कार्य भी हो चुका था। अतः दाखीबाई आगरा से सेठ लक्ष्मीचन्द जी के साथ बम्बई गईं। वहां सभी मन्दिरों के दर्शन कर अहमदनगर से लेने के लिए आए सिंघी जी के मुनीम के साथ नगर चली गईं। विवाह के पश्चात् दोनों माँ बेटी कुछ दिन वहां ही रहीं।

आपके मौसा जी श्री मुल्तानमलजी भी दीक्षा देने के विरोध में थे, वे बारम्बार समझाते व दीक्षा की भावना से च्युत करने का प्रयत्न करते थे। वहाँ पर एक अच्छा ज्योतिषी भी था जिस पर उनको पूर्ण श्रद्धा थी। सिंघीजी माँ बेटी को उसके पास ले गए और भविष्य पूछा। ज्योतिषी ने कहा यह बालिका सन्यास के लिए ही जन्मी है, विवाह के लिये नहीं। इसका विवाह नहीं होगा।

पश्चात् माता पुत्री दोनों वहाँ से अमरावती आई।

ताईजी का हृदय दाखीबाई को देखकर भर आया। वे देखती ही रही पर बोल नही पाई, अत्यधिक हर्ष व शोक मे मानव की यही दशा होनी है। कुछ समय पश्चात् वे बोली—

बेटी! तुमको कितने तार एव पत्र दिए, लेने को आदमी भी भेजा पर तुम बहिन के विवाह पर भी नहीं आई। अहमदनगर मे भी तो विवाह ही था दो महीने पहले आ जाती तो मेरा भी मन प्रसन्न हो जाता।

दाखी ने प्रसन्नता से हसते २ बडी माँ के चरणों मे मस्तक झुकाया और कहने लगी—

माँ! आपका कहना उचित है, किन्तु यहाँ के विवाह मे मुझे अपने विवाह की गंध आ रही थी जो मुझे इष्ट नही था। अब मैं आपके संग कुछ दिन रहने व दीक्षा की आज्ञा लेने आई हूँ। बडी माँ ने अपना ध्यान दूसरी ओर कर लिया, इस बात को अन्य बातों मे उडा दिया, भला दीक्षा की बात किसे अच्छी लगती।

चौमासा लगा, श्रावण मे तीज का मेला लगा, सभी लडकियां पहन ओढ़कर मेला देखने व बागों मे झूलने जाने लगी। बडी माँ ने दाखी को भी तैयार होने का कहा, एवं ससुराल के जेवर पहनने को लाकर दिए। दाखीबाई ने कहा—" माँ! जबसे मेरी दीक्षा की भावना हुई तब से मैंने ये जेवर छूए भी नहीं है। जिस घर जाना ही नहीं वहाँ के गहने पहनने का प्रयोजन भी क्या? अन्त में दाखीबाई ने गहने पहन ही नही।

अमरावती में बड़ी माँ, भाई फूलचन्दजी व भँवरलाल जी भूवा सुगनीबाई, फूंफाजी धनराज जी आदि समस्त परिवार का भरपूर प्यार मिलता था। कुटुम्ब एवं समाज का स्नेह प्राप्त कर स्नेहमय वातावरण का सर्जन कर माता व पुत्री दोनों जोधपुर में जतन श्री जी म० के दर्शन कर पीपाड़ आईं। कारण दादाजी पीपाड़ ही रहते थे।

१३—दादाजी और बेटी

मां बेटी पीपाड़ आई और अपने ज्ञान ध्यान में लगी। अब दादाजी दाखीबाई से बहुत ही कम बात करते थे। उनके अन्तर में भय समाया रहता कि कहीं इसने दीक्षा की बात निकाली तो क्या करूँगा। इसी शंका से ग्रसित दादाजी दाखी से कतराते, दूर दूर ही रहते।

समय बीतने लगा, दाखी बाई के हृदय में निश्चय का बल था। विवाह तो करना ही नहीं है, फिर चर्चा से क्या लाभ, वे स्वयं बात करेंगे।

दादा बेटी दोनों मौन, पर रूपां बाई क्या करें। उन्हें घर में चैन नहीं। वे भारी दुविधा में फंस गई। न तो इसकी हां ही होती है, और न नाहीं होती है। मैं इस प्रकार इसके पीछे अनिश्चय में कब तक पड़ी रहूँगी। इसका विवाह हो तो भले पर मैं तो अपनी राह जाऊँ। इस प्रकार मनोमंथन करते-करते आपने एक दिन साहस करके दोनों की दीक्षा का प्रश्न उठा ही दिया। अब तो मत पूछो बात, घर में एक नई ही हलचल मच गई। दादाजी ने रोना धोना शुरू किया, कुटुम्बी जनों ने चिल्लाना, बकझक शुरू की।

"सयम कोई गुडियों का खेल नही है, न वर्फी और केले जैसा मधुर कोमल ही है। वह मोम के दातों लोहे के चने चबाने जैसा कठोर व नगे पैरो तलवार की धार पर चलने जैसा दुष्कर है। यह बच्ची क्या जाने सयम किस चिड़िया का नाम है। पर आपकी अक्ल कहाँ मारी गई है जो इस फूल को सयम की अग्नि मे आहूती देने चली हैं। इसका शरीर इसकी वय ही सयम साधना के योग्य नही। बच्चे का क्या जैसा सग वैसा रग, साध्वी जी के पास दीक्षा के गाने गाए, अब घर मे घर के गीत गालेगी। यह वैराग्य, विराग कुछ नहीं है। थोडे दिनों मे पतग रग सा साफ हो जाएगा। आप मौन रहिए व्यर्थ वखेडे से कोई लाभ नही।"

रूपाबाई बहुत परेशान थी, बोले भी तो क्या ? और सुने भी तो कौन ? जिसके मन मे जो आता कह जाता, सुनने के सिवाय कोई चारा नही था।

दाखीबाई भी एक ही दृढ निश्चयी वाला थी। उनका वैराग्य पतग रग कहाँ था जो उड जाता, इस मजीठे रग को धोने वाला जल ससार मे था ही नही।

"सबने उन्हे डराया धमकाया प्रलोभन भी दिये, खाना पीना भी वद रखा, कई प्रकार के प्रश्नोत्तर भी हुए, माँ से दूर भी रखा गया, पर वह पिघलने वाली धातु नही थी।

इधर दादा जी उद्विग्न, उधर रूपाँ बाई बेचैन, पर दाखी बाई तो सदा मगन, उन्हें चिन्ता ही नही कि क्या होगा।

"जब तब दादा जी समझाते :—

बेटी ! देख यह असमय का वैराग्य उचित नहीं। अभी तुम छोटी हो, संयम-मार्ग बड़ा विकट है। पैदल पांव योजनों की दूरी नापनी पड़ती है। ये सुन्दर बाल हाथों से उखाड़ने पड़ेंगे, रंगीन वस्त्र सुन्दर आभूषण कभी भी पहनने को नहीं मिलेंगे। भूख, प्यास भी सहनी होगी, गर्मी में पंखा नहीं, सर्दी में आग नहीं, सब साध्वी जी की सेवा में तत्पर रहना पड़ेगा। कहो ! यह सब तुम कैसे करोगी ? अपने घर में किस बात की कमी है जो तुम घर त्याग कर भाग रही हो। मेरे लिए तुम पुत्र से बढ़कर हो, बुढ़ापे की सहारा हो, कहो ! मैं तुझे दीक्षा कैसे दे दूं ? तेरा विवाह होगा नए नए वस्त्राभूषण आएंगे, इच्छानुसार खाओ खेलो। मेरी बात समझने का प्रयत्न करो। समझ में न आए तो मैं कहूँ वैसा करती जाओ। पर हठ छोड़ दो।

दाखी बाई मौन चुपचाप सब सुनती रहती। कभी कदाच विनम्रता से उत्तर देती :—

दादा जी ! काल की गति किसने देखी है, न जाने यह छलिया किस समय किस परिवेश में आ जाए। ऐसे अनिश्चित समय के लिए तय्यार न रहना क्या समझदारी है ? देखिए आपके देखते-देखते पिता जी चले गए, बड़े पिताजी गए, दोनों फूंफाजी गए वहिन गई, विवाह की तैयारियों में ताऊजी की लड़की फूलबाई चल बसी। वे सब अपने साथ क्या ले गए ? वीरों की वय मर्यादा नहीं होती, वैरागी को पुद्गल आकर्षित नहीं कर सकता, संयम भार नहीं आराम रूप लगता है। कुटुम्ब बंधन नहीं होता। वैराग्य के अनवरत प्रवाह

को रोकने की क्षमता किसी मे नही होती। मुझे विवाह नही करना है। सयम लेना है। आप कृपाकर सयम की आज्ञा प्रदान करें। यह सब मोह के चाले है, मात्र वचन हैं।

दाखीबाई का कठ अवरुद्ध हो गया, आँखों से सत् विरह के मोती झरने लगे। दादा जी भी विह्वल हो गए। वातावरण बड़ा ही करुण बन गया बेटी पितामह के पावो पर पड़ी मूक सयम की भीख माग रही थी। उनका हृदय मस्तिष्क, शरीर शोकावेग से काप रहा था। पास खड़े लोग रो रहे थे। सभी का अन्तर पुकार रहा था कि यह रुकेगी नही, जाएगी अवश्य, यह उम्र और यह ज्ञान! इसे रोकना सम्भव नही।

सच मे मृत्यु के सामने विवश होकर मानव अपने प्यारे से प्यारे व्यक्ति को रोक नही पाता, पर जीवित घर से विदा करते समय मानव का मोह किस कदर उफनता है, वह हरसभव उपाय से उसे ममत्व बधन से जकड़ने का प्रयत्न करता है।

इस छोटी-सी बालिका की विनम्रता एव दृढ़ता सभी को विस्मित कर रही थी। जरा भी हठ नही, न टटा न फिसाद, न रोना न गाना, फिर भी देखने वालों पर अमिट प्रभाव पड रहा था, यह रुकेगी नही।

दादाजी का बुरा हाल था। उठते-बैठते वे अपने रूठे भगवान को पुकारते थे, हे भगवान! क्या करूँ? अपने हाथो अपनी आँखें कैसे फोड लूँ? कैसे अपने हाथों अपनी चिता सजालूँ? उनका उदास चेहरा, विक्षिप्त मन, तृषित आँखें देखकर दाखीबाई का

हृदय करुणा से भर आता। वे सान्त्वना देने का प्रयत्न करती और कहती :—

"दादाजी ! ऐसा मत करिए, आप मात्र मेरे विवाह की बात छोड़ दीजिए, फिर आप कहें तो आजीवन मैं आपके पास ही रहूंगी, आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी, माँ जाए तो भले जाए। मेरी दीक्षा होनी है तो फिर हो जाएगी, पर विवाह तो कदापि नहीं हो सकता।"

"जब मनुष्य का अपने पर से ही अपना विश्वास उठ जाता है, तब विवशता में मतिहीन होकर वह निर्दोष को दोष देने लगता है।" मोहाधीन दादाजी लाल-पीले होने लगे रूपां बाई पर :—

"यह सब तेरी ही करतूत हैं। तूने मेरा घर बर्बाद करने पर ही कमर कसी है। मेरे दोनों लाल गए, मेरे दो जामाता गए, मेरी फूल-सी पौत्री गई तो जा तूं भी जा यह रास्ता पड़ा पर मैं अपनी बेटी तो नहीं दूंगा।"

"वातावरण कई दिनों तक उदास स्तब्ध तनावपूर्ण बना रहा। न बेटी घर बसाने को तैयार थी और न दादा बेटी को त्यागने के लिए तैयार थे।"

दादाजी बार-बार भगवान को याद करते थे, पर आज उनके भगवान उनकी बेटी की मदद पर लगे थे।

वे बेर-बेर कहते :—

बेटी ! हठ मत कर देख, तेरा संयम मेरे प्राणों का मूल्य होगा।

"दाखी बाई दादाजी के आस-पास ही मंडराती रहती, हर संभव

उपाय से उनके वेदना-भार को हल्का करने की चेष्टा करती। वह चाहती थी कि दादाजी सन्तोष से सहर्ष अनुमति दे देवें। पर भला अपने कलेजे के टुकड़े यों सहर्ष कौन काट कर प्रदान कर पाया है! मरण भले ले जाए, पर जीवित कैसे दिया जाए? दादाजी का बुरा हाल था। यह समस्या इतनी जटिल थी कि सुलझाव उनकी शक्ति से परे था।

१४—मोह आवरित अनुमति एवं अभूपण विसर्जन

मनुष्य सकल्प-विकल्पों का पुतला है। किन्तु अधैर्य की अधिकता से वह कृतसकल्पी नही बन पाता। थोड़ी-सी कठिनाई उसके सकल्पो के महल को गिराकर, लक्ष्य तक पहुँचने मे सफल नही होने देती। जब कि दृढ सकल्प से एक दिन असाध्य कार्य भी साध्य बन जाता है। सत्सकल्पों पर दृढता पूर्वक डटे रहने वाले व्यक्ति के मानस से एक प्रकार की विद्युत निकलती है, जिसका प्रभाव आस-पास के वातावरण पर पडे बिना नही रहता। ऐसे दृढचेता मनस्वी व्यक्ति की सहायता प्रकृति स्वय करती है।

दाखीबाई की दृढता तथा तेजस्विता से प्रभावित होकर स्वजन परिवार एव गाँव के मुखियाओं ने बीच मे पड़कर दादाजी को समझाने का प्रयास किया।

सत्सकल्पों के सामने मिथ्या मोह टिक न सका। मुक्ति मार्ग से

संसार परास्त हो गया। यह थी असंयम पर संयम की विजय, असत्य पर सत्य का वर्चस्व। दादाजी बेटी की भावना पर नये सिरे से विचार करने को मजबूर बने। दाखीबाई की तीव्र भावना देखकर अन्त में दादाजी ने दीक्षा की आज्ञा दे ही दी। अब तो रूपांबाई व दाखीबाई के आनन्द का क्या पूछना। दोनों के हृदय हर्ष से नाचने लगे। गमगीन वातावरण आज आनन्द से भर गया।

इधर वाग्दान में आए जेवर वापिस करने की समस्या खडी हुई। सगाई सम्बन्ध विच्छेद करना आवश्यक था और उनके जेवर उन्हें लौटाना अत्यावश्यक था। पर वे लोग किसी भी तरह जेवर वापिस लेने को तैयार नहीं। भला ऐसी फूल-सी गुणवती बाला को यों सहज ही हाथ से कौन जाने देता।

हिंगनघाट मांडोरी दाखीबाई के ससुराल वालों को समाचार देकर बुलवाया गया एवं राजीबाई धर्मशाला में सेठ फतेचन्दजी, मांगीलालजी की प्रमुखता में विचार विमर्श कर सम्बन्ध विच्छेद के लिए उनपर दबाव डाला गया। काफी खटपट के बाद उन्हें इस शर्त पर मनाया गया कि यदि कदाच दीक्षा न हुई और विवाह होगा तो आप के घर सिवाय अन्यत्र न होगा। और उनके चार साल से अछूते पड़े आभूषण सम्भलाकर एक भारी चिन्ता से मुक्ति की सांस ली।

कुछ दिन बडी माँ, भूवाजी सुगनीबाई, फूंफाजी धनराज जी, भाई फूलचन्द जी, भंवरलाल जी आदि परिवार के प्रेम, वात्सल्य को भाजन बनकर माँ बेटी जोधपुर में विराजमान श्री जतन श्री जी म०

के दर्शन कर पीपाड पधारने का आग्रह किया। पश्चात् दोनों पीपाड आई।

पीपाड से दोनों माँ बेटी आगरे पूज्या सुवर्ण श्री जी म० के पास आईं। आते ही दाखीबाई ने तुरन्त अपनी दीक्षा का प्रस्ताव रखा। दाखीबाई का उल्लास, उत्साह देखते ही बनता था, पर साध्वी जी को सहसा विश्वास नहीं आया। यह प्रसग अकल्पित था, उन्हें कभी ऐसी कल्पना भी न आई थी कि दाखी दीक्षित होगी। उसकी सभी बातें व चेष्टाएँ बाल चेष्टाएँ ही मानी गई थी।

प्र० सुवर्ण श्री जी म० ने प्रश्न किया :—

"जानती भी है कि दीक्षा क्या होती है ? पैदल चलना, शीत-ताप सहना, रूखा-सूखा जो मिला खाना होगा। कभी भूख भी सहनी होगी। ये सुन्दर बाल हाथों से उखाड़ने होंगे। ये टीकी टमके कहाँ से आएँगे ? दीक्षा खेल नहीं है सो खा लिया खेल लिया ?"

दाखीबाई भी कोई ऐसी वैसी बाला नहीं थी, उसने तत्काल अपने हाथों अपने बाल उखाड कर साध्वीजी महाराज के सामने रख दिए। चेहरे पर अदम्य उत्साहपूर्ण प्रसन्नता नाच रही थी। मीठी मीठी नजर से देखती हुई कहने लगी :—

इस प्रकार अन्य सभी कष्ट भी सह लूंगी। बालिका की लगन, धैर्य, साहस देखकर सभी उपस्थित जन दंग रह गए, आज भी देखने वाले कहते हैं कि उस समय की दाखी भी एक अपूर्व ही थी।

प्र० श्री सुवर्ण श्री जी म० की भावना आपको दीक्षित न करके उपदेशिका के रूप में बनाने की प्रबल थी। आपका विचार था अब

समय की मांग दीक्षा की अपेक्षा कुछ विद्वान उपदेशक बनाने की है। जो समय पर देश-विदेश में जाकर जैन-धर्म का प्रतिनिधित्व कर सके। परन्तु यह आज के समाज में भी संभव नहीं, उस समय तो ऐसी बात विचारना ही अपराध था। जब उन्हें अपनी भावना सफल होती नजर न आई तो उन्होंने अपनी साध्वियों से विचार विमर्श करके अपनी योग्यतम शिष्याएँ पू० जतन श्री जी म० जो जोधपुर में थीं उनको, वर्तमान प्रवर्तनी महोदया श्री ज्ञान श्री जी म० एवं उपयोग श्री जी म० जो फलोदी पधार रहे थे उनको दाखीबाई की दीक्षार्थ पीपाड की ओर विहार करने की आज्ञा भेजी। दाखीबाई भी माँ के साथ पीपाड पधारी।

स्थानीय यतिवर विद्वद्रत्न राज-ज्योतिषी चतुरसागर जी से दीक्षा का मुहूर्त्त निकलवाया एवं सर्वसम्मति से अक्षय तृतीया का पावन दिन दीक्षार्थ घोषित किया गया।

१५—दीक्षोत्सव में विघ्न

पीपाड का बच्चा-बच्चा नाच रहा था। महोत्सव की तैयारियाँ दिल खोलकर होने लगी। ओसियाँ तीर्थ एवं अन्य नगरों से संगीत-भजन मण्डलियाँ बुलाई गईं। एक महीने पहले से ही तैयारियाँ शुरू हो गईं। दीक्षार्थिनी दाखीबाई के हाथों में दीक्षाद्योतक कंकण बाँधा गया। मंगल-गान होने लगे, वाद्य बजने लगे। गाँव भर में उल्लास के श्रोत उमड़ रहे थे। कोई अपने वस्त्रों से, कोई अपने आभूषणों से

दाखीबाई का शृङ्गार करते, घोडे पर बिठाकर घर पवित्र करने की भावना से उन्हें ले जाते। श्रीमत घर की इकलौती बेटी के त्याग भाव की प्रशसा चारों ओर गूज रही थी।

जहाँ सारा गाँव आनन्दमग्न था, वहाँ किसी ने विघ्न उपस्थित करने मे ही आनन्द माना। एक व्यक्ति ने दादाजी के प्रसुप्त मोह को जागरित करते हुए कहा :—

"वाह ! सेठाजी ? आप भी खूब हैं, पुत्र की एक मात्र कन्या, वह भी लाखों मे एक, उसे उसकी माँ सयम की आग मे झोंकने को तैयार हो गई और आप देख रहे हो, न जाने आपका हृदय कैसा है ? ऐसी भोली भाली प्यारी बेटी पुत्र का नाम मिटाकर, कैसे योगिनी बनाकर घर से निकाली जाती है। वह क्या जाने सयम क्या है, भाई ! हमारी समझ मे तो यह बात नही आई। आखिर मिश्रीमल जी के वश मे और है ही कौन ?"

"सेठजी तो पहले ही भरे बैठे थे,, इस व्यग ने उनके रुके हुए दु खावेग के बाध को तोड दिया, और वे मोहावेग मे दाखीबाई को लाने के लिए दौडे।"

आज दाखीबाई अपने मौसेरे भ्राता सोहनराज जी कटारिया के घर आमन्त्रित थी। भोजन के पश्चात् भाई ने वदोला चढाया। आगे बाजे बज रहे थे, बीच मे, घोडे पर सवार दाखीबाई थी, पीछे दीक्षा गायन गाती बहनें चल रही थी। सारे शहर में घूमकर ज्यों ही वदोला बीच बाजार मे आया त्यों ही दादाजी घोडे पर सवार दाखी बाई को उतार कर घर ले आए और कमरे मे आकर बोले :—

बेटी ! तेरी दीक्षा नहीं हो सकती, मेरा कलेजा फट रहा है। तूं मुझे अति प्रिय है, क्योंकि तूं मेरे पुत्र की प्यारी धरोहर हैं। मैं तुझे साध्वी बनाकर अपने से दूर नहीं कर सकता। तेरी माँ की दीक्षा भले हो, पर तेरी नहीं होगी। कहते २ दादाजी रो पड़े।

"मोह की भी विचित्र विडम्बना है, दादाजी स्वयं काल के ग्रास बने बैठे थे, आजकल अभी की तैयारी थी, पर दाखी को त्यागना उनके लिए अतीव कठिन हो रहा था। जबकि सर्वस्व त्याग काल के निमन्त्रण पर जाना निकट था।

गाँव में घर-घर में चर्चा होने लगी। उत्सव, महोत्सव सब ठंढे हो गए। मंगल-गान बंद, मण्डलियाँ गईं अपनी राह। शहर में एक उदासीनता छा गई।

इधर साध्वी जी खिन्न, रूपांबाई परेशान, व्याकुल थीं। अब क्या होगा, यही एक प्रश्न सब की जिह्वा पर था, पर दादाजी के पास जाने लायक हिम्मत किसी में भी नहीं थी।

१६—साम, दाम, दण्ड, भेद

मनुष्य अपने अनिच्छित कार्य को रोकने के लिये भरसक प्रयत्न-शील रहता है। किन्तु होता वही है, जिसे होना रहता है। होनहार भावी के समक्ष मानव के अधिकांश प्रयत्न विफल ही रह जाते हैं। दाखीबाई को समझाने में दादा जी ने पहले भी कमी नहीं रखी थी, अब और भी कमी नहीं रखी, दाखीबाई के साथ साम, दाम, दण्ड,

भेद की नीतियाँ अपनाइ जाने लगी। दादा जी एकान्त मे बैठकर दाखीबाई को समझाने की चेष्टा करते हुए कहने लगे :—

बेटी ! मैं अब विवाह का मुहूर्त्त मिलने पर तेरा विवाह कर दूंगा। लोग भी देखेंगे कि मैं तेरा विवाह कितने ठाटबाट से करता हूँ। तूं क्यों शरमाती है, तूं तो दीक्षा लेने को तैयार ही थी। दीक्षा तो मैने नही दी, अब दीक्षा तो रुक गई—छोडो इस दीक्षा के झगडे को, खावो, पीवो, पहनो, ओढो, और विवाह करवा के स्वय सुखी बनो और मुझे भी सुखी बनाओ।

दाखीबाई दादा जी की बात ध्यान पूर्वक सुन रही थी। जब वे अपनी बात कह चुके तब वह विनम्रता के साथ बोली :—

दादा जी ! मैंने आगे भी कहा था और अब भी कहती हूँ कि दीक्षा आप देंगे तभी लूँगी वर्ना नही, परन्तु विवाह आपकी इच्छा मे नही होगा, विवाह तो मेरे लिए अब न भूतो न भविष्यति बन गया है। देर अवेर होगी तो दीक्षा ही। परन्तु आपकी आज्ञा विना कोई काम नही होगा।

"विवश बने दादा जी बेचैनी के साथ कमरे मे घूमने लगे और बोले :—

बेटी ! यों निर्दय न बन, मेरे जीवन का आधार यों नष्ट मत कर। तूं जो कहे वही मैं तेरे लिए करने को तैयार हूँ। पर तेरी दीक्षा मुझसे नही होगी। तेरा मुण्डित मस्तक देखने की शक्ति मुझ मे नही है।

धैर्य की मूर्त्ति बनी दाखीबाई ने कहा :—

दादा जी ! मैं आपके सुख सन्तोष के लिए आप कहें तो आपके जीवन पर्यन्त रुक सकती हूँ। पर विवाह की बात मत करिए। मेरे सामने, मेरा लक्ष्य केवल त्याग है, भौतिक भोगों से विराम है।

जब दादा जी ने देखा कि साम और दाम दोनों नीतियाँ असफल गईं, तो उनकी विवशता ने क्रोध का बाना पहना। उन्होंने सोचा कि यह यों मानने वाली नहीं है, अब जरा डांट-डपट से काम लेना होगा, अतः जीवन में पहली ही बार दादा जी ने कड़ाई के साथ दाखीबाई से कहा :—

बड़ी आई त्याग विराग वाली, मेरी आत्मा, मेरी आत्मा, रोम-रोम ला दिखा तेरी आत्मा। विवाह नहीं करूँगी। विवाह नहीं करेगी तो क्या कुमारी रहकर जीवन विताएगी ? आगे भी कोई कन्या कुमारी रही है जो तूँ रहेगी ? तूं ही एक मेरे निराली जन्मी है। कल की छोकरी आज मुझे सत्तर वर्ष के वृद्ध को चराने चली है। न जाने अपने आपको क्या समझती है ? खबरदार ! अब यदि मेरी इच्छा के विरुद्ध एक भी शब्द निकाला तो हाथ-पैर बाँधकर तलघर में डाल दूँगा।

दाखीबाई शान्त, मौन, निर्भय खड़ी थी उनके सामने। न रोष था, न क्षोभ था, न द्वेष था, एकमात्र दृढ़ता की आभा, एक विलक्षण तेज चेहरे पर फैल रहा था और अन्तर आत्म-विश्वास से भरा था।

दादा जी बाहर जाने के रास्ते पर ताला लगा कर अपनी बैठक में चुपचाप बैठ गए। उनकी समझ में आज कुछ भी नहीं आ रहा था। सारे गाँव के मुखिया, सलाहकार, सेठ आज अपनी छोटी-सी

बेटी को समझाने मे विवश बने थे। दाखीबाई को भगवान के दर्शन करने मंदिर भी न जाने दिया गया। और मंदिर गए बिना उन्होंने खाने पीने से साफ मना कर दिया। पूरा दिन व रात निराहार बीत गया। इस समय वे स्वाध्याय, मनन, चिन्तन एव नमस्कार महामंत्र के जाप मे लीन बनी रही। न रोना न चिल्लाना, न राग न रोष, वही अखण्ड शान्ति, चिरपरिचित मुस्कान।

दूसरे दिन का प्रभात उदय हुआ, दादाजी का हृदय विकल हो उठा। वे अपने हृदय के प्यार को अब और अधिक कठोरता के आवरण मे नही छिपा सके, अन्तर बोलने लगा दाखी भूखी-प्यासी है। आखिर यह सब वात्सल्य का ही तो खेल था। किसी प्रकार बेटी त्यागिनी न बने, घर बसा लें। स्नेहभाव के अलावा शत्रुता तो थी नही। दादा जी बडे असमजस में थे, एक ओर दाखी की भूख प्यास उन्हे सता रही थी, तो दूसरी ओर दाखी के और मजबूत होने का भय विकल बना रहा था। उनकी समझ काम नही कर रही थी।

मानव की बुद्धि सदैव ही हृदय से परास्त हुई है। मन की भावुकता ने कब बुद्धि का वर्चस्व स्वीकारा है ? यहाँ भी हृदय ही जीता, दूध का ग्लास और जल का लोटा लिए दादा जी दाखी बाई के सामने खड़े थे। ममता की माया भी बडी विचित्र है, इसके सामने बडे-बडे महारथी भी नही टिक सके। इसके सन्मुख तो महात्माओं के ही सकल्प टिकते हैं।

ले बेटी। भजन कर दूध पीले ? दादाजी का हृदय भर आया।

दादाजी। मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन किए बिना दूध कैसे पी लूं, आप मंदिर दर्शन करवा दे मैं दूध पी लूंगी।

नन्हीं सी बालिका चौवोस घण्टे भूखी प्यासी रहकर भी भगवान को भूली नहीं थी, न क्रुद्ध ही थी। न संतुलन ही खोया था। वही शान्त विनम्र वाणी और वही निरुद्वेग मन था।

बालिका की भक्ति एवं तेजस्विता व संयमित वाणी ने दादाजी को उसे मन्दिर भेजने के लिये मजबूर कर दिया।

दाखीबाई मन्दिर चले साथ में दो पहरेदार व्यक्ति भी चले।

एकने रास्ते में कहा, "दाखी ? यदि तूं दूध पी लेती तो कौन सी तेरी प्रतिज्ञा टूट जाती ? व्यर्थ ही पिता जी को परेशान करती हो, वे तो पहले ही दुखी हैं, तुम और कलेजा जला रही हो, वे तो तेरी चिन्ता में खाना, सोना ही भूल गए।

दाखबाई ने उत्तर दियाः—

मैंने दूध पीने से कब इन्कार किया था ? दूध पीने या न पीने का दीक्षा से कौन-सा सम्बन्ध था। मुझे तो अपना मन्दिर दर्शन का नियम पालन करना था।

मन्दिर दर्शन किए, उपाश्रय के बाहर से चलते चलते ही साध्वी जी के दर्शन किए। घर आकर दूध पिया। इसी क्रम से पूरा एक सप्ताह बीत गया।

रूपांबाई चिन्तित होकर अलग झुंझला रही थी। न दादा मानते थे न पोती समझती थी। बीच में रूपांबाई परेशान थी। उन्होंने गांव के मुखियाओं को बुलाकर दादाजी को समझाने की प्रार्थना की।

कई एक सम्भ्रान्त व्यक्ति दादाजी के पास आकर कहने लगे :—

सेठजी। आपने जब आज्ञा दे ही दी, उत्सव, महोत्सव शुरू कर ही दिए, तब इस असमय के राग आलापने से क्या लाभ ? यह बच्चों वाला खेल अच्छा नही, घर मे हानि और जगत हँसाई वाली बात हैं। आपकी राय से ही सब कुछ हुआ, साध्वीजी पधारे, अब इस बखेडे का कोई अर्थ नही निकलने का। आखिर कन्या तो पराए घर जाएगी ही।

मैं क्या करता जब चारों ओर से परेशान हो गया तो मैंने कह दिया कि हाँ दीक्षा दे दूंगा, क्योंकि दाखी आगरे थी, मुझे भय था कि कही वहा ही इसकी दीक्षा न कर दें। अतः आज्ञा सिवाय अन्य मार्ग न था। किन्तु अब मेरा मन नही मानता, मेरी बेटी मुझसे नही छोडी जाती, मैंने कह दिया न कि मैं इसे दीक्षा नहीं दूंगा।

लोगों ने और समझाने का प्रयत्न किया पर सेठ जी यह सब कब सुननेवाले थे। वे तो और अधिक आवेश मे आकर कडकते हुए बोले।

"बस रहने दो अब मुझे अधिक मत समझाओ, मैं सब जानता हूँ, दूसरों को उपदेश तो मैं स्वय भी खूब देना जानता हूँ। यदि साध्वी जी पर ऐसी ही दया भक्ति उमडी पड़ती हो तो दो न दो चार अपने कलेजे के टुकडे साध्वी जी को भेंट, कौन मना करता है। मुझे किसी के उपदेश की आवश्यकता नहीं है। मैं अपनी बेटी को दीक्षा नही दूंगा। सब चुपचाप अपने घर चले जाना, अधिक कुछ गडबड की तो देख लेना यह जेब मे अफीम की पुडिया रखी है, खाके सो जाऊंगा।

इसके पश्चात् वे सभी क्या बोलते। अपना-सा मुंह लेकर लौट गए।

१७—कठिन कसौटी पर

साम, दाम, दण्ड किसी भी नीति से जब दादाजी बेटी को न झुका पाए तो उन्होंने अन्तिम उपाय अपनाया राज्याश्रय का। सारा का सारा मामला ज्यों का त्यों राज्य के हाथों में सौंप दिया और बयान में लिख दिया कि मेरी नाबालिग बेटी को साध्वियां बहकाकर सन्यासिनी बना रही है। अतः सरकार मेरी मदद करे।

उस समय पीपाडवालों को विशिष्ठ कारवाई के लिए निम्बाज जाना पड़ता था।

निश्चित समय पर दाखीबाई के लिए निम्बाज से निमंत्रण आया ? रूपांबाई, साध्वी जी एवं सारा गांव आशंकित था। न जाने अब क्या होगा। सभी दीक्षा को भूलकर साध्वी जी के लिए चिंतित थे। पर दादाजी अपनी विजय पर फूले न समाते थे। उनको पूरा विश्वास था कि १३ साल की नाबालिग बालिका की दीक्षा सरकार किसी भी हालत में न होने देगी। सभी आतंकित थे, पर दाखीबाई तो निर्भय, निश्शंक निम्बाज की ओर चल पड़ी। "मैंने चोरी की नहीं, कोई अनैतिक कार्य किया नहीं। अपना जीवन मैं अपनी इच्छानुसार व्यतीत करूँ, इसमें सरकार को क्या लेना देना है। मेरी दीक्षा में किसी की हानि भी नहीं, मेरा अपराध भी

नही। दादाजी का मोह है, इससे मेरा क्या ? ऐसे ही विचारों मे खोई नमस्कार महामत्र का वल लिए वह निम्वाज के ठाकुर के सामने आ खडी हुई। उस समय न्याय सत्ता प्राय पचो व ठाकुरो के हाथों मे ही रहती थी।

अखण्ड निश्चय वल, अडिग मनोवृत्ति, तेजस्वी प्रभाव वहा के वातावरण को प्रभावित कर रहा था।

दाखीवाईका सलोनारूप, भोला चेहरा, सरल आँखें, त्याग वैराग्य अग्नि मे तपा तपाया तेज एव आत्म विश्वास की लाली देखते ही ठाकुर विस्मयाभिभूत वन गए। उनके मुह से सहसा ही प्रश्न निकल पडा।

"क्या यही देवाशी वाला ससार त्यागकर सन्यासिनी वन रही है?

जेवर एव वस्त्रो के लिए मचलनेवाली वालाएँ तो उन्होने वहुत-सी देखी थी। भोग-विलास, वैभव की शिकायतें लेकर तो उनके पास अनेकों वालाएँ व वालाओं के अभिभावक आए थे। लेकिन प्राप्त ऐश्वर्य, सुख सामग्री को लातमार कर जानेवाली वालिका को रोकने के लिए अभिभावक की प्रार्थना उनके लिए असीम आश्चर्य की वात थी। ऐसा अपने ढग का निराला मामला उनके पास प्रथम ही आया था और शायद अन्तिम भी हो। उनकी समझ मे यह वात नहीं आ रही थी कि एक नन्ही-सी वालिका ने विना ससार सुख, अनुभव किए ससार का असली विनश्वर रूप अपनी अनुभवी आँखों से देख लिया है। उनके मनमे हठात् प्रश्न उठा :—

अवश्य इसको किसी ने वहकाया है, वर्ना यह क्या जाने कि

संयम क्या है ? परन्तु ठाकुर की आत्मा विचारों का साथ नहीं दे रही थी। उनकी आत्मा कह रही थी, बहकाई हुई इतनी निर्भय नहीं होती। बिना आत्मबल व सच्चाई की शक्ति के यों मेरे सामने निर्भय खड़ा होना कोई सामान्य साहस की बात है ? ऐसी ही उधेड बुन में उलझे ठाकुर बोले :—

"क्यों बेटी तूं सन्न्यास लेगी ?"

"जी"

"क्यों ?"

अन्तर प्रेरणा ऐसी ही है।

"विवाह क्यों नहीं करती ?"

"इच्छा नहीं होती"

"जानती है सन्न्यास क्या चीज है।"

"बिना जाने सन्यास की ओर तीव्र आकर्षण नहीं होता। मैंने संसार व सन्यास को ठीक से जाना है।

"बड़ों के आदेश का पालन करने में धर्म नहीं है क्या ?"

धर्म क्यों नहीं है, पहला धर्म तो आज्ञा पालन ही में है। पर उसकी भी तो मर्यादा है। यदि बड़ों की आज्ञा जीवन-निर्माण में, आत्म विकास में व्यवधान सिद्ध हो, रोडा डाले तो उसका प्रतिरोध, विनम्रतापूर्वक प्रतिकार करना भी अधर्म नहीं है।

"उत्तर सुनकर ठाकुर चकित रह गए, उन्हें विवश हो विश्वास करना पड़ रहा था, कि उनके सामने एक बालिका खड़ी थी। बालिका के यथार्थ, संयत-संक्षिप्त उत्तर उनके मन मस्तिष्कको मूढ़ बना रहे

थे। उनका मन उन्ही से पूछ रहा था कि क्या उत्तर भी इसे किसी ने सिखाए हैं ? मैं क्या पूछू गा इसका किसी को क्या पता, जबकि मुझे भी पता नही था कि समय पर मैं क्या पूछू गा। यह बालिका कोई श्रापभ्रष्टा देवी का अवतार ही है। उन्होंने फिर प्रश्न किया :—

दीक्षा पश्चात् यदि मन का झुकाव विवाह की ओर हुआ तो क्या करोगी ?

"विवाह तो सामने खडा है, और झगडा ही किस बात का है। सभी दृष्टि से यह विवाह योग्य है। किसी प्रकार की त्रुटि या अभाव भी नही है किन्तु मुझे तो विवाह का विचार मात्र ही नही रुचता। ऐसी इच्छा ही नही होती, तो भविष्य मे इच्छा कहाँ से आवेगी। आखिर अन्तर की अतृप्त लालसा हो तो आगे जाकर जागरित होती है। मैंने अपने अन्तर का खूब मथन किया है, खूब टटोलकर देखा है ऐसी कोई लालसा नही जो आगे जाकर मुझे असमजस मे डाल दे। मेरे हृदय मे विवाह के प्रति अणुमात्र भी आकर्षण नही, बीज बिना वृक्ष की कल्पना क्या मात्र कपोल कल्पना नहीं ?

न जाने कहां से सरस्वती आकर बैठी थी। अन्यथा ऐसे उत्तर एक बाला के मुँह से हो सकते थे ?

"ठाकुर का हृदय श्रद्धावान होता जा रहा था। फिर भी अपनी जिम्मेवारी का ध्यान रखते हुए उन्होंने भय नीति का आश्रय लिया।

"बेटी। देख वह सामने क्या है"

"तोप है"

तो बस इन आग्रहपूर्ण तर्कों को त्यागकर दादाजी जैसा कहे वैसा करो, वर्ना तोप से उड़ा दूंगा, ऐसा कहते हुए ठाकुर तोप की ओर लपके।

किन्तु यहां भय था ही कहाँ? जीवन मरण का रहस्य जिसने जान लिया उसके लिए जन्म मरण वस्त्र बदलने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं था। जिस हृदय में मृत्युविजय की पूर्ण कामना जगी थी, वह मृत्यु से क्या डरता?

"यदि आप का न्याय यही अज्ञा देता हो तो तोप चला दीजिए। मुझे तो मरने का भय नहीं, जब एक दिन मरना ही है तो आज आप की तोप से मरूं अथवा कल बीमारी के वहाने से मरूं, इसमें कौन अन्तर आनेवाला है। अपने आदर्श के लिए प्राण त्याग तो और भी महत्व पूर्ण हो जाता है।

"जिस ठाकुरके सामने उसके घर के लोग भी यों निर्भय नहीं बोल पाते थे, उसके सामने एक बालिका निःशंक होकर यों उत्तर प्रत्युत्तर कर रही थी।

राजस्थान के मध्य युग के रजवाड़े और मदिरामत्त ठाकुरवासों की क्रूरता, नृशंसता अपरिचित नहीं। किन्तु दाखीबाई का पुण्य प्रताप ठाकुर पर जमरहा था। कह दिया सो कह दिया की आदत वे भूल गए और एकदम ठंडे हेम हो गए।

उनके सामने एक कृत संकल्पी दीपशिखा जल रही थी, उसकी प्रभावशाली प्रभा से ठाकुर चौंधिया गये।

"बेटी ! तुझे किसी ने सिखाया बुझाया तो नही ?"

"नही यह भ्रान्ति निर्मूल है, मुझे किसी ने भी सिखाया, व रुलवाया नही वल्कि वालिका मान कर सदैव मेरी भावना की उपेक्षा ही की गई है। मैं अपनी अन्तर प्रेरणा से स्वतः ही सयम ग्रहण करने के लिए उद्यत हुई हूँ। मुझे मृत्यु पाने वाला पति नही चाहिए। मुझे तो निष्काम, अमर पति वरना है। अत. ससार के शक्कर चढे हलाहल के ये लड्डू मुझे नही चाहिए।

ठाकुर की आत्मा उसे वेरन्वेर दाखीवाई के सत्प्रयत्न मे सहायक बनने के लिए प्रेरित करने लगी। उसे अनुभव हो रहा था कि इस दिव्यात्मा के सयम-पथ मे विघ्न डालना मानवीय कार्य नही होगा।

सत्ता का बल अनीति रोकने के लिए प्रयोग मे लाया जाना है। सत्यमार्ग से हठात् किसी को विचलित करना, सत्ता के लिए गौरव की वात नहीं। ऐसा मनोमन निश्चय कर उस दिन ठाकुर ने ससम्मान दाखीवाई को निवासस्थान पर विदा करते हुए कहा कि कल मैं इस विषय मे अपना अन्तिम निर्णय दूगा।

१८—ठकुर का न्याय

इस बीच दादाजी ने तार देकर अपने पौत्र श्री फूलचन्दजी साहब एव जामाता श्री धनराजजी साहब को अमरावती से अपनी मदद के लिए बुला लिए थे। ये सभी दाखीवाई को समझा रहे थे। माँ

से तो उन्हें मिलने ही नहीं दिया जाता था। साध्वी जी की तो वात ही क्या? पर दाखीवाई का आत्मवल जाग उठा था।

उधर ठाकुर विचार सागर में डूवने तैरने लगे। क्या करूं? दाखीवाई की मदद करूं या दादा जी की, न्याय तराजू मेरे हाथ में है। मेरी आत्मा मुझे सत्य का पक्ष लेने की प्रेरणा करती है, और सत्यमार्ग दाखीवाई का है। पर दादा जी, उनकी प्यारी वेटी उनकी गोद से छिन जाएगी। कैसी प्यारी वेटी है, ऐसी प्यारी वेटी को कैसे छोड़ा जा सकेगा? क्या करूं? समझ में नहीं आता। इसी प्रकार के विचार मंथन करते हुए ठाकुर आखिर दाखीवाई की ही सहायता करने के निश्चय पर आकर ठहरे।

दूसरे दिन न्यायालय का विशाल प्रांगण जनसमूह से खचाखच भरा था। सभी की उत्सुक आँखे ठाकुर के मुखपर टिकी थी। ऊँट किस करवट बैठेगा इसका अन्दाज किसी को नहीं था।

"ठाकुर के मानस में दाखीबाई की मंजुल मूर्ति एवं प्रौढ़ विचार व अकाट्य-तर्क घूम रहे थे। उनका हृदय उस त्याग मूर्ति के चरणो पर श्रद्धावनत हुआ जा रहा था। कुछ समय तक गम्भीरता पूर्वक विचार करनेके पश्चात् ठाकुर के चेहरे पर दृढ़ता की अभास रेखा उभर आई गद् गद् कंठ से ठाकुर ने निर्णय सुनाना प्ररंभ किया :—

जनता स्वांस रोके शान्तचित्त सुनने लगी।

दाखीबाई को न किसी ने बहकाया है, न ललचाया है। इसकी अन्तर प्रेरणा ही इसे त्याग-मार्ग पर ले जा रही है। मेरे अपने

अनुभव से तो हम इसे जैसी सामान्य वाला देख रहे है, वैसी सामान्य यह नही है। यह तो कोई पूर्वाराधक देवाशी देवी धर्म का डका वजाने स्वर्ग से धरापर आई है। इसको अपने निश्चय से विचलित करना शक्य नही है। इसका भविष्य में परमोज्ज्वल देख रहा हूँ। मेरे हृदय मे दाखीवाई के प्रति श्रद्धा का प्रादुर्भाव हुआ है।

प्राचीनकाल मे कई वाल महात्मा हो गए है। सन्यास के लिए वय-मर्यादा के स्थान पर योग्यता देखना ही अधिक उचित होता है। मैंने इसकी योग्यता का परिचय पाया है, यह देवी सन्न्यास के सर्वथा योग्य है। यह महासती होकर एक दिन अपने सहज योग वल से ससार मे चमकेगी। अतः दादाजी से प्रार्थना है कि वे इसके मार्ग मे रुकावट न डालें, बल्कि धर्म के लिए दाखीवाई को सहर्ष भेंट करे।

जनता जय-जयकारों से आकाश गुजाने लगी, चारों ओर मे हर्ष ध्वनियाँ सुनाई देने लगी। दाखीवाई पूर्ववत् निर्भय खडी थी। यह मोहपर अमोह की विजय थी, भोग पर त्याग की जीत थी! इच्छा पर विराग का वर्चस्व था। आलोभ से लोभ प्रभावित था।

दृढ़ मनोवल के आगे पत्थर भी मोम वन कर पिघल जाते हैं तो यहाँ पर ता सहृदय मानव थे।

१६—कल्याण पथ की ओर

आग को प्रचण्ड-ज्वाला मे तपे विना एवं कठिन-कसौटी पर

अपना शरीर घिसे विना स्वर्ण-कुन्दन नहीं वनता है। पत्थर पर तन घिस कर ही चन्दन—चन्दन रूप में ग्राह्य वनता है, इसी प्रकार कठिनाइयों की वीहड़ घाटियाँ पार कर जीवन-संग्राम के घात-प्रति-घातों को सहन कर के ही मानव महात्मा वनता है। परिस्थितियों के थपेड़े खाकर विचलित हो जाने वाले कभी भी सफलता के दर्शन नहीं कर पाते।

पीपाड में फिर मंगलतूर वज उठे, वाजे, गाजे, गीत, नाद शुरू हुए। ओसियाँ की भजन मण्डली पुनः लौट आई। निकटवर्ती जोधपुर एवं जोधपुर के आस-पास के इलाके की जनता दूने वेग से उमड आई। अव सभी ने जान लिया था कि पीपाड में एक होनहार सरस्वती-सी अद्भुत बाला साध्वी बन रही है। यदि यह कसौटी न होती तो इस कली का सौरभ इस प्रकार प्रस्फुटित होकर कैसे फैलता? वास्तव में जो होता है, अच्छे के लिए होता है, पर परिणाम निकलने तक धीरज नही रख पाने से हम कार्य को स्वयं बिगाड़ लेते है! निकटस्थ व दूरस्थ आगरा, देहली, वीकानेर, जोधपुर, जयपुर आदि शहरों से भारी संख्या में लोग दौड़े आ रहे थे। क्योंकि इस दीक्षा का डंका चारों ओर वज चुका था। न्यायालय में पहुँच कर दाखीबाई की प्रतिभा में चारचाँद और लग गये थे। आठ दिनों तक अठाई महोत्सव स्वामी वात्सल्य, पूजा, प्रभावना, रात्रि जागरण की धूम मच रही थी। सभी का हृदय दाखीबाई के प्रति सम्मान से भरा था, मानस उल्लास से ओतप्रोत था।

दाखीबाई को नित्य नए वस्त्राभूषणों से सजाया जाता। जिसके

पूजनीया जतन श्री जी महाराज पृष्ठ—८४

मन मे जो आता वह करता, किसी प्रकार का किसी पर प्रतिबन्ध नही था।

आत्म-कल्याण के पथिक का इन भाररूप आभरणों से क्या सम्बन्ध? जिनका धन विशुद्ध सयम, जिनके अलङ्कार अहिंसा, सत्य, अचौर्य एव ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह हैं, उनकी शोभा ये जड अलकार क्या बढाते? उसके लिये तो ये मात्र भाररूप ही थे। विधि ने तो दाखीबाई को इन शाश्वत आभूषणों से सजाने का निश्चय किया था। उसे इन मानवीय दुर्बलता के द्योतक मिट्टी के आभरणों से सजाना एक मात्र मानवीय अप्रशस्त मोह की सतुष्टि ही था। किन्तु जिसे इस भार से जीवन पर्यन्त के लिए मुक्त होना था, वह इस थोडी देर के भार से क्यों घबराती? व्यर्थ किसी के आनन्द मे विघ्न भी क्यों बनती? दाखीबाई ने अपने मन मे ठान ली थी कि ये लोग जो पहनाएँगे पहन लेना है, खिलाएंगे खा लेना है। थोडे समय के आनन्द मे विघ्न देने की बजाय इन लोगों का आदेश मान लेना अधिक उचित है।

यथा समय सवारी के साथ प्रातःकाल दाखीबाई को बाजारों मे घुमाया जाने लगा। सभी बाजारों मे घूमकर दाखीबाई की सवारी दादा जी के मकान पर पहुँची, कारण दाखीबाई को दादा जी से आशीर्वाद लेना था। पर दादा जी से यह दृश्य देखा न जा सका, मोह की बडी तीव्रता थी। अत वे प्रात काल उठकर निकट के किसी गाँव मे चले गए थे। दाखीबाई घर के सामने से निराश लौटी। दादा जी का प्रेम दाखीबाई पर सीमातीत था, पर दाखी का भविष्य

विधाता ने उनके मन के प्रतिकूल लिखा था। अतः उनके मन की मुराद पूरी न हो सकी।

वि० सं० १९८१ के ज्येठ मास की कृष्णा पंचमी को दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त था। यथा समय सर्व-संघ व जनता एवं अग्रगण्यों के सानिध्य में दाखीवाई का दीक्षा वरघोडा (दीक्षा जुलूस) गाँव के बाहर तलाव के किनारे स्थित शान्तिनाथ भगवान के मन्दिर पर पहुँचा। सारे मार्ग भर दाखीवाई दान की महत्ता एवं श्रीमन्तों को धन का उपयोग बताती हुई दोनों हाथों से धन को उछालती हुई माताजी के साथ मन्दिर में प्रवेशी। सभी की स्नेह-सुधा वर्षण करती नजरों के मध्य दाखीवाई ने एवं माताजी रूपांवाई ने भगवन्त के चरणों में नमस्कार किया, जनता आनन्द से जयजयकार करने लगी। उल्लास व उत्साह की सीमा न रही थी।

यथा समय हजारों की उपस्थिति एवं श्री संघ की अध्यक्षता में सेठ मगनमलजी की पौत्रि, मिश्रीमलजी की प्रिय पुत्री, रत्नकुक्षि रूपांवाई की प्यारी बेटी, परिजनों की दुलारी एवं हमारी साहस की प्रतिमूर्ति दाखीवाई को तथा रूपांवाई को पुज्या जतन श्री जी म० ने क्रिया विधान पूर्वक भागवती प्रवर्ज्या प्रदान की। क्रमशः जैन नियमानुसार रूपांवाई का नाम श्री विज्ञान श्री जी एवं हमारी दाखीवाई का नाम गुणनिष्पन्न विचक्षण श्री जी रखा गया। हम शुरू से आजपर्यन्त आपकी विचक्षणता के सांगोपांग दर्शन करते आ रहे हैं। अब हमारी दाखीवाई - दाखीवाई न रहकर पूज्या विचक्षण श्री जी बन गई हैं।

शुभ्र श्वेत वस्त्र, मुण्डित मस्तक, नन्हे नन्हे हाथों मे अहिंसाका प्रतीक रजोहरण एव मुहपत्ति मुनिवेश से सुशोभित यह रूप आज अद्भुत दर्शनीय बना था। जो भी देखता देखता ही रह जाता। लोग श्रद्धावश आपके चरणों मे नतमस्तक हो रहे थे। इस समय पीपाड की छटा देखने योग्य थी। दाखीबाई अपने असीम साहस के बल से अपनी मनोकामना पूर्ण करने मे सफल रही।

दीक्षा पश्चात् पू० जतन श्री जी० म० ने सघ समक्ष विहार का प्रस्ताव रखा।

वहता पानी निर्मला कभी न गन्दा होय।" प्रवाहित नीर निर्मल स्वच्छ, शुद्ध रहता है। उसी प्रकार घूमता-फिरता मुनि ही शुद्ध, पवित्र, निष्कलक रह सकता है। रुके हुए जल मे जिस प्रकार विकार आ जाते हैं उसी प्रकार एक ही स्थान मे निवास करनेवाले मुनिका मन मोह मे बंध जाता है, सयम मलीन हो जाता है। अत मुनिको स्थिरवास की आज्ञा भगवान ने बहुत ही खास कारण, यानी शरीर अशक्त होने पर ही करने की दी है।

स्वपर-कल्याण की भावना से निरतर अन्तर बाह्य गतिशील मुनि का जीवन ही प्रतिपल आत्म विकास की ओर बढ़ता है। और यही उत्तम मुनि जीवन है। अत भगवत ने क्षेत्र अप्रतिबद्ध होकर ही सतत विचरण करने की आज्ञा मुनि को दी है। किसी भी क्षेत्र मे अधिक निवास राग का बन्धन व अनादार, अवहेलना का कारण होता है। इससे मुनिके सयम मे शिथिल होने की अत्यधिक सभावना रहती है। अत प्रभु की आज्ञानुसार दीक्षा के अनन्तर ही

चरित्रनायिका ने अपनी योग्यतम साध्वाचार प्रवीणा गुरुणीजी श्र। जतन श्री जी म० के साथ चतुर्मासार्थ बडलू (भोपालगढ़) की ओर प्रस्थान किया, मार्ग में गणाधीश्वर हरिसागर सूरीश्वरजी म० के जोधपुर में दर्शन का लक्ष्य भी था।

पीपाड की जनता आज उदास खड़ी अपने प्रकाश का गमन-पथ निहार रही थी। उनका सीमित प्रकाश आज असीम की ओर अग्रसर हो रहा था। उनकी ज्ञान चान्दनी आज शोक संतप्त जगत को शीतलता प्रदान करने जा रही थी। सभी का मन उदास था, विषाद भरा था। दादाजी तो आए भी नहीं यह आघात सहने योग्य शक्ति अब उनमें कहां से आती ?

फुदकती हुई पुलकित गात नन्हीं सी दाखी बाई विचक्षण श्री जी बनकर चली जा रही थी अपने साध्वाचार की प्रथम पगडंडी पर।

२०—साध्वाचार की प्रथम पगडंडी (बड़ी दीक्षा)

वि० सं० १९८१ का प्रथम चतुर्मास हमारी चरित्र नायिका ने पु० जतन श्री जी म० के सानिध्य में बडलू में व्यतीत किया। चतुर्मास पश्चात् सभी के साथ आप पुनः जोधपुर पधारीं। वहां विराजमान गणाधीश्वर परम पूज्य हरिसागर सूरिश्वर म० के करकमलों से वि० सं० १९८१ माघ शुक्ला पंचमी (वसंत पंचमी)। के दिन आप श्री की बड़ी दीक्षा हुई। योगद्वहन शुरू हुए। योगोद्वहन में मुनि को कुछ दिन लगातार तपस्या पूर्वक साधना जाप ध्यान आदि करना पड़ता है। अतः यथा समय योगोद्वहन भी सम्पन्न हुए।

जैन मतानुसार दीक्षार्थी को दो वेर दीक्षा ग्रहण करनी पडती है। प्रथम लघु पश्चात् वडी दीक्षा। हमारी चरित्रनायिका की लघु दीक्षा हो चुकी थी, वडी अभी होनी शेष थी। वडी दीक्षा के लिये कुछ समय निर्धारित रहता है। उसके वाद ही वडी दीक्षा होती है। तव तक मुनि पूर्व मुनि मण्डल मे पूर्णत: मिल नही सकता, उनके व्यवहार मे परस्पर कुछ व्यवधान रहते हैं।

इसमे आशय यह सम्भव है कि लघु सन्यास लेकर मुनि कुछ समय गुरुकुलवास मे सयम की साधना कर कठिनाइयों का साक्षात्कार कर ले। इसके वाद उसे वडी दीक्षा देकर आजीवन मुनिधर्म मे दीक्षित किया जाए। और इसके वाद ही पूर्ण मुनिजीवन की शुरुआत होती है।

अब सभी कार्य निपटने के वाद धार्मिक अध्ययन आरम्भ किया। ज्ञान, ध्यान, सयम साधना ही आपके जीवन का मूलध्येय था, और आप उसी मे लीन रहने लगी। किन्तु आपका हृदय पूज्या सुवर्ण श्री जी म० का सानिध्य पाने के लिए तडपता रहता था। उनकी स्मृति वश आप को चैन नहीं पडता था। यथासमय विहार कर आप सभी मेडता रोड प्राचीन पार्श्वनाथ तीर्थ की यात्रा करते हुए अजमेर पधारे।

अजमेर का संघ श्री जतन श्री जी म० के उपकार से ऋणि था, वहाँ जतन श्री जी म० ने चतुर्मास करके काफी जागृति की थी। महिला समाज में भी आपने विशेष शान्ति फैलाई थी। अतः यहाँ के सघ ने आपको कुछ समय यहाँ रोक ही लिया। पश्चात् जयपुर

से समाचार मिले कि श्री वयोवृद्धा हुलास श्री जी म० गिर गये हैं अतः आपलोग शीघ्र विहार कर जयपुर पधारीं सं० १९८२ का चतुर्मास जयपुर किया। जयपुर से आप श्री सुवर्ण श्री जी० म० की सेवा में देहली पहुँचे।

इस समय श्री सुवर्ण श्री जी म० वृद्धावस्था में थी। अपनी उत्तरावस्था में आपको पाकर वे भी खूब प्रसन्न थी।

२१—ज्ञानार्जन

जैनमुनि के लिये आचार एवं विचार ये दोनों पक्ष ही समान रूप से मान्य होते हैं। आचारहीन विचारों का जहाँ कोई महत्व नहीं, वहाँ विचार शून्य आचार भी केवल काय क्लेश है। आचार एवं विचार का सामंजस्य ही पूर्णता की प्राप्ति के लिये हितकर है।

विचार पूर्वक आचार के लिये ज्ञान प्राप्तिकी परम आवश्यकता है। जैनमुनि का निर्दोष संयमी जीवन ज्ञान, दर्शन, चारित्र की पवित्र उपासना का प्रतीक है। वह सभी सांसारिक उपाधियों का त्याग कर ज्ञानाराधना में संलग्न हो जाता है। ज्यों-ज्यों उसे सम्यग् ज्ञान द्वारा वस्तु का वास्तविक स्वरूप ज्ञात होता है, त्यों-त्यों रत्नत्रयी निर्मल बनती जाती है। ज्ञान बिना आत्मधर्म की सुन्दरतम आराधना शक्य नहीं होती। अतः दीक्षा पश्चात् आप श्री ज्ञानाराधना में तल्लीन बनी।

देहली आने के पश्चात् आपका अध्ययन और भी व्यवस्थित रूप से शुरु हुआ।

आप प्रातः चार बजे उठती और रात मे ग्यारह बजे सोती। इस अवधि मे साध्वाचार का पालन, स्वाध्याय, भजन, भक्ति, गुरु सेवा, आहार, निहार, एव अतिरिक्त समय मे पठन-पाठन का क्रम चलता रहता।

आपकी बुद्धि शुरू से ही प्रखर थी। अल्प समय मे ही आप व्याकरण, काव्य, कोष, छन्द, अलकार, न्याय आदि का अभ्यास समाप्त कर आगम-ज्ञान प्राप्ति मे लग गई।

जिसके पास बुद्धि, वैभव होता है, उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं। बुद्धि का धनी कलम के बल से लाखों करोडों का धन अर्जन कर लेता है, बुद्धिहीन मजदूर दिन भर हथोडे तोड कर भी पेट पूरा नही भर पाता।

पढ़ने मे आपकी अतीव रुचि थी, पाठ कण्ठस्थ करने का समय प्रायः पूरा हो चुका था। अब पठन-पाठन, मनन-चिन्तन का समय था। आपके हाथ मे जो भी अच्छी पुस्तक आती उसे समाप्त किए बिना आपको चैन नही पडती। ग्रहण शक्ति तथा सारसग्रह बड अद्भुत था। जो पुस्तक पढ़ती, उसका सार आपके मस्तिष्क मे सुरक्षित रहता, उसका उपयोग अवसर पडने पर तत्काल हो सकता था।

जैन-ग्रन्थों का पर्यावलोकन तो आपके लिये अनिवार्य था ही, किन्तु आपने इतर साहित्य भी खूब पढ़ा व गुना मथा। हर समय आप वाचन मे तल्लीन रहती।

जैनमुनि रात्रि में प्रकाश का उपयोग नहीं करते, अतः जब तक अक्षर दिखाई पड़ते आप पुस्तक पढ़ती रहतीं, पश्चात् पठित का मनन, चिन्तन करतीं। यही कारण है कि आज आपके ज्ञान की परिधि इतनी विशाल है। विभिन्न धर्मों में समन्वय वुद्धि भी इसी का परिणाम है।

सुवर्ण श्री जी महाराज को विद्या से वड़ा प्रेम था। उनके समुदाय में एक से एक विदुषी साध्वियाँ थीं, आज भी हैं। किन्तु संघ के दुर्भाग्य से पढ़लिख कर संघ सेवा के योग्य तय्यार होतीं, उनका या तो स्वास्थ्य विगड़ जाता, अथवा उन्हें काल उठा ले जाता। कई वेर ऐसा होने से उनका उत्साह मंद पड़ गया। वे सोचतीं और कहा भी करतीं थीं कि रात-दिन एक करके संघ का द्रव्य व्यय करा कर ये साध्वियाँ पढ़ाई जाती है। परन्तु अभाग्यवश वे संघ के प्रति अपना कर्तव्य करने की भावना पूर्ण किये बिना ही काल कवलित हो जाती है, आत्म-साधना भी रह जाती है। अतः इससे तो यही अच्छा है कि सामान्य शिक्षा प्राप्त कर वे आत्म-कल्याण की साधना में लगी रहें। अतः आप श्री ने अपनी उत्तरावस्था में प्राप्त हमारी चरित्र-नायिका पर समुचित भार नहीं डाला। विशेष रोक टोक भी नहीं की। "होनहार विरवान के होत चीकने पात" आपके पास बुद्धि वल एवं गुरु कृपा का अक्षय खजाना था जिससे आप विशेष परिश्रम के बिना ही पण्डिता हो गईं। आपका औदारिक शरीर संभवतः कोमल परमाणुओं से निर्मित हुआ है, अतः आप कभी भी पूर्ण स्वस्थ नहीं रहती है, तदपि आपने द्रव्यानुयोग, कथानुयोग आदि पर अधिकार

प्राप्त किया। यह देख श्री सुवर्ण श्री जी म० एव जतन श्री जी म० का हृदय आनन्द विभोर हो गया।

२२—गुरु कृपा

दीक्षा पश्चात् जहाँ सुवर्ण श्री जी महाराज का आपके प्रति चरम सीमा का वात्सल्य था, वहाँ नियन्त्रण भी कम नही था। वैसे आपके लिये अनुशासन की आवश्यकता नही थी। आप स्वत ही अनुशासित थीं, फिर भी सुवर्ण श्री जी का वात्सल्यपूर्ण अनुशासन आपके जीवन का बहुमुखी विकास कर रहा था। केवल वात्सल्य उच्छृङ्खलता एव केवल कठोर अनुशासन प्रतिकार के भाव पैदा करते हैं।

आपकी गुरु भक्ति अनुपम थी, गुरुसेवा एव आज्ञा पालन आपके जीवन का ध्येय था। गुरुणीजी के सारे कार्य आप अपने हाथों करने मे आनन्द मानती, जब कि उनका शिष्या समुदाय काफी विस्तृत था। आपकी एक और विशेषता उल्लेखनीय है। किसी की भी मुखाकृति देख कर आप यह जान लेती हैं कि उसके अन्तर मे किस वस्तु की इच्छा है, या उसकी क्या आवश्यकता है। इसी कारण आप गुरुणीजी की सेवा सुचारुया कर पाती।

गुरु भक्ति मे रत रहते हुए आप ज्ञानार्जन भी करती गई। कभी-कभी सुवर्ण श्री जी भी अपने अनुभुत उपदेशों का खजाना आपके सामने खोल देती, इससे आपको जीवन निर्माण मे बहुत सहारा मिल जाता। गुरु कृपा विरले ही भाग्यशालियों को उपलब्ध होती है।

सुयोग्य कलाकार के हाथों में समर्पित अनगढ़-पाषाण-शिला मौन निरीह भाव से छैनी से अपना देह छिलाती हुई उफ भी नहीं करती, पैरों तले रौंदी जाने वाली वह शिला, एक दिन देव-मूर्त्ति बन विश्व-आराध्य बन जाती है। कलाकार जबतक प्यार से सहलावे तबतक खुश, आघात करे तो हाथों से छिटक कर दूर, दो टूक। अधिक करे तो कलाकार का सिर फोड़ने को उद्यत। ऐसी शिला को कौन गढ़ेगा? इसी प्रकार जो शिष्य अपना आपा खोकर गुरु चरणों में समर्पित हो जाता है, उसके प्रत्येक व्यवहार एवं वचन को निर्विकल्प भाव से बर्दाश्त करता है, उसी का जीवन विकास होता है वह भी मूर्त्ति की तरह उपास्य बन जाता है।

गुरु के रोम-रोम में शिष्य की कल्याण कामना, शिष्य के जीवन विकास की पवित्र भावना बसी रहती है। ऐसे गुरु की सेवा, उनके कटु-मधुर-शब्द शिष्य के जीवन निर्माण की आधार शिला बनते हैं।

जिस प्रकार शिला की मजबूती उसमें विद्यमान मूर्त्ति की मंजुलता कलाकार को प्रेरित करती है, उसी प्रकार सुयोग्य शिष्य की संस्कार सम्पन्नता गुरु को आकर्षित किए बिना नहीं रहती। हमारी चरित्र-नायिका के विषय में भी यही हुआ।

लगातार सात साल का समय ज्ञानार्जन के साथ-साथ गुरु सेवा, एवं गुरुकृपा प्राप्ति में ही व्यतीत हुआ। पूर्व के २ चतुर्मास ही आपसे दूर बडलू व जयपुर हुए थे।

२३—गुरु विरह

मृत्यु नागिन का विश्वव्यापी दश प्राणीमात्र के भौतिक शरीर को डसने के लिए प्रतिपल सचेष्ट है। क्या धनी, क्या निर्धन, क्या ज्ञानी, क्या अज्ञानी, अबाल, वृद्ध सभी के जीवन की शिला इस पिशाचिनी के हाथों मे आबद्ध है। नगर, जगल, वन, पर्वत, डाल-डाल, पत्ते-पत्ते से इस नागिन की क्रूरता का मर्मभेदी हाहाकार सुनाई दे रहा है। मानव की समस्त शक्तियां इसके सामने कुण्ठित हो गई। हवा, पानी, धूप छाव जैसी नैसर्गिक शक्तियों पर विजय पाने वाले शक्तिशाली वैज्ञानिक, एक ही बम विस्फोट से बडे-बडे शहरों को श्मसान बनाने की ताकत रखनेवाले महारथियों की गर्दन पर भी इसकी तलवार लटकती रहती है। इसके सामने अद्यपर्यन्त सभी शक्तियां लाचार हैं। जगत के सभी पदार्थों का गत्यावरोध सभव है, पर इसका चक्र तो अविरोध प्राणीमात्र के सिर पर घूम रहा है।

आपकी दीक्षा के पूर्व ही प्र० श्री सुवर्ण श्री जी म० का स्वास्थ्य शिथिल होने लगा था, पर आत्मबल अद्भुत होने से काम चल रहा था। आपके चतुर्मास देहली, जयपुर के बाद के शेष चार चतुर्मास बीकानेर एव उदरामसर मे श्री सुवर्ण श्री जी म० के साथ ही व्यतीत हुए थे।

सुवर्ण श्री जी म० की अवस्था अब विहार योग्य नही रही थी, शरीर दिन प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा था। फिर भी आपकी इच्छा स्थिरवास की नही थी, किन्तु मानव का सोचा रह जाता

है और कुदरत का किया होकर रहता है। श्री सुवर्ण श्री जी का स्वास्थ्य अधिक खराब हो जाने से विहार रुक गया।

जैन साधुत्व की मर्यादा के अनुसार मुनि को किसी भी प्रकार के वाहन का उपयोग करने की सुविधा नहीं होती। उसे अपनी देह के बल पर ही धर्म-प्रचार करते हुए ग्राम, नगरों में विचरण करना इष्ट होता है। विशेष अस्वस्थता व कमजोरी वश श्री सुवर्ण श्री जी म० को विवश होकर बीकानेर में ही स्थिरवास करना पड़ा।

हमारी चरित्र नायिका भी आपकी सेवा में रहकर ज्ञानार्जन में लगी रहीं। गुरुणीजी म० की सेवा में आप सदैव तत्पर बनी रहतीं। इस समय आपकी आयु १९-२० वर्ष के लगभग थी। गुरुसेवा में कब रात बीती, कब दिन बीता पता ही नहीं चलता था। परन्तु आपकी लगन, आपकी सेवा एवं सतत प्रार्थना मृत्युबल पर विजय न पा सकी। कोई भी शक्ति आपके आराध्य, परमोपास्य गुरुणी जी म० को न बचा सकी। अन्तिम घड़ी आही गई।

वि० सं० १९८९ की माघ कृष्णा नवमी शुक्रवार के दिन जैन शासन की शृङ्गार प्र० सुवर्ण श्री जी म० ने नश्वर देह का त्याग कर स्वर्गभूमि की ओर प्रयाण किया। संघ में अन्धकार हो गया, बीकानेर का बच्चा-बच्चा शोकाकुल हो गया।

हमारी चरित्र-नायिका के शोक का क्या पार? उनके हृदय में क्रन्दन मचा था। मात्र सात साल का ही सहवास रहा, शिशु सम्भल ही नहीं पाया था, विधि ने वात्सल्य भरा माँ का हाथ सिर से उठा लिया था। दीक्षा प्रसंग पर स्वजनों का त्याग, पूज्य दादा जी का

वात्सल्य जिसे विचलित नही कर पाया, वही दृढमानसी आज गुरु विरह ताप से मोम की तरह पिघल रही थी। आत्म-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर घर, स्वजन सभी को त्याग गुरु चरणों का आश्रय पकड़ा था और अल्प समय के सहवास पश्चात् ही गुरु का स्वर्गवास, मझधार मे नाव छोड खेवनहार के चले जाने जैसा निराशा जनक था, पर लाचारी थी।

निदान वीतराग वाणी एव गुरुकृपा प्रसाद से आपने इस असमय के वज्रपात को सहन किया। इस समय श्री कल्याण श्री जी, उमग श्री जी, चम्पा श्री जी एव वसत श्री जी आदि कई साध्वियाँ वहाँ मौजूद थी, सभी का हृदय गुरु-विरह ताप से धधक रहा था, परन्तु सभी एक दूसरे को धैर्य बँधा रही थी।

आज भी आपकी गुरुभक्ति अद्वितीय है। गुरु के नाम पर आपके नयन आज भी सजल हो जाते है। जब देखिए आपके मुह से वीर-वीर अथवा सुवर्ण गुरुवर्य्या के ही नाम की ध्वनि निकलती सुनाई देती है। आपके रोम-रोम मे गुरु की मजुल मूर्त्ति अकित है। आज इतनी महत्ता पाकर भी आप अपने को अनाथ जैसा अनुभव करती हैं। गुरु विरह का घाव अद्यपर्यन्त भरा नही, हरा ही है। जब तब आज भी आप दिलगीर हो रो पड़ती है।

साध्वी सघ मे आपको सिर व आँखों पर रखने वाली अनेकों साध्वियाँ थी, श्री जतन श्री जी आपकी दीक्षा गुरु थी, मानाजी विज्ञान श्री जी म० साथ में थी ही। फिर भी सुवर्ण श्री जी का

स्वर्गवास आपके जीवन की सर्वोपरि दुःखद घटना थी। ऐसा हम आज भी अनुभव करते है।

इस अविस्मरणीय घटना के पश्चात् बीकानेर से विहार कर आप साध्वी संघ के साथ बीकानेर के निकटस्थ उपनगर गंगाशहर में पधारीं। और सं० १९९० का चतुर्मास वहाँ ही व्यतीत किया, उसी वर्षावास में आप श्री ने सर्वप्रथम उत्तराध्ययन सूत्र पर प्रवचन किया। तरुण अवस्था, मधुर, मनोज्ञ भाषा, सरल व्याख्या सुन श्रोतागण मन्त्र-मुग्ध हो तल्लीन हो जाते। उत्तराध्यन के प्रथम अध्याय में गुरुविनय का वर्णन आता है। इसका विवेचन करते हुए आप भावाविष्ठ हो जातीं, कंठ अवरुद्ध हो जाता। यह चतुर्मास आपका गुरु-स्मृति में ही व्यतीत हुआ।

इस समय श्री जतन श्री जी म० देहली में विराजमान थीं। आपने भी चतुर्मासान्त बीकानेर में रेल दादावाडी में स्थानीय संघ द्वारा निर्मित सुवर्ण समाधि-मन्दिर में सुवर्ण श्री जी म० के चरणों की प्रतिष्ठा समारोह के बाद देहली की ओर विहार किया। आपके साथ आपके उपदेश से प्रतिबोधित बीकानेर निवासी आसकरण जी पुगलिया के पुत्र लालचन्द जी की धर्मपत्नी एवं नागोर निवासी वृद्धिचन्द्रजी खजांची की सुपुत्री बीस वर्ष की बालविधवा वैराग्यवती श्री कल्याण बाई थीं।

वि० सं० १९९१ का चतुर्मास देहली में श्री जतन श्री जी म० के साथ व्यतीत हुआ। उनकी अध्यक्षता में कल्याण बाई एवं जेसलमेर निवासी (हाल देहली) रिखबदास जी नाहटा की पत्नी

इश्वरजवाई की भागवती दीक्षा प्रदान करवा कर, अविचल श्री जी एव अशोक श्री जी नाम रखा। उन्हे अपनी शिष्याएँ न बनाकर श्री जतन श्री जी म० के नाम की शिष्याएँ बनाई।

२४—प्रसिद्धि की ओर

कली जब प्रस्फुटित होने लगती है, तब उसकी मन्द मन्द सुगध पवन के साथ वातावरण मे फैलनी शुरु हो जाती है।

अब आप पढ लिखकर शासन-सेवा व आत्म-सेवा के योग्य बन गई थी। आपके सामने ग्राम-ग्राम, नगर-नगर मे विचरण कर धर्म-प्रचार करने का स्वर्ण अवसर उपस्थित था। श्री जतन श्री जी म० अस्वस्थ रहा करती थीं व उम्र भी आ गई थी, वे देहली मे ही स्थिरवास कर रही थी। आपको योग्य जान कर उन्होंने श्री बसत श्री जी म०, विज्ञान श्री जी एव दोनो नवदीक्षिताओं के साथ हापुड की ओर विहार करवाया। हापुड वालों का आप के लिए शुरू से ही आग्रह था।

हस्तिनापुर की यात्रा कर आप बिनौली, बडौत, मेरठ आदि उत्तर प्रदेश के नगरों मे घूमने लगी। उत्तर प्रदेश मे दिगम्बर जैनों की सख्या अधिक है। आपके साम्प्रदायिक आग्रह शून्य, मतभेदों से रहित प्रवचनों की मारे उत्तर प्रदेश मे धूम-सी मच गई। यह समय ऐसा था जब कि जैनों के सभी फिरके एक दूसरे पर आक्षेप करने, एक दूसरे को नीचे दिखाने एव एक दूसरे की जडे खोदने पर

आसमान में। चारों ओर तू तू मैं मैं का विक्षुब्ध बना था। ऐसा ही साहित्य प्रचार होता था। वातावरण वैसा ही विषैला बन रहा था। ऐसे समय में समन्वय की बात। सहकार, सहयोग का संदेश, मिल कर चलने का सुझाव, बिना भेदभाव सभी का सम्प्रदायों का सम्मान, एक नई बात थी, अनूठे साहस का काम था। उस समय यह बात अनूठी थी क्योंकि आज समन्वय की बात आदरणीय है। वह समय वर्तमान से सर्वथा विपरीत था।

ऐसे समय में संगठन का राग अलापना, भेदभाव भुलाकर एक ही मंच पर बैठने की बात करना, भगवान महावीर के झंडे के नीचे एकत्रित होने की बात करना गजब की बात थी। आपके प्रवचनों में बिना भेदभाव सभी बहिन-भाई शामिल होते थे। तदपि वातावरण का प्रभाव तो था ही !

कई लोग मतभेदों की चर्चा में उतर आते, अपने-अपने सिद्धान्तों की मान्यताओं को आगे रख कर निर्णयात्मक वादविवादों पर उतर आते। कई शास्त्रीय प्रमाण से प्रश्नोत्तर करते। उनमें प्रायः स्त्री मुक्ति, केवली कवलाहार जैसे प्रश्न तो जरूर सामने आते ही। श्वेताम्बर जैनो के शास्त्रों ने स्त्री को मुक्ति की अधिकारिणी मानकर उसके प्रमाण में उन्नीसवें भगवान (अवतार) श्री मल्लिनाथ प्रभु को स्त्री पर्य्याय में ही स्वीकार किया है। चन्दनबाला राजिमती आदि अनेक स्त्रियों का मुक्ति जाना भी स्वीकारा है। श्वेताम्बर केवली के आहार ग्रहण का भी पक्षपाती हैं, जब कि दिगम्बर दोनों बात नहीं मानते ऐसे समय में आप बड़ी ही समयज्ञता का

परिचय देती। यद्यपि आप की अवस्था अपरिपक्व थी, तदपि बुद्धि प्रौढ विचारों से सुसज्जित, गभीर एव परिपक्व थी। सभी प्रश्नों का समाधान आप इस प्रकार समन्वय के साथ करती कि सुनने वाला यह अनुभव नही करता कि मेरे पक्ष का खण्डन एव अपने पक्ष का मडन करती है। उदाहरणार्थ :—

भाईयों! आज कोई पुरुष भी सर्वथा कर्मरहित मुक्त अवस्था को प्राप्त नही कर सकता है, ऐसा आप हम दोनों ही मानते हैं। फिर स्त्री के प्रश्न को अवकाश ही कहाँ है? सार रहित इन व्यर्थ के मतभेदों को उखाड-उखाड कर अपने वर्तमान को बिगाडना बुद्धिमत्ता नही। इस समय जब स्त्री या पुरुष कोई भी मुक्ति का अधिकारी बनने योग्य साधना नही कर सकता ऐसा अपन सभी मानते हैं, तो स्त्री मुक्ति जाती हैं किंवा नही इस प्रश्न से लाभ क्या? फिर जब तक स्त्री या पुरुष का भेद करानेवाली कामवासना वेद मे मौजूद है, तब तक न पुरुष मुक्ति का अधिकारी हैं और न स्त्री ही! सर्वथा निष्काम अवस्था ही मुक्ति प्रदायक है, आत्मा न स्त्री है, न पुरुष है वह अविकारी है। ऐसा हम दोनों मानते हैं। स्त्री पुरुष का भेद तो कर्मजन्य देह पर्याय है। मुक्ति तो आत्मा की होती है न कि देह की? जब आत्मा स्त्री पुरुष के भेद से ऊपर उठ जाती है तभी वह मुक्ति की अधिकारिणी होती है। अत: न सविकारी पुरुष लिंग मे मुक्ति है, न सविकारी स्त्री पर्याय मे मुक्ति है। फिर इस व्यर्थ के विनडावाद का प्रयोजन ही क्या?

आप दोनों ही भगवान महावीर की संतान हैं, उनके उपासक

है, उनको आराध्य मानते हैं। आप भाई-भाई हैं आपका परम कर्तव्य है परस्पर ऐक्य-प्रेम के धागे में बंधकर महावीर के शासन का डंका बजाना। व्यर्थ की सार हीन इन चर्चाओं को ठुकराकर संसार के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण दें, जैनधर्म के विश्वमैत्रि मंत्र को संसार के सामने रखें। घर की लड़ाई में हानि, घर की ही होगी, लोग तमाशा देखते हैं। हम इन मूर्खताओं में पड़कर अपना घर फूंकते है, लोग हाथ सेंक कर खुश होते हैं, ऊपर से हमारी दिल्लगी करते हैं। आप जानते हैं आप दोनो ने व्यर्थ के झगड़ों में तीर्थों को घसीट कर कितना नुकसान उठाया, लाखो रुपये फूंक दिए और फूंकते चले जा रहे है। पर सार क्या निकाला? किसी की भी मान्यता नहीं बदली, न कोई मिटा, सभी सिर ताने ज्यों के त्यों खड़े हैं। यही रुपया यदि समाज के नव-निर्माण में गरीब भाईयों की सहायता में, बच्चों के अध्ययन में लगाया होता तो आज आपकी दशा आपका रूप कुछ और ही होता। आपने धर्म के नाम पर लड़ाई शुरु की, और उस लड़ाई को नाक की लड़ाई बना लिया। धर्म लड़ाई करना नहीं सिखाता है, न राग द्वेप वश होकर तूं तूं मैं मैं करना सिखाता है। यदि सच पूछे तो जहाँ लड़ाई रहती है, वहाँ धर्म रहता ही नहीं। नाक न आपकी रहने वाली है न इनकी रहने वाली है, यह पांच रुपये भर का हड्डी; मांस का ढाँचा तो एक दिन जलकर खाख होने वाला है।

केवली आहार करें तो क्या और न करें तो क्या? आहार करने अथवा न करने से कैवल्य ज्ञानी दशा में कौन-सा फर्क आता

है ? ज्ञान आत्मा का सम्बन्धी है, आहार शरीर का सम्बन्धी है। शरीर और आत्मा के स्वभाव धर्म मे कोई साम्य नही। केवली खाएँ तो इससे हमे क्या लाभ और न खाएँ तो हमारा क्या नुकसान होने वाला है। हम केवली अवस्था के उपासक हैं, वही हमारा लक्ष्य है। फिर इस निष्प्रयोजन झगडेबाजी से सिवाय नुकसान के कोई लाभ नही।

भाइयों! इस वैमनस्य कारी कुदालियों से अपनी ही जडे न खोदो, इनसे अपने ही पांव न काटो। यदि इसी प्रकार झगडते चले गये तो एक दिन आप दोनों खत्म हो जाओगे। आज वर्षों से आप दोनों एक दूसरे को मिटाने के प्रयत्न मे लगे हैं, एक दूसरे को खत्म करने के लिए लाख-लाख प्रयत्न करते हैं, पर मिटा कोई नही। न आप मिटे न ये मिटे, न कोई मिटेगा ही। सभी सीना ताने ज्यों के त्यों खडे हैं। अत अब पुरानी भूलों के साथ इस बात को भी भूल जाओ कि हम परस्पर शत्रु हैं। वास्तव मे आप दोनों प्रागाढ मित्र हैं। आपको ऐसा मित्र मिलना अन्यत्र दुर्लभ है। जो आपकी बात करे आपका राग अलापे, आपके साथ कदम बढाकर चले, और आपके ही साथ एक ही आराध्य वीतराग देव की आराधना, उपासना करे। याद रखिए आप भाई भाई हैं, मत भूलिए आप स्व धर्मी बन्धु हैं। आप वीतराग के उपासक है। विवेक नयन खोलकर देखिए आप मे और इनमे क्या फर्क है। मिल जाइए और मिलजुल कर जैन धर्म के नाम का डका बजाइए।

ऐसे अनेकों प्रश्न आपके सामने आते और आप कभी भी एक

सम्प्रदाय की मान्यता को गलत ठहरा कर उत्तर नहीं देती। किसी की भी भावना को ठेस न पहुँचे इसका आप सतत ध्यान रखतीं। आपके सभी उत्तर समन्वय कारी ही होते, और इसी लिए आप उत्तर प्रदेश में उभय सम्प्रदायों की श्रद्धापात्र बन गईं।

वि० सं० १९९२ का चतुर्मास आपका हापुड़ में बड़ा ही शानदार समन्वयकारी एवं सानन्द व्यतीत हुआ।

हापुड़ से ही आपकी भावना शत्रुंजय तीर्थ पर युगादिदेव के दर्शनार्थ जाने की थी। नवदीक्षिता साध्वी जी श्री अविचल श्री जी म० अम्लपित्त की बीमारी से ग्रसित थी। शरीर भी क़मजोर होने लगा था। उनका आग्रह भी था कि एक बेर गिरिराज की यात्रा करवा दी जाए। अतः पू० जतन श्री म० की आज्ञा लेकर आपने पालीताणा जाने का कार्यक्रम बनाया और इसी लक्ष्य से विहार करती हुई आप चैत्री पूर्णिमा को जयपुर पधारीं। जयपुर में प्र० सुवर्ण श्री जी म० की कई शिष्याएँ विराजमान थीं। सौभाग्य से संचेतियों का नवपद उद्यापन महोत्सव करवाने को आचार्य जिन हरिसागर सूरीश्वर जी म० सा० भी वैशाख में वहाँ पधारे। अतः उनके पास नव-दीक्षिताएँ अशोक श्री जी म० एवं अविचल श्री जी म० की बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुईं। आचार्य श्री की आज्ञा व संघ के आग्रह से आपने सं० १९९३ का चतुर्मास जयपुर में ही व्यतीत किया।

कविकुल किरीट कवीन्द्रसागर जी म०, हेमेन्द्रसागर जी, व्याख्यान वाचस्पति कान्तिसागर जी, उदयसागर जी म० आदि भी आचार्य श्री के साथ थे। यहाँ कान्तिसागर जी म० एवं उदयसागर

जी म० ने मासक्षमण एव रतनचन्द जी कोचर की धर्मपत्नी चौथीवाई ने ४१ उपवास की महान तपस्या की।

यहाँ आप प्रतिदिन मुनिराजों के प्रवचन सुन ज्ञानार्जन मे लगी रहती। यह चतुर्मास वडा ही शानदार व शासन प्रभावना पूर्ण व्यतीत हुआ। आपकी विनयशीलता ने आपको सब की प्रियपात्री बनाया। तत्पश्चात् पालीताणा का कार्यक्रम बनाने लगी।

२५—सिद्धाचल की ओर

आपका पालीताणा जाने का कार्यक्रम बनता देखकर, जयपुर मे विराजमान श्री चन्दन श्री जी म० की शिष्या श्री सूरज श्री जी म० जो वयोवृद्धा तो थी ही, साथ मे शरीर भी काफी स्थूल और पैरों से अशक्त थी का हृदय भी इस शास्वत तीर्थ को भेटने के लिए उत्सुक होने लगा। किन्तु अपने शरीर की हालत देख वे निराश हो जाती। वास्तव मे शरीर से असमर्थ मानव की मानसिक वेदना वही जानता है। फिर भी उनके मन मे आदीश्वर प्रभु के दर्शनों की लगन उत्कट थी। ऐसी लगन छिपाई नही जा सकती। आप वेर वेर विचार करती कि इनसे कहूँ तो सही, परन्तु मन की बात जवान तक आकर पुनः मन ही मे लौट जाती।

हमारी चरित्र-नायिका मे यह खूबी सदा से ही है कि वे प्राय॰ व्यक्ति के हावभाव की चेष्टाओं से अन्तर की बात जान लेती हैं।

उनकी यह हिचकिचाहट भी आपसे छिपी न रह सकी। एक दिन मौका देखकर आपने उनसे पूछ ही लिया :—

आप मुझसे कुछ कहना चाह कर भी कह नहीं पाती हैं, ऐसी क्या बात है ? आप तो मुझसे बड़ी है, संकोच की क्या बात है ? आपका अधिकार है कि आप मुझसे निस्संकोच सेवा लें। मेरी भी आप की सेवा करने की भावना साकार हो।

आपके विनयशील आग्रह से उनको ढाढस मिला। हृदय की बात कहने का बल मिला और उन्होंने अपनी बात कहीं :—

छोटकिया ! यदि मुझे भी निभाकर ले चलो तो मेरी भी सिद्धगिरि भेटने की प्रबल भावना साकार हो। मेरे शरीर की हालत तुम देखती ही हो, इसी कारण से मैं अपनी भावना व्यक्त करने में हिचकिचाती हूँ।

(समुदाय की सभी साध्वी जी म० जो आप से बड़ी हैं प्रायः प्यार से आज भी छोटकिया कहकर पुकारती हैं।)

सूरज श्री जी की भावना जानकर आप ने कहा :—

चलिए न इससे बढ़कर और कौन सी बात मेरे सौभाग्य की होगी कि आपकी चलती फिरती लकड़ी बनकर, आपको सहारा देकर आपके साथ श्री सिद्धाचल की यात्रा करूं। आप बिना संकोच चलिए, मै आपकी छाया में आपको सुविधापूर्वक पालीताना ले चलूंगी।"

आप तो ऐसे ऐसे सेवा के प्रसंगों की ताक में ही रहती हैं।

गुरुसेवा के अधूरे अरमान किसी भी सेवा के प्रसग की उपेक्षा नही कर पातें।

पाठक कल्पना करें एक अशक्त की शक्ति बनकर उसकी मनोकामना सहर्षपूर्ण कर आप ने उनके अन्तर मे कितना आनन्द भरा होगा। आपको कितना मीठा आशीर्वाद मिला होगा?

जयपुर से ठेठ पालीताणा तक एक अशक्त, स्थूल काय, पैरों के दर्दी व्यक्ति का साथ पैदल चलकर निभाना, उन्हें किसी भी प्रकार की तकलीफ न हो इसका बराबर ध्यान रखना, कोई सामान्य बात नही। परम धैर्य एव साहस की बात थी। आज यदि हमे ऐसा कोई प्रसग मिल जाए तो सभवतः हम उसे गाडी द्वारा ले जाने के लिये भी तैयार न हों।

मैंने पालीताणा मे श्री सूरज जी म० के दर्शन किए हैं, वास्तव मे शरीर स्थिति ऐसी ही थी। उनका साथ निभाना एक अटूट सेवाभाव का ही काम था। जिनका जीवन गहरेपानी पैठ सेवा के प्रसग खोजता है। उनके लिये यह अवसर परमानन्द प्रदायक था।

२६—पालीताणा में

यथासमय आने सूरज श्री जी म०, विज्ञान श्री जी म०, अविचल श्री जी एव अशोक श्री जी म० के साथ जयपुर से विहार किया। पालीताणा व जयपुर के मार्ग पर हमारा काफला धीरे-धीरे सूरज श्री

जी म० से कदम मिलता साँगानेर आया। वहाँ से गुरुतीर्थ मालपुरे में जिन कुशल सूरि गुरुदेव के दर्शन किए। इधर टोंक से विद्वद्वर्या उमंग श्री जी, कल्याण श्री जी म० मालपुरा पधारे। वहाँ टोंकवाले बाबू चान्दमल जी की बहन तेजबाई को भागवती दीक्षा प्रदान कर त्रिभुवन श्री जी नाम रखा। परस्पर बड़ा ही स्नेह-भाव रहा, चार दिन मालपुरा में ठहर कर नथमल जी डागा की माँ एवं लालचन्द जी कोचर की पत्नी इदकारबाई जो जयपुर से ही आपके साथ पालीताणा जाने को आई थी, उनके साथ ब्यावर पधारे। वहाँ से सोजत होकर मार्ग में आनेवाले एवं थोड़ा चक्कर खाके आनेवाले सभी तीर्थों की यात्राएं करते हुए, नाडोल, नाडलाई, घाणेराव, सादडी, राणकपुर, मुछाला महावीर, वरकाणा, शिवगंज, पालनपुर, पाटण, आबू, शंखेश्वर पारसनाथ आदि सभी यात्राएँ आपने सूरज श्री जी म० को साथ लेकर की व कराई। सारे रास्ते सूरज श्री जी म० आपको पुलकित हृदय से शासन सेवा के आशीर्वाद देती रहीं।

राजस्थान का कठिन विहार सानन्द पूर्ण कर आप सौराष्ट्र की यात्राएँ करती अपने आश्वासन का सांगोपांग पालन कर सूरज श्री जी० म० को ठेठ पालीताणा पहुँचा दिया।

सभी स्वागतार्थ सामने आए, जिनदत्त सूरि ब्रह्मचर्याश्रम के विद्यार्थी एवं इसके संस्थापन में पूरा भाग लेने वाले व सूरज श्री जी म० के संसारी पक्ष के देवर, ३० वर्ष से पालीताणा में चतुर्विध संघ की अपूर्व सेवा करने वाले शासन प्रेमी श्री प्रेमकरण जी मरोटी, अन्य कार्यकर्त्ताओं के साथ पधारे व जय-जयकारों के साथ नगर प्रवेश

करवाया। सूरज श्री जी म० को पालीताणा लाने के लिए श्री प्रेमकरण जी ने आपको बहुत धन्यवाद दिया, वे आपकी इस अपूर्व सेवा से बडे ही प्रभावित थे। विद्यार्थियों ने आपका अभिनन्दन किया।

पालीताणा पहुँच कर आप तत्काल गिरिराज पर चढने लगीं, हृदय आनन्द-विभोर था, पाँवा मे भक्ति वल भरा था, गात पुलकित था। उत्साह व उल्लास का तो पूछना ही क्या? पर्वत की ऊँचाई, पाषाणाकीर्ण मार्ग आज पुष्पाच्छादित मार्ग बन रहा था। इष्ट-कार्य की सिद्धि होने पर, कठिनाइयाँ—कठिनाइयाँ नही लगती। आप उसी भावविभोर दशा मे प्रभु के दरबार मे जा पहुँची।

भगवान की वीतराग मुद्रा के दर्शन करते ही आपके नयनों से अविराम अश्रु धारा बह चली, सदियों से बिछुडा लाल वियोग की दीर्घ घड़ियाँ काट कर मानों आज माता की गोद पागया हो और रो रो कर अपनी कष्टकथा व्यक्त कर रहा हो। इसी भावविभोर दशा मे खडे-खडे ही कितना समय बीत गया, उस समय की आपकी अवस्था आज भी दर्शकों को विस्मय विमुग्ध कर देती है। उसी भाव प्रवाह मे आपके हृदय से भाव उद्गार फूट-फूट कर बाहर निकलने लगे। कई प्रार्थनाएँ एव भजन मधुर राग मे सरल शुद्ध भावों मे गाई जाने लगी व आस-पास के सभी दर्शनार्थियों को भाव-मुग्ध बनाने लगी। ये कुछ प्रार्थनाएँ स्वर्णमाला प्रथम भाग मे प्रकाशित हैं।

इस प्रकार पालीताणा की सुखद यात्रा का वास्तविक लाभ उठा

कर अन्य सभी मन्दिर व टूंकों के दर्शन बन्दन कर आप शाम तक नीचे उतर आईं ।

दूसरे दिन सूरज श्री जी म० को लेकर पुनः यात्रा की ।

पु० विज्ञान श्री जी म० ने जयपुर से ही वर्षीतप यानी एक दिन उपवास एक दिन खाना प्रारम्भ कर दिया था। गिरिराज पर उस तप की पूर्णाहुति हुई। अक्षय तृतीया के दिन उनका पारणा बड़ी धूमधाम से करवाया, माधोलाल बाबू की धर्मशाला में अठाई महोत्सव हुआ ।

सं० १९९४ का चतुर्मास गिरिराज की छाया में व्यतीत कर पश्चात् नवाणु यात्रा, हस्तगिरी, कदमगिरी की यात्राएँ कीं, बारह, छ व तीन कोस की फेरी आदि की ।

उस समय श्रीमद् कृपाचन्द्र सूरि जी म० भी अपनी रुग्णावस्था व अवसान का समय जानकर नश्वर देह गिरिराज की छाया में विसर्जन करने की भावना से पधारे और अल्प समय के बाद देहत्याग किया। आपको भी इन महात्मा के दर्शन का लाभ अनायास मिल गया।

सूरज श्री जी महाराज तो गिरीराज की छाया में मस्त बनी जीवन पर्यन्त आपको शत मुख से ही नहीं रोम-रोम से आशीर्वाद देती रहीं। उनका जीवन इसी छाया में समाप्त हुआ। क्योकि उनकी अवस्था विहार योग्य नहीं थी। आप शुभ कर्मोदयवश चरित्र नायिका का सहयोग प्राप्तकर भगवान की शरण में भगवान के दरबार तक आ गई थीं।

पालीताणा से विहार कर आप महुवा दाटा, घोघा तलाजा भावनगर की यात्रा कर चैत्र मास मे गिरनार की ओर अग्रसर हुई। रास्ते मे अजारा ऊना वनस्थली कुण्डलादि की यात्रा भी की, चैत्री-पूर्णिमा को गिरनार गिरिराज पर जा पहुँची, वहाँ की यात्रा कर आप जामनगर अहमदाबाद होती हुई सघ के आग्रहवश बडोदा पहुँची।

२७—वक्तृत्व-कला

जैन शासन की यह महकती कली अपनी पखुडियाँ पसार कर सौरभमय पुष्प का रूप प्राप्त कर रही थी इस समय तक आपका यशोगान अनेक स्थानों मे होने लगा था। आध्यात्मिक शक्तियाँ विकस्वर होकर जगत मे ज्ञानालोक फैलाने लगी थीं। जीवन का मध्यान्ह, तरुणाई ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग की प्रतीक आनन पर वैराग्य की अरुणाई परम पवित्र अलौकिक तेजस्विता, दर्शक के हृदय को सात्विक श्रद्धा से ओत प्रोत बनाकर चरणों मे नत मस्तक होने के लिए विवश करती थी।

बडोदे मे प्रतिदिन प्रात काल आपका प्रवचन होता। सभा भवन का विशाल-प्रागण सकीर्ण हो जाता। जनता मत्र मुग्ध सी आपके शब्द लालित्य मे खो जाती।

व्यक्ति को अपने लक्ष्य की ओर आकर्षित करने के दो ही साधन है—लेखन एव वक्तृत्व। लेखनी भावों को स्थायित्व प्रदान करती है। वाणी मे तत्कालिक जादू का सा अमर, चमत्कारी प्रभाव होना

है। आपकी वाणी का जादू अवतक चलना शुरू हो चुका था वह जनता का मंत्र-मुग्ध भावविभोर बना देता था आप जनता की भाषा में सरल सीधे शब्दों में जनता की बातें करने में सिद्ध हस्त हैं। शब्दों में कहीं क्लिष्टता नहीं, थोथे पाण्डित्य का प्रदर्शन नहीं। जैसी सभा वैसी बात आपकी विशेषता है। गांवो में रुकती हैं तो कथा व दृष्टान्तों का खजाना खोलकर रख देती है। और ग्रामीण जनता को व्यसन मुक्त बना देती है। पण्डितों की सभा में पण्डिताई में भी पीछे नहीं रहती। एक नहीं पर अनेकों व्यक्ति आपके उपदेश से तम्बाकू, मद्य,मांस, परस्त्रीगमन धूत आदि व्यसनों से मुक्त होकर सन्मार्ग पर आए व आते है।

प्राचीन एवं अर्वाचीन की इस संधि बेला के संघर्ष में आप रुढी-वादी चुस्त वृद्धों को एवं तरुण सुधार वादियों को एक ही मार्ग पर खींच लाने की कला में बड़ी प्रवीण है। आपकी वाणी ऐसी व्यवस्थित होकर प्रवाहित होती है कि उससे बाला, वृद्ध, तरुण सभी संतुष्ट हो आनन्द प्राप्त करते हैं। प्रायः आप "भी" से ही काम चलाती है "ही" से नहीं ऐसा ही होगा, या ऐसा ही करो, ऐसी आदेशात्मक वाणी का आप प्रायः कर के उपयोग नहीं करती है।

प्रवचन के समय में आप श्रोताओं की रुचि का भी पूरा ध्यान रखती है। श्रोताओं की रुचि किस ओर है इसका अध्ययन आप चालू व्यख्यान में सहज ही कर अपनी वाग्धारा का प्रवाह उसी ओर मोड़ देती है। श्रोता के अन्तर में उठनेवाली तत्कालीन जिज्ञासा का समाधान वक्ता की कला का पहला गुण है। आप में इस गुण की

प्रचुरता है। श्रोता की रुचि का ध्यान न रखकर उपदेश देना लाभप्रद नही होता बल्कि इससे लाभ की बजाए हानि की अधिक सभावना रहती।

जिस प्रकार जीमनेवाले की रुचि के अनुसार भोजन परोसने से वह तृप्त होकर उठता है। उसी प्रकार रुचि अनुसार बात कहने से श्रोता सतुष्ट हो जाता है।

आपकी वाणी की सर्वोपरि विशेषता है अकटाक्ष, एव आक्षेप हीनता। आप कभी किसी मजहब की मान्यता पर कटाक्ष नही करती, हीन सिद्ध करने का प्रयास नही करती, यह गुण आपकी वाणी मे शुरु से अद्यपर्यन्त चला आ रहा है। उस कटाकटी के युग मे भी आप निरशक होकर समन्वय के गीत गाती हैं।

शब्द विन्यास इतना व्यवस्थित इतना रोचक एव इतना मीठा कि सुननेवाले तृप्त ही न हो, सुनने की लालसा लगी ही रहे। वर्ना प्राय' होता यह है कि बोलने वाला बोलता है, सुननेवाला अकुलाया सा ऊघता रहता है। हाथ पैर इधर उधर उठाकर, सिर खुजलाकर घडी को बेर बेर देखकर, येन केन प्रकारेण समय पूराकर भागता है, मानों जान बची तो लाखो पाए। यह बोलना सार्थक बोलना नही। वाणी वही सार्थक है जिसमे सुनने की जिज्ञासा जागरित रहे। आपकी वाणी सुननेवाले के हृदय मे एक प्रकार की उत्सुकता लगी ही रहती है। हृदय मे उल्लास की उर्मियाँ उछलती रहती है। इस समय तक आपकी वक्तृत्व कला काफी विकसित हो चुकी थी।

इस बीच बडोदे मे अनन्त चतुर्दशी के दिन कोठीपोल मे स्वर्गस्थ

परम, प्रभावक आचार्य देव श्रीमद् विजयधर्म सूरीश्वरजी म० की स्वर्गजयन्ती आचार्य श्री लाभ सूरीजी म० की अध्यक्षता में मनाने का आयोजन किया गया। उत्सव की सफलता के लिए पण्डित लालचंद गांधी, कुशलवक्ता, लेखक व कवि मणिभाई पादराकर आदि कई विद्वान निमन्त्रित थे। आपको भी निमन्त्रण मिला था। समय पर आप भी उत्सव में पधारीं। नियत समय पर सभी विद्वानों ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। बड़े भक्ति भाव से सभी के विचार जनता ने सुने। अब आपकी बारी थी। आप ने भी उठकर वन्दनापूर्वक अपने विचार व्यक्त किए।

आपका भाषण क्या था, मानों साक्षात् वीणा धारिणी ही निनाद कर उठी हो। विद्वद्गण व जनता आपका मुख निहारने लगे। साध्वी! एक नारी!! का इतना सरस, सुन्दर, हृदय-ग्राही भाषण!! जिसमें मेरा नहीं, तेरा नहीं, अपना नहीं, पराया नहीं, पक्षपात नहीं, कटाक्ष नहीं। भिन्नगच्छ के आचार्य के प्रति इतनी श्रद्धा। इतना विनय!! इतना सम्मान!!! इनकी गुणग्राहकता गजब की है। सभी विस्मयाभिभूत से हो गए।

एकधारी शब्दावलि प्रवाहित हो रही थी। कहीं स्खलना नहीं, विषयान्तर व विराम नहीं, भावों का अभाव नहीं। प्रतापी चेहरा, तेजस्वी नयन, आनन पर छाई वैराग्य की छटा सोने में सुहागे का काम दे रही थी। ठीक समय पर भाषण समाप्त हुआ, जनता आप की ओर उमड़ पड़ी।

गुजरात में साध्वी को भाषण, प्रवचन का अधिकार नहीं था,

उसके लिए सभा मे उपदेश निषिद्ध था। रूढी-चुस्त जैन समाज की खोखली सिद्धान्तहीन मान्यता पर यह करारा आघात था। देवोपम कला के सामने पुरुष सत्ता की रूढिवादी चारदिवारी ध्वस्त हो गई। सभी ने मुक्तहृदय, मुक्तकण्ठ से आपकी प्रशसा की। आपके भक्तों व परिचितों को इस शासन रत्न को छिपाकर रखने के लिए उपालभ मिले।

सभा विसर्जित होने पर सभी भाई-बहन आपके साथ आपके निवास स्थान आकूतपुरा मे पधारे। चर्चाकर परिचय प्राप्त किया। पादरा के माणेकलाल भाई, मणिलाल पादराकर, प्रेमचन्द भाई, व भाईलाल भाई आदि कहने लगे, अब तक की कसर पूरी करने के लिए आपको पादरा जरूर आना होगा। आपसे चतुर्मास पश्चात् पादरे पधारने का वचन लेकर सभी उठे। इसके वाद आपके पास दर्शनार्थियों की भीड रहने लगी।

आश्विन लगते ही आपका शरीर अस्वस्थ हो गया, मलेरिया ने जोरों से आक्रमण किया। सघ ने व जैन डाक्टर-वैद्यों ने आपकी खूब सेवा की। दीवाली के पश्चात् आपकी तबियत कुछ सभली, फिर भी मद-ज्वर तो चालू ही रहा।

वि० स० १९९५ का चतुर्मास सानन्द समाप्त कर आप वचनानुसार पादरे की ओर चली।

२८—पादरे में अध्यात्म रस की सरिता

पादरे मे योगनिष्ठ, अध्यात्म सम्पन्न बुद्धिसागर सूरीश्वर जी

महाराज का अधिक निवास व प्रभाव होने के कारण, वहाँ का समाज साम्प्रदायिकता के विष से प्रायः मुक्त था। गच्छागच्छ की विभेदी दीवारें योगीराज के प्रभाव से धराधसक होकर दम तोड़ चुकी थीं। एकमात्र भगवान महावीर का सुविशुद्ध आध्यात्मवाद प्रेम-सूत्र से बद्ध हो चल रहा था। आपसे पहले महान विदूषी साध्वी श्री वल्लभ श्री जी म० जो हमारी चरित्र-नायिका के समुदाय की व एक ही गुरु की आज्ञावर्ती हैं, का चतुर्मास हो चुका था।

जिस समय आप श्री पादरा पधारीं, उस समय योगीराज के सम्पर्क में आए हुए कई भाई मोजूद थे। पादरे की जनता का अध्यात्म की ओर सहज झुकाव तो था ही, आपने आकर अध्यात्म की झड़ियाँ लगा दीं, आत्मज्ञान का प्यासा श्रावक-समूह अध्यात्मज्ञान का पीयूष पान कर नाच उठा। सारा दिन एक ही चर्चा, एक ही बात, "अध्यात्म, अध्यात्म और अध्यात्म।"

समय अपना काम करता गया और कर्तव्यनिष्ठ, जागरुक हमारी साध्वी जी भक्तों की भक्ति में भी अपने कर्तव्य के प्रति सचेत थीं। एक मास की अवधि बात की बात में व्यतीत हो गई। आपने संघ के समक्ष विहार की बात रखी, जिसे सुनकर पादरे के धर्म-प्रेमियों का हृदय धडकने लगा। वे तो ज्ञानामृत पान में मस्त बने वियोग की घड़ियाँ भुला ही बैठे थे। सब उदास हो गए, किन्तु प्रवाहित जल का प्रवाह कब रुका है? कदाच रुके भी तो क्या उसकी वह निर्मलता कभी टिकी है। सभी ने चतुर्मास के लिए भरसक प्रयत्न व प्रार्थना की परन्तु आपको श्री जतन श्री जी म० की सेवामें देहली

पहुँचना था। अतः आप ने मजूरी नही दी और विहार का निश्चय कर दिया।

वनिया केवल धन का धनी ही नही होता वह बुद्धिमान एव दीर्घ-दृष्टि भी होता है। पादरे वालोंने यह शर्त रखी कि यदि कारण वश आप गुजरात मे ही रुकें तो पादर मे ही चतुर्मास करें, अन्यत्र नहीं। आपकी ओर से आश्वासन मिलने पर आपको पादरे से प्रयाण की अनुमति मिली।

पादरे से आपने कावी, गाधार भगड़िया, भरुअच्छ आदि तीर्थ स्थानों की यात्राएँ की। पालीताना, व वडोदे के चतुर्मास पश्चात् आपका यश सूरत व बम्बई तक फैल चुका था। यहा से चतुर्मासार्थ प्रार्थनाएँ आने लगी थी। आपको देहली जाना था, सूरत बम्बई से निकल पाना कठिन था, अत॰ आगे न बढकर आपने मार्ग वदल दिया और अहमदावाद पधारी।

प्रकृति से ही आपका शरीर कोमल परमाणुओं से वना है। वडोदे की बीमारी पश्चात् आपका शरीर कमजोर था इधर महीनों से अथकश्रम पड रहा था। अहमदाबाद आते ही ज्वर ने नोटिस भेज दिया, आगे नही वढ सकती। ज्वर ने अपनी सत्ता जमाई। पूरे दो मास अनिच्छापूर्वक आपको यहा रुकना पडा।

असल बात तो पादरे के पुण्यवल की थी। वहाँ की कई भव्या-त्माएँ आप से जीवन उद्धार पानेवाली थी। उनका उद्धार किए बिना गुजरात कैसे छोड पातीं।

देहली पहुचने की आशा तो व्यर्थ थी। समय ही हाथ से निकल

चुका था। तब आपने मध्यप्रदेश की ओर जाने का विचार किया, वहां महीदपुर में विराजमान चारित्रमूर्ति पू० रतन श्री जी म० वास्तव में जिन शासन का एक दिव्य रत्न ही थीं। उनका भी बेर बेर आपको मिलने आने का अनुरोध था वे आपकी यशोगाथाएं सुनकर बड़ी प्रसन्न थी। उनकी सेवा के लाभ की आशा से आपने कपडवंज की ओर चरण उठाए, कपडवंज पहुँचते ही साध्वीजी अशोक श्री जी अस्वस्थ हो गई। पुनः विहार रुक गया, महीदपुर जाने के लिए दाहोद, गोधरा, रतलाम होकर जाना पड़ता था, बीचमें १५-२० मील की लम्बी मंजिले आती थीं। शरीर साथ नहीं निभा रहा था। भावी अपने प्रयत्न में थी। गुजरात में रुकने के सिवाय अन्य कोई उपाय ही नहीं था। परिस्थिति का अवलोकन कर आपने अपने वचानुसार पादरे समाचार भेज दिए कि हम आगे नही बढ़ सके हैं पादरे आ रहे हैं।

सूचना पाकर पादरे वाले हर्षित हुए। उनकी अतृप्त लालसा तृप्त होने जा रही थी। आपने पादरे की ओर चरण बढ़ाए।

इस वर्ष पादरे का सौभाग्य सूर्य मध्यान्ह पर था। योगीराज श्रीमद बुद्धिसागर सूरि म० के शिष्य कीर्तिसागर सूरि म० का चतुर्मास था ही, दूसरी ओर अनभ्र वर्षा वरसाती आप आ पहुँची। दोनों पवित्र आत्माओं के पावन आगमन से पादरे की धारा धन्य हो उठी।

२६—वैराग्य-वर्षा

पादरे में कीर्तिसागर सूरीश्वर जी एवं हमारी चरित्र-नायिका,

दोनों ही के उपदेश नवजागृति-नवचेतना ला रहे थे। प्रातः ६ बजे से ग्यारह बजे तक आचार्य श्री का प्रवचन होता, उसमे आप प्रायः बराबर पधारती। मध्याह्न मे वैराग्य पूरित जम्बू स्वामी रास पर आप प्रवचन फरमाती। वैराग्यवाही जम्बू स्वामी का रास और आप जैसी वैराग्य प्रवाही भावपूर्ण भाषा मे उसका व्याख्यान करने वाली तत्रस्थ लोगों के हृदयों मे वैराग्य-भावों का ज्वार उठने लगता। विराग के प्रवाही वेग से हृदय-तन्त्रियाँ उस समय के वातावरण का वर्णन जिस समय करते हैं, सुनने वालों का हृदय आज भी गद्गद् हो जाता है।

श्रोतावर्ग पर वैराग्य रग चढने लगा। कइयों ने व्रत, नियम, सदाचारी, शुद्ध जीवन अगीकार किया। कई भव्यात्माएं दीक्षार्थ उद्यत बनी। पादरे मे चारों ओर अध्यात्म और वैराग्य बह चले। किसी को भी न खाने की सुधि न पीने की न सोने की। सारा दिन प्रवचन चर्चा, बस यही भूख, यही प्यास, यही खुराक, यही पानी बन गया!

पानाचन्द भाई की सौभाग्यवती कन्या लीलाबहन २१ वर्ष की तरुण वय मे प्राप्त पति-सुख को त्याग दीक्षार्थ उत्सुक बनी। सोमाभाई अमृतचन्द की पुत्री पद्मा १८ साल, मोतीलाल पानाचन्द की पुत्री तारा १४ साल, रतिलाल मोहनलाल की पुत्री विद्या १३ साल, बे चारों ही महाभागा ससार-सुखों से विरक्त हो दीक्षार्थ उत्सुक हुईं।

पादरे की सुसंस्कृत जनता, प्रबुद्धचेता तथा स्वाध्याय प्रिय है।

आज भी वहाँ माणकभाई, वरजीवनभाई आदि अच्छे अध्यात्म रसिक द्रव्यानुयोग ज्ञाता श्रावक है। आपके समय में वहाँ एक स्वाध्याय मण्डल भी चलता था। रात्रि के अवकाश का सदुपयोग करने के निमित्त सभी घण्टेभर के लिए एक स्थान पर एकत्रित होकर, स्वाध्याय किया करते थे। जब से आप श्री पधारी थीं तब से यह मण्डल दिन के समय आपके समक्ष चलता। आपके सामने जो भी शंकाएँ रखी जातीं, आप उनका सहज सरलता से समाधान कर देतीं। आपकी ग्रहणशक्ति, विवेचनशीलता, मति विचक्षणता, एवं स्मरण-शक्ति देखकर सभी विस्मित हो जाते। विद्वद्गण भी चकित होते। आप जिस सरलता से गहनतम विषयों की व्याख्या करती, वैसी उन्हें अन्यत्र सुलभ नहीं थी। आपको आत्मानुभूति प्रत्यक्ष है इसमें शक नहीं। आप आगम रहस्यों को जानने में विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न साध्वी रत्न है, "ऐसा प्रायः सर्वत्र सुना जाता।" इस प्रकार भाव-विभोर भावनाओं में पादरे का चतुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ।

ऐसा सौभाग्य पादरे को ही प्राप्त था और उसीका साहस भी कि छोटा-सा संघ तपगच्छ के आचार्य, एवं खरतरगच्छ की आर्यारत्न का एक ही समय में, एक ही स्थान में, विना व्यवधान, बिना बखेड़े, समान रूप से भक्ति कर रहा था। वर्ना इन गच्छागच्छ की दुर्लंघ्य दीवारों को लांघ जाना सरल काम नहीं। दोनों का चतुर्मास सानन्द सम्पन्न हो जाना एक आश्चर्य था। दोनों ओर वे ही इने-गिने व्यक्ति थे, वे ही भक्त थे, वे ही श्रोता एवं व्यवस्थापक भी थे। उस समय तक श्री बुद्धिसागर सूरीश्वर जी म० की समुदाय

भी गच्छागच्छ की विषम भावनाओं से मुक्त व साम्प्रदायिकता के विष से निर्लिप्त था। कारण सूरीश्वर के स्वर्गवास को कुछ ही वर्ष व्यतीत हुए थे। अतः उनका प्रभाव सघ पर जमा हुआ था। आचार्य देव एव आपका परस्पर व्यवहार भी, वडा अच्छा रहा। क्योंकि दोनों ही व्यवहार कुशल थे।

चतुर्मास पश्चात् आप श्री वडोदे पधारी, वहाँ स० १६६६ की अगहन शुदि ५ को लीला वहन को दीक्षित कर श्री निपुणा श्री जी नाम रखा। पद्मा, तारा, विद्या वहन की दीक्षा भावना तीव्र व सम्पूर्ण तैयारी होने पर भी उस क्षेत्र मे अल्प वयस्क दीक्षा पर प्रतिवन्ध होने के कारण आपने स्पष्ट इनकार कर दिया। चोरी-छिपे कई दीक्षाएं आस-पास के गाँवों मे जाकर दी जाती थी। किन्तु आपने ऐसा शिष्या मोह उचित नही समझा। आपने दीक्षातुरा वालाओं को छोड देहली की ओर विहार कर दिया। कहावत है "त्यागे उसके आगे" तैयार शिष्याओं एव प्रदाता अभिभावकों के आग्रह की उपेक्षा कर, कानून का मान रखने के लिए आगे वढ गई। न मन मे शका न जरा-सा भय कि मेरी प्रतिवोधित कन्याएँ अन्यत्र न चली जाएं। इनकी भावना मे शिथिलता न आ जाए। कोई विकल्प नही, किसी प्रकार की चिन्ता नहीं। विना सुधि लिए ही सीधो पालनपुर आकर रुकी। एक मात्र देहली की पुकार जगी थी। शिष्य माह से मुक्त गुरुभक्ति का यह अनुकरणीय उदाहरण था।

उधर उन तीनों को चैन नहीं, हृदय तडपता, एक-एक क्षण भी सयम के विना विताना भारी था। रात दिन माता पिता के पैर

पकड़ कर प्रार्थना करती, हमें घर में रुचि नहीं। हमें संयम प्रदान करो, एक ही रट लगी थी।

पादरे की जनता धर्म संस्कारों से संस्कृत होने से इन सबको अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ा। तारा और विद्या के पिताजी ने दोनों के लिए साध्वी जी म० को पत्र लिखा कि योग्य स्थलपर रुकें, हम तारा, विद्या को दीक्षा देने आ रहे हैं। आप सभी साध्वी जी पालन पुर में एकत्रित थीं ही, अतः दीक्षा कहाँ देना इसपर विचार करने लगीं। इधर पादरे से तारा के चाचाजी पोपट भाई भी वहाँ पहुँचे। पोपट भाई से साध्वी जी म० ने कहा :—

आप आबू जाएँ, और योगीराज की आज्ञा लेकर आवें, यदि उनकी छाया में उन्हीं के हाथों इन दोनो की दीक्षा हो तो उत्तम रहेगा। वर्ना फिर देहली जाकर गुरु वर्य्या श्री के हाथों दीक्षित किया जाएगा।

पोपट भाई आबू गए। योगीराज ने स्वयं ही प्रश्न किया कि दीक्षा के लिए आए हो? सभी आ जाओ दीक्षा सानन्द सम्पन्न हो जाएगी। पोपट भाई चकित रह गए। यह कैसी बात? मैंने तो कुछ कहा ही नहीं और यहाँ पहले से ही सब ज्ञात था। योग शक्ति भी एक विलक्षण शक्ति है।

पोपट भाई के लौटकर आने पर आप ने आबू की ओर कदम घुमाए ठीक समय पर आप ने आबू में पदार्पण किया।

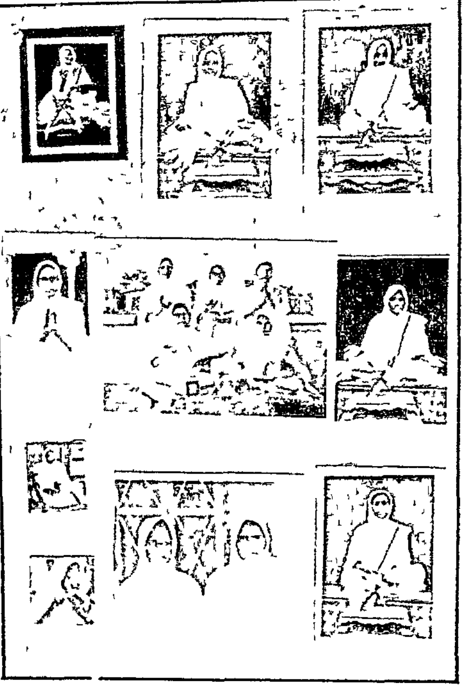

श्री सुवर्ण मण्टल

३०—योगीराज की छाया में

योगीराज विजय शान्ति सूरीश्वर जी म० के एव हमारी चरित्र नायिका की गुरुणी जी प्रवर्तनी महोदया श्री सुवर्ण श्री जी म० के परस्पर अच्छा व्यवहार था। योगीराज की प्रवर्तनी महोदया पर परमकृपा भी थी। आपस मे धार्मिक तत्त्व भरा पत्र व्यवहार भी था। किन्तु दोनों का परस्पर साक्षात्कार न हो सका, कारण प्रवर्तनी महोदया का शरीर अशक्त हो चला था, अत: दूर से ही योगीराज की आत्मीयता का आस्वादन कर पाती थी योगीराज के पत्रों को पढकर सुनाना, उनके पत्रों का उत्तर लिखना, यह काम प्राय प्रवर्तनी जी म० हमारी चरित्र नायिका से ही करवाया करती थी। अतः आप को भी योगीराज पर पूर्ण श्रद्धा हो गई थी। दर्शन की तीव्र भावना भी आज साकार हो रही थी। आबू पहुँचकर आपने योगीराज के दर्शन किए। महान् ज्योतिर्धर, देदिप्यमान चेहरा, विशाल-भाल पर चन्द्राकार प्रकाश, स्नेह भरे नयन, विश्वप्रेम भरा हृदय सभी को आकर्षित करता था। उनके द्वार पर जैन, अजैन, मुस्लिम, इङ्गलैण्ड, जर्मन, जापान आदि विदेशों से भी भारी सख्या मे लोग दर्शनार्थ दौडे आते थे। यहाँ हर समय एक प्रकार का मेला सा लगा रहता, योगीराज के उपदेश से हजारों लोगों ने मांसाहार शराब आदि का त्याग किया था।

हमारी चरित्र नायिका ने पालीताणा जाते समय योगीराज के

दर्शन किए थे। उनपर आप को अटूट श्रद्धा थी। उनका भी आपके प्रति असीम वात्सल्य था।

योगीराज के दर्शनार्थ, उनके नैसर्गिक गुणों से श्रद्धान्वित अधिकाधिक संख्या में मुनि व आर्याएं भी आती थीं। श्रद्धा के प्रतिफल में महती कृपापात्र आप भी बनी थी। कभी आपकी विनम्रता व सेवा भावना से प्रभावित होकर योगीराज फरमाते :—

विचक्षण श्री जी? तुम में इतनी विनय, विनम्रता कहाँ से आ गई। वास्तव में यथानाम तथा गुणवती तुम ही हो।

दूसरों को सम्बोधित कर कहते :—

प्रतिवर्ष यहां अनेक साधु साध्वी आते है, किन्तु इनके जैसी गम्भीरता, विनय, विनम्रता, एवं लघुता मैंने किसी में नहीं देखी।"

कभी-कभी विनोद में योगीराज आपको विचक्षण श्री जी न कह कर गोल यानी गुड श्री जी कहते। बचपन की दाखीबाई को योगीराज ने और भी अधिक मधुर मानकर गुड की उपमा दे दी थी।

योगीराज ने समय-समय पर आपको कुछ संकेत भी किए जो भविष्य में प्रायः अक्षरशः सत्य निकले। आप जहाँ भी, जिसके भी सम्पर्क में आई, सभी की कृपा एवं श्रद्धाभाजन बनीं, क्योंकि 'लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर' वाली बात थी। आपकी विनयशीलता सभी का मन मोह लेती है।

योगीराज के पास तो देश-विदेश के राजा-महाराजा, श्रीमंत, गरीब सभी आते थे। प्रायः श्रीमंतों का तो वह केन्द्र ही था। उन

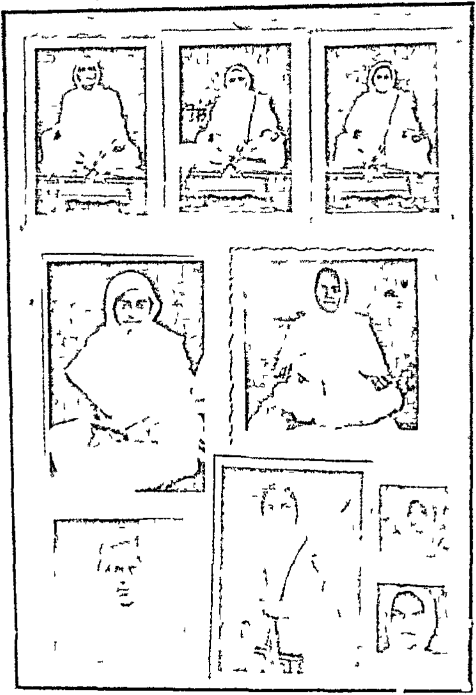

श्री सुवर्ण मण्डल पृष्ठ—१२४

सर्वो को आपका परिचय देते। प्रशसा करते, आपके उपदेश से लाभान्वित करते।

इस समय योगीराज आबू के निकटवर्ती अनादरा मे विराजमान थे। आबू से आप श्री अनादरा पहुँची, पादरे से कुटुम्ववर्ग भी अपनी वैराग्यवती कन्याओ को लेकर आ पहुँचा।

वि० स० १९९६ फाल्गुन मास मे शुभ मुहूर्त देखकर हजारों यात्रियों के समक्ष योगीराज विजयशान्तिसूरि के करकमलों से तारा एव विद्या को दीक्षित किया गया। आपने अभी तक अपने नाम से किसी को भी दीक्षित नही किया था। यहाँ सर्वप्रथम योगीराज ने इन दोनों को आपके नाम से दीक्षित कर क्रमश तिलक श्री जी, एव विनीता श्री जी नाम रखा। योगीराज ने अपने हाथों यह पहली व सभवत अन्तिम भी दीक्षा की थी। यह एकमात्र आप पर उनकी महती कृपा का परिचायक है।

पद्मा को इस समय आज्ञा नही मिली, वह बाद मे मान्या वल्लभ श्री जी महाराज के पास दीक्षित हुई।

गर्मी की अधिकता के कारण एव योगीराज की विहार के लिए आज्ञा न मिलने से आप कुछ समय वहाँ ही ठहरी।

एक दिन अचानक प्रवचन मे बैठे ही आपके नाक से खून बहना जारी हो गया। वहाँ से उठकर आप निकटस्थ उपाश्रय मे आ गई। पर खून की धारा छूटी सो छूटी ही रही, रुकने का नाम ही नही। सभी उपचार व्यर्थ सिद्ध हुए, लगातार पूरे चार घण्टे तक

अविरल धारा चलती रही। शरीर शिथिल हो गया, पर धारा का प्रवाह शिथिल नहीं हुआ। रात में जाकर खून ने विश्राम लिया।

प्रातः अन्य साध्वियाँ वन्दनार्थ गईं तब योगीराज ने फरमाया, "अच्छा हुआ गन्दा खून दिमाग में एकत्रित था, वह निकल गया, वर्ना दिमाग खराब हो जाता। अत्यधिक कमजोरीवश आपको और भी अधिक ठहरना पड़ा।

पश्चात् विहार का विचार करने पर योगीराज ने फरमाया, "पादरे जाओ या पालनपुर।"

आपने कहा :—

भगवन्! पादरे से तो अभी आई हूँ, देहली जाना अत्यावश्यक है, "गुरुवर्य्या वृद्धावस्था में हैं।"

योगीराज ने कहा :—

कई शिष्याएँ मिलेंगीं।

पर आपमें शिष्य-मोह था कम, गुरुभक्ति थी ज्यादा। आपने विनम्रता पूर्वक उत्तर दिया, "भगवन्! अभी मुझमें शिष्य बनाने की भी योग्यता नहीं आ पाई है, गुरुपद की जिम्मेवारी कैसे उठाऊँ? मुझे तो गुरु नहीं, शिष्य बनने का आशीर्वाद दीजिए, उन्हें कोई अन्य दीक्षित करेंगी।"

इधर फलोधी में भी उन्नीसवीं सदी के महापुरुष खरतरगच्छाधीश्वर, परम पूज्य सुखसागर जी म० सा० के समुदाय का मुनि सम्मेलन होने वाला था। वहाँ से भी आपको ऊपराऊपरी निमंत्रण आ रहे थे। किन्तु योगीराज ने कहा, "ऐसी प्रचण्ड गर्मी और ये

कोमल नव-दीक्षिता बालाएँ, कैसे जाओगी ? चुपचाप शान्ति से बैठ जाओ, समय पर देखा जाएगा।"

योगीराज की आज्ञा विना उस क्षेत्र से कोई भी व्यक्ति क़दम नही उठा सकता था। जो उठाता था उसे भयकर विघ्नों का सामना करना पड़ता था। ऐसा बनाव कई बेर बन चुका था। अत: आप आज्ञा की राह मे चुप हो बैठ गई।

चतुर्मास लगने मे मात्र १५ रोज की देर थी, तब योगीराज ने कुछ सकेत किए, उसमे दो ये थे—रास्ते मे विपत्ति आवे तो घबराना नही, चतुर्मास मे कोई बीमार हो जाए तो चिन्ता करना नही। अब जाओ सुविधानुसार चतुर्मास करना, पश्चात् इधर होकर देहली जाना।

"इतना अल्प समय हाथ मे था। आसपास मे कोई भी परिचित क्षेत्र नही था। आपका मन एक बेर तो घबराया। पर योगीराज पर विश्वास का बल साथ था। यथा समय आप आबू से चल पडी। इस ओर मात्र दो ही क्षेत्र थे, एक मालवाडा दूसरा दाँतलाई। दाँतलाई मालवाडे के बीच मे ही पड़ती है। यहाँ से प्राचीन तीर्थ जीरावला पार्श्वनाथ जिसका अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रभाव है, की यात्रा खूब आनन्द पूर्वक कर आप मालवाडे के रास्ते पर बढी। पहाडी प्रदेश था, सूना मार्ग, अत्याचारी भीलों के भय से पूर्ण था। एक दा भीलों का सकट साकार रूप मे प्रत्यक्ष दृग्गोचर होने लगा। किन्तु दैवसयोग उसी समय ऊँट-सवारों का एक दल आ पहुँचा, उनकी आवाज सुनकर भील भाग खडे हुए। योगीराज की चेतावनी सत्य सिद्ध हुई।

३१—अपरिचितों के बीच

ग्रीष्म ऋतु का भीषण ताप राजस्थान की प्रसिद्ध गर्मी। ऊपर से बालू रेत भाड़ में चने की नाँई कोमल पाँवों को भून रही थी। ऐसे विकट प्रवास में भी आप प्रसन्न चित्त से चलकर मालवाड़े पधारीं। एक भी चेहरा परिचित नहीं, जाएं तो कहाँ जाएं? पूछें तो किससे पूछें। चलते-चलते गाँव में प्रवेश कर एक खाली खण्डहर में डेरा डाला। धूप की वजह से आगे बढ़ना असम्भव-सा हो रहा था। आज आषाढ़ शुदि नवमी थी। चतुर्मास प्रारम्भ होने में मात्र चार दिन की देर थी। उससे पहले ठोर-ठिकाना बना लेना आवश्यक था। साथ में नव दीक्षित बालाएँ, फिर भी आप निर्भय, निश्चिन्त थीं। लोगों ने देखा साध्वी जी आए हैं, चतुर्मास नजदीक है। वर्षावास के लिए प्रार्थना करना हमारा कर्तव्य है। सबने मिलकर आपसे चतुर्मास-निवास का अनुरोध किया। आपने सोचा चलो परिचितो के अभाव में पर्याप्त अवकाश रहेगा। लोगोंने सोचा, ये छोटी-छोटी और वृद्धा साध्वियाँ व्याख्यान तो क्या देंगी, फिर भी बहनों के लिए समय व्यतीत करने का साधन तो प्राप्त हो ही जाएगा। अतः आपने चतुर्मास रहना मंजूर किया और उपाश्रय में पधारीं, सभी ने जयनाद किया।

चतुर्दशी के दिन श्रावक वर्ग ने आकर पूछा, "महाराज! व्याख्यान होगा क्या?"

आपने फरमाया, "आपकी रुचि पर निर्भर है, हमारा तो यह धंधा ही है।"

चौमासी के दिन आपने बोलना शुरू किया तो उस धारा प्रवाह प्रवचन ने अपने समय पर ही विराम लिया। श्रोता चकित हो आपका मुँह निहार रहे थे। उनकी कल्पना मे ही नही आया था कि यह अल्पवय का हीरा इतना मूल्यवान है। अब तो कहना ही क्या? मालवाड़े की जैन जैनेतर जनता से व्याख्यान हाल ठसाठस भर जाता।

श्रावण मास मे तपस्या की अपार लीला ल्हर जमी। भादों मे पर्वाधिराज का आराधन, कल्पसूत्र का वांचन सुनकर श्रोतागण नाच उठे। प्रवचन तो बहुत सुने पर ऐसा आनन्द कभी नहीं आया।

गोडवाड़ (छोटी मारवाड) मे धनाढ्य तो एक से एक बढ़कर मिलेंगे, पर उनका जीवन एकदम सादा, आडम्बर शून्य, सामान्य तथा मोटा खाना, मोटा पहनना ही मिलेगा। उस प्रदेश मे फैशन का फितूर आज भी प्रवेश करने मे भय खाता है। धार्मिक प्रसगों पर इस प्रान्तवासियों की उदारता देखते ही बनती है। लाखो रुपए एक साथ एक ही व्यक्ति, एक ही काम मे खुले हाथों व्यय कर देता है। वहा पर उमाजी ओखाजी, मगनमलजी चन्दन वेन, मूलचन्दजी चुन्नी बेन, चिमनलाल जी पाची बेन की ओर से नि शुल्क औषधालय बोर्डिंग, कन्याशाला आदि कई सस्थाएं चलती है। ऐसे अनेकों दानवीर उस प्रान्त मे भरे हैं।

आसपास के राणीवाडा पडण आदि गाँवों की जनता आपके उपदेश श्रवण को आती। पर्यूषण के दिनों मे वहां भारी तपस्याएं भी हुई। किन्तु अपने गांव मे कोई मुनिराज अथवा साध्वियाँ न

होने से उन लोगों ने आपके पास आकर निवेदन किया कि, "साहेब! हमारे गाँव थोड़े-थोड़े कोस के अन्तर पर हैं, यदि आपकी कृपा हो तो दो-दो साध्वी जी को भेजें।

उनलोगों की भव्य-भावना को देखकर आपने अपने कष्ट की पर्वाह न करते हुए दो साध्वी जी को निकटस्थ एक कोस के अन्तर पर बसे पडण गाँव में भेजना मंजूर किया। वहाँ आज भी आपके नाम की जय बोली जाती है। कई बेर चतुर्मास की विनती होती है। वहाँ की जनता आपके सौजन्य को आज भी भावविभोर हृदय से याद करती है। राणीवाडा तीन कोस के अन्तर पर था। वहाँ एक ही साथ २५ व्यक्तियों ने आठ उपवास की तपस्या की थी। संघ के अत्यधिक आग्रह पर श्रीमती विज्ञान श्री जी म० ने स्वयं साध्वियों के साथ पधार कर पर्यूषण पर्व में मनाये जाने वाले भगवान महावीर के जन्मोत्सव पर जन्माधिकार पढ़कर सुनाया। सभी तपस्वियों को दर्शन व धन्यवाद देकर, प्रत्याख्यान करवा कर, शाम को पुनः मालवाडा पधारीं। कारण चतुर्मास शुरू होने के बाद जैन मुनि को अन्यत्र रात्रि निवास करना निषेध है।

पर्यूषण पश्चात् श्री निपुणा श्री जी को हिस्टीरिया का प्रबल दौरा आया, शरीर की चेष्टाएँ सभी बिगड़ गईं। जीवन आशा टूट गई, उपचार के लिए दौड़धूप होने लगी। पर स्थिति में सुधार नहीं हुआ। पूरे तीन दिन बीत गए, संसारी सम्बन्वी भी पहुँच गए। अन्त में पीपाड के यतिवर्य चतुरसागर जी को बुलाया गया, उनकी दवाई ने काम किया, स्थिति में परिवर्तन आया, सुधार शुरू हुआ।

आपके प्रवचनों का प्रभाव प्राय: अछूता नही जाता। यहाँ भी दीक्षार्थ कई बहनें तैयार हुईं। न तो सभी की परिस्थिति अनुकूल होती है और न सभी को परिजनों की आज्ञा ही उपलब्ध होती है।

लक्षाधिपति चिमनाजी की धर्मपत्नी पाचूबाई भी दीक्षार्थ उद्यत बनी। परन्तु पति की पत्नी, छोटे-छोटे दो पुत्र, डेढ साल की नन्ही-सी एक कन्या की माता, उसे दीक्षा कौन दे? न दिलवाने वाले तैयार न देने वाले इतने पाषाण-हृदय कि बालको को भाग्य भरोसे छोड शिष्या बनालें। पाचू बेन को आपने खूब समझाया, तब जाकर वे शान्त हुईं। पाचू बेन ने चिमनाजी का आज्ञापत्र कि पाचूबाई और उनकी कन्या लक्ष्मी की यदि दीक्षा भावना हो तो वे जब भी चाहे दीक्षा ले सकेंगी, मेरा इसमे कभी भी विरोध नही होगा, प्राप्त कर लिया था। तत्पश्चात् पाचूबाई ने अपने पति चिमनाजी का दूसरा विवाह कर स्वय पूर्ण ब्रह्मचारिणी का जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा ली। बच्चे सम्भल जाएंगे तब दीक्षा लूगी, ऐसी भावना रखने लगी। आगे जाकर पाचू बेन टी० बी० रोग ग्रसित हो गई, पर आज भी उनकी दीक्षा-भावना ज्यों की त्यों है।

३२—प्रवर्तनी महोदया की सेवा में

आपको शीघ्र देहली जाना था, अत चतुर्मास पश्चात् शीघ्र विहार कर कुछ दिन आबू मे ठहर कर, योगीराज का आशीर्वाद लेकर

देहली की ओर चरण बढ़ाए तथा पाली होती हुई अपने दीक्षा-स्थान पीपाड पधारीं। विज्ञान श्री जी म० ने नव-दीक्षिताओं को साथ लेकर फलोधी मारवाड की ओर उनकी बड़ी दीक्षा के लिए विहार किया। वहाँ आचार्य जिन हरिसागर सूरीश्वर जी म० विराजमान थे। फलोधी में तीनों ही नूतन साध्वी जी की बड़ी दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आप पीपाड से कापरडा तीर्थ की यात्रा करती हुई जोधपुर पधारीं, वहाँ वयोवृद्धा लालजी श्री जी म० विराजमान थीं।

लाल श्री जी म० जोधपुर के श्री उमेदराज जी भंसाली की बहन थी। जतन श्री जी म० रिश्ते में आपकी भाभी होती थीं, और दोनों ही पुज्या सुवर्ण श्री जी म० की शिष्याएँ होने से दोनों में परस्पर बड़ा ही प्रेम भाव था। हमारी चरित्र नायिका के प्रति भी श्रीलाल श्री जी० म० का खूब वात्सल्य भाव था, आप भी उन्हें माता समान मानती थीं, और उनके दर्शनार्थ ही आप जोधपुर पधारी थीं। सभी साध्वी वर्ग को वन्दना नमस्कार कर तत्रस्थ सभी मन्दिरों के दर्शन किए।

जोधपुर संघ ने चतुर्मास के लिए बहुत आग्रह किया परन्तु आपका लक्ष्य देहली था। अतः वहाँ से आप मेडता रोड (पार्श्वनाथ फलोधी) पधारीं। वहाँ विज्ञान श्री जी म० व नवदीक्षिताएँ भी शामिल हो गई थीं।

मेडतारोड में पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन वन्दन करते हुए आप दस दिनों तक ठहरीं। यह स्थान एकान्त कलरव शून्य, एवं रमणीय

होने से साधकों का ध्यान अपनी ओर त्वरा से आकर्षित कर लेता है।

मेड़ता रोड से आप परम संत योगीराज श्री आनन्दघन जी एवं परम भक्त शिरोमणि मीरा की जन्म भूमि मेड़ता सिटी पधारी। वहाँ भक्तों की समाधि, भगवान के मन्दिरों के दर्शन कर, अजमेर मे श्रीमद् दादाजिन दत्त सूरीश्वर जी म० के समाधि स्थल की भावपूर्ण हृदय से यात्रा करती हुई जयपुर की ओर बढी। मार्ग मे आनेवाले ग्रामों मे ग्रामीण जनता को उपदेश देकर उनका जीवन मद्य, मास, चोरी, जूआ आदि व्यसनों से मुक्त करती हुई, आपने अक्षय तृतीया के दिन जयपुर के समीपस्थ दातरी गाव मे पदार्पण किया। अक्षय तृतीया का पर्व दातरी सघ के आग्रह से पूजा प्रभावनादि उत्सव पूर्ण वातावरण मे मनाकर वैशाख शुदी नवमी को आप जयपुर पधारीं। जयपुर सघ तो आपका अपना सघ था। वहाँ के स्वागत की क्या बात? जिन मन्दिरों के दर्शन कर सबके साथ आप उपाश्रय मे पधारी, वयोवृद्धा, ज्ञानवृद्धा, एव पर्याय वृद्धा, मातृ स्वरूपा, प्रवर्तनी महोदया श्री ज्ञान श्री जी म० के दर्शन किए। आनन्द विभोर होकर आप उनके चरणों पर गिर पडी और वात्सल्य विव्हला प्रवर्तनी जी आपके सिर व पीठ पर हाथ फिराने लगी। उस समय का स्नेहमय वातावरण बड़ा ही आनन्दप्रद रहा। पुज्या, विदुषी रत्ना विनय श्री जी म० आदि सभी को वन्दन नमस्कार कर आप ने पूर्ण प्रेम रस का आस्वादन किया। ऐसे ऐसे प्रसगों को याद कर आप श्री आज भी गद्‌गद् हो जाती है। जयपुर मे इस वर्ष पुज्य, पण्डित

प्रवर मणिसागर जी म० सा० का चतुर्मास, था, अतः व्याख्यान वे ही फरमाते थे। वहाँ उपध्यान भी हुआ था। आप श्री मध्याह्न में प्रवचन सुधा वर्षाती थी।

जयपुर में चतुर्मास तक न रुककर आपका विचार शीघ्र देहली पधारने का था किन्तु प्रवर्तनी महोदया की इच्छा एवं संघ के अत्याग्रह से आप उस वर्ष देहली न जा सकी। तिलक श्री जी महाराज का स्वास्थ्य भी अस्वस्थ था। एवं सर्वोपरि कारण देश में सन् १९४२ का अशान्तवातावरण भी था। राजधानी में उस समय साम्प्रदायिक विद्वेष चल रहा था। ऐसे में संघ छोटी छोटी साध्वियाँ लेकर जाने की आज्ञा देता भी कैसे ? अतः आपने अपनी माताजी श्री विज्ञान श्री जी म० एवं प्रवर्तनी महोदया की शिष्या श्री शीतल श्री जी म० को देहली भेजा। सं० १९९८ का चतुर्मास आपने जयपुर में व्यतीत किया। अशोक श्री जी म० का यह चतुर्मास उनकी लड़की के आग्रहवश, माननीया चरण श्री जी म० के साथ टोंक में करवाया। चतुर्मास की समाप्ति और अशोक श्री जी म० के ऐहिक जीवन की समाप्ति एक साथ ही आई कुछ दिन की सामान्य व्याधि से ही अशोक श्री जी म० स्वर्गगामिनी बन गई।

चतुर्मासान्तर पुज्य श्री आनन्द सागर जी म० के जयपुर आगमन के समाचार मिले, अतः आप उनके दर्शनार्थ कुछ समय और ठहरीं। उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर आपने देहली की ओर प्रस्थान किया।

संघ की स्नेहभरी बिदाई के साथ उपाश्रय से प्रस्थान कर आप

स्टेशन पर पुगलियों की धर्मशाला मे ठहरीं। वहाँ भगवान के दर्शन किए दिनभर लोगों का आवागमन रहा। दूसरे दिन प्रातः विहार कर आप बडगाव पधारीं वहाँ जैनों के ७-८ घर थे, पर साध्वीजी का आगमन प्रथम ही होने से सघ मे खूब उत्साह व भक्ति थी। नारनौल, खेडी होती हुई आप देहली महरौली (कुतुल) मे मणिधारी जिन चन्द्रसूरि के चरणों मे पहुँची।

३३—गुरु सेवा में

पु० जतन श्री जी म० का शिष्याओं के प्रति अपूर्व वात्सल्य भाव होने से वे भी देहली उपाश्रय से चलकर दादावाडी पधार गई। वहा जतन श्री जी म० के उपदेश से सोहनलाल जी बोरा की धर्मपत्नी कुजीवाई ने एक कमरा बनवाया था उसमे गुरु शिष्या ने कुछ दिन निवास किया, पश्चात् शहर मे खैरातीलालजी की धर्मशाला मे पधारे। स० १९९९ का चतुर्मास आपका देहली मे ही व्यतीत हुआ। गुरु आज्ञा से आप ही प्रतिदिन प्रवचन देती थी प्रवचन मे प्रश्न व्याकरण सूत्र एव समरादित्य चरित्र चलता था। बिना गच्छभेद के सभी आपके प्रवचन मे आते थे।

यह चतुर्मास गुरु सेवा एव अवकाश के समय मे ज्ञान शक्ति सचय करते हुए व्यतीत हुआ। जैन समाज के माने हुए प्रखर विद्वान पण्डित बेचरदास जी से आपने व्याकरण मार्गोपदेशिका का अध्ययन

किया। पण्डितजी का सौजन्य पूर्ण व्यवहार आज भी आप कभी-कभी प्रसंग पर याद करती रहती है।

चतुर्मास पश्चात् जयपुर निवासी लालचन्दजी कोचर की धर्मपत्नी व कुचेरा निवासी उगमराजजी सिंघी की बहन अधिकार बाई एवं पादरे के रतिलाल मोहनलाल की पुत्री शान्ता (विनीता श्री जी की बहन) को दीक्षित कर उनका नाम प्रभा श्री जी एवं पुष्पा श्री जी रखा।

यथा समय देहली से विहार कर आप पुज्या जतन श्री जी म० के साथ चार माइल दूर छोटे दादाजी पधारीं। फाल्गुन बदी अमावस के दिन छोटे दादा साहब की स्वर्ग जयन्ती सानन्द मनाकर आप गुरुणी जी के साथ बड़े दादाजी जिनचन्द्रसूरि समाधी मंदिर पधारी! यहाँ चार दिन ठहर कर आपने अब देहली से प्रस्थान किया। जतन श्री जी म० की आन्तरिक इच्छा आपको दूर भेजने की न होने पर भी साध्वाचार के नियमानुसार सजल नयनों से आपको बिदा किया, वात्सल्य पूर्ण हाथ सिर पर बेर बेर फिराने लगी; जब तक आप चलती दिखाई देती रहीं दोनों गुरु शिष्या देखती रही। आपका हृदय भी टूट रहा था। सम्भवतः यह भावी का संकेत ही हो कि पुनः मिलन सम्भव नहीं। आपके अन्तर में बेर बेर में आवाज आती अब गुरु दर्शन प्राप्त नहीं होंगे। बात समझ में नहीं आ रही थी पर मन अशान्त था और यह आशंका आखिर सत्य निकली आपको पुनः गुरुणीजी के दर्शन नहीं मिले।

३४—लम्बी व्याधी

देहली से विहार करके आप डालमियाँ दादरी पधारी यहाँ संवेगी साध्वी जी का सर्वप्रथम आगमन होने से, संघ मे आनन्द ही आनन्द उमड आया। संघ प्रमुख जानकी प्रसाद जी रामप्रसादजी अच्छे धर्म स्नेही व्यक्ति थे। आपके उपदेशों ने यहाँ खूब जागृती प्रदान की, महावीर जयंती का शानदार कार्यक्रम रहा। वहा के मन्दिर मे सभी प्रतिमाएँ अस्थिर थी, आपके उपदेश से प्रेरणा पाकर श्री संघ ने प्रतिष्ठा करवाने का निर्णय किया और देहली से यतिवर्य रामपालजी द्वारा स० २००० ज्येष्ठ शुक्ला दसमी को प्रात काल प्रतिष्ठा करवा कर चतुर्मासार्थ झूंझनू की विनती होने से सूरजगढ, चिडावा होती हुई अनुपम श्री जी म० विज्ञान श्री जी म० के साथ झूंझनू पधारी।

झूंझनू की जनता प्रवचन सुधा के पान मे तल्लीन थी। पर्यूषण पर्व की आराधना भी खूब आनन्द से समारोह सम्पन्न हुई। जयपुर, बनारस, बीकानेर, चिडावा, देहली, हैदराबाद आदि स्थानों मे अधिक संख्या मे दर्शनार्थी बहनें पधारीं। महावीर जन्म दिन की सवारी जयपुर निवासी उमराव चन्द जी बैंगटी की पत्नी मीनाबाई की ओर से निकली। संवत्सरी के दिन आपने क्षमाभाव पर इतना सुन्दर और हृदय-स्पर्शी प्रवचन दिया कि जिसे सुनकर महादेव प्रसाद जी एवं कन्हैयालाल जी पोद्दार, जाने दीर्घ समय मे चले आ रहे विरोध को समाप्त कर गले मिले।

इधर प्रवचनों से समाज आनन्द-विभोर बना था। उधर वर्षों के अथक परिश्रम के कारण देह सर्वथा श्रान्त, क्लान्त हो रही थी। आपने कभी भी शरीर की चिन्ता व उचित सार सम्भाल एवं विश्राम नहीं किया। आखिर शरीर—शरीर ही था, कोई वज्र तो था नहीं। अब आपकी उपेक्षा से तंग आकर देह ने भी सत्याग्रह का नोटिस भेज दिया। अकस्मात् आप हृदय रोग से पीड़ित हो गईं। हार्ट इंजन की तरह धड़कता, जी घबराता। उठना-बैठना कठिन हो गया। तत्रस्थ जन घबराए, नाना उपचार किए गए, पर रोग ने तो शमने का नाम भी न लिया, जाने की तो बात ही कहाँ। सभी जगह से भक्तों के आगमन का ताँता बँध गया। इस बीमारी ने आपको लगातार दो साल तक झूंझनू में ही रोक रखा। आखिर तंग आकर आपने संघ से विनय की कि आप मुझे विहार की आज्ञा दें, मैं यों कब तक यहाँ रहूँगी। अभी मेरी उम्र ही क्या है? संघ किसी भी तरह मान नहीं रहा था।

आपको ख्याति प्राप्त वैद्य प्रमुख चक्रपाणी जी के सेनिटोरियम में रखा गया, किन्तु बीमारी पकड़ में न आने से दवाई ने काम नहीं किया। आपकी बीमारी हृदय-रोग की थी और उपचार गैस का होता रहा।

अन्त में आपने विहार का निश्चय कर ही लिया। सभी को भय था कि परिश्रम पड़ते ही कहीं कुछ हो गया तो क्या होगा? पर कर्म-सिद्धान्त पर जिन्हें दृढ़ विश्वास होता है, वे ऐसे विचारों से कभी भी घबराते नहीं। आप ने युक्ति-प्रयुक्तियों से संघ को समझा

कर झूंझनू से १८ कोस दूर फत्तेपुर की ओर उपचारार्थ विहार किया।

इस बीमारी मे झूंझनू वालों की सेवा तो अत्यधिक प्रशसनीय रही ही, किन्तु जयपुर सघ की भी पूरी-पूरी मदद रही। मीनाबाई ने भी कई महीने आपकी सेवा मे व्यतीत किए। अन्य पादरा वाले, बीकानेर वाले, हैदराबाद, देहली, अमरावती वाले भी आपकी सेवामे समय-समय पर आते ही रहे। स० २०००, स० २००१ के चतुर्मास झूंझनू मे हुये।

प्रतिदिन एक एक मील चलकर किसी प्रकार आप फत्तेपुर मे प्रवेशीं और दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड के आजाद भवन मे ठहरी। औषधोपचार शुरू हुआ। फत्तेपुर मे यतिवर्य विसनदयाल जी व ऋद्धकरण जी वैद्यक के अच्छे ज्ञाता हैं। इनकी दवा से आप धीरे-धीरे स्वास्थ्य लाभ करने लगी। इस समय विसनदयाल जी स्वय बीमार थे, पर आपको देखकर वे बडे ही प्रसन्न हुये। कुछ समय पश्चात् विसनदयाल जी का स्वर्गवास भी हो गया।

कुछ समय व्यतीत कर आपने पुज्या विज्ञान की जी म० के साथ छोटी नवीन साध्वियों को सेठ भैरुदान जी कोठारी के आग्रह पर बीकानेर भेजा। आपको यतिवर्य ने नहीं जाने दिया, उनका कहना था कि पूर्ण आराम होने के बाद ही जाने दूंगा। अत आप वहीं ही विराजीं। क्रमशः आप स्वास्थ्य लाभ करने लगीं। अस्वस्थ दशा मे भी स्वाध्यायरत हृदय को चैन नहीं था। पूरे विश्राम की आवश्यकता थी, पर श्रम ही जिनका जीवन था, उनके लिए आराम

हराम था। सारा दिन भगवती सूत्र, रायपसेणी सूत्र, ज्ञाता सूत्र आदि सूत्रों का अनवरत स्वाध्याय, मनन, चिन्तन चलता। दूलीचन्द जी दूगड एवं नानूराम जी दूगड की पत्नी ने आपके स्वाध्याय से विशेष लाभ उठाया और प्रतिमा विरोधी मान्यता से मुक्त हुए।

कई महीनों तक आजाद भवन में निवास कर आप पासके मकान में चतुर्मासार्थ पधारीं।

पावन पर्वाधिराज पर्यूषण के अवसर पर बीकानेर, झूंझनू जयपुर आदि शहरों के बन्धुगण पधारे, सानन्द सभी विधि विधानों से पर्वाराधन सम्पन्न हुआ। इन उत्सव महोत्सव एवं भक्ति भावना का तत्रस्त जैन जैनेतर समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा, चतुर्मास समाप्त होते होते कई जन आपसे लाभान्वित हुए। सं० २००१ का चतुर्मास बिताकर आप यतिवर्य की दवा से स्वास्थ्य लाभ कर बीकानेर निवासी श्रीमान भैरुंदानजी कोठारी के आग्रहवश बीकानेर पधारीं। बीकानेर में सेठजी ने भगवान महावीर स्वामी का एक मन्दिर बनवाया था, उसका प्रतिष्ठा महोत्सव आपकी अध्यक्षता में करने की भावना थी। एवं अपनी भतीजी रूपचन्दजी कोठारी की पुत्री छोटा बाई की दीक्षा भी आपके पास ही करवानी थी। छोटाबाई बचपन से ही धर्म संस्कारी थी। और बाल पनमें वैधव्य ग्रसित होनेपर विशेष धर्मपरायण हो गई थीं। उनका जीवन बीकानेर में एक अनुकरणीय जीवन माना जाता था। सेठ जी का छोटाबाई पर पुत्रीवत् स्नेह था। छोटाबाई ने कई महीनों से दीक्षा के लिए घी का त्याग कर रखा था: अतः दोनों ही निमित्तों को

सन्मुख रखकर सेठ साहब के अत्यन्त आग्रह पर आपको बीकानेर आना पडा।

३५—बीकानेर में

यथा समय आपने बीकानेर की सीमा मे प्रवेश किया सारा सघ हर्ष विभोर था। श्री सुवर्ण श्री जी म० के समय मे जिन्होंने आपकी सेवा तत्परता, विनय भक्ति, एव प्रतिभा देखी थी। और वर्तमान मे फैले यश को जिन्होंने सुना, देखा, जाना था वे आज आपके आगमन पर फूले नही समाते थे।

प्रवेश के समय बीकानेर के जैन समाज ने बडे ही भाव भीने वातावरण मे आपका स्वागत किया।

प्रभात मे प्रतिदिन आपका प्रवचन होता। छोटी साध्वियाँ अध्ययन मे लगी। आप अपने कार्य मे तत्पर थी। यथा समय स० २००२ मिगमर सुदी १० शुभ मुहूर्त मे मन्दिर की प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् वैराग्य वासित छोटाबाई की दीक्षा उत्कृष्ट सयम साधक आचार्य जयसागर जी म० के कर कमलों से २००३ बैशाखी पूनम को कराई गई। उनका नाम श्री जिजयेन्द्र श्री जी रखा गया।

इसी चातुर्मास मे तप एव त्याग मूर्ति श्री प्रभा श्री जी ने मास क्षमण (एक मास निराहार केवल गर्म जल लेकर) तपस्या की, इस

शुभ प्रसंग पर संघ ने दिल खोल लक्ष्मी का सद्उपयोग किया। अठाई महोत्सव, जागरण, निर्वाण आदि खूब हुए।

फतेपुर से बीकानेर आते समय मार्ग में रतनगढ़ में पूज्या विज्ञान श्री जी म० १० दिन विराजी थीं, वहाँ की दादा वाड़ी की अति जीर्ण अवस्था आप के ध्यान में थी। अतः आपने इस प्रश्न को संघ के समक्ष रखा। संघ ने दादा वाड़ी का जीर्णोद्धार करवाने में सहयोग देकर आपके वचन को शिरोधार्य किया। बीकानेर में आपका प्रभाव दिन दूना रातचौगुनावाली कहावत चरितार्थ कर रहा था। हर घर में आपकी चर्चा, आपकी प्रशंसा थी। प्रवचन के समय लोगों के झुण्ड उपाश्रय की ओर दौड़ पड़ते, सारा दिन धर्मचर्या जब देखिए जन समुदाय बैठा ही मिलता। जब तब धर्म प्रचारार्थ निकटस्थ गावों में गमन, सार्वजनिक भाषण, जैन जैनेतर जनता का अपूर्व उल्लास देखने योग्य था। इसी चतुर्मास में मुझे भी आपके शान्ति प्रदायक सहवास का सौभाग्य मिला। साधु समाज के प्रति मेरी स्वभावतः अरुचि सी थी। किन्तु आपके सहवास ने उसे सर्वथा व्यर्थ सिद्ध किया। तब से आज पर्यन्त मेरी श्रद्धा बढ़ी ही है, घटी नहीं। आपके जीवन की यह विशेषता है कि ज्यों ज्यों आपका सम्पर्क बढ़ता है, त्यों त्यो, मानव की श्रद्धा विकसित होती है।

"अति परिचयात् अवज्ञा" वाली उक्ति यहाँ अयथार्थ सिद्ध होती है। "जिन खोजा तिन पाईयाँ" के अनुसार ज्यों ज्यों इस ज्ञान समुद्र के जीवन में आप गहरे उतरेंगे त्यों-त्यों वहाँ पर आपको अलौकिकता अपूर्वता देखने को मिलेगी। मेरा ज्यों ज्यों सम्पर्क बढ़ा

त्यों त्यों मैंने आप मे अधिकाधिक विशिष्ठता के दर्शन किये। प्रतिक्षण प्रगति, प्रतिपल उत्थान आपकी सर्वाधिक विशेषता है।

मेरा अपना अनुभव है कि ज्यों ज्यों निकटता बढती है ज्यों ज्यों वास्तविकता सामने आती है, त्यों त्यों अरुचि बढने लगती है। क्योंकि लुका छिपी, बाहर क्या, भीतर क्या, मायाचार कथनी करनी की असमानता, ऊपरी लीपा पोती, जहाँ होती है। वहाँ परिचय की गाढता अश्रद्धा का कारण बनती है। ऊपरी दिखावा भीतरी खोखलेपन को ढक नही पाता। किन्तु जहाँ बाह्य से भी अन्तर रूप अधिक निखरा हो, कथनी से भी करनी बढकर हो, जहाँ दोष प्रतिपल परीक्षण कर हटा लिए जाते हो। जरा सा दुर्गुण या बड़ा सा अवगुण जहाँ छिपाने की बजाय हटाने का प्रयत्न हो वहाँ ऐसा प्रसग कैसे आएगा कि परिचित व्यक्ति के मन मे क्षोभ हो।

आपके जीवन मे कोई परदा नहीं, छिपाने योग्य कोई प्रवृत्ति नही, सहज सरल जीवन, उन्मुक्त सामने खडा मिलेगा। भले आप रात मे जाईए, भले दिन मे, भले एकान्त मे, या सबके सामने, ये जैसी भी हैं सर्वत्र वैसी ही मिलेगी। अपवाद उत्सर्ग शिथिलता या उग्रता जो भी है सामने है। वही शान्ति, वही सन्तोष, वही वात्सल्य भरी नजर, अगुलियों के पेरवों पर घूमता अगूठा, वीर वीर रटती जिह्वा जबान मे तीखी तेजी नही, व्यग, कटाक्ष नही। किसी का निरस्कार नही, सर्वत्र स्वागत भरी मुस्कान। भले कोई जावे, कभी भी एकान्त साधना का ढोंग नही, ऐसा मेरा अपना अनुभव है।

इसी प्रकार भगवान महावीर के उपदेशों का प्रचार करती

हुई आप बीकानेर से प्रस्थान का विचार कर ही रही थी कि अचानक नवदीक्षिता श्री विजयेन्द्र श्री जी को भयानक व्याधि ने आ दबाया। यह आपका सं० २००३ का चतुर्मास था।

३६—कर्तव्य निष्ठा

मानव की महत्ता का सही-सही मूल्यांकन उसका व्यवहार कराता है। बड़ों के सामने विनम्रता रखनेवालों, उनकी सेवा करने वालों की कमी नहीं, ऐसे तो अनेकों उदाहरण आज भी भारतीय समाज में भरे पड़े हैं। किन्तु अपने से छोटों के साथ सौजन्यता का व्यवहार, उनकी सेवा करनेवाले अति अल्प उदाहरण मिलेंगे। अपने से बड़ों के सामने विनम्रता की मूर्तियाँ, अपने से छोटों के समक्ष प्रायः चण्डी का रूप धारण कर लेती हैं। वहाँ मानव अनावश्यक बड़प्पन जताना अपना कर्तव्य ही मान बैठते हैं। परिचारकों की सामान्य-सी भूल पर बिगड़ उठना, उनके स्वभाव का एक अंग ही बन जाता है। इससे होता है क्या कि, कठोर अनुशासन के कारण सामने के व्यक्ति में प्रतिकार के भाव पैदा हो जाते हैं, और इसी कारण हमारे समाज में प्रसिद्ध सास-बहू के, बाप-बेटे के, ननद-भाभी के, गुरु-शिष्य के झगड़े होते ही रहते हैं, अथवा तो अधिक कठोर अनुशासन के कारण व्यक्ति आत्म-विश्वास खोकर निकम्मा बन जाता है। जीवन में अपने आत्म-विश्वास के बल पर वह कभी भी कोई बड़ा काम नहीं कर पाता।

बडों की मेवा, वडों का हुक्म, बडों के विचारों को महत्व देना इननी वडी वात नही। पर छोटों की सलाह सुनाना, उनकी सेवा करना, व्यक्ति की महत्ता का द्योतक है। छोटा व्यक्ति कभी भी उपयोगी लाभप्रद सलाह नही दे सकता, ऐसी धारणा गलत है।

वडों की सेवा को तो आज की समाज व्यवस्था मे प्रमुख स्थान प्राप्त है ही, किन्तु छोटों की सेवा वही कर सकता है, जिसे सेवा से प्रेम होता है। जिसकी नजर मे व्यक्ति का नही सेवा का महत्व होता है। मैं किसकी सेवा करूं, किसकी सेवा मुझे नही करनी चाहिए। ऐसे सकल्प विकल्प सेवाभावी व्यक्ति के मन मे उठते ही नही, वह तो मात्र सेवा के प्रसगों की खोज मे रहता है।

आप श्री के जीवन मे महत्ता ने पूर्ण विकास पाया है। आपका अपनी शिष्याओं के प्रति जैसा स्नेहभाव वात्सल्य दृष्टि है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। प्रत्येक का आदर, प्रत्येक की सेवा, प्रत्येक की सलाह का सम्मान। भेदभाव रहित छोटे-बडे सभी की परिचर्या। सभी के सन्तोप का ध्यान रखने हुये सभी के विचारों का दृष्टिकोण अपनाते हुए ही किसी वात का निर्णय करना आपकी महत्वपूर्ण विशेषता है।

बीकानेर से विहार करने का विचार चल ही रहा था कि इतने मे नए म० श्री विजयेन्द्र श्री जी भयकर व्याधि के चगुल मे आ फंसे। ज्यो-ज्यों उपचार त्यों त्यों रोग अधिक होने लगा। दिन पर दिन हालत गभीर व चिन्तनीय होती गई। वेहोश, भानरहित दशा मे शंय्यावश पडे थे और निकट ही आपका आसन जमा था। जब

देखिए उन्हीं के पास समस्त साधु क्रियाओं का बराबर ध्यान रखना। शिष्य सेवा तत्परता दर्शनीय थी। उस समय आपकी अपनी दीक्षिता शिष्याएँ भी ८-१० थीं। इनकी भी सेवा करने में सावधानी थी, उपेक्षाभाव कभी नहीं देखा गया। आपकी व शिष्याओं की सेवा तत्परता से अन्त में विजयेन्द्र श्री जी को स्वास्थ्य लाभ होना शुरू हुआ। उनके पास बैठकर कभी भी आप अन्य बातें नहीं करतीं, जब देखिए धार्मिक पाठ, उपदेश, संसार की नश्वरता, मृत्यु की अनिवार्यता, मुक्ति मार्ग का दिग्दर्शन कराती रहतीं। जहाँ इतनी सेवा तत्परता, आत्म कल्याण, समाधी भाव रखने का उत्कट प्रयास था, वहाँ मोहमुग्ध दशा जरा भी नहीं थी। न रोना-धोना, न अनावश्यक दौड़-धूप। पूछिये तो एक ही जवाब अपने कर्तव्य में कमी नहीं रखना। बाकी जीना, मरना किसके हाथ में रहा है? संयमी का जीना और मरना दोनों ही परम मंगलमय महोत्सव हैं। इसमें खेद या गम का तो प्रसंग ही नहीं है।

एक दो दिन नहीं, लगभग पूरे पाँच सात महीने तक इस व्याधि ने शासन किया।

पर आपको उद्विग्न नहीं देखा गया। सदैव उसी सहज भाव से कर्तव्य करती रहीं। कुछ सुधार होने पर डाक्टर व वैद्यों की सलाह से शहर से दूर सेठजी के बंगले में साध्वी जी को वायु परिवर्तनार्थ रखा गया। शाम को उनकी संभाल करने आप अवश्य इतनी दूर पधारतीं। रात व्यतीत कर सवेरे व्याख्यान के समय संघ सेवा में हाजिर हो जातीं। लोग आग्रह करते कि हमलोग बंगले पर आकर

उपदेश सुन लेंगे। आपको हमेशा आने-जाने की परेशानी उठानी पड़ती है। पर आप कहती ना मैं एक आती जाती हूँ और आप सैकडों व्यक्तियों को इतनी दूर आने जाने की परेशानी होगी। वृद्ध, अशक्त तो भारी सकट मे पड जाएंगे, विहार करना तो साधु जीवन का प्रमुख अग ही है। अत॰ मेरे लिए कोई परेशानी नही। यह थी आपकी अजोड कर्तव्य निष्ठा।

आपका यह ध्येय कभी नही रहा कि केवल शिष्याएं बनाकर समुदाय वृद्धि करना। उनकी सार सभाल करना, किसी भी सयमी को आर्त्तध्यान का प्रसग प्राप्त न हो इसका ध्यान रखना, सयमी को सयम ग्रहण कर पश्चाताप न करना पडे, सयम की सार्थकता की बजाए उन्हे व्यर्थता अनुभव न हो, इस वात का आप बरावर ध्यान रखती हैं।

विजयेन्द्र श्री जी की वीमारी ने दूसरा चतुर्मास भी वीकानेर मे व्यतीत करने के लिए वाध्य किया।

इस चतुर्मास मे वीकानेर स्थित श्री वासुपूज्य स्वामी के पुरातन जिनालय की अति जीर्ण अवस्था देखकर आपने सघ का ध्यान इस ओर आकर्पित किया। सघ के व्यक्तियों ने मन्दिर का निरीक्षण कर काम चालू किया। आपके उपदेश से यह जीर्णोद्धार अति शीघ्र सम्पन्न हुआ। स० २००४ का दूसरा चतुर्मास भी आपका वीकानेर ही मे हुआ।

३७—भावी के भण्डार में कुछ और था

चतुर्मास के अनन्तर बीकानेर से विहार कर आप उदरामसर पधारीं। वहाँ श्री लाल श्री जी म०, राज श्री जी म० की अध्यक्षता में बोथरा परिवार में उद्यापन महोत्सव चल रहा था। इसी हेतु से आपका यहाँ पदार्पण हुआ किन्तु भावी के भण्डार में कुछ और ही था।

उदरामसर से सटे हुए ऊँचे बालूरेत के टीले खड़े हैं। वहाँ की शुष्क वायु क्षयरोगियों के लिए अति लाभप्रद है। वहाँ श्री भैंरूदत्त जी आसोपा ने एक आश्रम का निर्माण करवाया था। उसमें शिव, हनुमान, आदि के छोटे-छोटे मन्दिर भी रोगियों के दर्शनार्थ बनवाए थे। किन्तु जैन मन्दिर का अभाव था। भैंरूंदत्त जी की भावना जैन मन्दिर के निर्माण की भी थी। वे अवसर की प्रतीक्षा में थे।

उनकी भावना तथा भाग्य से प्रेरित आप विहार कर उदरामसर आ पहुँचीं। आपका आगमन सुनकर आसोपा जी हर्ष से नाच उठे। उन्होंने आपके समक्ष अपनी भावना व्यक्त की।

आप श्री नवमन्दिर निर्माण के पक्ष में नहीं है। हर प्रसंग पर आप यही फरमाती रहती हैं कि जो मंदिर रूपी निधि पूर्वजों ने हमें सौंपी है उसे ही हम सुरक्षित, सुव्यवस्थित रखने योग्य नहीं रहे तो फिर नए मन्दिरों का निर्माण कराने का प्रयोजन ही क्या? मन्दिर साधक के लिए साधना का स्थल है इसके अवलम्बन से मानव परमात्म पद तक पहुँचाने वाली मंगलमयी साधना साध सकता है

किन्तु आज धीरे धीरे हमारे प्रमादवश यह ध्येय निकलता जा रहा है। आज मन्दिरों मे घण्टे भर निवृत्ति लेकर बैठने का हमें समय नही, हमारी रुचि नही, मदिर दर्शन कर हृदय मे उल्लास नही आता, आनन्द नही होता। तो केवल नाम के लिए नए - नए मदिर बनवाना श्लाघनीय नही। सर्वप्रथम पुजारी एव साधक पैदा करने की आवश्यकता है, उसके वाद मन्दिर निर्माण की। हम गाव गाव, शहर-शहर घूमते हैं, वहा हमे अनेकों ऐसे मन्दिर देखने को मिलते हैं जो केवल सेवक अथवा ब्राह्मण पुजारियों की सेवा पूजा के आश्रित पड़े हैं। न चन्दन का पता है, न दूध का ठिकाना है, जब भी अवकास मिलता है पुजारी आकर गीले वस्त्र से भगवान की प्रतिमा को जैसे-तैसे पू छकर दो टीकी लगाकर मन्दिर बन्द कर चल देता है। उसमे भी कभी-कभी नागा हो जाती है। कही कही तो वर्षों से मन्दिर के द्वार पर बिना खुला ताला लटकता नजर आता है। भीतर चमगादडों का अड्डा भी जम जाता है। जब हम मन्दिरों को सम्भालने योग्य ही नही तो फिर बनवाने की हौंस भी क्यों ? अत: आपने आसोपा जी की बात पर प्रारम्भ मे जरा भी ध्यान नही दिया। आसोपाजी भी अपनी धुन के धनी व्यक्ति थे। जब उन्होंने देखा कि अनुनय, विनय, प्रार्थना से यहाँ काम नहीं बनने का तो स्वय अपने हाथों मे प्रचण्ड गर्मी मे मन्दिर की नीव खोदनी शुरू कर दी। वे वैष्णव थे, उम्र लगभग ८० पार कर चुकी थी। उनकी लगन व भावना की उत्कटता ने आखिर आपको अपनी बात मानने को बाध्य कर दिया। हमारी चरित नायिका को हार मानकर

आसोपा जी की भावनावश वहाँ एक सामान्य मन्दिर निर्माण कराने में उन्हें सहयोग देना पड़ा।

पूज्या विज्ञान श्री जी, तिलक श्री जी म० आदि को नागोर के निकटस्थ गोगोलाव की ओर विहार करवा कर आप उदरामसर ठहरीं। गोगोलाव वालों का आग्रह बहुत था।

आपके उपदेश से बीकानेर संघ ने वहाँ मन्दिर का निर्माण कराया। प्रतिष्ठा तक आपको वहाँ ही रुकना पड़ा। यथासमय जेठ शुदि में मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाकर आप श्री पुनः धोरों पर से उारामसर पधारीं। वहाँ से गोगोलाव की ओर विहार कर दिया।

पंजाब देशोद्धारक, कलिकाल कल्पतरु आचार्य देव श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर जी म० के पावन पदकमल बीकानेर की भूमि को पवित्र करने वाले है यह बात ज्यों ही आपके कर्णगोचर हुंई त्यों ही ज्ञान पीयूष की प्यासी चातकी-सी आप पुनः बीकानेर की ओर मुड़ गईं। आचार्य प्रवर के दर्शन का लाभ उठाए बिना आप आगे कैसे बढतीं।

जब सं० १९८३ का चतुर्मास देहली में सुवर्ण श्री जी म० के साथ था, तब आचार्य श्री का शुभागमन शर्दियों में देहली हुआ था। वहाँ आचार्य देव एक मास तक विराजे थे और ॐ कार पर बड़ा ही सुन्दर विवेचन करते थे, पुज्या सुवर्ण श्री जी म० के साथ प्रायः नित्य ही आप प्रवचन में पधारती थीं। इसके पूर्व बम्बई में भी आचार्य देव के साथ श्री सुवर्ण श्री जी म० का चतुर्मास हुआ था। अतः आप का आचार्य देव के साथ पूर्व परिचय व उनके स्नेह सौजन्यपूर्ण

व्यवहार का आस्वादन किया हुवा था। श्री सुवर्ण श्री जी म० की यह हृदय की विशालता अन्यों के लिए अनुकरणीय है। जहाँ साधु साध्वी स्वगच्छीय मुनियों, आचार्यों के पास जाकर वन्दन श्रवण करने मे हिचकते हैं, प्रतिबन्ध लगाते है, मना करते हैं, यहाँ तक कि अपने भक्तों तक को आने-जाने, वन्दन व्यवहार करने से रोकते हैं, परस्पर विरोध भाव बढाते हैं। और इसी सस्कारों से पूर्णरूपेण सस्कारित हमारी चरित्र नायिका आज पर्यन्त विना गच्छ सम्प्रदाय के विचार प्रत्येक मुनिराज भले वे तपगच्छी हों, भले स्थानकवासी हों, भले तेरापथी, दिगम्बर हों, समान भाव से वन्दना, प्रवचन श्रवण करती हैं।

सूरी सम्राट का आगमन सुनकर आप श्री बीकानेर लौट आई और सूरीश्वर के आगमन की प्रतीक्षा करने लगीं।

यथासमय आचार्य देव पधारे, विनय, वन्दन, नमस्कार यथा विधि किया। कुछ दिन बीकानेर ठहरकर व्याख्यान श्रवण का लाभ प्राप्त किया। उन दिनों आपने अपना प्रवचन वन्द कर दिया था।

३८—अनुकरणीय उदाहरण

विजय वल्लभ सूरीश्वर के दर्शन, प्रवचन का सौभाग्य प्राप्त कर कुछ समय बीकानेर में ठहर कर आप श्री पुन विहार कर उदरामसर भीनासर पधार गईं। इसी बीच बीकानेर में आचार्य देव के

सानिध्य में महावीर जयन्ती ससमारोह मनाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया। हमारी चरित्र नायिका को भी तपगच्छ संघ का निमन्त्रण मिला। साथ में आचार्य श्री के परम भक्त प्रसन्नचन्द्र जी कोचर आदि श्रावक भी आ पहुँचे। आप श्री तो सदैव ही बड़ों के आदेश पालन में तत्पर रहने वाली है। भला इस पावन प्रसंग पर आचार्य प्रवर के आदेश की अवहेलना कैसे करतीं ?

आप शीघ्र विहार कर यथासमय बीकानेर आ पहुँचीं। महावीर जयन्ती के उपलक्ष में कोचरों के चौक में आप श्री का आचार्य देव के सानिध्य में भाषण हुआ। कुछ समय तक आप श्री पुनः बीकानेर में विराजीं, आचार्य श्री के प्रवचन का लाभ उठाकर जेठ शुदि में पुनः विहार का निश्चय किया। आचार्य श्री के भक्त पुनः आपके पास पधारे और निवेदन किया कि अष्टमी को स्वर्गीय आचार्य देव श्रीमद् विजयानन्द सूरि (आत्माराम जी) महाराज की स्वर्ग जयन्ती है, उसमें पधारना होगा। अतः आप श्री रुक गईं और चांदमल जी ढढ्ढे की कोटडी में मनाई जाने वाली आत्माराम जी म० की जयन्ती में सम्मिलित हुईं। सारा जैन समाज आश्चर्य चकित था। तपगच्छ के आचार्य के निमन्त्रण पर खरतरगच्छ की साध्वी का दूसरे गाँव से आकर कार्यक्रम में शामिल होना और पुनः उनके गुरुदेव की जयन्ती तक रुक कर उन्हें श्रद्धाञ्जलि देना, ऐसे प्रसंग जैन समाज के भाग्य में कमही दिग्गोचर होते हैं।

आपको समय पर उपस्थित देख आचार्य देव बड़े ही प्रसन्न हुये। आपकी विनयशीलता, सरलता आचार्य श्री को आकृष्ट कर रही थी।

जयन्ती समारोह शुरू हुआ, सभी बोलने वाले बोल चुके। बाकी थे आचार्य श्री एव आप। आचार्य श्री ने पहले आपको प्रवचन करने का आदेश दिया।

विनयमूर्त्ति आप तत्काल उठ खडी हुई और धारा प्रवाह बोलने लगी।

आपकी अद्भुत वक्तृत्व कला, समन्वयकारी विचारधारा, सगठन शक्ति का सागोपाग विश्लेषण, फूट से उत्पन्न जैन समाज की पतनोन्मुखी वर्तमान दशा का हृदयद्रावी मार्मिक वर्णन। फूटपरस्ती एव धीगामस्ती को दूर फेंक परस्पर एकता की डोर मे, प्रेम के धागे मे पिरो जाने की जैन समाज से की गई अन्तर तक सीधी पैठ जाने वाली अपील सुनकर सभी मुग्ध हो गए। अन्त मे आपने कहा :—

भाइयो ! आज हम सभी एक दूसरे की ओर पीठ करके चलने वाले गच्छवासी एक ही स्थान पर आचार्य श्री की छाया मे प्रेम सहित एकत्रित हुए हैं। इससे बडा ही आनन्द हो रहा है। क्योंकि हमारा और हमारे समाज का यह दुर्भाग्य है कि हम विवाह शादी मे, जन्म मरण के प्रसगों पर प्रेम सहानुभूति के साथ सम्मिलित होने वाले, धार्मिक प्रसगों के अवसर पर मुँह फेर पीठ देकर चलना शुरू कर देते हैं। आज धार्मिक प्रसग पर हम आचार्य देव की छाया मे एकत्रित हुए हैं, यह हमारे लिये परम सौभाग्य की बात है। किन्तु हमारा यह मिलन दिखावा मात्र य केवल ऊपरी आडम्बर न हो और न हो कोरा सामान्य शिष्टाचार। सतरा ऊपर मे एक समान गोल-

मटोल दिखाई देने पर भी भीतर एक नहीं हो पाता, उसके भीतर व्यवधानकारी फाँके अलग-अलग मौजूद रहती हैं, वे मिल नहीं पातीं, कहीं हमारा यह मिलन भी इसी रूप का न हो। मिलन वही है जिसमें भेद नहीं, व्यवधान नहीं। आपने खरबूजा तो खूब देखा है, उसके छिलके पर अवश्य अलग-अलग फांकें मिलेंगी, पर छिलके के नीचे कोई अन्तर नहीं, दीवार नहीं, व्यवधान नहीं, भेद नहीं, किसी प्रकार का अलगोभा नहीं, सर्वथा भेदरहित गोलमटोल गेंद-सा एकाकार मिलेगा।

महानुभावो! हम ऊपर से भले तप, खरतर अथवा अन्यगच्छ-वासी बने रहें, परन्तु गच्छ के आवरण के नीचे हम एक मात्र जैन हों, महावीर की सन्तान हों। हमारे बीच वैमनस्यकारी दीवारें न हों, मनोमालिन्य न हो। अन्यथा हमारा यह मिलन कोई अर्थ नहीं रखता। न इस मिलन को मिलन ही कहा जा सकता है। यह तो मात्र एकता प्रदर्शन का खोखला प्राणरहित आडम्वर ही होगा। विचार भेद पिता-पुत्र में होता है, भाई-भाई में होता है, पति-पत्नी में भी होता है। विचार भेद कोई बुरी बात नहीं, किन्तु मतभेद को लेकर मनभेद कर लेना शासन के लिए बडी ही खतरनाक चीज़ है। अतः आपसे मेरी विनयपूर्ण प्रार्थना है कि एकता, संगठन, स्नेह सम्मेलन जैसे आवश्यकीय प्रसंगों को फैशन मानकर व्यवहार में न लायें। "मुक्त हृदय, उन्मुक्त मन से मिलें, परस्पर सहयोग की उत्कट भावना रखें तभी हमारा मिलन—मिलन है वर्ना यह भी एक रुढी मात्र का पोषक प्रयत्न होगा। अन्त में आपने श्रद्धा भरे

हृदय से स्वर्गीय आचार्य देव के गुणों पर प्रकाश डालते हुए, श्रद्धानत हृदय से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

आप का प्रवचन सुनकर आचार्य श्री वडे प्रसन्न एव प्रभावित हुए। *उन्होंने आपको सम्मानित करते हुए अन्य आर्या मण्डल को* सम्बोधित कर कहा :—

"देखो। विचक्षण श्री जी के विचार कितने सुलझे हुये हैं। इन्होंने कैसा सुन्दर धाराप्रवाह भाषण किया है। हृदय मे एकता के लिए कितनी तडप है, शासन की उन्नति के लिए कितनी लगन है। तुम सब भी इनके जैसी बनों। यदि अब समय की मांग को नही सुना, समय के साथ कदम नही बढाया तो हम पिछड जाएँगे।

जैन सघ के समक्ष यह एक अनुकरणीय उदाहरण था। तपगच्छ के आचार्य की जयन्ती मे, तपगच्छ के आचार्य के निमन्त्रण पर, खरतरगच्छ की साध्वी शिरोमणि अन्य गांव से आकर निस्सकोच शामिल होती हैं। एक महान् आचार्य मुक्त हृदय से उनका आदर कर गुणानुमोदन करते हैं। प्राय' देखने मे आता है कि एक ही शहर मे रहते हुए, एक ही गच्छ के मुनि एक दूसरी समुदाय के आचार्यों के जयन्ती समारोह मे शामिल होने मे हिचकिचाते हैं, पर यहाँ तो स्नेह-सागर उमड रहा था।

वास्तव मे भवभीरु आत्माएँ मतभेदों व वैमनस्यकारी राग-द्वेषात्मक गच्छागच्छ की तूं तूं मैं मैं से दूर ही रहते है। जिन्होंने राग द्वेष से मुक्त होने के लिए वीतराग सयम मार्ग का अवलम्बन

लिया है, उनके द्वारा रागद्वेषात्मक परिणति को प्रोत्साहन कैसे दिया जा सकता है ? जिन्हे महावीर का नाम, महावीर का काम, महावीर का शासन प्रिय हो, वे भेदभावात्मक कामों को कैसे अपना सकते हैं ? जिन्हें वीर के काम से, नाम से, शासन से, अपना काम, अपना नाम, अपना ही मत अधिक प्रिय होता है, उन्हें ही राग व द्वेष शोभास्पद प्रतीत होते है।

ये दोनों तो भगवान महावीर के वास्तविक अनुयायी, सच्चे भक्त एवं परम उपासक आचार्य एवं आर्या थे। इन्हें अपने गच्छ से भी वीर का शासन अधिक प्रिय था। अपनी समुदाय से भी अधिक चिन्ता वीर शासन के उत्थान की थी। अपनी प्रशंसा से भी बढकर वीर की महिमा इनके प्राणों में परिव्याप्त थी। अपनी आज्ञा मनवाने की अपेक्षा वीर आज्ञानुसार जीवन बनाने की प्रबल लालसा थी।

आज जैन समाज को ऐसे ही आचार्य एवं आर्याओं की परम आवश्यकता हैं, पर दुर्भाग्यवश क्वचित ही ऐसे आचार्य एवं आर्यारत्न पाए जाते हैं। चारों ओर मतभेदो का विनाशकारी डिण्डिम नाद गूंज रहा है। मैं और मेरा से ग्रसित मुनि एवं श्रावक समाज अपने ही हाथों अपनी व शासन उन्नति की जड़ें खोदने में संलग्न हैं।

यथासमय आप श्री ने आचार्य देव की आज्ञा लेकर पुनः विहार किया।

३९—जैन-कोकिला

बीकानेर से चलकर ग्रामानुग्राम विचरती हुई आप श्री नागोर पधारी। नागोर मे कुछ दिन स्थिरता करके निकटस्थ गोगोलाव गाँव मे पधारी। गोगोलाव अभी साधु, साध्वियों के चतुर्मास सौभाग्य से वचित था। अत विनय पूर्वक आपको सघ ने वही चतुर्मास व्यतीत करने के लिए आग्रह किया। नागोरवाले भी आप का चतुर्मास नागोर मे करवाना चाहते थे। अत यहाँ आप दो भागों मे बट गई दोनों ही प्रसन्न रहे ऐसी भावना से आपने अपनी शिष्याएँ अविचल श्री जी, तिलक श्री जी आदि को नागोर भेजा और स्वय गोगोलाव विराजी।

जिनवाणी से वचित जनता पीयूष पानकर तृप्त होने लगी। सर्व प्रथम चतुर्मास था और था भी आप जैसी समर्थ साध्वी का गोगोलाव मे हर्ष व उल्लास की नदियाँ वह चली। गाँव की जनता भद्र परिणामों वाली थी। यहाँ वैराग्य रग खूब जमा। कुछ दीक्षा भावनाएँ भी जगी। शुभ कार्य मे अनेक वार विघ्न पड जाते हैं। दीक्षा की पूर्ण तैयारी थी समय भी निश्चित हो चुका था। अन्तराय कर्म की निकाचित ग्रन्थी ने दीक्षा मे विघ्न डाल दिया।

यथासमय वि० स० २००५ का चतुर्मास गोगोलाव मे व्यतीत कर आप श्री नागोर पधारीं। नागोर मे आपको पता चला कि पजाब केसरी युगवीर आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरि जी म० बीकानेर

से प्रयाण कर नागोर की ओर आ रहे है। आप ऐसे अवसर को कब गँवाने वाली थीं। आप नागोर में रुक गईं।

समय पर आचार्यदेव पधारे जिन शासन की ये दो विभूतियाँ पुनः मिली। समाज में हर्ष छा गया। संगठन व समन्वय का भाव भीना वातावरण बन गया।

प्रतिदिन आचार्य देव का प्रवचन होता, आप प्रतिदिन वहाँ उपस्थित रहतीं। आप ने यहां भी अपना प्रवचन बन्द रखा था।

प्रवचन पश्चात् आचार्यदेव आपसे भाषण करवाते। इस प्रकार आपका व आचार्यदेव का प्रवचन प्रतिदिन साथ साथ होता। गुजरात का श्रावक वर्ग साध्वी को वन्दन करने में, साध्वी का व्याख्यान सुनने में हिचकिचाता है, संकोच अनुभव करता है। क्योंकि गुण प्रधानत्व की अपेक्षा उसे अपने पुरुष प्रधानत्व का पूरा पूरा ध्यान रहता है। किन्तु एक युगपुरुष महान् आचार्य अन्य गच्छीय साध्वी का व्याख्यान करवाते है, सुनते हैं, और सुनकर भूरि भूरि प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं वास्तव में महावीर के उपवन में, महावीर की दिव्य वाणी के मीठे-मीठे टुहुकारे करने वाली यह विचक्षण श्री जी जैन कोकिला ही है सरोजनी नायडू भारत कोकिला कहलाती है, यह हमारी जैन कोकिला भी मीठो बोलने में कम नहीं है। इनका व्यक्तित्व अनूठा है। वाणी में तो विधाता ने अमृत ही घोल दिया है। बड़ी ओजस्वी वाणी है। शब्द चयन कितना व्यवस्थित-कितना सुन्दर, सुनते सुनते मन भरता ही नहीं। इनका धारा प्रवाह प्रवचन सुनकर बड़ा ही आनन्द होता है। चारों ओर हर्षनाद होने

लगा। जैन कोकिला व आचार्यदेव की जयजयकारों से आकाश मण्डल गूज उठा।

यह है हमारे आचार्य सम्राट विजय वल्लभ सूरीश्वर गुरुदेव की समयज्ञता, हृदय की विशालता, निश्छल वात्सल्य की पवित्रता। उनके हृदय मे मेरा-तेरा नही था, अपना पराया नही था। थे तो सभी मेरे थे, नही था तो कोई भी मेरा नही था। गच्छ पथ की तकरार को वे सर्वथा दफना चुके थे। समय के अनुसार अपने आपको ढाल लेने की विशिष्टता उनकी अनुकरणीय थी। अपने ही विचारों पर दृढ रहना यह आपकी मान्यता नही थी। पर सत्य सही विचारों को जीवन मे स्थान देने का प्रयत्न वे जीवन पर्यन्त करते रहे। उनके विचार उनका हृदय बडा ही उदार था। विद्या विस्तार, मध्यम वर्ग का उद्धार, ये दोनो कार्य आपकी जीवन मुद्रा के दो पहलू बन चुके थे। जीवन की अन्तिम स्वास तक आपने समाज के लिए ज्ञान दान का प्रयत्न किया, रोटी कपडे की चिन्ता की। आज वे महान् आचार्य हमारे बीच सदेह प्रत्यक्ष नहीं है। पर उनकी स्मृति हमारे बीच से कभी जाने की नहीं। उनके कार्य, उनकी कृपा, उनका वात्सल्य भुलाने की चीज नही, ऐसे उद्गार जब तब हमारी चरित्र नायिका के मुह से निकल्ते रहते हैं।

यह मिलन आचार्य देव ने जीवन पर्यन्त बडे ही वात्सल्य भाव से निभाया। कोई भी प्रसग होना आपको सूचना अवश्य भेजी जाती। आप भी सदैव आचार्य देव की कृपा याद करती रहती हैं।

आज पर्यन्त आचार्य देव की मनाई जानेवाली जयन्तियों में आप उत्साह पूर्वक भाग लेती हैं। श्रद्धांजलि अर्पित करते आपका हृदय स्मृतिवश भाव विभोर हो जाता है। नयन भींग जाते हैं।

आजके समय में यह बात कोई सामान्य बात नहीं थी। बड़े साहस व दूरदर्शिता की बात थी। भविष्य का संकेत था कि जब तक गच्छागच्छ के कदाग्रह को मेरे तेरे की दीवारों को मिटाकर हमारा आचार्यवर्ग, मुनि समुदाय, एवं आर्यामण्डल एक स्वर से महावीर वाणी का प्रचार कदम से कदम मिला कर नहीं करेगा तब तक इन थोथे आडम्बरों से, खाली उत्सव महोत्सव की होड़ाहोड़ से शासन की नींव सुदृढ़ बननेवाली नहीं है। क्योंकि शासन में पड़ी फूटका उत्तरदायित्व अधिकांशतः आचार्य मुनि एवं साध्वी वर्ग पर ही है। समाज के अगुआ समाज के पथ प्रदर्शक येही है। इनकी इंगित दिशा की ओर ही श्रावक वर्ग चलाता है। ये फूट के मार्ग पर अग्रसर होते हैं श्रावक वर्ग भी कमर कसकर इसी मार्ग पर सरपट दोड़ने लगता है। यदि ये समन्वय ऐक्य प्रेम के मार्ग पर चल पड़े तो कोई कारण नहीं कि श्रावक वर्ग ऐक्यता की, प्रेम की डोर में न पिरो जाए। विवाह, शादी, जन्म-मरण के जातीय प्रसंगों पर एक रहने वाला श्रावक वर्ग आखिर धार्मिक प्रसंगों पर क्यों अलग हो जाता है। इसका कारण क्या। यह प्रश्न विचारणीय है।

आचार्यदेव एवं हमारी चरित्र नायिका के सम्मेलन का, इनके ऐक्य-प्रेम के प्रयत्न का किसी भी श्रावक ने विरोध नहीं किया। बल्कि सभी ने आनन्द पूर्वक उल्लसित हृदय से अपनाया था, बधाया

था, अनुमोदन किया था। इसी से पता चलता है कि इस वैमनस्य का उत्तरदायी कौन है।

बीकानेर व नागोर जैसे सुन्दर सुखद प्रसग जैन समाज के भाग्य मे अगुलियो पर गिनने योग्य भी नही है। अतः हमे ठडे दिल से इस पर विचार करना चाहिए कही ऐसा न हो कि हम मतभेदों के नशे मे मूर्छित ही पडे रहे और जमाना हमारी पहुँच से परे चला जाए।

नागोर से चलकर आप श्री देहली के लक्ष्य से जैतारण पधारी। जैतारण की जनता ने आपको चतुर्मास के लिए घेर लिया। आपकी बलवती इच्छा इस समय अपनी दीक्षा गुरु रतन श्री जी म० के पास पहुँचने की थी। क्योकि वृद्धावस्था के साथ २ उनका स्वास्थ्य भी अब शिथिल हो रहा था। जैतारण के लाख आग्रह पर भी आप नही रुकी। बिना वचन दिए ही ब्यावर की ओर चल पडी।

ब्यावर मे आपका शानदार स्वागत हुआ प्रतिदिन प्रवचन, वही जन सागर की शोभा।

४०—उच्च-आदर्श

इधर ब्यावर मे भारत-पाकिस्तान विभाजन के शिकार हमारे कई पजाबी जैन भाई आए हुए थे। इनमे मुलतान वासी घन्नुमल जी नाहटा भी परिवार सहित थे। घन्नुमल जी की पुत्री लाजवती देवी की दीक्षा भावना जागरित हो गई थी। पंजाब पाकिस्तान के

मानवहृदय को हिला देने वाला नृशंस अत्याचार, निर्दोष प्राणियों के खून से प्यास बुझाने वाली दानवीय पिपासा का वीभत्स दृश्य उनकी आँखों के सामने घूम रहा था। संसार की चरम सीमा की स्वार्थपरता, अज्ञान अविवेक सर्वोपरि साम्प्रदायिक उन्माद लाजवंती के मस्तिष्क में चक्कर काट रहा था, और साथ-साथ हृदय पर अंकित हो रहा था आपका प्रसंगानुसार प्रवचन। उस समय लाहोर में अधिक संख्या में हमारे पंजाबी भाई उपस्थित थे। ताजा घाव था, हृदय में अपने बसेबसाए घर उजड़ जाने की, स्वजनों के बिछुड़ जाने की टीस थी। मानवता के नाते, धर्मगुरुत्व के उत्तरदायित्व के कारण उन घावों को सहलाना, उनकी मरहम पट्टी करना आपने अपना धर्म समझा। आपने पंजाबी भाइयों को खूब सान्त्वना दी, वीरता का पाठ पढ़ाया, आपत्तियो से न घबराने की सलाह दी, उजड़ा घर बसाने की शक्ति दी।

पंजाब का अनुभव एवं आपके प्रवचन लाजो को नई प्रेरणा, नई जागृति एवं नए ही मार्ग पर चलने की साध जगाने लगे। लाजो का मन मानवता को लज्जित करने वाले इन काले कारनामों से, इस संसार की कटु स्वार्थपरता से उठ गया। उसे संसार नीरस प्रतीत होने लगा। वह संसार के इन झंझटों को त्याग दीक्षार्थ उत्सुक बनीं, पर माता-पिता की ममता अनुमति देने के लिए तैयार नहीं थी। कई वर्षो तक आपको दीक्षा की अनुमति नहीं मिली। एक-दो दिन नहीं, पूरे ८० दिन लाजो ने घी तैल, नमक, मिर्च, दूध, दही, मिठाई विहीन मात्र एक ही समय, एक ही स्थान पर रूखा आहार

खाकर (आयम्बिल) दीक्षार्थ अनुज्ञा के लिए आग्रह किया। पर माँ की ममता, पिता का प्यार चट्टान बना खडा रहा।

इधर बीकानेर निवासी स्वर्गीय बालचन्द जी नाहटा की पुत्री मोहन कुमारी दीक्षा के लिए तैयार हुईं। उनकी चारित्र प्रेमी माता की ओर से कोई रुकावट नही हुई, पर भाई अपनी एकमात्र बहन को दीक्षा देने मे सहमत्र नही। दोनों के हृदय मे ज्वार भाटा आ रहा था, जरा भी चैन नही था। दोनों आपसे प्रार्थना करती कि, "हमे दीक्षा दीजिए न, अब घर में हमारा मन नही लगता।"

अभिभावकों की आज्ञा बिना किसी को मूँटकर चलते बनना यह आपके सिद्धान्तों के विपरीत था।

आपकी प्रारम्भ से ही दृढ धारणा व मान्यता थी कि उच्चादर्श की उपलब्धि के लिए लोकाचार, धर्माचार, शास्त्र विरुद्ध उपायों का आश्रय कभी भी नही लेना चाहिए। बल्कि उच्च प्रयोग, उच्च उपाय, उच्च साधन ही काम मे लाने चाहिए। आप बहुत वेर फरमाती हैं कि हीन उपायो से प्राप्त उच्चादर्श, महत्त्वपूर्ण काम, कभी भी सफल नही होता और न अनुकरणीय उदाहरण व महान् आदर्श ही हो पाता है। अदत्तादानव्रत का ग्रहण और वह भी चोरी-छिपे, यह कैसी हास्यास्पद बात है। अत आपने दोनों बालाओं को धैर्य प्रदान करते हुए समझाया कि, "यदि वास्तव मे ससारी, भौतिक सुखों पर लात मार तिलाञ्जलि देने की भावना जगी है, तो देर-अवेर अवश्य यह भावना सफल होगी। कदाचित निकाचित कर्मवशात् इस जन्म में अपूर्ण रही तो अगले जन्म मे तो अवश्य ही पूर्ण होगी। भावना

का फल निष्फल नहीं होता, प्रतीक्षा के क्षणों को मधुर बनाओ, क्योंकि वे मधुर होते ही हैं। इसमें उद्विग्न होने की जरूरत नहीं। उद्वेग क्रिया को सारहीन बना देता है।"

अपने आदर्श से गिरकर, सामने वाले को गिराकर, चोरी अथवा गुप्त रूप से ली और दी गई दीक्षा भावतः मुनि के पाँचों व्रतों पर कुठाराघात है। समय पर परिपक्व होने वाले फल ही मीठे, मधुर, सुस्वादु और गुणकारी होते है। अधैर्यवश असमय में कृत्रिम उपायों से पकाए गए फल कभी भी स्वतः पके फलो की बराबरी नहीं कर पाते, अतः धैर्य से काम लो। दौड-भाग, तोड-फोड, अनावश्यक भूख-प्यास सहन कर स्वयं परेशान होना, अन्यों को परेशान करना, संयम की चाह रखने वालों के लिए वांछनीय नहीं। भव्य प्रयत्नों द्वारा बड़ों का, परिजनो का हृदय परिवर्तन करो। अपनी त्यागमयी भावना से उनके हृदय में अपने प्रति विश्वास उत्पन्न करो। संयम साधना करो, आत्मनिरीक्षण करो। यह तो अपने आत्मबल को नापने का सुयोग मिला है। प्रथम अपनी कसौटी आप बनो, घर में ही मुनि जीवन का अभ्यास करो, ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय करो, पढो-लिखो मस्त रहो। व्यर्थ किसी का भी मन पीडित मत करो, अनुचित दबाव डालकर आज्ञा प्राप्ति का प्रयत्न भी मत करो। माता-पिता अन्य अभिभावक जब भी सानन्द दीक्षा प्रदान करें, तब तुम जहाँ भी होंगे तुम दोनों को दीक्षा देंगे।

"जब तक आग की प्रचण्ड ज्वाला में नहीं तपता तब तक स्वर्ण,—स्वर्ण नहीं कहा जाता। पत्थर पर तन घिसाए बिना चन्दन

की सुवास नही फैलती। विपद-आपद की कसौटी पर पूरे उतरे बिना मानव मे मानवता खिलती नही। सत्य का अवलम्बन लेकर ध्येय प्राप्ति के लिए जुट जाना ही सफलता की कुजी है। घात प्रतिघातों से हिम्मत हार कर हताश हो बैठ जाना असफलता दायक है। फिर भी हीन, हीनतर, हीनतम किसी भी उपाय से प्राप्त उच्चादर्श भी निन्दनीय कृत्य है। इससे किसी भी शुभ हेतु की शुद्धता अशुद्ध हुए बिना नही रहती। अत: तुम दोनों ही इस बात को सदैव याद रखना कि कभी भी भागकर मेरे पास मत आना, अनुचित उपायों मे चारित्र ग्रहण करना चाहा तो मेरे द्वार सदा के लिए बन्द मिलेंगे। भगवान का नाम लो, आनन्द से रहो, उदयकाल होगा तो माता-पिता के विचारों मे अवश्य परिवर्तन होग। नही तो सद्भावनाओं का, सद्प्रयत्नों का धर्मफल कही भी जाने वाला नही है। सत्प्रयत्नों से बडों का मन जीतना, उनका आशीर्वाद लेकर आगे बढना, इसी मे सफलता है।

इस प्रकार दोनों वैराग्यवती बालाओ को आपने समझा कर शान्त किया। इन दोनो को अपनी ध्येय प्राप्ति के लिए काफी समय व्यतीत करना पडा।

४१—गुरु-विरह का वज्रपात

जैतारण का सघ किसी भी प्रकार से मान नही रहा था। वे लोग ब्यावर मे आकर बैठ गए। उनकी एक ही बात थी कि हमारे

यहाँ चौमासा मंजूर करें, वर्ना हम सत्याग्रह करेंगे। उन्हें आपने बहुत समझाया। पूज्या जतन श्री जी म० की वृद्धावस्था व अपना कर्तव्य भी बताया। जैसे आपके लिए माता-पिता की सेवा अनिवार्य है, वैसे ही गुरु-सेवा हमारा आवश्यकीय कर्तव्य है। आपसे मेरी प्रार्थना है कि मुझे कर्तव्य से दूर न करें। परन्तु जैतारण के बन्धुजन अपने निश्चय से नहीं टले। अन्त में कोई भी मार्ग न देख संघ-शक्ति के सामने आपको मौन होना ही पड़ा। सामूहिक वल ही वल होता है। सं० २००६ का चतुर्मास आपका जैतारण में ही व्यतीत हुआ।

यहाँ आप श्री दो भागों में बँट गईं। साध्वी जी म०, श्री अविचल श्री जी म०, निपुण श्री जी म०, एवं विनीता श्री जी म० व्यावर रहीं, क्योंकि व्यावर वालों का भी पूरा-पूरा आग्रह था। आप स्वयं अन्य साध्वियों के साथ जैतारण पधारीं।

जैतारण में भी आपका चतुर्मास शानदार रहा। संघ की भक्ति भी सराहनीय थी। सभी एक पग खड़े थे। आने-जाने वाले यात्रियों की भक्ति, सेवा का भी उन्होंने खूब लाभ उठाया। भावी प्रबल थी, आपके हृदय में एक शल्य जीवन पर्यन्त के लिए रहना था, वह रह ही गया। यद्यपि सभी जानते हैं कि होनी को जिस रूप में होना रहता है, होकर ही मानती है। वह कभी भी अनहोनी नहीं होती, फिर भी कुछ घटनाएँ ऐसी हो जाती हैं जो प्राणी के लिए जीवन पर्यन्त खेद का विषय बन जाती हैं।

चतुर्मास समाप्त होते न होते श्री जतन श्री जी म० सा० आपकी दीक्षा गुरु का देहली में अकस्मात् देहान्त हो गया। मात्र दो एक

दिन की सामान्य व्याधि ने शरीर का भोग ले लिया। आत्मा अपनी राह चल बसी।

जीवन जितना अनिश्चित है, मृत्यु उतनी ही निश्चित है। ऐसा आप सानुभव जानती थी। अतः मरण का खेद नही था, खेद था अन्तिम दर्शन, सेवा से वंचित रह जाने का।

छद्मस्थ मानव अपूर्ण है और जब तक राग द्वेषात्मक परिणति से मुक्त नहीं हो जाता, अपूर्ण ही रहता है और इस अपूर्णता से पूर्णता मे आने के लिए गुरु अवलम्बन अनिवार्य ही है। गुरु-भक्ति की अदम्य लालसा मे अचानक वज्रपात-सा आघात लगा। इस आघात को सहने के लिए आपको भारी श्रम उठाना पडा।

जैतारण मे तीन मन्दिर हैं, दादावाडी है, उपाश्रय भी सुविधा-पूर्ण है।

४२—आघात पर आघात

चतुर्मास की समाप्ति पर आप श्री जैतारण से विहार कर कालू पधारी, वहाँ पर आपको समाचार मिले कि आपके तत्कालीन गुरुदेव आचार्य जिन हरिसागर सूरीश्वर जी म० को लकवा हो गया है और अन्तिम स्थिति चल रही है। अत आप श्री एक ही दिन मे १५ मील चलकर शीघ्र मेडता रोड पधारी। उस समय मेडता रोड मे आचार्य श्री की अध्यक्षता मे नागोर निवासी श्रीमान पारसमल जी खजान्ची की तरफ से उपधान तप चल रहा था। आचार्य श्री के

दर्शन-कर आपको शान्ति प्राप्त हुई। नव-दीक्षिता विजयेन्द्र श्री जी म० की बडी दीक्षा भी बाकी थी। उन्हें भी बीकानेर से बुलाया गया।

श्री विजयेन्द्र श्री जी म० का यह चतुर्मास बीकानेर में था। क्योंकि इनके संसारी पक्ष के प्रधान अभिभावक सेठ भैरुंदान जी कोठारी का स्वर्गवास हो जाने से, उनकी पत्नी के अत्यन्त आग्रह पर आपने श्री विज्ञान श्री जी म० के साथ इनको बीकानेर भेजा था।

उपधान तप में आप तपस्वियों को क्रियाएं करवातीं, श्री कवीन्द्र-सागर जी म० का पूरा-पूरा हाथ बंटातीं। समय पर उपधान तप पूर्ण हुआ, बडी दीक्षा भी हुई और माला महोत्सव भी सम्पन्न हुआ।

आचार्य देव की हालत पुनः गम्भीर हो रही थी। कविकुल-किरीट पूज्य श्री कवीन्द्रसागर जी म० सा० आचार्य श्री की जिस भक्ति से सेवा करते थे वह अपूर्व थी। इतने विद्वान, प्रखर-वक्ता, होकर भी गुरु सेवा में उनकी लगन, उनकी तत्परता अवर्णनीय थी। उपधान की क्रिया करवाते, व्याख्यान भी देते, आने-जाने वाले यात्रियों का पूरा-पूरा ख्याल भी रखते, और गुरुदेव की सेवा में जरा भी त्रुटि न आने देते। परन्तु अटूट भक्ति, अविस्मर्णीय सेवा-सुश्रुषा होने पर भी वे मृत्यु के नागचूड फाँस से आचार्य प्रवर को न बचा पाए। आखिर उनकी सेवा का, उनकी भक्ति का कोई भी ध्यान किए बिना वि० सं० २००६ पौष शुक्ला अष्टमी को आचार्य देव का स्वर्गवास हो गया। नागोर, जोधपुर, जैतारण आदि अनेक स्थानों के यात्रियों ने समारोह पूर्वक आचार्य श्री की अन्त्येष्टि क्रिया की,

वहाँ आपका स्मारक भी बनवाया और सबसे बडा स्मारक आचार्य श्री द्वारा सस्थापित श्री पार्श्वनाथ विद्यालय चल ही रहा है। और भी अठाइ महोत्सव, शान्तिस्नात्र आदि हुए।

उपाध्याय प्रवर आनन्दसागर जी म० को आचार्य पद एव श्री कवीन्द्र सागर जी म० को उपाध्याय घोपित किया गया।

हमारी चरित्र नायिका को आचार्य श्री की अन्तिम सेवा मिली पर उनको वचाने मे कोई भी समर्थ नही था। आपके मन पर पुनः शीघ्र होने वाला यह दूसरा आघात था।

यथा समय विहार कर आप अपनी दीक्षा भूमि पीपाड की जनता के भावभरे आग्रह पर पीपाड की ओर वढी।

यों आपकी जन्म भूमि तो अमरावती ही है। पर मूल आपका परिवार पीपाड वासी होने से आप पीपाड की भी हैं।

४३—पूर्वजों की भूमि में

पीपाड के हर्ष का क्या पार? जिस वालिका को धूल मे खेलते देखा, आँखो के सामने वढते देखा, अपने हाथो साध्वी वेश से सजाकर जिसे जिन शासन की भेट किया। आज वही छोटी सीं सब की प्यारी दाखी। वीतराग भगवान की ज्ञान प्रदीप्त मशाल लेकर, उनके अज्ञान अधकाराच्छन्न हृदयों मे ज्ञान प्रकाश भरने के लिए देवी सी शोभित होकर आई थी। पीपाड की भूमि खिल उठी, वहाँ का कण कण नाचने लगा, वच्चा-वच्चा उल्लास, उत्साह

से थिरक उठा। सारा का सारा गांव हर्ष विभोर हो अपने गांव की पावन, पुनीत देवी के दर्शनार्थ उमड पड़ा। चारों ओर विस्मयकारी वचनों की ध्वनियाँ सुनाई देने लगी।

दाखी कौन सी है इन में? क्या यही दाखी है? इतनी बड़ी हो गई? धूल में खेलने वाली दाखी यही है? वाह गांव का नाम उजाल दिया, मगनमलजी व पिताजी मिश्रीमलजी का नाम ऊँचा कर दिया। हम धन्य हो गए, हमारे गांव का नाम इनके साथ अमर हो गया। हरखूबाई व लालीबाई दोनों आपकी भूवाजी बड़ी ही प्रसन्न हो रही थी। आज उनकी भतीजी महान विभूति के रूप में पधारी थी। परंतु आज दादाजी अपनी प्रिय दाखी की शोभा उसका प्रभाव देखने को संसार में नहीं थे वर्ना कितने खुश होते?

ग्यारह साल की दाखी के प्रखर तेज, प्रतापी पराक्रम का वे अवलोकन कर चुके थे। आज वही बाला विचक्षणता की साक्षात् प्रतिमा, सौम्य ज्ञान की सरिता बन कर, ओजस्वी प्रभा से दैदीप्यमान सामने खड़ी थी।

बाल, वृद्ध, तरुण सभी हर्ष मिश्रित आश्चर्या वेग से स्तब्ध बने सामने खड़े थे। उनकी पावन, पवित्र, जिन शासन को दी गई भेंट आज जिन वाणी का अमृत बरसा रही थी।

पीपाड़ की जनता का हृदय भक्ति, भावनाओं से ओतप्रोत था। फिर भी उनके मन के अरमान अधूरे ही थे। अंत तक वे यही कहते रहे कि हम कुछ भी नहीं कर पाए, अपनी दाखी के स्वागत

मे हमसे कुछ भी नहीं बन पाया। सभी हृदय स्नेहपूर्ण भावनाओं से भरे थे।

दीक्षा मे रुकावट डालने वाले भी आश्चर्य चकित थे। उन्हें आज अपनी भूल अनुभव हो रही थी। सभी के कानो मे ठाकुर के शब्द गूज रहे थे। यह बाला महासती बनकर विश्व को प्रकाश देगी। पीपाड का उल्लास वर्णनातीत था।

प्रवचन के समय तो मानव-मेदिनी फुलवारी की तरह छा जाती, विशाल उपाश्रय के दरवाजे, वातायन तक भर जाते।

स्थानकवासी भाइयों ने निवेदन किया, "यदि आपको आपत्ति न हो तो लालथानक मे पधारें, वहाँ का आगन काफी बडा है। आपको क्या आपत्ति होती, समन्वय ही जिनका जीवन है, उनके लिए थानक और उपाश्रय मे क्या भेद होता।" आपने फरमाया, "इसमें सकोच कैसा ? कल से अपने सब लालथानक मे चलेंगे। जब तक आप पीपाड मे रही तब तक प्रतिदिन प्रवचन लालथानक मे ही हुवा। आपके यथार्थ, स्नेहभावपूर्ण वचन सुनकर स्थानकवासी, मन्दिर वाले, जैनेतर समाज, सभी बडे प्रभावित हुए। मुंहपत्ति मुह पर बांधने वाले और हाथ मे रखने वाले, केसर तिलक सुशोभित ललाट वाले, सभी बन्धु एक ही भवन मे परस्पर प्रेम से बैठकर व्याखान सुन रहे हैं, यह प्रसग पीपाड के लिए प्रथम ही था। आपके प्रेम-भाव ने सबके अस्त हृदय-दीपों मे स्नेह का तेल भरकर उन्हे प्रज्ज्वलित कर दिया था। पीपाड मे प्रेम का प्रकाश ही प्रकाश छा गया।

इस समय पीपाड अपने भाग्य पर फूला नही समा रहा था।

जब देखिए तभी आकाश जय-नादों से गूंजता रहता। मार्ग में चलतीं तो जनता का मन हाथो में खिलाई गई अपनी अद्भुत दाखी को देख कर मन उठाने को मचलने लगता। पर आज तो वह इतनी महान् बन गई थी कि उसे छू पाना भी शक्य नहीं था।

यहाँ पूज्या सुवर्ण श्री जी म० की स्वर्ग जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई।

साध्वियाँ आहार के लिए गाँव में जातीं तो घर-घर से आमन्त्रण की बौछार होने लगती। वे बडी असमंजस में पड जातीं। लेना तो सीमित लोगो को भावना थी असीम, पर पेट तो सीमित ही था। अधिक आ जाए तो कैसे क्या करें ?

ऐसे भावभीने वातावरण में पलक झपते दो मास का समय बीत गया। प्यास बुझी नहीं थी, अमृत मेघ बिछुड़ने की तैयारी में था, जनता ने बडी विह्वलता से आंचल पकड़ने का प्रयास किया, पर मेघ को कब और कौन पकड़ने में समर्थ हो सका है ?

संयोग वियोग की मधुर अभिव्यक्तियों के बीच आपने विहार के दिन की निश्चित घोषणा कर दीं। सभी हृदय विह्वल हो उठे, आँसुओं की बाढ आ गई, पर साध्वाचार की मर्यादा में बंधी माया ममता से अलिप्त उनकी यह धरोहर अब किसी भी प्रकार रुक नहीं सकती थी।

सभी उदास मन, भींगी पलकें आपका गमन-पथ विवश बने निहारने लगे। आपके चरण अजमेर की ओर बढने लगे।

४४—केसरिया नाथ के पथ पर

पीपाड से चलकर आप मेडता सिटी होकर चैत्र मास मे अजमेर पधारी। अजमेर मे सेठ साहब हीराचन्द जी सचेती के यहाँ उनकी पत्नी के बीस स्थानक तपका उद्यापन था। अतः आपको आगे विहार नही करने दिया, उद्यापन पश्चात् आप श्री चतुर्मास निकट होने से श्री प्रवर्तनी महोदया श्री ज्ञान श्री जी म० की सेवा मे जयपुर पधारीं। वहाँ से पूज्या जतन श्री जी म० की वयोवृद्धा शिष्या श्री अनुपम श्री जी म० व प्रवीण श्री जी म० को लेने के लिए पुज्या विज्ञान श्री जी म० एव प्रभा श्री जी म० को देहली भेजा। स० २००७ चतुर्मास आपका जयपुर मे ही व्यतीत हुआ। चतुर्मास पश्चात् अनुपम श्री जी म० आदि सभी आप के शामिल हुए। तबसे आज पर्यन्त अनुपम श्री जी म० को आपने जिस आदर सेवा सत्कार से सहेजकर रखा है। जैसी महत्ता उन्हे दी है, वह सभी साधु समाज के लिए अनुकरणीय है। जबतक वे चलने योग्य रही उनकी इच्छानुसार उन्हे यात्रादि करवाए गए, क्योकि उनका सारा दीक्षा-काल पूज्या जतन श्री जी म० के पास देहली मे ही व्यतीत हुआ था। अब सुयोग पाकर विहार यात्रा की उमगें उठना स्वभाविक था उनकी चाह, उनकी इच्छा आपने अपनी इच्छा बनाली और सब प्रकार की सुविधा से आपने उनको सहेजा।

जयपुर से चलकर आप दादा जिन कुशलसूरि के चमत्कारी स्थान, साधना योग्य भूमि मालपुरे की यात्रा करती हुई केकडी पधारी।

केकडी वालों ने चतुर्मास की प्रार्थना की वहुत आग्रह किया परन्तु आपको केसरिया नाथ जी तीर्थ की यात्रा कर अभी दूर जाना था। फिर भी उनके आग्रह को मान्य कर आप श्री फाल्गुन चतुर्मासी केकडी में व्यतीत कर उन्हें सन्तुष्ट किया। केकडी से आप जहाजपुर पधारीं।

जहाजपुर की भक्ति भी अपने ढंग की एक निराली ही थी। सारे गाँव में आनन्द की एक लहर दौड़ गई। चैत्र मास की नवपद आराधना बड़े ही समारोह पूर्वक करवाई गई। दिगम्बर, श्वेताम्बर एवं जैनेतर भाई बहनों में परस्पर बड़ा ही संगठन था। महावीर जयन्ती भी बड़े ही उत्साह पूर्ण समारोह से शामिल ही मनाई गई। चेत्री पूर्णिमा पश्चात् आप श्री बनेडा तीर्थ पधारी।

बनेडा एक शानदार तीर्थ हैं वहाँ की सुन्दर प्रतिमाएँ बड़ी ही भव्य एवं चमत्कारी है। समय के प्रभाव से अन्य तीर्थ प्रसिद्धी में आए और यह अज्ञात सा रहा। जैतारणवाले चान्दमलजी मुथा आदि इस तीर्थ के अभ्युदय के लिए प्रयत्नशील है। वैशाख सुदी तीज को वहाँ मेले की शुरुआत की गई। इस अवसर पर चान्दमल जी ने संघ सहित आपको बनेडा पधारने की प्रार्थना की थी। अतः आप यथा समय बनेडा पधारे थे। प्रतिदिन आपका प्रवचन होता, वहाँ के ठाकुर ठाकरावास सहित प्रवचन में आते थे। ठाकुर बड़े भक्त आत्मा थे। आप के उपदेश से वहाँ के राजपूतों ने व ठाकुर, ठाकरावास ने अनेक बिशेष तिथियों व प्रसंगों पर सामिष भोजन का त्याग किया। कितनों ने जीवन पर्यन्त के लिए मांसाहार का

त्याग कर दिया था। कइयों ने जूआ, तम्बाखू आदि व्यसनों का त्याग किया। बनेडा का कार्य सम्पूर्ण होने पर आप श्री भीलवाडा पधारी। वहाँ से हमीरगढ होती हुई चित्तौड पधारी। चित्तौड के किले मे जाकर जिन मन्दिरों के दर्शन किए! दो दिन किले मे ही विराजी। यहाँ सुप्रसिद्ध आचार्य विजय रामचन्द्र सूरि के शिष्य भुवन सूरि से मिली वन्दनादि कर धर्मचर्चा की और बाद मे नीचे आई।

उस समय वहा केसरियानाथ जैन गुरुकुल का शिलान्यास समारोह चल रहा था। अहमदाबाद, बम्बई, मेवाड, उदयपुर आदि शहरों के महारथी एकत्रित थे। शिलान्यास पश्चात् सभी के भाषण हुए। उदयपुर के श्री मनोहरलाल जी चतुर ने आपको भी पाच मिनट तक बोलने की प्रार्थना करते हुए कहा, महाराज आप भी आशीर्वाद देने की कृपा करें।

आपने बोलना शुरू किया सभा आश्चर्यचकित रह गई। कहाँ तो समय हो जाने से सभी भागने की तैयारी मे थे। और कहा सौजन्य वश दिए गए पाच मिनिट की मर्यादा तोड और-और का शोर मचाने लगे। पांच मिनिट का पूरा आधा घण्टा व्यतीत हो गया। पर और-और की ध्वनि शिथिल नही हुई। भाषण के पश्चात् विनतियों की झडियाँ लगी। बम्बई वाले बम्बई, अहमदाबादवाले अहमदाबाद, व उदयपुरवाले उदयपुर ले चलने को मथने लगे। किन्तु उपस्थित समय पर जो बन जाए ठीक कहकर आपने सभी को प्रसन्न किया।

चित्तौड़ से प्रसिद्ध तीर्थ करडाजी होती हुई आप केसरिया नाथ की यात्रा के उद्देश्य से उदयपुर पधारी। उदयपुर में ३-४ रोज ठहर कर आपने केसरिया नाथ की यात्रार्थ विहार किया।

४५—केसरिया नाथ

उदयपुर से लगभग ४० मील दक्षिण में श्री केसरिया नाथ धुलेवा तीर्थ प्रायः सर्वत्र विख्यात है। इस तीर्थ का चमत्कार सुज्ञात है। चमत्कार को नमस्कारार्थ शेताम्बर, दिगम्बर, भील, शैव-वैष्णव सभी वर्ग के लोग आते है। यहां विशाल कलापूर्ण मन्दिर है, भव्य प्रतिमा जी है। किन्तु वर्तमान में संगठनशक्ति के विघटन स्वरूप आज धार्मिक सम्पत्ति की चाहिए वैसी व्यवस्था नहीं हो पाती। प्रायः सम्पत्ति का ह्रास, परस्पर झगड़ेवाजी ब्राह्मण पुजारियों की जबर-दस्ती आदि खामियाँ देखने में आती है।

केसरिया नाथ में आप २० रोज तक विराजीं, वहाँ आप ने भग-वन्त की खूब भक्ति व एकान्तवास में आत्मसाधना कर आत्म सन्तोष प्राप्त किया।

उदयपुर चतुर्मास के लिए संघ एवं श्रीमान मनोहरलालजी चतुर ने अत्यन्त आग्रह किया। परन्तु आप श्री जी ने चतुर्मास स्वी-कृत नहीं किया। केसरिया नाथ से आप श्री विहार कर वांसवाडा पधारी, यहां श्री विजयेन्द्र श्री जी म० अस्वस्थ हो गईं, अतः आपको वांसवाडा अधिक ठहरना पड़ा। चतुर्मास नजदीक आ रहा था आचार्य

श्री आनन्दसागर सूरीश्वरजी म० की आज्ञा इस वर्ष सैलाने मे चतुर्मास करने की थी।

विजयेन्द्र श्री जी के स्वास्थ्य लाभ पश्चात् आप श्री वासवाडे से आचार्यदेवकी सेवा मे सेलाने की ओर बढी।

उदयपुर का पहाडी मार्ग, मीलों लम्बी वीरान झाडियाँ, जगली जातियाँ लुटेरे भीलों का आतक, बीहड पथरीला जनशून्य-मार्ग, ऐसे भयावह पथपर अपनी तरुण सुरुपा साध्वियों को लिए, मात्र १३-१४ साल के एक बाल-पथ-प्रदर्शक के साथ, हमारा यह काफला निर्भय निशंक सैलाने की ओर बढा चला जा रहा था।

वर्षा का प्रारम्भ हो गया था मार्ग की नदियाँ चढ आई थी। फिर भी हमारे राही आत्मबल एव गुरु कृपा का सम्बल लिए अपनी मंजिल पर अग्रसर हो रहे थे। सैलाने के पास पहुचते-पहुँचते मही-सागर नदी ने मार्ग रोका, मीलों तक जल ही जल बिछा था। लहरें लहरा रही थी। ऐसी मस्त, उन्मत्त नदी को पार करना अशक्य था। चतुर्मास नजदीक था। सैलाने में आचार्यदेव व सघ चिन्तित था। नदी कब उतरेगी, कहना कठिन था। किन्तु सन्तों का मार्ग कब कौन रोक पाया है। नदी थक गई, उफान शान्त हो गया, वह राह छोड दूर बहने लगी। हमारे पथिक यथा समय आषाढ शुक्ल एकादशी दादा जिन दत्त सूरीश्वर जयन्ती के रोज आचार्य देव की छाया मे सैलाना आ गए। सभी बडे मन्दिर वाले उपाश्रय मे पधारे, भगवन्त के दर्शन किए, अन्य मन्दिरों के दर्शन कर आनन्द ज्ञान मन्दिर मे विराजमान आचार्य देव के दर्शन वन्दन

किये। दूसरे दिन बारस तेरस शामिल थी, चतुर्दशी को चतुर्मास शुरू हुआ। सं० २००८ का यह चतुर्मास सानन्द सैलाना में शुरू हुआ।

४६—आचार्य देव की छाया में

सैलाने में आपका एक ही ध्येय था, आचार्य देव से ज्ञान प्राप्त करना, कुछ जानना। अतः संघ का अत्यन्त आग्रह होने पर भी आपने वहाँ प्रवचन नहीं किया। प्रवचन की बात जब भी चलती, हँसकर टाल देतीं। आप कहतीं :—

भाई! अब कुछ लेने दो, उपदेश देते-देते तो खाली हो गई, कुछ संचय भी करलूँ। उपदेश देने की चीज नहीं है, वह तो लेने की चीज है, मेरे भाग्य में लेने के अवसर कम ही आये है।

प्रातः आचार्य देव के प्रवचन में पधारतीं, दोपहर में सभी आचार्य देव के निवास स्थान पर पधार कर धर्मचर्चा, प्रश्नोत्तर आदि करतीं। शामको उपाश्रय में आगन्तुक बहन-भाइयों के जीवन निर्माण के संकेत स्वरूप सिद्धान्त बतातीं। यहाँ बाहर के भक्त भी थे, हमारी पूर्व-परिचिता लाजो एवं मोहनी भी अपनी-अपनी माता जी के साथ थीं।

वर्षो से मेरी भी विनती खुजनेर पधारने के लिये थी, किन्तु जब-जब अर्ज की जाती, टालने की गर्ज से आप कह देतीं—तुम्हारी विनती जमा हुई रखी है, मालवे में आवेंगे तब तुम्हें भी संभाल लेंगे, जल्दी क्या है ?

सैलाने मे आचार्य देव ने ज्ञान मन्दिर की शुरुआत कर रखी थी। उसमे आपने भक्तों द्वारा अच्छा सहयोग दिलवा कर काम सम्पूर्ण करवाया।

आपकी अतुलनीय विनय भरी भक्ति, विनम्रता आदि ने आचार्य देव को प्रसन्न कर लिया था, आचार्य देव आपकी अधिकांशत. प्रशसा ही करते रहते थे।

गुरुसेवा, गुरुकृपा प्राप्ति व ज्ञानार्जन करते हुए आप श्री ने सानन्द सैलाने का चतुर्मास समाप्त किया।

४७—धन्य भाग्य हमारे

जिस समय वि० स० २००८ का आपका चतुमास सैलाने मे होना निश्चित हुआ था, उसी समय से हमारे हृदयो मे आनन्द लहराने लगा था। हमे आशा ही नही, पूर्ण विश्वास था कि आपका पदार्पण मालवे मे हुआ है तो अब आपकी पवित्र चरण-रज हमारे खुजनेर को भी अवश्य पावन करेगी ही। कारण, आप वचनबद्ध थी कि मालवे मे आना होगा तो खुजनेर भी आने का अवश्य प्रयत्न करेंगे। जब से आप सैलाने पधारी थी तभी से आपका ध्यान खुजनेर की ओर आकृष्ट किया जाने लगा था।

यथावसर हम लोग सैलाने भी गए, पत्रों द्वारा भी प्रार्थना करते रहे।

सज्जनों की वाणी न तो बेर-बेर निकलती ही है और न निकले बाद पलटतीं ही है। सैलाने मे चलकर सेमलिया तीर्थ पधारीं, वहाँ संघ ने पूजा, प्रवचन आदि का अच्छा रंग जमाया। प्रवचन में वहाँ के ठाकुर साहब भी पधारते थे। उन्होंने चतुर्मास करने के लिए खूब प्रार्थना थी, किन्तु अभी तो चतुर्मास समाप्त ही हुआ था। वहांसे आप रतलाम पधारी, मंदिरों के दर्शन कर बडनगर होती हुई, उज्जैन पहुँची। अंतिम श्रुत केवली भद्रबाहू स्वामी की समाधी के दर्शन कर, अवन्ती पार्श्वनाथ, सिद्धचक्र, आदीश्वर प्रभु आदि मंदिरों के दर्शन कर संघ के साथ छोटा सराफा स्थित शान्तिनाथ भगवान के मंदिर से संलग्न उपाश्रय में पधारीं। वहाँ ७ रोज ठहर कर प्रवचनादि कर वहाँ से मक्सी पार्श्वनाथ की यात्रा कर शाजापुर सारंगपुर होती हुई प्रतिदिन खुजनेर की और बढ़ने लगीं।

आप ज्यों ज्यों खुजनेर के नजदीक आने लगी त्यों त्यों हमारे हृदय हर्ष विव्हल होने लगे। मनचाही मुराद दीर्घ प्रतीक्षा पश्चात् पूरी होने जा रही थी। अतः आनन्द स्वभाविक था। हम लोग बीच-बीच में आप के दर्शनार्थ आते रहते थे। हमारे मन में हर्ष के साथ भय भी समाया था कि कहीं हमारा सौभाग्य अन्यत्र न लुट जाए। क्यों कि आप का यह अतिशय ही है कि आप जहाँ भी पधारती है वहाँ की जनता आप से अधिकाधिक लाभ पाने के लिए व्याकुल बन जाती है।

सं० २००८ फागुण शुक्ला नवमी का प्रभात हमारे चिर प्रतीक्षित अरमानों की सफलता का सुन्दर प्रभात था, प्रातःकाल स्वर्ण मण्डल

की आर्याओं के साथ खुजनेर के छोटे से प्रागण मे अपने अलौकिक व्यक्तित्व की छटा छिटकाती हुई आपने प्रवेश किया।

खुजनेर वासियों के हृदय नाच उठे, दर्शन मात्र से ही जनता मुग्ध बन गई, जय जयकारों से आकाश गूँज उठा। आप उपाश्रय मे पधारी बड़ा सा उपाश्रय विशाल आगण, बडी बडी चारो ओर की दहलाने, दरवाजे वातायान सभी ठसाठम भरे थे, जयध्वनियाँ गूज रही थी कि सहसा मगलध्वनि कानों मे गूँज उठी। हृदयग्राही उपदेश मधुर नाद सा बजने लगा। जनता की भावनाएं पूरे जोश के साथ उमडी, उल्लास उत्साह का पार नही था। सभी दिग्मूढ से थे कि इस अवसर पर क्या करें क्या न करें। इतने मे आगई चैत्र मास की नवपद-आराधना की पावन वेला। इस बार की आराधना की तो बात ही निराली थी। इधर आराधक आराधना मे मग्न थे। समाज प्रवचनों पर मुग्ध बना था व सघ पूजा, प्रभावना, उत्सव महोत्सव मे लगा था।" महावीर जयन्ती का आयोजन भी बडे ठाठ बाठ से रखा गया, विद्वानों के बोलने के पश्चात् आपका प्रवचन हुआ जिसे सुनकर लोग दग रह गए। अभी और अभी और की आवाजों के बीच घण्टों आपका प्रवचन चला फिर भी मन भरा नही, तृप्ति आई नही।

इधर हम सब आनन्द मग्न थे उधर समय अपने काम मे लगा था। यह तो कभी भी किसी के साथ स्तब्ध होना नही। समय के साथ-साथ यह आनन्द का समय भी बीतने लगा, वियोग की घड़ियाँ प्रतिपल नजदीक आने लगी, हर्ष की रेखाओं के स्थान पर विषाद

की लकीरे चेहरों पर खिंच गई, जब कि आपने कहा, "एक मास से ऊपर होगया है अब मुझे वापिस सैलाने जाना है।

शहरों में हर समय मुनिराज विराजते हैं, आवागमन भी रहता है, इसलिए उपदेशों के प्रति जनता का प्रायः उपेक्षा भाव-सा ही रहता है। पर गांवों में तो वर्षों के वर्ष बीत जाने पर मुनि दर्शन भी सुलभ नहीं। खुजनेर में वर्षों पहले श्री विजय धर्म सूरीश्वर जी म० के सुशिष्य श्री न्याय विजय जी महाराज मात्र १५ दिन ठहरे थे—पश्चात् विजय धर्म सूरीश्वर के ही पट्टधर आचार्य श्री विजयेन्द्र सूरिश्वर जी म० १५ रोज के लिए नवपद उद्यापनार्थ पधारे थे। उनके काफी समय पश्चात् आप का आगमन हुआ था। वचन पूरा हुआ, आप ने विहार का उपक्रम किया।

तृषातुर की प्यास चन्द बूंदो से कैसे बुझती, वह तो और भड़की, चारों ओर से चतुर्मास की आवाजें आने लगीं। प्रयत्न चालू हुआ। इसमें जैन समाज से भी अधिक जोर इतर समाज लगा रहा था।

छोटे से गांव में अकारण चतुर्मास की बात आप की समझ में नहीं आ रही थी, और ज्ञान मंदिर के उद्घाटन पर सैलाना पहुँचना भी जरूरी था, अतः हमारी प्रार्थना-प्रार्थना ही रही और सैलाने की ओर चल दीं।

खुजनेर वासियों के दिल विषाद से भर गए, आशा निराशा में परिणत हो रही थी, आप आगे चल रही थीं पीछे उदास अश्रु बरसाती जनता चल रही थी। सब के चेहरों पर अन्तर व्यथा थी, पर आप तो हमें यों ही छोड़ चल ही दीं।

इधर इतर समाज वाले जैन समाज के लोगों को उपालम्भ अलग दे रहे थे कि आप लोग चाहते तो कोई वजह नही थी कि चौमासा यहाँ न होता। आपके प्रयत्नों मे ही शिथिलता थी। आप खर्च के भय मे चाहते ही नही कि चौमासा खुजनेर हो, आदि २ बातें कहते।

किन्तु जैन मुनि के जीवन की कर्त्तव्य निष्ठा कैसी व्यवस्थित एवं सुदृढ है ऐसा वे नही समझ पाते थे। उन्हें तो हमारे ही प्रयत्नों मे कमी नजर आती थी। पर हम भी करते क्या विवश थे। उस समय आप श्री को रोकने के लिये कोई भी सचोट दलील हमारे पास नही थी।

४८—सच्चे भावों की शक्ति

उधर आप सैलाने पहुँच कर उद्घाटन कार्य मे व्यस्त हुई, इधर खुजनेर वासियो के बेचैन हृदय आप को वापिस खुजनेर लाने के लिए प्रयत्नशील हुए। विनती करने मे कोई भी कमी नही रखी गई थी, अब मात्र एक ही मार्ग नजर आ रहा था। वह था खुजनेर के मदिर का जिर्णोद्धार एव चल प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा, साथ ही निकटस्थ छापीहेडा ग्राम के मदिर की प्रतिष्ठा एव जिर्णोद्धार।

खुजनेर मे श्वेताम्बर जैनों के केवल ५-६ घर है, और इतने ही दिगम्बर जैनों के। छापी हेडे मे तो और भी कम हैं। शेष प्रजा शैव, वैष्णव मुसलमान आदि है। किन्तु लगन प्रेम एव सगठन जहाँ हो वहाँ कोई भी काम असाध्य नही।

यथा समय ज्ञान मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर संघ के व्यक्ति मुसलमान, दिगम्बर जैन, शैव, वैष्णव आदि इतर समाज के बंधुओं के प्रार्थना पत्र साथ में ले सैलाना पहुँच कर, आचार्यदेव श्री वीरपुत्र आनन्द सागर सूरीश्वर जी म० के समक्ष अपना प्रतिष्ठा व जीर्णोद्धार का प्रस्ताव रखकर, हमारी चरित्र नायिका खुजनेर में चतुर्मास करें ऐसी प्रार्थना की। अब इन्कार को अवकाश ही नहीं था। आचार्य श्री ने आप से परामर्श कर खुजनेर की प्रार्थना स्वीकृत कर ली। खुजनेर वाले चतुर्मास की जय-जय कार करते हुए पुनः खुजनेर लौटे। खुजनेर की जमीन नौ गज फूल उठी थी, उल्लास का पार नहीं था।

इधर खुजनेर का चतुर्मास मंजूर हुवे पश्चात् उज्जैन, रतलाम, की विनतियाँ हुई परन्तु अब तो निश्चय हो चुका था। इतने पर भी वयोवृद्धा तपस्विनी अनुपम श्री जी म०, अविचल श्री जी एवं तिलक श्री जी म० का चतुर्मास रतलाम का स्वीकार करना ही पड़ा।

हमारे सभी राही यथा समय सैलाने से साथ ही प्रस्थान कर ग्रीष्म एवं वर्षा की विकट ऋतु में, जावरा, महीदपुर होकर आप खुजनेर की ओर बढ़ी एवं अनुपम श्री जी म० रतलाम पधारीं।

ग्रामानुग्राम विहार कर ठेठ अषाढ़ शुदि नवमी को आप श्री पुनः खुजनेर पधारीं। इतने महान् प्रयास पर जहाँ चतुर्मास करवाया गया था वहाँ के उत्साह की सहज ही कल्पना की जा सकती है। प्रवचन में वही भीड़, ग्रामीण जनता का वही भक्ति भाव, सारा गांव एक पग नाच रहा था। दोनों जगह का जीर्णोद्धार कार्य शुरु हुआ।

चतुर्मास के मध्य में अशुभ कर्मोदयवशात् मात्र २२ वर्ष के तरुण

होनहार हमारे जमाता का देहान्त होगया। हमारी लडकी मात्र १८ साल की थी। इस वज्रपात को सहन करना हमारे लिए कठिन था। परस्पर प्रेम के कारण सारा गाव शोकातुर था। आप की सुसङ्गति ने हमे वह बल दिया जिससे हम शोक का भार उठाकर भी खडे रह सके।

चतुर्मास मे आने वाले सभी पर्व शानदार ढग से सम्पन्न हुए। पश्चात् आप छापीहेडा पधारी। छापीहेडा मे कुछ दिन ठहर कर आप पुन. खुजनेर पधारी।

फाल्गुन शुक्ला तीज छापी हेडा एव द्वादशी का शुभ दिन खुजनेर प्रतिष्ठा का निश्चित हुआ। इस अवधि मे घरवालो की आज्ञा लेकर हमारी पूर्व परिचिता लाजवती व मोहन कुमारी जो कई महीनों मे आप के पास रहकर ज्ञानाभ्यास कर रही थी, उनको भी अपने सत्प्रयत्न मे सफलता मिल जाने से उनकी दीक्षा भी इसी प्रसग पर रखी गई। हमे तो यह कल्पना ही नही थी कि इतना बडा सौभाग्य भी हमे प्राप्त होगा। ऐसी पावन वेला मे सघ आचार्य देव को कैसे भूलता, अत· उन्हें भी साग्रह निमन्त्रित किया गया।

आचार्य देव के पधारने पर प्रतिष्ठा व दीक्षा कार्य सानन्द सम्पन्न हुए। आस-पास के गावों व ब्यावर, जयपुर, बीकानेर एवं खुजनेर की हजारों की सख्या मे उपस्थित जनता के समक्ष छापी हेडा मे लाजवती एव खुजनेर मे मोहन कुमारी को दीक्षित करके क्रमशः चन्द्रकला श्री जी एव चन्द्र प्रभा श्री जी नाम रखा गया।

खुजनेर का सौभाग्य सूर्य मध्यान्ह पर था। सैलाने से आचार्य

देव, शिवपुरी से शान्ति श्री जी म० एवं लाल श्री जी म०, रतलाम से अनुपम श्री जी म० एवं चरित्र नायिका की शिष्याएँ भी इस प्रसंग की शोभा बढ़ाने पधारीं। छोटे-से गाँव में आर्याएँ एवं मुनिगण सब मिलकर २२ की संख्या में उपस्थित थे, तद्‌पि आहार दान के लिए लोग निराश हो जाते थे। यही थी गाँव की भक्तिरस परिपूर्ण भावना। हम आनन्दित थे इन त्यागियों के दर्शन व समागम से। हमारी चाह थी कि हमें अधिक से अधिक इन महात्माओं का सहवास सुख मिले।

कुछ समय पश्चात् आचार्य देव के करकमलों द्वारा दोनों नव-दीक्षिताओं की योगोद्‌वहन पूर्वक बडी दीक्षा सम्पन्न कराई गई। हमारी चरित्र नायिका ने भी अन्य साध्वियों के साथ दशवैकालिक सूत्रों के योगोद्‌वहन किए। इन्हीं निमित्तों को लेकर आपको लगभग पूरे सालभर की अवधि खुजनेर व छापीहेडे में व्यतीत करनी पडी।

चैत्रशुक्ला त्रयोदशी को भगवान महावीर का जन्मोत्सव विस्तृत समारोह के साथ आचार्य श्री की अध्यक्षता में रखा गया। प्रातःकाल सवारी निकाली, जय-ध्वनी से गाँव गूंजने लगे। उपाश्रय में आचार्य श्री ने मंगलाचरण कर जयन्ती की शुरुआत की। महावीर के सुन्दर सिद्धान्तों पर आचार्य देव का बडा ही प्रभावशाली भाषण हुआ, जिसे सुनकर जनता, अध्यापक वर्ग एवं राज्याधिकारीगण मुग्ध हो गए।

परमसंत स्वामी मनोहरदास जी म० ने भगवान महावीर की जीवनगत महत्ताओं का सांगोपांग वर्णन किया। रामसनेही संत को

भगवान महावीर की जीवन गाथाएँ गाते देख भला किसे आनन्द नही होता ? पश्चात् आपका भी भाषण हुआ। जयन्ती का ऐसा समारोह खुजनेर मे अभूतपूर्व था।

साध्वाचार के नियमानुसार अब खुजनेर मे ठहरने का कोई कारण नही था। खुजनेर वालों के पास भी अब रोकने के लिए कोई बहाना नही था।

इस चतुर्मास मे जैनेतर समाज की भक्ति जैन समाज से भी बढकर रही। खुजनेर वासी आज भी आपको भावभरे हृदय से याद करते हैं। साल दो साल मे आपके दर्शनार्थ आते हैं। समय समय पर आने वाले वैष्णव सन्तों के साथ भी आपका अच्छा सम्पर्क रहा। उनमे सन्त मनोहर दास जी विशेष उल्लेखनीय हैं। मनोहर दास जी म० शाहपुरा रामसनेही परम्परा के अच्छे सन्त हैं। बडे ही सरल स्वभावी व निर्मिमानी हैं। मिलनसार एव गुणानुराग तो आपका सहज स्वभाव है। मनोहर दास जी अभी भी मौका मिलने पर आपके पास पहुँच जाते हैं। स० २००६ का चतुर्मास सानन्द बीता।

सयोग के साथ ही निर्मित वियोग की घडियाँ आ पहुँची। आप श्री ने आचार्य श्री के साथ छापीहेडा की ओर प्रस्थान किया, मार्ग मे दो रोज सडावना विराजे। खुजनेर निष्पन्द होकर आपका गमन देख रहा था, क्योंकि अब विवशता थी। समुद्र को बाँधने में कौन समर्थ होता है ? गगा-सी पावन, यमुना-सी निर्मल, सरस्वती-सी मनोहर हमारी चरित्र नायिका खुजनेर को ज्ञानामृत मे अभिषिक्त

कर अन्यत्र चल दीं। ज्ञान बदली के पुनः आगमन की आशा लिए खुजनेर आज भी खड़ा है।

छापीहेड़े से आप श्री ने इन्दौर की राह ली और आचार्य श्री ने उज्जैन की।

मार्ग में आने वाले छोटे-छोटे गाँवों में जब रात्रि में किसान अपने खेतो से लौटते तब आप श्री से कुछ कहने की प्रार्थना करते। जैसी सभा वैसी बात आप श्री की शैली की उत्कृष्टता है। सीधी सरल मालवी भाषा में आप अपने कथा-ज्ञान का उपदेशक चुटकुलों का खजाना खोलतीं। सरल, सरस, रोचक प्रवचनों से अनपढ़ किसान मस्त-से बन जाते, भावविभोर होकर कितने ही सातों व्यसनों का— मांसादि का त्याग करते। इस प्रकार गाँव-गाँव में आप सदाचार, सत्य व अहिंसा के बीज रोपती हुईं सारंगपुर, शाजापुर होती हुईं मक्षी पार्श्वनाथ पधारीं, आपके प्रवचन सर्वत्र सार्वजनिक स्थानों में ही रखे जाते थे। मक्षी में चार रोज ठहरकर आप देवास और देवास से इन्दौर पधारीं।

इस सारे प्रवास में मैं भी आपके साथ थी। और मुझे आप को और भी अधिक निकटता से देखने का अवसर मिला। आप कितनी उदार, कितनी महान् एवं कितनी करुणाशील हैं, इसका कोई भी माप मेरे पास नहीं। खुजनेर से पहले, खुजनेर में, व खुजनेर के बाद मैंने आपमें जो देखा, आपसे जो पाया, वह अपार श्रद्धा का विषय है, इसे यथार्थ रूप में व्यक्त क[illegible]ना कमसे कम मेरी सामर्थ्य की बात तो नहीं।

आपका सारा का सारा व्यक्तित्व मानों मिश्री से निर्मित हो। वास्तव मे व्यक्तित्व वही जो सिर पर चढ कर बोले। मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार यदि कोई आपसे क्वचित द्वेष भी रखे तो वह यह बताने मे असमर्थ ही रहेगा कि आपके किस अवगुण से उसे द्वेष है। चारों ओर से मधुर, सुगन्ध युक्त आपका व्यक्तिवत्त्व पके हुए मीठे आम जैसा है।

४६—इन्दौर संघ का अपरिहार्य अनुरोध

इन्दौर का सघ इसी ताक मे था कि आप पधारें और वे आपको अपने भक्ति भरे हृदय से वहाँ चतुर्मास करने के लिए बाध्य करें।

ज्यों ही आपने इन्दौर मे कदम रखा त्यों ही सघ उमड आया। आगे नही जाने देंगे, चतुर्मास अवश्य स्वीकृत कराएँगे, की आवाजें आने लगी। आपने सबको बहुत समझाया, कई कारण बताए, पर सघ की एक ही आवाज रही—"नही जाने देंगे।"

सवेरे से शाम तक तपगच्छ, खरतरगच्छ एव तीनथुई के अग्रगण्य व्यक्तियों से उपाश्रय भरा रहता। न वे खाते थे और न समय पर खाने देते थे। कई मुख्य व्यक्ति कारों द्वारा आचार्य देव की सेवा मे उज्जैन गए। तीन दिन बीत गए, परन्तु समस्या का समाधान नही हुआ, आपको पादरे जाना था। शहरों मे चतुर्मास करने पड़ते हैं, पर आपकी हार्दिक इच्छा गाँवों मे रहने की थी।

आखिर संघबल की जीत हुई, आचार्य देव को भी इन्दौर के लिए आशीर्वाद देना पड़ा। आपका यह चतुर्मास खूब शानदार रहा, प्रायः सभी उपाश्रयों में आपके प्रवचन होते, बिना भेदभाव के जनता मंत्रमुग्ध हो अमृतपान करती। कुछ साध्वियाँ देवास, कुछ बदनावर एवं कुछ आपके साथ रहीं। आप सभी साध्वियों को प्रायः एक ही स्थान पर नहीं रखती। सभी के साथ रहने से निवृत्ति प्राप्त नहीं होती, ममत्व भी नहीं छूटता एवं साध्वियाँ अपने पैरों पर खडी हो कन्धों पर संघ का भार उठाना, बोलचाल, व्यवहार आदि नहीं सीख सकतीं। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर मिलने वाला लाभ एक स्थान पर नहीं मिलता। इसलिए आपकी अधिकांश साध्वियाँ व्याख्यान, व्यवहार, आचार-विचारों की मर्यादा में कुशल हैं।

संघ के अनुरोध से श्री तिलक श्री जी एवं विनीता श्री जी को हिन्दी की प्रथमा परीक्षा दिलाई, वे अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण भी हो गईं। परन्तु आपकी रुचि परीक्षाओं के फेर में पडने या किसी को डालने की कम ही रहती है। परीक्षा देना ही नहीं, ऐसी एकान्तिक मान्यता भी आपकी नहीं है।

यहाँ आपने अध्यात्मिक मुनिराज श्रीमद् देवचन्द्र जी म० कृत नय-चक्रसार का अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के साथ अभ्यास किया। अभी भी आप विद्यार्थी जीवन में हैं। प्रायः पठन-पाठन में ही आपका समय जाता है और सभी को आप स्वाध्याय का परामर्श देती हैं।

इन्दौर का चतुर्मास सानन्द व्यतीत कर आप माल्वे की यात्रार्थ आगे वढी।

इन्दौर के सघ ने स्नेहपूर्ण वातावरण मे भाव भरी विदाई दी। विहार का दृश्य देखते ही वनता था। प्रथम निवास पचम सिंह जी के वगले पर रखा गया, राशन का जमाना नही था। सघ ने ठाठ-वाठ से स्वामी वात्सल्य किया।

इन्दौर से आप प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ माण्डवगढ पधारी। वहाँ त्रिस्तुतिक आचार्य राजेन्द्र सूरीश्वर जी म० की शिष्याएं १६ ठाणा से पधारी, उनका व आपका व्यवहार परस्पर वडा ही स्नेहपूर्ण रहा। पश्चात् भोपावर, राजगढ, धार, कुक्षी, लक्ष्मणी, अलिराजपुर होकर छोटा उदयपुर पधारीं, सर्वत्र ही आपके प्रवचनों से जनता कुव्यसनादि परिहार करती हुई निर्मल वनी।

पादराकर जी व वावूभाई पादरे पधारने की प्रार्थना करने खुजनेर भी आए थे, इन्दौर व छोटा उदयपुर भी आए। १५ वर्ष पूर्व आपने उनकी चार लडकियों को दीक्षित किया था। तवसे आप अभी तक पादरे की ओर नही आई थी। गुजराती साध्वियाँ प्राय अधिकतर गुजरात मे ही विचरने से अपने गाँवों मे शीघ्र पहुँच जाती हैं। अत अब पादराकर जी का हृदय विह्वल हो गया था। साथ ही वडोदे वाले भी आए थे, अत सब की वात रखते हुए आप वडोदे होकर पादरे पधारी।

पादरे मे नव दीक्षिता चन्द्रकला श्री जी म० वीमार हो गई। बडी ही भयावह व्याधि थी। वेहोश अवस्था मे खाना, पीना, टट्टी

पेशाव सब बन्द। ऐसे समय में आपका धैर्य व परिचर्या सभी को विस्मित करती थी। सम्भवतः एक माँ भी अपने बच्चे पर इतना परिश्रम कर सके या नहीं। औषध उपचार के साथ-साथ आत्मिक उपचार में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं थी। उनकी तबियत कुछ सुधरने पर आप पुनः बड़ौदे पधारीं, कुछ समय पश्चात् बड़ौदा संघके आग्रह से पूज्या विज्ञान श्री जी० म० विदूषी विजयेन्द्र श्री जी के साथ चन्द्रप्रभा श्री जी को बड़ौदे ही रख कर आप चतुर्मासार्थ पादरे पधारीं। दोनों जगह सानन्द समय बीत रहा था। बड़ौदे में पण्डित प्रवर लालचन्द भगवानदास से साध्वियों ने अध्यन शुरू किया।

दोनों ही स्थानों पर शासन प्रभावक, महान ज्योतिर्धर आचार्य दादा जिनदत्त सूरि की जयन्ती का कार्यक्रम समारोह के साथ मनाया गया।

५०—फिर वही वैराग्य वर्षा

पादरे में चतुर्मास शुरू हुआ, सवेरे प्रवचन, दोपहर में अध्यात्म रसिक, द्रव्यानुयोग के ज्ञाता माणकलाल भाई, भाईलाल भाई, चिमन भाई आदि के साथ तात्विक वांचन, अध्यात्म-गोष्ठि होती। इस विषय का लाभ पादरे से आपको विशेष ही मिला है। कारण द्रव्यानुयोग के ज्ञाता श्रोता, सर्वत्र सुलभ नहीं।

चतुर्मास के मध्य में आश्विन कृष्ण दसमी को योगीराज विजय

शान्ति सूरीश्वर की जयन्ती मनाई। आश्विन कृष्ण एकादशी को सवेरे रेडियो द्वारा आचार्यप्रवर विजयवल्लभ सूरीश्वर जी म० के स्वर्गवासके दुखद समाचार सुनकर आप श्री शोकाभिभूत हो गई, नयन भर आए। यह क्षति अपूरणीय थी आपने सघ के साथ देव-वन्दन किया, शोकसभा का आयोजन कर आचार्य देवको श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

पादरे की जनता धार्मिक सस्कारों से सस्कारित होने से प्राय बच्चे भी धर्मक्रियाओं मे शामिल होते हैं। पादरे मे जब आप पहले भी पधारी थी तब भी वैराग्य रग की वर्षा वरसी थी, और अब भी वही रग जमा। चार कन्याएँ दीक्षार्थ तैयार हुई। चिमनभाई की पुत्री मधुकान्ता, वाडीलालभाई की रमा, मोती भाई की मधु, एव रमण भाई की सुमित्रा। ये चारों ही कन्याएँ सुरूपा, योग्य पढी, लिखी, धार्मिक सस्कारों से सस्कारित एव हसमुखी थी।

सुमित्रा एव मधुकान्ता को अगहन शुदि एकादशी (मौन ग्यारस) को दीक्षित कर उनका नाम क्रमश सूर्यप्रभा श्री जी एव मनोहर श्री जी रखा गया, यह जोडी सगीतकला मे अद्वितीय थी। दोनों का कण्ठ इतना सुरीला कि सुननेवाला मुग्ध हो जाए।

मजुला एव रमा को यों ही अवर मे भूलती छोडकर आप पुन पादरे से चल दी, कुछ दिन वडोदे मे ठहर कर आप पाली ताणा पधारी।

इसी बीच व्यावर से (धन्नुमलजी) चन्द्रकला श्री जी के पिता जी का पत्र आया कि लाजवन्ती की दोनों छोटी बहनें दीक्षा के लिए

परेशान करती हैं। आप श्री आज्ञा फरमावें तो शुभ दिन में इनको लेकर मैं पालीताणा आऊं।

इन दोनों बहनों से आप खूब परिचित थी अतः आने की अनुमति भेज दी। पश्चात् ब्यावर से समस्त कुटुम्ब के आने पर, वैशाख शुदि सप्तमी के दिन दोनों बहनों को दीक्षित कर सुलोचना श्री जी, एवं सुदर्शना श्री जी नाम रखा। पालीताणे में होनेवाली इस दीक्षा की शान कुछ और ही थी।

उधर पादरेवाली दोनों कन्याएं किसी भी तरह मान नहीं रही थी। उनके अभिभावकों ने आपको वापिस पधारने की प्रार्थना की। आपने उन्हें पालीताणे ले आने का परामर्श दिया, किन्तु पहले भी चारों कन्याओं को आबू व जयपुर ले जाकर दीक्षा दिलाई थी। इस बार भी बाहर लेजाकर दीक्षा देने की पादरेवालों की इच्छा नहीं थी। आपने लिखा मैं नहीं आ सकूंगी आप लिखें तो तिलक श्री जी आदि को बड़े महाराज के साथ भेज दूं। परिस्थिति के अनुसार उन्होंने आप श्री के सुझाव की स्वीकृति तार से भेजी। पालीताणा से तिलक श्री जी, विनीता श्री जी को साथ लेकर म० अनुपम श्री जी ने पादरे आकर दोनों की दीक्षा सम्पन्न करवाकर नाम सुरंजना श्री जी एवं मंजुला श्री जी रखा।

इन चारों ही दीक्षाओं में मैं स्वयं उपस्थित थी, चारों का उल्लास एवं वैराग्य प्रशंसनीय था, यों पादरे में चार मास तक सभी का स्नेहभरा सम्पर्क मैंने पाया था।

इस प्रकार और भी अनेकों आपके चरणों में आती परन्तु शिष्या

मोह की किंवा परिवार वृद्धि मोहकी अल्पता के कारण आप इस ओर विशेष दिलचस्पी नही लेती थी।

एक दिन मैंने कहा "यदि आप थोडा भी प्रयत्न करते तो जो बालाएँ अन्यत्र दीक्षित हुई हैं वे अपने यहा ही आती। आपने कहा :—

अन्यत्र आत्म कल्याण नही होता क्या ? क्या आत्मकल्याण का ठेका मैंने ही ले रखा है ? कही भी दीक्षा लो सर्वत्र भगवान महावीर का ही कल्याण मार्ग है। दीक्षा के भाव जागृत होना अलग बात है, दीक्षा के लिए किसी को तैयार करना दूसरी बात है। 'वे भी मेरे पास दीक्षित होती, मेरे इतनी शिष्याएँ हो जाती, मेरा मान, मेरा नाम बढता, यह भी तो आर्त्तध्यान का ही एक प्रकार है। तुम्हारा ही नही कई लोगों का ऐसा विचार है। मेरी अपनी साध्वियां भी ऐसा ही कहती हैं। किन्तु क्या यह ठीक है ? दीक्षा लेनेवाले का कल्याण सर्वत्र होता है। देनेवाले को तो अपना ही सयम कार्यकारी होगा।

५१—पालीताणा में

वर्षों बाद आप श्री पालीताणा पधारी थी। प्राय हमेशा ही आप गिरिराज की यात्रार्थ ऊपर पधारती। भावविभोरता मे घण्टों ही प्रभु के दरबार मे बैठी रहतीं, वहाँ कई साध्वियां नवाणू यात्रा भी कर रही थी।

हैदराबाद वाले कपूरचन्द जी श्रीमाल एवं उनके भाई केसरीमल जी वोरा की पत्नियों ने आपके शुभ संयोग में मासक्षमण की महान् तपस्या मौनसहित शुरु की। इनकी तपस्या में मौन व शान्ति का स्थान सर्वोपरि था, यों तो गिरिराज की छाया में प्रतिवर्ष ही तपस्या होती है।

इन दोनो की ऐसी चर्या देखकर आप श्री ने उन्हें अपने ही वंगले पर रहने की आज्ञा दी। और स्वयं प्रतिदिन शाम को वहीं जाकर धर्मक्रिया तत्त्वचर्यादि में सहयोग देतीं, तप का महत्त्व समझातीं। यथा समय तप पूर्ण हुआ, पूजा, प्रभावना स्वधर्मी-वत्सल आदि हुए।

आप जव भी यात्रार्थ गिरिराज पर पधारतीं, तव ही आदीश्वर दादा जैसी वडी टूंक स्थित दादा जिनदत्त सूरि व श्री कुशल सूरीश्वर जी म० की समाधि-देहरियों की अत्यधिक जीर्ण अवस्था देखकर दुःखी होतीं। इतनी सुन्दर व्यवस्थित टूंक में आदीश्वर जी के मूल मन्दिर के निकट ही में रहीं इन देहरियों के जीर्णोद्धार के प्रति उपेक्षा भाव कुछ समझ में आने जैसा नहीं था, किसी जमाने में श्रद्धा से निर्मित इन देहरियों की यह दशा दुःख का विषय था।

आपने तत्रस्थ यात्री श्रावकवर्ग का ध्यान इस ओर आकर्षित किया, संघ के अग्रणी कटनी वाले सोहन लालजी गोलेछा, गुलावचन्द जी गोलेछा, मंदसोर वाले प्रतापमल जी सेठिया आदि से पत्र व्यवहार किया। तत्पश्चात् उन लोगों ने आनन्दजी कल्याण जी की पेढी से पत्र व्यवहार किया। कुछ भी परिणाम न निकलने से वे लोग

स्वय जाकर मिले। पेढी ने जीर्णोद्धार की सम्मति दी और सेठ पूनमचन्द जी गोलेछा ने जीर्णोद्धार का समस्त खर्च उठाया।

प्रसिद्ध भक्त कवि शिवजी लालन भी पालीताणा मे आपके पास सत्सग करने के लिए आते। उस समय आप उनसे कुछ कहने का आग्रह करती, वे भक्ति भरे भजन सुनाते, आप उपदेश सुनाती।

तत्रस्य श्राविकाश्रम का भी आपने निरीक्षण किया, वहाँ की सुयोग्य सचालिका पुष्पाबहन के आग्रह से वार्षिकोत्सव पर प्रवचन दिया।

श्री हिमाचल सूरि जी म० की अध्यक्षता में मनाई जाने वाली श्री हीर विजय सूरीश्वर जी म० की स्वर्ग-जयन्ती मे आपने श्रद्धाजलि भेंट की। अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्र सूरीश्वर जी म० की जयन्ती समारोह से मनाई।

आश्विन कृष्णा एकादशी को श्री विजयवल्लभ सूरीश्वर जी म० की स्वर्ग-जयन्ती उनके शिष्यों द्वारा आयोजित करवा उसमे पूर्णत भाग लिया।

५२—अध्यापिका

स्वय अध्ययन करना जितना सहज है, उतना अध्यापन कार्य नहीं। अध्ययन मे जहाँ निज के लिए निज को खपाना पड़ता है, वहाँ अध्यापन में पर के लिए निज को खपाना पड़ता है। दूसरे को पढ़ाते समय अपने सन्तुलन को बनाए रखना, धैर्यपूर्वक लगन के

साथ समझाने में दिलचस्पी रखना, अपनी समझ, सूझ-बूझ को नियन्त्रित रखकर विद्यार्थी पर प्रेमपूर्ण अनुशासन बनाए रखना, सामान्य बात नहीं। अधिकाधिक ज्ञानार्जन करने वाले भी समय पर उपयुक्त भाव-भाषा के अभाव में, योग्य धैर्य न रख पाने से अपना सन्तुलन खो बैठते हैं।

हमारी चरित्र नायिका में वक्तृत्व कला के साथ-साथ अध्यापन शक्ति भी विकसित है।

पाण्डित्य के बल से नहीं, प्रत्युत दूसरों में घुल-मिल कर जीवन-निर्माण करने की वृत्ति से एवं अन्यों को अपनाने की कला से ही आप सफल अध्यापिका बन सकी है।

पालीताणे में आपका समय प्रायः अध्ययन, अध्यापनमें ही बीता। चतुर्मास में गिरिराज की यात्रा का निषेध था, प्रवचन का भार तत्रस्थ मुनिराजों के जिम्मे था। अतः अवकाश ही अवकाश था।

यहाँ आप स्वयं पढ़तीं, अन्यों को पढ़ातीं। तपगच्छ की साध्वी जी म० भी कभी-कभी सूत्रावगाहनार्थ पधारतीं। सारा दिन पठन-पाठन में ही बीतता।

आपका अध्ययन भी निराले ही ढंग का होता है। अजान व्यक्ति जान ही नहीं पाता कि आप पढ़ाती हैं या स्वयं पढ़ती हैं। वाणी में दर्प नहीं, गर्व नहीं, सत्ता नहीं, व्यवहार में बड़प्पन की झलक नहीं। सामान्य बातचीत की भाषा में समझने समझाने जैसी भावना रहती है। इस प्रकार पालीताणे का आपका यह चतुर्मास निवृत्ति-पूर्ण ज्ञानार्जन में व्यतीत हुआ।

पालीताणे का वि० स० २०१० का चतुर्मास सानन्द व्यतीत कर आप यशोविजय जैन गुरुकुल पधारी। वहाँ महुवा निवासी फूलचन्द भाई (महुवाकर), शिवजीलाल आदि के साथ गच्छ-नायक सुखसागर जी म० की स्वर्ग जयन्ती मनाकर सोनगढ, वल्लभी पुरी, घोलासन होती हुई अहमदाबाद पधारी। मन्दिरों के दर्शन किए, आचार्य कीर्तिसागर सूरीश्वर जी म० को वन्दना करने पधारी। अध्यात्म योगी श्रीमद् देवचन्द्र जी म० की समाधि मे स्थित चरणों के सन्मुख नतमस्तक हो साबरमती, तारगा, पानसर, भोयणी, सेरिसा आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा कर अजमेर के रास्ते पर कदम बढाने लगी। ४०० मील की सफर थी, कई नव-दीक्षिता साध्वी जी साथ थी, सभी गुरुदेव के अष्टम् शताब्दि महोत्सव का लक्ष्य ले बढ़ती चली जा रही थी।

५३—अष्टम् शताब्दि महोत्सव

परम प्रभावक, लाखों मानवों के जीवन-उद्धारक, विश्व मैत्रि के पावन प्रतीक, जैनाचार्य श्रीमद् जिनदत्त सूरीश्वर जी म० के स्वर्गवास को लगभग आठसौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे। इसके उपलक्ष मे, उनकी स्वर्ग-भूमि अजमेर मे वि० स० २०१३ मे अष्टम् शताब्दि महोत्सव मनाने का सघ ने निर्णय किया, और इस अवसर पर खरतर-गच्छ के समस्त आचार्य, उपाध्याय, मुनिराजों एव साध्वी जी

महाराजों को अजमेर पहुँचने का आग्रह किया था। क्योंकि महोत्सव की सफलता उन्हीं पर निर्भर थी। आप के पास श्री संघ की सानुरोध प्रार्थना पहुँची और आप [illegible] अजमेर पहुँचीं।

संघ के आग्रह से आचार्य श्री जिन आनन्द सागर सूरीश्वर जी म० उपाध्यायवर सुखसागर जी म०, उपाध्याय प्रवर कवीन्द्र सागर जी म०, मुनिराज हेमेन्द्र सागर जी म०, उदय सागर जी म० आदि मुनिराज एवं लगभग ५५ के साध्वी जी म० इस अवसर पर महोत्सव को सफल बनाने पधारे थे। भारत के कोने-कोने से हजारों की संख्या में भाई-बहन भी पधारे थे।

सम्मेलन की शोभा अवर्णनीय थी। अजमेर वालों की व्यवस्था भी प्रशंसनीय थी। इस महोत्सव की खास विशेषता यह देखने में आई कि बिना भेदभाव सभी गच्छ वाले बड़े उत्साह के साथ इसे सानन्द सफल बनाने में जुटे थे। आगन्तुकों का जो प्रेमपूर्ण स्वागत किया गया, वह सदा स्मर्णीय रहेगा। समस्त जैन संघ एक होकर, अपना ही कार्य समझ कर काम कर रहा था। हमारे सभी जैन सम्प्रदाय व गच्छ वाले इस संगठन का अनुकरण कर यदि फूट का सिर फोड़ दें तो आज हमारी कैसी उन्नत दशा हो।

सम्मेलन दादाजी म० के प्रताप से बड़े ही शानदार ढंग से शान्ति पूर्वक सम्पन्न हुआ। मुनि सम्मेलन, यति सम्मेलन व श्रावक, महिला सम्मेलन भी हुए। उन सभी सम्मेलनों में आपने पूरा-पूरा भाग लिया, सभी में आप के भाषण हुए एवं मुनि सम्मेलन में जो-जो प्रस्ताव पास किए गए उन सब का आप सावधानी पूर्वक पालन

करती हैं। इसी प्रसग पर आपकी ६ दीक्षिताओं की व एक अन्य और साध्वी जी की वडी दीक्षा भी सम्पन्न कराई गई।

चतुर्मास निकट होने से जिन मुनिराजों एव आर्याओं का चतुर्मास पहले से ही जहाँ के लिए निश्चित था, उन्होने वहाँ के लिए विहार कर दिया पर आपने अभी कही के लिए स्वीकृति नही दी थी।

इधर अजमेर वाले आप को साग्रह रोकने के लिए उत्सुक थे। आचार्य श्री आनन्द सागर सूरीश्वर जी म० का जयपुर, उपाध्याय कवीन्द्र सागर जी म० का मेडता रोड, के लिए चतुर्मास पहले से ही निश्चित था। इधर चतुर्मास निकट था कई स्थानों से प्रार्थनाएँ भी थी। अत: आपका चतुर्मास स्वर्गीय दीवान वहादुर सेठ केसरी सिंह जी बाफना की धर्मपत्नि गुलाव सुन्दरी जी एव पुत्र वृद्धि सिंह जी बाफना के अत्याग्रह पर कोटे के लिए मजूर कर लिया। चतुर्मास सिर पर था निश्चय हो जाना अत्यावश्यक था।

यह खवर ज्यों ही अजमेर वालों के कानों पहुँची त्योंही वे विस्मय विमूढ हो गए। अब क्या करें? दौड धूप मची, सभी आप के पास आए। पर वचन वद्ध होने के पश्चात् अब आपके पास कौन सा मार्ग था जो बताती। अजमेर इस गफलत की चोट को वर्दाश्त नही कर पा रहा था। कठिनाई यह थी कि आप को रोकने के अरमानों मे सभी मुनिराजों एव साध्वी जी म० के विहार को रोका नही गया था।

कोटे और अजमेर के बीच तारों और फोनों का ताता बंध

गया। अजमेर आप को किसी भी मुल्य पर जाने देना नहीं चाहता था। और कोटा अनायास मिले सौभाग्य से वंचित होना नहीं चाहता था।

अन्त में कोटे वाले अजमेर आए प्रत्यक्ष वातचीत की, पर माना कोई नही। दोनों के वीच आप मध्यस्थ वनीं वैठी रहीं। आप की एक ही वात थी दोनों परस्पर निर्णय कर लें। उस समय का दृश्य वस्तुतः दर्शनीय था। अजमेर वाले कोटे वालों से चतुर्मास और कोटे वाले अजमेर वालों से चतुर्मास की भीख मांग रहे थे। पर दाता बनने को कोई भी तय्यार नहीं हो रहा था। अजमेर के लाख प्रयत्न पर भी कोटे वाले जो निश्चित हो चुका था उसे वदलने को किसी भी शर्त पर तय्यार नहीं हुए।

मुनि कभी भी कल को वात नहीं सोचता, संकल्प विकल्प नहीं करता। किन्तु इस समय आपने अजमेर संघ के विकल-हृदय को शान्त करने के लिए पु० वसंत श्री जी म०, सम्पत श्री जी म०, तिलक श्री जी म० आदि सात साध्वी जी म० को अजमेर रखा, और स्वयं ने यथा संभव आगामी चतुर्मास का आश्वासन देकर पुज्या अनुपम श्री जी म० आदि दस के साथ कोटे की ओर प्रस्थान किया।

५४—कोटे में

वर्षा ऋतु प्रारंभ हो चुकी थी। वर्षा जन्य कठिनाइयाँ मार्ग में उपस्थित थीं। आप कोटे की ओर वढ़ी चली आ रही थी। नसी-

रावाद, सराणा, केकडो पहुँचने पर सघ ने भाव भरा स्वागत किया। केकडी मे राजेन्द्र श्री जी म० सा० विराजमान थी दोनो प्रेम से मिले। देवली, हटु डी आदि गावो की जनता को उपदेश देती हुई आप बू दी पधारी। बू दी मे दो दिन ठहर कर आप कोटे के निकट पधारी, किन्तु वर्षा के जोर से मार्ग की नदी के पुल पर कमर-कमर पानी हिलोरे ले रहा था। आप को पुन वापिस लौटना पडा। चतुर्मास एकदम निकट था। पर सघ के सौभाग्य से ठीक समय पर नदी उतर गई और आपने कोटे मे प्रवेश किया। सघ ने आप का वडा ही भव्य स्वागत किया। सघ के साथ सभी मन्दिरों के दर्शन कर आप श्री बहादुर वजार के उपाश्रय मे पधारी। मगल प्रवचन दिया।

आषाढ शुक्ला एकादशी को श्री जिन दत्त सूरीश्वर जी म० की स्वर्ग-जयती का आयोजन स्थानीय धर्मशाला मे रखा गया। सभी के भाषण पश्चात् आपने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। जयनादों के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पर्यूषण पर्व का आराधन अक्षयनिधि तप, नवपद ओली जी, आदि सभी ठाठ वाठ से सम्पन्न हुए।

उस चतुर्मास मे स्थानक वासी महासतियाँ जी भी विराजमान थी। आप दोनों मे परस्पर वडा ही प्रेमपूर्ण व्यवहार रहा, उनकी व आपकी शिष्याओं ने साथ साथ प्रयाग की प्रथमा परीक्षा भी दी।

आश्विन कृष्णा प्रतिपदा को सामूहिक क्षमापना दिवस मनाया गया। दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानक वासी तीनों ही सम्प्रदायों को एक ही स्थान पर देखकर जाता आनन्द विभोर हो रही थी। कई

वर्ष पहले कोटे के ही प्रांगण में दिगम्बर आचार्य सूर्यसागर जी म०, स्थानकवासी मुनिराज जैन दिवाकर पुज्य चौथमल जी म० एवं हमारी चरित्र नायिका के गुरुदेव आचार्य वीरपुत्र आनन्द सागर सूरीश्वर जी म० का सम्मेलन हुवा था। आज उसकी याद ताजी हो रही थी।

पश्चात् जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी म० की स्वर्ग जयन्ती का आयोजन गांधीहाल में रखा गया था। उसमें आप भी निमंत्रित होकर पधारीं। सभी वक्ताओं के बोलने के बाद आपने दिवाकर जी म० के जीवन पर श्रद्धापूर्वक प्रकाश डालते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

चतुर्मास पश्चात् महासती जश कँवरजी म० भी कोटे पधारो। स्थानीय जैन युवक मण्डल ने आपका व जश कंवरजी म० का प्रवचन एक ही साथ कराने का आयोजन किया। दोनों का सामिल प्रवचन वड़े ही आनन्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

कोटे के इतिहास की यह कहानी सभी के लिए अनुकरणीय है। कोटे में आपके प्रवचनों की भारी धूम रही।

चतुर्मास पश्चात् हवेलीवालों के आग्रह पर आपको फाल्गुन तक रुकना पड़ा। उनकी तरफ से अठाई महोत्सव शान्ति, स्नात्र, आदि की योजनाएँ बनाई गई थी। माघ शुक्ला पुर्णिमा को महोत्सव शुरू हुआ। सेठसा० के घर मंदिर में प्रतिदिन पूजा, प्रभावना, जागरण आदि का ठाठ लगा। फाल्गुण कृष्ण सप्तमी को सबेरे दान वाड़ी में तीर्थाधिराज सम्मेतशिखर जी के पट की प्रतिष्ठा कराई गई।

साथ-साथ खरतरगच्छाधीश्वर त्रैलोक्य सागर जी म०, प्रवर्तनी महोदया पुण्य श्री जी म०, एव सुवर्ण श्री जी म० की भी मूर्तियाँ स्थापन की गई। यहा पर ही अपने पूर्वजो के चरणों के साथ सेठ्या केसरी सिंह जी वाफना के भी चरण विठाए गए। इस अवसर पर बाहर के यात्री भी काफी सख्या मे आए थे।

किसी को भ्रान्ति न हो कि साधु साध्वियों के एव श्रावकों के चरणों की प्रतिष्ठा का क्या अर्थ। यहाँ किसी को भी पूजा प्रक्षालन नही होना, काच के भीतर मात्र दर्शनार्थ मूर्तियाँ व चरण पधराए गए हैं।

जयपुर निवासी अणतमलजी छाजेड की सुपुत्री मुन्ना कुमारी की दीक्षा भावना अजमेर मे हो उत्कट थी उसकी दीक्षा का भी आयोजन होने लगा।

५५—विरोध में से

जो गृहस्थ जीवन से विरक्त हो जाते हैं, जिन्हें भोग विलास मे कोई आनन्दानुभूति नही होती। अथवा पूर्व सस्कार वश अल्प अवस्था मे ही जिन्हें त्याग मार्ग प्रिय प्रतीत होने लगता है, ऐसे अनेक प्राणी गृहस्थ जीवन से मुक्त मुनि-जीवन ग्रहण कर आत्म-साधना मे जुट जाते हैं।

भारतीय सभी धर्मों में, उन सम्प्रदायों मे संन्यास मार्ग किसी

न-किसी रूप में मान्य है, जैनधर्म में इसका स्थान अत्यन्त उत्कृष्ट है। साथ ही दीक्षार्थी के अभिभावकों की अनुमति के बिना जैनों के सभी सम्प्रदायों में दीक्षा देना अपराध माना जाता है। मुनि-जीवन में आनेवाली कठिनाइयों व परिषहों का सम्यग्ज्ञान भी आवश्यक है। मुनि जीवन की पाठशाला में जब दीक्षार्थी उत्तीर्णाङ्क प्राप्त कर लेता है तभी उसे आत्म कल्याणी प्रवर्ज्या देने का विधान है।

मुन्ना ने सफलता पूर्वक उत्तीर्णाङ्क प्राप्त किए थे उसे अभिभावकों की अनुमति प्राप्त हो चुकी थी व कोटेवालों की भावना कोटे में ही दीक्षोत्सव करवाने की हुई।

कोटे में आप का सर्वतोमुखी प्रभाव फैल रहा था। डगर-डगर पर आपही की प्रशंसा, आप ही की बात थी। समाज में जहाँ प्रशंसक होते है, वहाँ कुछ असहिष्णु मानस व्यक्ति भी मिल ही जाते हैं। अतः किसी ने इस दीक्षा को माध्यम बनाकर आपके सर्वत्र फैले यश को आवृत्ति करने की चेष्टा की। फलतः मुन्ना की दीक्षा को लेकर कोटे में दो दल बन गए। एक दल इस दीक्षा के पक्ष में था और दूसरा दल इसे बाल दीक्षा मानकर विपक्ष में था।

यदि कोई केवल विरोध ही करना चाहें तो अच्छी बातों का भी कर सकते हैं। जहाँ दृष्टिकोण ही विरोधी बना लिया जाता है, वहाँ विरोध-विरोध न रहकर व्यक्तिगत विचार का पोषक हो जाता है।

ऐसे समय में आपने धैर्य के साथ परिस्थिति का अवलोकन किया, आपने विरोधी वर्ग को कहा कि "यदि आपको दीक्षा इष्ट

नही है तो शाति से विचार करिये इस प्रकार हो हल्ला न करना चाहिये।

५६—संयम क्या है ?

"सयम न तो किसी प्रकार का आडम्बर है, और न कोई वाह्य भाव ही है, न इसकी कोई रूपरेखा ही है। यह तो व्यक्ति का अपना आत्म भाव है, अपने आपको देख, जान समझकर उसी भाव मे स्थिर हो जाना या रमण करना एक अलौकिक क्रिया है। सयम की ईच्छा दीक्षार्थी के अपने आत्मा से ही उत्पन्न होती है। सतों का उपदेश तो मात्र निमित्त वनता है। यदि सन्तों का उपदेश ही दीक्षा का ~~ण हो तो फिर सारा श्रोतावर्ग ही दीक्षित हो जाना चाहिए।

दीक्षा को भले हमने ... देन की वस्तु वना रखा है। पर वस्तुत यह लेन देन की चीज नही है ... से सयम के भावों का उद्भव होता है, उसी के मन मे जिस घडी है। भावसयम के लिए द्रव्य सयम जरूरी है। भा~ सयमी धारा को, भाव सयम के उत्कर्षमय भावों को रोक सकने मे कोई समर्थ नही होता।

भाव सयम की सुरक्षा अथवा विकास के लिए द्रव्य सयम परम उपयोगी है। ससार की झझटों मे फंसे सयमी को चाहिए वैसी निवृत्ति का समय नही मिलता। लाख प्रयत्नों के वावजूद

तनी सावधानी रखकर भी वह पापपूर्ण व्यापारों से बच नहीं । उसके निर्मल वर्धमान आत्म-भावों के लिए गृहस्थ जीवन वधान रूप बन आँख में पड़ी किरकिरी का काम करता है, इससे वह प्रतिक्षण वेदना पाता है। पद - पद पर उसे भावच्युत होने की सम्भावना रहती है। क्योंकि वह छद्मस्थ जो ठहरा। इसलिए संयम साधना अथवा आत्म साधना के लोलुपी साधक के लिए निवृत्ति पूर्ण द्रव्य संयम अनिवार्य हो जाता है। उसकी आत्मा में निवृत्ति की पुकार मचने लगती है। गुरु के पास संयम भाव जैसी कोई चीज नहीं जिसे वह शिष्य को प्रदान करे। संयम तो स्वात्मभाव है।

अवयस्क दीक्षा होनी ही चाहिए ऐसा मेरा आग्रह नहीं, और होनी ही नहीं चाहिए ऐसी भी मेरी मान्यता नहीं। यह सब दीक्षार्थी की योग्यता पर निर्भर है न कि वयपर, फिर ऐसी दशा में कानून का मान रखना हमारा कर्तव्य है र्द देशवासी ही कानून का मान न रखें और गैर काम करते जाएँ तो फिर अव्य- पार ? ऐसा देश कभी भी समुन्नत वस्था व अ । यदि हम मुनि ही कानून को तोड़े तो फिर री की बात ही क्या ? किन्तु ऐसा कानून कहाँ तक संगत है इसपर विचार करना भी आवश्यक है।

अवयस्क बच्चा धूम्र पान कर सकता है। गंदे चित्र व सिनेमा देख सकता है, अश्लील साहित्य बांच सकता है। चोरी व्यभिचारी कर सकता है। जूआ खेल सकता है। ये सभी कार्य पूर्णतः हानि कारक कार्य हैं। किन्तु इन कुकृत्यों पर कोई प्रति बंध नहीं।

ऐसे बच्चों के अभिभावको के लिए कोई दड विधान नही। ये सभी समाज के लिए अहित कर वाले बद हों, इसके लिए किसी प्रकार का आन्दोलन नही, कोई प्रयास नही। तब दीक्षा के लिए इतना हो हल्ला, इतनी चिन्ता समझ मे नही आती।

सर्वत्र आपका ही शासन नही चल सकता। अपने २ विचारों मे सभी स्वतन्त्र हैं। आप जिसे ठीक समझते हैं अन्य उसे बेठीक समझ सकते हैं। आप जिसे खराब समझते हैं अन्य उसे अच्छा समझ सकता है। सर्वत्र आप प्रतिबध नही लगा सकते। बहुमत इस दीक्षा के पक्ष मे था किन्तु अन्य पक्ष वालों की जिद्द थी कि दीक्षा कोटे मे न हो। इस विषय मे कई सभाएँ होने पर भी कोई परिणाम नहीं निकला।

समाज मे शान्ति बनी रहे इस भावना से आपने कहा अब यह दीक्षा कोटे मे नही होगी। आपने अपने विचार सघ के समक्ष रखे। जो सगठन टूटने जा रहा था वह बच गया।

ज्यो ही आप दीक्षा को कुछ समय रोकने का विचार करने लगी त्यों ही मुन्ना की विकलता बढी। उसकी दशा देख कर अतमे निश्चय किया गया कि कोटे मे न देकर इसे अन्यत्र दीक्षा दे दी जाए। क्यों कि झगडा तो कोटे का ही था।

• आपने अपनी बडी गुरु बहन अनुपम श्री जी एव माताजी विज्ञान श्री जी आदि से विचार विमर्श कर टोंक में स्थित अपनी गुरु बहन विदूषी आर्यारत्न श्री उमग श्री जी कल्याण श्री जी म० के पास

मुन्ना को भेज दिया। वहाँ के प्रमुख व्यक्तियों से विचार विमर्श, करवा कर, मुन्ना की दीक्षा टोंक में करने का निश्य हुआ।

जयपुर से मुन्ना के पिताजी, माताजी, भुवाजी, उमराव-कंवर बाई, मीना बाई वैराठी, हमीरमल जी गोलेछा, गुलाबचन्द जी कोचर आदि सभी परिवार दीक्षा के समय पर मोटरों व बसों से टोंक पधारे व समस्त संघ व परिवार के समक्ष टोंक के ठाकुर साहब की अध्यक्षता में मुन्ना की दीक्षा कर मणिप्रभा श्री जी नाम रखा गया।

आपने कोटे में दीक्षा न कर दीक्षा विरोधियों का मान रखा परंतु उन लोगों ने अखबार बाजी, पर्चेबाजी की। पर आप फिर भी शान्ति से मौन रही।

विरोध से घबरा कर मार्ग च्युत हो जाने वाले पराजित हो जाते है, विरोध को शान्त भाव से झेलने वाले विजयी होते है।

कोटे से चल कर आप बूंदी पधारीं, वहां तीन दिन तक उपदेशा-मृत वर्षा कर आप श्री टोंक पधारी तत्रस्थ अपनी गुरु वहन उमंग-श्री जी, कल्याण श्री जी म० के दर्शन कर नवपद ओलीकी वहीं आरा-धना कर आप मालपुरे दादा जिन कुशल सूरि समाधी के दर्शनार्थ पधारी। गुरुभक्ति कर अजमेर संघ के आग्रह को मान दे कर आप अजमेर पधारीं

अजमेर का चतुर्मास सानन्द भाव भीने वातावरण में सम्पन्न हुआ।

मेहता ऋद्धकरण जी की पत्नि गणेशीबाई ने बीसस्थानक तप का उद्यापन किया। आप ने उत्सव की शोभा बढ़ाई। उन्होंने

पार्श्वनाथ मंदिर मे सिद्धचक्रपट की स्थापना करवाई। यहाँ पर ही नूतन साध्वी जी मणिप्रभा श्री जी व शशि प्रभा श्री जी म० की बड़ी दीक्षा भी उपाध्याय श्री कवीन्द्र सागर जी म० के हाथों सम्पन्न करवाई।

तत्पश्चात् जयपुर सघ के आग्रह व प्रवर्तिनी महोदया श्री ज्ञान श्री जी म० की वृद्धावस्था को लक्ष्य मे रखकर उनके दर्शनार्थ दो मास के लिए जयपुर पधारी। परतु जयपुर का अहोभाग्य दो मास दो वर्ष मे परिवर्तित हो गए।

५७—अपूर्व वातावरण में

वि० स० २०१४ की चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन हमारी चरित्र नायिका जयपुर नगर से बाहर रामनिवास उद्यान मे पधारी क्योंकि प्रवेश मुहूर्त्त प्रतिपदा को था। यद्यपि स्टेशन के पास पूगलिया परिवार द्वारा निर्मित श्री ऋषभदेव भगवान् का मदिर एव धर्मशाला है पर समय कम होने से आपने उधर न पधार कर मॉसरोट ग्राम से फास्टियों के वगले पर रात्रि विश्राम करके सीधे नगर की ओर पदार्पण किया। यह समाचार तड़ित-वेग से जयपुर शहर में फैल गया, लोगों के झुण्ड उद्यान की ओर दौड पडे। जिस मूर्ति के नाम मात्र से ही हृदय मे उल्लास भर जाता है, उसके प्रत्यक्ष दर्शन की तो बात ही क्या? जन समुद्र उद्यान में उमड आया।

नगर मे पदार्पण के लिए जैसे ही आपने प्रस्थान किया वैसे ही

जनसागर ने आपको चारों ओर से घेर लिया। जन समुद्र के बीच तरण तारणी नौका सी आप जयपुर के राजपथों पर चल रही थीं। संघ के उत्साहपूर्ण स्वागत्त के साथ आप ने जयपुर के उपाश्रय में प्रवेश किया। प्रवर्तिनी म० सा० एवं विदूषी विनय श्री जी म०, स्नेहमूर्ति उपयोग श्री जी म० एवं अन्य वयोवृद्धा साध्वियों को वन्दन नमस्कार करने के लिए आप श्री वर्तमान प्रवर्तिनी महोदया श्री ज्ञान श्री जी म० सा० की सेवा में पहुँची। उनको वन्दना नमस्कार आदि कर उनकी आज्ञा से आप श्री ने प्रवेश प्रवचन प्रारंभ किया।

जैसा जयपुर का उल्लास था, वैसा ही त्याग तपः पूत आप का प्रवचन था। जनता भाव विव्हल सी हो गई। प्रतिदिन प्रवचन होता, प्रवचन में जन समुद्र लहराता। सक्रिय वाणी का जो असर होता है वह आचरण हीन वागाडम्बर का नहीं आप के उपदेश ने कइयों की जीवन-दिशा ही पलट दी, विशेषतः अमरचन्द जो नाहर के जीवन में तो आदर्श परिवर्तन आ गया।

जीवन पर्यन्त मौन, ब्रह्मचर्य, एक समय भोजन, उसमें भी पांच सात वस्तु वह भी तेल मिर्च खटाई विहीन, तली चरपरी वस्तुओं का त्याग, दूध के अलावा शक्कर भी नहीं खाते वह भी आजकल छोड़ दी। शरीर की शुश्रुषा नहीं करते, सादावेश, खुले पांवों, सारा दिन आत्म चिंतन, प्रभु भजन, तत्त्व गवेषणा में ही व्यतीत करते है। जीवनचर्या में आमूल चूल परिवर्तन यह लक्षाधीश व्यक्ति के जीवन में एक आश्चर्य ही है।

अब आप भी दिन प्रतिदिन एकान्तप्रिय बनती जा रही है। शहरी वातावरण आपके लिए रुचिकर नही विवश आपको कई चतुर्मास शहरों मे व्यतीत करने पडते हैं। ऐसे समय मे आप "बाजरी की हाजरी" देकर यानी प्रवचन सुनाकर, आहार आदि आवश्यक क्रियाओं से निपट कर, शहरों से बाहर दादा बाडियाँ अथवा धर्मशालाओं मे जाकर रात्रिका समय व्यतीत कर, सवेरे नित्यनियम से निपट कर ठीक प्रवचन के समय शहर मे आ जाती हैं। जयपुर मे भी आपका कार्यक्रम इसी प्रकार का था।

दादा जिन कुशल सूरीश्वर जी म० का समाधि-स्थान देराउर मे हैं। परन्तु पजाब विभाजन के समय देराउर पाकिस्तान मे चला गया, अवसे भक्त-जनों ने जयपुर के निकट मालपुरे को ही समाधि-स्थल मानना शुरू कर दिया है। यह क्षेत्र दादा जिन कुशल सूरि के प्रभाव से प्रभावित हैं। कई चमत्कारी घटनाएं भी सुनी जाती हैं। इस समय मालपुरे की दादाबाडी वडी ही जीर्ण हो गई थी, यात्रियों के निवास की भी भारी असुविधा थी। अत॰ आपने इस चतुर्मास मे जयपुर सघ का ध्यान इस ओर खीचा। मालपुरे के जीर्णोद्वार की योजना प्रारम्भ की गई एव धर्मशाला का भी विचार बना। प्रतिदिन उपयोगी बर्तन, बिस्तर, जलादि की व्यवस्था भी होने लगी, बिजली का प्रबन्ध विचारणीय बना। धीरे-धीरे सभी योजनाएँ पूर्ण हुईं, धर्मशाला भी बन गई और अब तो और भी विशाल बनती जा रही है।

आपने यह भी कहा कि यदि वास्तव मे यही हमारा गुरुतीर्थ है

तो हमें प्रतिवर्ष फाल्गुन मास में गुरुदेव की स्वर्ग-तिथी अमावस्या के दिन मालपुरे में एक मेले का आयोजन कर गुरु-स्मृति स्थिर रखने का प्रयत्न करना चाहिए। संघ की सम्मति से महताव चन्द जी गोलेछा ने इसे मान्यता देते हुये कहा कि "आपने जो वीज यहाँ के लिए बोए है, हम उन्हे पल्लवित करते रहेंगे। समस्त संघ ने प्रतिवर्ष मेला लगाने की वात स्वीकार कर शुरुआत की। तवसे आज पर्यन्त बड़ी शान-सौकत से मालपुरे में मेला लगता है। निकट व दूर के हजारों भक्त प्रतिवर्ष वहाँ जाकर गुरुभक्ति कर कृतार्थ होते हैं।

५८—होनहार शिष्या-वियोग

सं० २०१५ का चतुर्मास आपका जयपुर में था और आपकी मातु श्री श्री विज्ञान श्री जी म०, तिलक श्री जी म०, विजयेन्द्र श्री जी म० आदि कतिपय साध्वियों का चतुर्मास वीकानेर में था। बीकानेर चतुर्मास के पश्चात् कुछ अनिवार्य संयोगों में विज्ञान श्री जी म० आदि को बीकानेर रुकना पडा। और पोष मास में अल्पकालीन व्याधि भोग कर अन्तरिक ज्वर (टाइफाइड) के कारण आपकी सुयोग्य शिष्या साध्विरत्न श्री सूर्यप्रभा श्री जी० म० का २१ वर्ष की तरुण अवस्था में स्वर्गवास हो गया। श्री सूयप्रभा श्री जी म० गुजरात पादरे की थीं। इनका स्वभाव बडा ही मधुर, व्यक्तित्व बडा ही आकर्षक था। बडी-बडी भावभरी सुन्दर आँखों में सदैव ही प्रसन्नता भरी रहती थी। चेहरा जब भी देखिए गुलाब की तरह

खिला ही रहता, मुस्कान, मन्द-हास्य तो उनके सारे शरीर मे खेलता था। साफ रग, सुन्दर चेहरा, छोटा कद, चेहरे पर अद्भुत प्रताप देखने वाले को मुग्ध बना लेता। स्वर इतना मीठा कि सुनते-सुनते मन ही न भरे, गला इतना सुरीला कि कोयल भी क्या गाएगी। सदैव उत्साही, निराशा का नाम नही, प्रमाद का काम नही, विनय, विवेक, व्यवहार पटुता मे प्रवीण। पढने मे सबसे आगे, प्रवचन मे दक्ष, जो भी काम हो वे सभी मे आगे रहती, विधाता ने सभी गुण हमारी इस साध्वी-रत्न मे भरे थे, जिनकी स्मृति आज भी हृदय को वेदना से भर देती है। काल के सामने हमारी एक न चली, हम हाथ मलते खडे रहे और हमारी सूर्य समान तेजस्वी सूर्यप्रभा श्री जी म० हमे रोते बिलखते छोड स्वर्ग को चल दी। बीकानेर सघ ने इलाज व परिचर्या मे कोई कमी न रखी। उनकी माता जी, भाई, भाभी सभी पादरे से आ गए थे, पर सभी के पास रोने और हाथ मलने के सिवाय कोई युक्ति शेष नही थी।

सन्तोष इतना ही था कि इतनी अल्प आयु मे इतना समाधि भाव वे रख कर सद्गति की भाजन बनी। चार वर्ष तक आपने सयम की आराधना की, आपका गला बडा ही सुरीला था और साथ मे गाने का शौख भी था। पूजाएं पढाना, प्रभु के दरबार मे भजन गाना, चलते फिरते भजन की तर्जें अलापना, आपका सभी समय का काम था। अन्तिम समय तक आपकी जबान पर "आत्मा छू, नित्य छू, देह थी भिन्न छू" (मैं आत्मा हूं, मैं नित्य हूं, मैं शरीर से भिन्न हूं) का मन्त्र चलता रहा। आस-पास स्थित सभी मुनिराज

एवं साध्वी जी म० आप को आखिरी समाधि भाव रूपी विदा देने पधारे जिसमें उदरामसर से पधारे लाल श्री जी म० एवं शिव बाड़ी से पधारे सहजानन्द जी म० विशेष उल्लेखनीय हैं। सूर्यप्रभा श्री जी का स्वर्गवास संघ के लिए एक अपूरणीय क्षति है। परिवार व समाज को जो चोट पहुंची है उसे लेखनी व्यक्त कर पाने में असमर्थ है।

अंत समय की दूरी सूर्य प्रभा श्री जी के लिये जरा खेद का कारण बनी परन्तु पास में सुयोग्य साध्वी रत्न तिलक श्री जी म०, विजयेन्द्र श्री जी आदि के होने से उनको काफी संतोष रहा। सामाधि पूर्ण अवस्था में अंतिम वेला तक उनके ओष्ठ, चलते रहे, नवकार मंत्र व आत्माछूं, वाला मंत्र उनके स्वांस-स्वांस में रम गया था।

५६—संघ ऐक्य की प्रेरणा

इधर कई वर्षो से आपका प्रवचन संगठन प्रेरणा के साथ साथ अध्यात्म प्रधान भी बनता जा रहा है। प्रायः आत्मा की व्याख्या, स्व-पर का विवेचन, जड़-चेतन की भिन्नता। आत्मा परमात्मा की एकता, हेय, ज्ञेय, उपादेय विषयों का रोचक शब्दों में स्वानुभूत सरल व्याख्यान सुनकर श्रोता गद्गद् हो जाते हैं। अध्यात्म जैसे रूक्ष विषय को उपन्यास जैसी रोचक शैली में प्रस्तुत करना आपकी वक्तृत्व-कला का बेजोड़ नमूना है। श्रोता कभी भी अकलाता नहीं। प्रवचन के समय अनुभूति की जो झलक आपके चेहरे पर देखी जाती है वह अन्यत्र कम ही दृग्गोचर होती है। मानो एक-एक शब्द अनुभव तुला पर तुल कर निस्सृत होता है।

आपके हृदय मे विश्व प्रेम का सागर हिलोरे ले रहा है। अतः आप जहाँ भी पधारती है जनता पर आपका सीधा प्रभाव पड़ता है। कोई राम को माने या रहीम को माने भले जिनेश्वर भक्त हो या कृष्ण भक्त हो, भले ईसा का उपासक हो या बुद्ध का आपके हृदय मे सभी के प्रति समान भाव है, किसी के प्रति द्वेष नही। आप सभी धर्मों का परस्पर समन्वय अनिवार्य मानती हैं किसी भी धर्मका द्वेष पूर्ण खण्डन करना आप गर्हित मे गर्हित काम मानती हैं। अब तो समन्वय ही आपका जीवन-लक्ष्य बन चुका है। एकान्त पक्ष, विरोध, आलोचना हठाग्रही भावना आप मे नही रह है। आप कभी भी किसी का विरोध नही करती।

जयपुर मे आप ने उत्तराध्ययन सूत्र एव पृथ्वी चन्द्र गुण सागर चरित्र पर प्रवचन शुरु किया। महावीर की निर्मल वाणी आप जैसी महावीर शासन की सुयोग्य सेविका द्वारा उसका सविस्तर, सुललित भाषा मे वर्णन, सोने मे सुगन्ध का काम कर रहा था। जनता भाव विमुग्ध बन जाती। जयपुर की गली गली मे बाजार, बाजारों मे आपके प्रवचन की धूम थी।

जैनेतर समाज के साथ साथ जैन समाज की सभी शाखाओं वाले तेरापथी, स्थानक वासी, दिगम्बर भाई बहन भी भारी सख्या मे शामिल होते थे। सभी के हृदय मे ऐसा अरमान होता, काश! यहाँ स्थित हमारे मुनिराजों आर्याओं का और आप का प्रवचन साथ-साथ हो तो कैसा आनन्द रहे।

भले ही मानव अपने अहभाव वश अपने ही घरों में, भाई-भाई

के बीच विभेद की दीवारें खड़ी कर लें, पर इस अविचार पूर्ण कार्य से उसका अन्तर संतोष का अनुभव नहीं करता।

जो आनन्द प्रेम में है, जो खुशी हवादार विशाल घरों में निवास करने वालों को मिलती है, वह खुशी संकीर्ण-तंग कोलाहल पूर्ण कोठरियों में रहने वालों को कहां नसीब होती है ?

सम्प्रदायिकता की खोखली दीवारें जैन समाज के हृदय को कचोट रही है समाज के सत्त्व को दीमक की तरह चाट रही है। जैन समाज आज एक होने के लिए बीच में खड़ी इन साम्प्रदायिक दीवारों को गिराने के लिए तड़प रहा है। परन्तु मार्ग-दर्शकों, की अहं इस तड़प को मिटाने दें तब न ? कभी कदाच इन दीवारों को तोड़ने का भी प्रयास किया जाता है, तो वही हम बड़े है "हम बराबर कैसे बैठे" की बात बीच में व्यवधान बन जाती है। अतः कभी कदाच जब समाज के प्रेम स्नेह सम्मेलन का समय आ जाता है तो जनता के चेहरे हर्ष विभोर से हो उठते है।

लालभवन में आप श्री का प्रवचन हुआ। पश्चात आत्माराम भवन में महावीर जयंती पर आप का प्रवचन हुआ। पुनः बुलियन के विशाल प्रांगण में तेरापंथी सम्प्रदाय के पूज्य मुनिराजों एवं आर्याओं के साथ हमारी चरित्र नायिका का प्रवचन हुआ। आज महावीर की संताने ऐक्य प्रेम की गुलाल उडा रही थीं। जनता हर्ष नाद कर कर आकाश गूंजा रही थी। आनन्द की सरिताएं ऐसी उमड़ पड़ी मानो नन्दन वन धरा पर आ गया हो।

क्रमशः सभी ने अपने विचार व्यक्त किए। आज तो ऐक्य-

प्रेम की ही बात सबके मुह पर थी। हमारी चरित्र नायिका ने भी अपने विचार व्यक्त किए :—

"महानुभावों। आज परस्पर की फूट से हम बरबाद हो गए, गौरवहीन हो गए, प्रतिभाशून्य हो गए। आज इस युग मे हमारा कोई मूल्य नही रहा, क्योंकि हम परस्पर घर मे ही झगड़कर अपनी शक्ति का ह्रास कर बैठे, स्नेहभाव बर्बाद कर बैठे। हम आवाज करते हैं,' दुनिया को सन्देश सुनाने की चेष्टा करते हैं। परन्तु जोश के साथ बोल नही पाते, कारण अपराध से हमारी आवाज कुण्ठित है। सभी धर्मों की आवाज सरकार के कानों पर टकराती है। हमारी क्यों नहीं पहुँचती।

आपने उत्तर से पुकारा, मैंने दक्षिण से आवाज दी, किसीने पूर्व से नारा लगाया तो कोई पश्चिम से बोला, न आवाज गूजी न जोश आया, न अपनी बात मे बल आया कि कोई मानने को मजबूर बनता। सरकार ने जाना होंगे कोई बकवादी। क्या यह भी किसी एक समूह की आवाज है?

"भाइयों! बिखरे हुए मुक्ता किसी के गले की शोभा नही बन पाते, बिखरे हुए तिनकों से कोई घर साफ नही होता, जहाँ वहाँ पड़ी ईंटों को कोई घर नही मानता। सूत के अलग २ तन्तु से लज्जा का निवारण नही होता। हम भी जब तक बिखरे हुवे हैं," अपनी २ डफली अपना २ राग अलापने मे लगे हुए हैं, तबतक हमारी उन्नति आकाश कुसुम सी ही बनी रहेगी। हम किसी काम के नहीं, भले अपनी कुटियों मे अपने भक्तों के बीच गुट बाँटकर वाहवाही लूट लें,

पर यह धन्यवाद का काम तो नहीं। यह भगवान के शासन के प्रति वफादारी भी नहीं।

"विचारिए, हमने पूर्वजों की इज्जत कितनी बढ़ाई ?

सुज्ञ बन्धुओं ! बहुत हो गया आजाइए भगवान महावीर के केसरिया झंडे के नीचे अपने हृदयों के मध्य खड़ी दीवारों को गिरा दीजिए। अब संकुचित कोठरियों का जमाना गया, दीवारें गिराकर हाल बनाए जाते है। बिना हाल घर की शोभा ही नहीं सजावट हो ही नहीं पाती। फिर कहिए क्या वजह है कि हम भेद डालनेवाली दीवारें निकाल कर विशाल रूप में मात्र जैन नहीं बन पाते ?

अब कृपा कर धर्म के मामले में लाभालाभ का विचार करनेवाली, बनिया बुद्धि त्याग दीजिए। धर्म कोई व्यापार नहीं है। देखिए कभी समय था कोर्ट कचहरी में आपके पूर्वजों से शपथ नहीं ली जाती थी। आज आपके लाख शपथ खाने पर भी आपको कोई सच्चा नहीं मानता। ऐसा क्यों हुआ ? आपने प्रमाणिकता खो दी ईमान खो दिया, विश्वास गंवा दिया। अब दो चार सामायिक, पूजन, उपवास करके लम्बे तिलक डुपट्टे धार कर साधु सन्तो के प्रवचनों में आगे बैठकर हाँ, जी हाँ, बोलने से काम नहीं चल पाएगा। अब उपाश्रय व स्थानक की सामायिक, उपाश्रय व स्थानक का तप, एवं धर्म हमें भी और आपको भी दैनिक-जीवन में लाना होगा। उपाश्रय में सामायिक कर सम भाव की साधना की, परन्तु बाहर आते ही, विषम भाव मेरातेरा क्रोध क्लेश, कम नाप कम तोल, कालाबाजार, अनीति, अन्याय करते हैं। उपाश्रय में प्रतिक्रमण के

सूत्रो को घोट आए, निन्दामि गरिहामि पापों की निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ पापो से पीछे, हटता हूँ। बाहर आए वही पुरानी चाल, वही वेढगो दौड। अन्योंकी निन्दामि गरिहामि अन्योंकी निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ, पापों मे आगे वढता हूँ। उपाश्रय के धर्म को जीवन मे उतारिए। अव शकर वनकर विद्वेष के जहर को पचा जाइए। उगल-उगल कर वातावरण को विपाक्त मत करिए। इस जहर ने हमारी मानवता को मरणासन्न वना दिया, हमारे विचार दूषित हो गए, हमारी नसो मे मत आग्रह का नशा छा गया। अव प्रेम का सुधा पान कीजिए और कराइए, भगवान का विश्व प्रेम भरा अमृत घट दुनियाँ मे वितरित करिए। मरणासन्न मानवता मे चेतना जागरित कर बचा लीजिए। जरा सोचें विवाह शादी मे एक होने वाले कधे से कधा मिलाकर चलनेवाले। रोटी वेटी व्यवहार निस्सकोच चलानेवाले, धर्मके मामले मे पीठ फेर कर क्यों चलने लगे हो। साथ मे खाना,, साथ २ रहना, सोना, उठना, वैठना सभी व्यवहार साथ में होते हैं, और जहाँ धर्म की बात आई कि तेरा मेरा कहकर अलग हो जाते हैं।

आज से प्रतिज्ञा कर लीजिए एक दूसरे की निन्दा न करने की, एक दूसरे की जडे न काटने की। वर्षों से नही सदियों से हम एक दूसरे को मिटाने का प्रयत्न करते आ रहे हैं। पर क्या कोई भी मिटा? सव सीना तानें सामने खडे हैं। हमारी शक्ति हमारा समय, हमारा विवेक व्यर्थ गया। ऐसे प्रयत्न से क्या लाभ? याद रखिए हम महावीर की सतान है, हम "सौतेले नही सगे भाई बहन है"

आप की प्रवचन धारा प्रवाहित होती गई, श्रोता स्नान करते गए।

मुनिराज और आर्याओं के साथ आप भवन से बाहर पधारीं, जनता की जबान पर एक ही बात थी—यह तो साक्षात् सरस्वती का ही अवतार है। यह जयपुर का त्रिवेणी संगम प्रयाग के संगम समान ही पवित्र तीर्थधाम सा आनन्द दे रहा था।

आप जहाँ भी पधारती है, तत्रस्थ सभी सम्प्रदाय के मुनिराजों व आर्याओं के साथ सम्पर्क साधने का प्रयत्न करतीं ही है।

वैष्णव संतो के साथ भी कई बेर आपका सम्पर्क होता है, साथ में प्रवचन होता है।

स्कूलों में सामाजिक व राष्ट्रीय संस्थाओ में आपके नैतिकता पर प्रभावशाली भाषण होते है। कोमल किशोर बाल हृदयों पर आप भावी भारत के रामराज्य का सुन्दर चित्र अंकित कर देती है। उन्हें वीर-धीर गम्भीर, राष्ट्र-धर्म प्रेमी बनने की सलाह देती है। उन्हें गांधी व जवाहर बनने का उत्साह प्रदान करती हैं।

जयपुर में पु० सुवर्ण श्री जी म० द्वारा संस्थापित वीर बालिका विद्यालय चल रहा है। प्रधान अध्यापिका प्रकाशवती जी जो संस्था के प्रति अत्यधिक आत्मीयता रखती हुई संस्था के अभ्युदय में अपनी शक्ति लगाए हुए है ने आपके समक्ष निवेदन किया कि संस्था के वार्षिकोत्सव पर आप स्वयं निरीक्षण कर समाज का ध्यान संस्था की ओर आकर्षित करें। आपके इन्कार का प्रश्न ही नहीं था।

यथा समय आप विद्यालय मे पधारी बडे समारोह के साथ सस्था का वार्षिकोत्सव मनाया गया। उसमे आपका व विदूषी आर्यारत्न सज्जन श्री जी म० का प्रवचन हुआ। सस्था के प्राण स्वरूप मत्री महोदय श्रीमान् राजरूप जी टाक जिनके मन्त्रित्व मे निष्प्राण सस्था मे नव जीवन सचार हुवा है ने आप सब को धन्यवाद दिया।

कुछ समय पश्चात् सस्था मे महिलाओं का सम्मेलन रखा गया। सस्थाके भवन निर्माण मे दान वीर से० सोहनलाल जी दूगडने २५०००) रुपए का दान देकर वहाँ के भवन का निर्माण कराया था, उसी भवन मे आज हमारा महिला सम्मेल हुआ।

सस्या मे आधुनिक ढग के सामान की कुछ कमियाँ आपकी नजर मे आई अत' आपके उपदेश से महिलाओं एव छात्राओं ने लगभग २५००) का दान देकर वे सभी कमियाँ दूर की।

मालपुरा तीर्थ का जीर्णोद्धार शुरु नही हुआ था, चन्दा बीच मे ही पडा था अत सघ ने लालचन्दजी बेराठी को यह काम सौपा, उन्होंने समय का भोग देकर बडी लगन से कार्य करवाया और आज मालपुरे की उन्नती आशातीत हो रही हैं। स० २०१५ का आपका यह चतुर्मास जयपुर मे बीता।

६०—पुनः जयपुर में

जयपुर से चलने की तैयारी होते देख वहा का सघ रो पडा लोगों का हृदय तडप उठा, वे अभी आपको और रोकना चाहते थे।

संघ के अग्रगण्य व्यक्ति आपके सामने खड़े थे। सभी ने आपसे एक चतुर्मास और ठहरने का आग्रह किया। आपने कहा :—

आप मुझे मात्र दो मास का वचन देकर अजमेर से लाए थे। अब ९ मास व्यतीत हो गए, फिर भी आप आग्रह करते हैं ? मुनि का जीवन प्रतिपल गतिशील रहना चाहिए, सरिताएँ व बादल एक स्थान पर नहीं रुका करते, उनको सर्वत्र फैलने की सुविधा है बिना कारण एक ही स्थान पर टिके रहने से मुनिका मन ममता में पड़ जाता है। संयम में भी शिथिलता आने की संभावना है। अब जयपुर में ठहरने का कोई भी कारण नहीं, आप मुझे सहर्ष जाने की आज्ञा दें।

संघ के व्यक्ति इतने अधीर बन रहे थे कि जाने का नाम ही उनके लिए असह्य था। उस समय का दृश्य एक चिरस्मरणीय दृश्य था। बड़े, वूढ़े, तरुण, किशोर स्त्री पुरुष सभी कातर से आपके सामने बैठे थे—मुख पर चतुर्मास याचना के भाव झलक रहे थे। सारादिन संघर्ष सा चलता। आप घबड़ा कर शहर छोड़ दादा वाड़ी चली जाती, पर लोग भी दादा वाड़ी पहुँच जाते, पूरा एक मास इसी प्रकार बीत गया। आपने विहार कर दिया। दादा वाड़ी पधारी। संघ के प्रयत्नों ने वेग पकड़ा, हठने जोर मारा। कुछ लोग आपके सामने बैठे, कुछ प्रवर्तिनी महोदया के सामने बैठे, कुछ आचार्य श्री आनन्द सागर सूरीश्वर जी म० के पास गए। अंत में जयपुर संघ के प्रयत्नों ने सफलता पाई। पू० प्रवर्तिनी महोदया एवं आचार्य देव के आदेश से आप को विना मन द्वितीय चातुर्मास जयपुर में ठहरना ही

अधिकांशत: संध्या समय जाकर रात्रि आप दादा वाडी मे ही व्यतीत करती। प्रवचन के समय शहर मे पधारती।

वि० स० २०१६ का द्वितीय चतुर्मास वडा ही शानदार रहा। तपस्या का तो पार ही नही था। अमरचन्दजी नाहर के सुपुत्र धर्मचन्दजी की पत्नी ने २० वर्ष की वय मे मास क्षमण यानी एक मास पर्यन्त मात्र दिवस मे गर्म जल पीकर रहने वाली उग्र तपस्या की। एक मास निराहार व्यतीत कर चेहरे पर म्लानता की वजाय अनूठा ही तेज दिखाई देता था। पूर्णाहूति पर सवारी निकाली गई उस समय तपस्विनी की प्रतिमा दर्शनीय थी मानों कोई देवी ही रथ पर विराजमान हो।

हमारी बाल साध्वी जी श्री सुदर्शना श्री जी। मजुला श्री जी मणिप्रभा श्री जी ने अठाई की तपस्या की। कई नव वधुओं ने अठाई तप किया। पचरगी तप भी हुआ। अठाई महोत्सव, पूजा, प्रभावना, व स्वामी-वात्सल्य की धूम-सी मच गई। पर्यूषण पर्व भी वडे ही उत्साहपूर्ण वातावरण मे मनाया गया। शिवजीराम भवन जैसा विशाल स्थान भी सकीर्ण हो गया।

जयपुर के दोनों ही चतुर्मास कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रहे। यद्यपि इनसे पूर्व भी आप कई वेर चतुर्मासार्थ व यों ही पधार चुकी थी, पर प्रवचन देने का अवसर उपस्थित नही हुआ था। क्योंकि प्राय: पूज्य मुनिराजों के साथ ही चतुर्मास हुये थे।

इन दो चतुर्मासों मे ही व्याख्यान श्रवण का सौभाग्य जयपुर की जनता को मिला था। जयपुर मे जितनी जनता आपके व्याख्यान

में उपस्थित होती थीं, उतनी पहले कभी नहीं हुई। सभी सम्प्रदायों के व्यक्ति प्रायः उपस्थित होते रहते थे।

आपके उपदेश से वि० सं० २०१६ के ज्येष्ठ मास में सरदारमल जी संचेती ने वीसस्थानक तप उद्यापन के उपलक्ष में स्थानीय शिव-जीराम भवन में अठाई महोत्सव करवाया एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर में बीसस्थानक पट्ट की स्थापना करवाई।

इससे पूर्व वि० सं० २०१५ के माघ में श्री राजमल जी सुराणा की धर्मपत्नी सौ० उमराव कुंवर बाई ने नवपद तप एवं बीसस्थानक तप की पूर्ति पर स्टेशन मन्दिर पर अठाई महोत्सव पूर्वक उद्यापन किया। बीसस्थापनक पट्ट की प्रतिष्ठा करवाई। साथ ही श्री ऋषभ चन्द जी पूंगलिया की माताजी मदन कुंवर बाई ने श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज के पट्ट की स्थापना करवाई। इस अवसर पर बीकानेर से पुज्या विज्ञान श्री जी म०, तिलक श्री जी म० आदि सभी पधार गए थे।

सं० २०१५ में आपकी विदूषी व्यवहार दक्षा शिष्या श्री अविचल श्री जी म०, विनीता श्री जी म० आदि का चतुर्मास दहाणु में था। दहाणू में गुरुदेव के भक्तों को दादाबाडी का अभाव खटक रहा था, अतः वहाँ दादावाडी का निर्माण कराया गया। इसका सारा खर्च फणसावाली मणि बेन ने उठाया।

सं० २०१६ के मिगसर में तत्त्व-गवेषक सन्त सहजानन्द जी म० व अध्यात्मरसिक बम्बई वाले मीट्ठु भाई एवं ब्रह्मचारी सुखलाल भाई पधारे। आप सभी मोहनवाड़ी में ठहरे थे। हमारी चरित्र

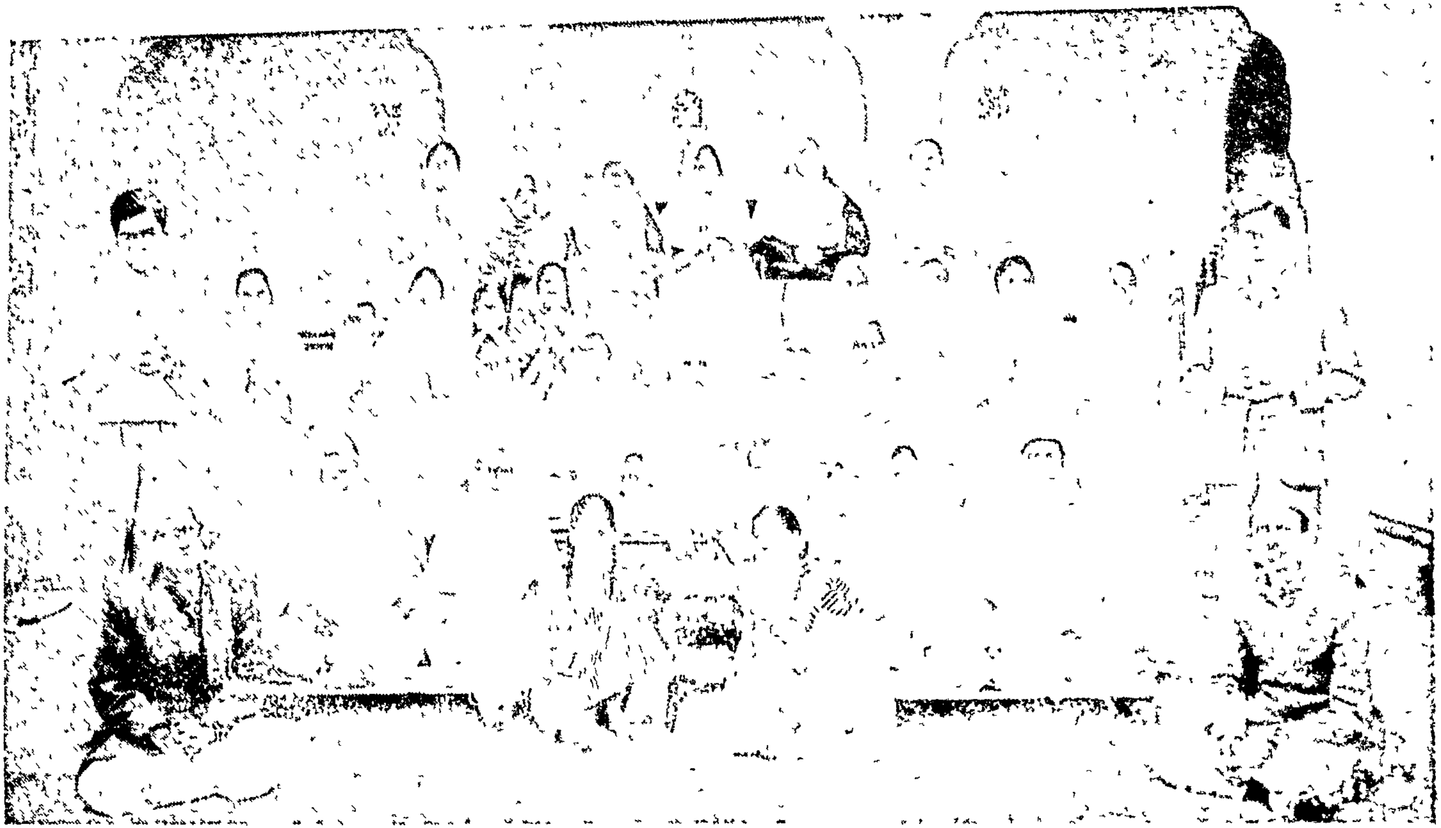

जयपुर में प्रवर्तनी महोदया के साथ पृष्ठ—२२७

नायिका भी प्रवर्तिनी महोदया, ज्ञान श्री जी म०, उपयोग श्री जी० म० आदि के साथ मोहनवाडी पधारी। वहाँ सहजानन्द जी म० का प्रवचन सुना एव उसी सभा मे हमारी चरित्र नायिका का भी बडा ही भावपूर्ण अध्यात्मिक प्रवचन हुआ। वे लोग तीन दिन ठहरे, आप सभीने भी तीन दिन मोहनवाडी में ठहर कर लाभ उठाया।

दूसरे चतुर्मास मे कार्तिक शुदि तृतीया की रात को पू० उपयोग श्री जी म० का पेनिसीलिन का शोक लगकर हार्ट-फेल हो गया। स्वस्थ सबल शरीर क्षणमात्र मे निर्जीव हो गया।

स० २०१६ का आपका चतुर्मास जयपुर मे व्यतीत हुआ।

६१—व्याख्यान भारती

जयपुर के दोनों चतुर्मास सानन्द व्यतीत हुए, फिर विहार की तैयारी होने लगी। अब अश्रु-वर्षा के सिवाय जयपुर वालों के पास था ही क्या? आप को रोकने का कोई भी बहाना शेष नहीं था। विहार के समय जयपुर सघ व जैनेतर लोगों ने आपका भारी सन्मान किया।

रामनिवास बाग मे म्यिन म्युजियम के विशाल प्रांगण मे लोगों ने आपका अभिनन्दन किया व आप को अभिनन्द पत्र प्रदान किया और इसी प्रसग पर समस्त जैन सघ खरतर गच्छ, तपागच्छ, स्थानकवासी, तेरापथी, दिगम्बर एव अन्य वधुओं ने सम्मिलित होकर "व्याख्यान - भारती विरुद से विभूषित किया।

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीया जैन कोकिला शमदमादि अनेक
गुणगणालंकृता आबाल ब्रह्मचारिणी विदुषी

साध्वीरत्न श्रीमती विचक्षणश्रीजी महाराज

की पवित्र सेवा में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

आदरणीय गुरुवर्या,

संघ की विनम्र प्रार्थना को स्वीकार कर आपका इस जयपुर नगर में पदार्पण करना अभी कल ही की बात मालूम होती है। जयपुर में हुए आपके दो चतुर्मासों में आपने अपने प्रेरणाप्रद सदुपदेशों द्वारा जिस सन्मार्ग की ओर भव्यजीवों को प्रेरित किया है वह हम सबके लिए अपूर्व लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

हे जैन शासन प्रभाविका !

शास्त्र सम्मत एवं अनुबोधित आपकी पीयूष वाणी का ही यह प्रभाव है कि मालपुरा स्थित अति प्राचीन, प्रसिद्ध एवं चमत्कारी गुरुतीर्थ श्री दादाबाड़ी का पुनरुद्धार हो रहा है एवं श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज पर भी श्री दादा गुरुदेव की देहरियो के पुनर्निर्माण का कार्य हो रहा है।

आपकी धर्मदेशना से प्रेरित होकर ही इस कड़ाके की सर्दी में भी जयपुर से श्रीमान् अमरचदजी धर्मचन्दजी नाहर की तरफ से आपके सदैव अप्रतिबन्धित एव शास्त्र मर्यादित विहार के साथ-साथ एक पैदल सघ भी मालपुरा दादाबाड़ी के लिये प्रस्थान कर रहा है।

हे तपोमूर्ति !

आपकी त्याग और वैराग्यपूर्ण धर्मदेशना से जागृत होकर यहा के श्रावक श्राविकाओं ने अन्यान्य व्रतग्रहण के साथ मासक्षमण, पक्षक्षमण, कई अठाइयां और पचरगी आदि तपस्यायें, उद्यापना व अष्टाह्निक महोत्सव किये हैं।

हे आर्यारत्न !

हमारे अत्यन्त आग्रह से आपने यहाँ दो चातुर्मासों में विराजकर धर्मोपदेशों द्वारा हम लोगों पर जो उपकार किये हैं वे अवर्णनीय हैं। आबालवृद्ध को रुचिकर आपकी हृदयग्राही व्याख्यान शैली की हम कहां तक प्रशसा करें। प्रकट सत्य तो यह है कि जिस किसी ने भी आपकी अमृत-मयी वाणी सुनी वह हमेशा उस वाणी को फिर सुनने को लालायित रहा। इसका एक ही कारण है कि मोक्षमार्ग की ओर प्रेरित करनेवाली आपकी वाणी प्रभावशाली होते हुए भी सरल, सुश्रव्य और आत्मिक सुख प्रदान करने वाली है।

हे जैन कोकिला !

*अन्त में आपके इन अनन्त उपकारों को स्मरण करते हुये आपके द्वारा जैन धर्म की अधिकाधिक उन्नति चाहते हुए हम आपके चरणों में श्रद्धा व भक्ति से विनत हो आपके गुणानुरूप "***व्याख्यान भारती***" विरुदरूप नम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।*

जयपुर — *विनयावनत*

मिती माघ कृष्ण ६, वीर सम्वत २४८६ ता० २० जनवरी, १९६० — **जयपुर श्री संघ**

तत्पश्चात् पंजाबी नवयुवक मण्डल ने आर्यारत्न सज्जन श्री जी रचित बिदाई-भजन गाया । भजन इतना मार्मिक था कि जनता रो पड़ी जयपुर की भावना की जितनी प्रशंसा की जाए कम ही होगी । किंतु संत यदि सत्कार में खोकर बैठा रहे तो उसके लिए शोभा की बात भी नहीं और उसके लिए कर्तव्य क्षेत्र भी बन्द हो जाता है ।

जयपुर से प्रस्थान कर आप की भावना मालपुरे में गुरुदेव के दर्शन कर आगे जाने की थी । जयपुर वालों को जब इस विचार का पता चला तो कई जन आपके साथ पैदल यात्रा के इच्छुक बने, धीरे-धीरे यह बात सर्वत्र फैल गई और सामूहिक रूप से आपके साथ संघ सहित पैदल चलकर गुरुदेव के दर्शन करने की विचारधारा व रूपरेखा बनाई गई । लगभग २५० व्यक्ति संघ सहित यात्रार्थ तैयार हुए ।

पीप शुक्ला अष्टमी बुधवार को बडे समारोह के साथ सघ के प्रस्थान का मुहूर्त था।

पूजनीया प्रवर्तनी महोदया ज्ञान श्री जी म० का जीवन बडा ही आदर्श एव उज्ज्वल है। प्रतिपल आत्मचिन्तन मे ही सलग्न रहती हैं। धैर्यता, सहिष्णुता, अप्रमत्तता आदि आपमे जन्मजात गुण हैं।

अधिकाश समय आपका मौन, जाप, स्वाध्याय मे ही व्यतीत होता है। अनिवार्य स्थिति मे ही आप अपनी वाणी का उपयोग करती हैं। सयम, साधना भी आपकी प्रशसनीय हैं। पू० सुवर्ण श्री जी म० के पाट पर प्राप्त प्रवर्तिनी पद आपने शानदार ढग से दीपाया है। जैसा सुवर्ण श्री जी म० का जीवन था, प्राय॰ वैसा ही जीवन आपका हैं। सयमी जीवन मे आए आपको लगभग ६० वर्ष हो गए। हमारी चरित्र नायिका पर प्रवर्तिनी महोदया का पूर्ण वत्सल्य भाव रहा। सम्बन्ध इतना मधुर व अपनत्व भरा रहा कि विदा के समय दोनों के नेत्र भीग गए। ये वार-वार चरणों मे झुक रही थी, वे बार बार आशीर्वाद वर्षा रही थी।

यथा समय सघ ने जयपुर से प्रस्थान किया। रास्ते भर भजन गायन, जय जय नारों के साथ सघ चलता रहा। सघ का पहला विश्राम सागानेर मे हुआ वहा सेठ श्री हमीर मल जी गोलेछा ने स्वामी वात्सल्य किया।

सघ का सारा भार सेठ अमरचन्द जी धर्मचन्द जी नाहर ने उठाया था। वसों व तम्बुओं की, भोजन व जल की बडी सुन्दर व्यवस्था थी। मार्ग के सात दिन बडे ही उत्साह व उल्लास मे बीते।

आठवें रोज संघ मालपुरे में प्रवेशा आनन्द हर्ष की तो बात ही क्या ? लोग नाच रहे थे। संघ पहुँचने से पहले जयपुर से हजारों लोग संघ के स्वागतार्थ पधार गए थे। जय-जय नादों से आकाश गूंज उठा। संघ सभी बाजारो में घूमता हुआ भगवान के मंदिरों का दर्शन कर लक्ष्य स्थान दादा बाड़ी पधारा।

मध्य बाजार में प्रवचन हुआ।

इसी समय आपने दादा जिन कुशल सूरि की अमर कहानी की काव्यमय रचना की। आज पर्यन्त हजारों प्रतियां इसकी चतुर्थ आवृत्ति के रूप में वितरित हो चुकी है, पर अभी भी मांग ज्यों की त्यों बनी है। भक्ति रस में आपकी भावना अत्यन्त गति शील है। अनायास भाव विभोरता में बने आप के भजन बड़े ही मधुर एवं भाव भरे, हृदय को मुग्ध करने वाले होते है। भजनों की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

मालपुरे में पूजा प्रभावना का ठाठ लगा। संघपति अमरचन्द जी नाहर को पूनम के दिन माला पहनाकर संघ ने मानपत्र भेंट किया। दूसरे दिन सभी जयपुर लौट गए।

आप श्री मालपुरा से टोडा पधारी क्यों कि श्रीमान भंवर लाल जी आदि का आग्रह था। वहाँ से प्रतिष्ठा महोत्सव पर टोंक पधारीं। टोंक में सानन्द प्रतिष्ठा का कार्य हो जाने पर आप श्री अजमेर की ओर पधारीं।

अजमेर में पूज्या अनुपम श्री जी म० जो आप की बड़ी गुरु बहन है जिनकी आयू ९० के पार हो चुकी है। उनको आपने उनकी

इच्छानुसार अजमेर मे स्थिरवास कराया है। उनकी सेवा मे आप अपनी सुयोग्य शिष्याओं की बराबर अदल बदल करती रहती हैं।

मालपुरे से आप किसनगढ मे अपनी गुरु बहन बसत श्री जी म० के दर्शनार्थ पधारी उनकी सेवा मे पाच रोज ठहरी प्रवचन भी दिया, एक दिन स्थानक मे प्रवचन हुआ।

किसनगढ से आप अजमेर अनुपम श्री जी म० के पास पधारी इस मिलन की वेला का वर्णन लेखनी का विषय नही, मानों वर्षो से बिछुडी माता-पुत्री ही न मिली हों। अजमेर मे कुछ समय अनुपम श्री जी म० के पास रहकर आप श्री सराणा पधारी, सराणा मे मन्दिर की प्रतिष्ठा पर पधारने के लिए सराणा सघ का अत्याग्रह था।

६२—सराणा में प्रतिष्ठा

इस समय आपकी तबियत कुछ अस्वस्थ हो गई—जुखाम बिगड कर स्वास की तकलीफ होने पर भी जबान का ध्यान रखकर आप श्री पु० अनुपम श्री जी म० से आज्ञा प्राप्त कर दादावाडी पधारीं, वहाँ से नसीराबाद की ओर बढे, किन्तु सडक की मोड पर पहुँचते ही चलना कठिन हो गया। लाचार होकर पुलिस आफिसर के बगले पर ठहराने की कोशिश कर आपको ठहराया गया।

दोपहर मे पुलिस आफिसर साहेब आपके व्यक्तित्त्व से बड़े प्रभावित हुये व मासादि अखाद्य पदार्थों के भक्षण की मर्यादा की।

व्याधि घट नहीं रही थी, आपको सराणा पहुँचना था। कुछ

दिन के उपचार पश्चात् धीरे-धीरे चलकर आप सराणा पहुँचीं। यों आगे आपको विदूषी सफल-वक्ता शिष्या विजयेन्द्र श्री जी म० को भेजा जा चुका था। वडे ही उत्साह से सराणा संघ ने मन्दिर का प्रतिष्ठा-कार्य सम्पन्न करवाया। अनेक स्थानों के यात्री भी अच्छी संख्या में पधारे थे।

वैशाख सुदि ६ सोमवार को प्रतिष्ठा-कार्य सम्पन्न हुवा। यहाँ पर वैराग्यवती श्री हसुबेन मनोहर श्री जी म० की बहिन आपके पास दीक्षार्थ आशीवाद लेने पधारी, संघ ने उसका अच्छा आदर सत्कार किया। उनकी इच्छा आप ही के करकमलों दीक्षित होने की थी। किन्तु आपकी इच्छा पालीताणा में आचार्य प्रवर आनन्द सागर सूरीश्वर जी म० आदि मुनिवरों के हाथों अपनी सुयोग्य शिष्या अविचल श्री जी म० के पास कराने की होने से आपकी ही इच्छा को मान देकर उनके अभिभावक पालीताणा जाते समय पहले आपका आशीर्वाद दिलाने सराणा लाए थे। हसुमती बेन की दीक्षा पाली-ताणा में आचार्य जी के हाथों करवा कर नाम मुक्ति प्रभा श्री जी रखा गया।

वि० सं० २०१२ का आपका चतुर्मास पालीताणा में था, तभी से आपका ध्यान रतनपोल स्थित दादागुरु देवों की देहरियाँ के जो अब एकदम जीर्ण हो चली थीं एवं उनका शीघ्र जीर्णोद्धार आवश्यक था की ओर गया। आपने संघ के प्रमुख व्यक्ति जो उस समय पालीताणा में माधोलाल वाबू की धर्मशाला में मौजूद थे, का ध्यान इस ओर खींचा। मन्दसोर के सेठ प्रतापमल जी सेठिया को पत्र लिखा और

अन्य भी कई स्थानों पर इसकी सूचना पहुँचाई। सघ का ध्यान इस ओर गया, और शीघ्र ही जीर्णोद्धार की व्यवस्था आवश्यक अनुभव होने से आनन्द जी कल्याण जी की पेढी से पत्र व्यवहार किया। अनेक पत्र गए, पर परिणाम शून्य मे ही आया। पेढी ने साफ इन्कार कर दिया, परन्तु आप यों हिम्मत हार बैठने वाली नही थी। आपका प्रयत्न चालू था, आपने मुनिराज बुद्धिमुनि जी म० को भी पत्र भेजा, खरतरगच्छ सघ इस कार्य मे मदद करे ऐसी माँग भी की। सघ ने भी पेढी से पत्र व्यवहार किया, पर नतीजा निराशाजनक ही रहा।

जब अजमेर मे दादासा का अष्टम शताब्दि महोत्सव मनाया गया उस समय जिन दत्त सूरी सेवा सघ की स्थापना हुई, जिसका प्रधान कार्यालय बम्बई मे रखा गया। सघ के प्रधान मन्त्री श्रीमान प्रतापमल जी सेठिया को बनाया गया। अब इस कार्य का सारा भार जिन दत्त सूरी सेवा सघ को सौंप दिया गया। हमारे प्रधान मन्त्री श्री प्रतापमल सेठिया ने इस कार्य के पीछे अपना तन, मन, धन सब लगा दिया—सेठसा० पेढी के प्रमुख श्री लालभाई कस्तूरभाई से मिले और अन्त मे जीर्णोद्धार की इजाजत लेकर ही माने। जीर्णोद्धार की आज्ञा तो मिली पर पेढी ने शर्त यह रखी कि जिर्णोद्धार का काम पेढी के मिस्त्री ही करेंगे। सारा खर्च आप को देना होगा। और दाता के नाम का कहीं भी पाटिया या विवरण नहीं लगाने दिया जाएगा। यहाँ तो काम से काम था, नाम की भूख थी ही कहाँ।

स्वनाम धन्य सेठ पूनमचन्द जी गुलाबचन्द जी गोलेछा फलोदी वालो ने अपने नाम का मोह त्याग अकेले ही इस जीर्णोद्धार का खर्च उठाया और पूरा कराया।

आप श्री सराणा थी उसी समय वि० सं० २०१७ में जीर्णोद्धार सम्पन्न हुआ एवं पुनः प्रतिष्ठा का आयोजन बना। इसी अवसर पर सेवा संघ का द्वितीय अधिवेशन भी रखा गया।

देहरियों के जीर्णोद्धार व प्रतिष्ठा से आप को अतीव आनन्द हुआ इस अवसर पर अस्वस्थता के कारण आप नहीं पंधार सकी किन्तु अपनी सुयोग्य शिष्या अविचल श्री जी, तिलक श्री जी, विनीता श्री जी आदि को पाली ताणा भेजकर सदभावना व्यक्त की।

आचार्य देव वीर पुत्र आनन्द सागर सूरीश्वर जी म० उपाध्याय वर सुखसागर जी म०, उपाध्याय, प्रवर कवीन्द्र सागर जी म० आदि सभी मुनिराज पधारे तथा साध्वी वर्ग तो काफी संख्या में आया था। इस प्रतिष्ठा व सम्मेलन की भव्यता पालीताणा के इतिहास में अपूर्व सी थी।

सराणे में कुछ दिन ठहर कर आप का विचार आगे बढ़ने का था किन्तु स्वास की व्याधि कम नहीं हुई थी। अतः अनुपम श्री जी म० के आदेश से आप को पुनः अजमेर लौटना पड़ा। अजमेर में उपचार चालू हुवा यहाँ आप का स्वास्थ्य सुधरा। अजमेर वालों ने चतुर्मास की प्रार्थना की किन्तु आप प्रायः चतुर्मास का आश्वासन केकड़ी संघ को दे चुकी थी। अतः आप चतुर्मासार्थ केकड़ी पधारीं। सं० २०१७ का चतुर्मास केकड़ी में बिताया।

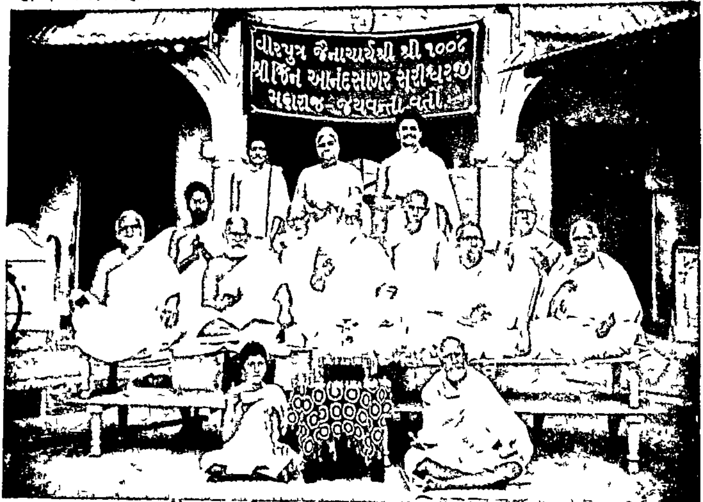

स्वर्गीय आचार्य देव के साथ वर्तमान मुनि-मण्डल

आषाढ शुक्ला एकादशी को युग प्रधान दादा जिन दत्त सूरि की जयती मनाई गई जिसमे स्थानीय चेयरमैन श्री कानमल जी कर्णावट आदि अनेकों के भाषण हुए। इसी अवसर पर अपनी माता जी की स्मृति मे बनाया गया भवन श्री सौभाग्यमल जी दीपचन्द जी स्यावत ने सघ को समर्पित किया।

चतुर्मास मे पर्वाराधन ओली आराधन तपस्यादि मे वही राग रग चला। स्थान-स्थान के यात्रीगण प्रति दिन आप के दर्शनार्थ पधारते थे, जिनकी भक्ति-सेवा का पुण्य केकडी सघ सानन्द लूटता था।

यहाँ खरतरगच्छ तपागच्छ मे जरा भी भेदभाव नही था, सभी हिलमिल कर सारे काम सफलता पूर्वक करते थे। परस्पर बडा ही स्नेहभरा व्यवहार था। सुनते हैं कि वर्तमान मे वहाँ गच्छ कदाग्रह बडे ही उग्ररूप मे चल रहा है।

केकडी व अन्य आसपास के गाँवों मे वृद्ध लोगों ने आज पर्यन्त श्री सिद्धाचल जी की यात्रा नही की थी। आपके मुख से यात्रा का, यात्रा के फल का भाववाही व्याख्यान सुनकर सब के मन मे यात्रा की उमंगें उछलने लगी। बसों द्वारा लोग सघ ले-लेकर यात्रार्थ पधारे और अपना जीवन धन्य बनाया।

चतुर्मास पश्चात् पालीताणा में अचानक वीर-पुत्र आचार्य आनन्दसागर सूरीश्वर जी म० का हृदय-गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। अन्तिम दर्शन से वचित रह जाने का दुःख आपको अधिक हुआ, किन्तु भावयवश से आगे सभी विवश हैं।

६३—नानसी प्रतिष्ठा पर

चतुर्मास सम्पूर्ण होने के वाद आप श्री कालेड़ा कृष्ण गोपाल औषधालय में दो महीने विराजीं, क्योंकि आप श्री का स्वास्थ्य पिछले कई महीनों से अस्वस्थ था। यहाँ वैद्यराज के पास चिकित्सा कराने की संघ की खूब इच्छा होने से केकड़ी से तीन माइल दूर कालेड़ा आपको विराजना पड़ा। केकड़ी, जयपुर व कोटे वाले समय-समय पर आपकी सेवा में आते रहते थे। चन्द्रकला श्री जो का भी इलाज चालू किया।

इधर तपस्विनी पू० विज्ञान श्री जी म० (गुरुवर्य्या श्री की माताजी) छमासी तप कर रही थीं, उन्होंने विदुषी साध्वी विजयेन्द्र श्री जी आदि को लेकर फूलिया, धनोप, कादेड़ा, नानसी, सरदारा आदि ग्रामो में भ्रमण कर धर्म-प्रचार कर जनता को लाभान्वित किया। आपके छमासी तप का पारणा श्री संघ के अत्यधिक आग्रह से कदेड़ा गाँव में हुआ। कादेड़ा संघ का उत्साह प्रशंशनीय था, गावों-गाँव आमन्त्रण पत्रिका भेजीं, बड़े महोत्सव के साथ हाथी की सवारी पर भगवान की सवारी निकाली, दोपहर में पूजन व स्वामी वत्सल कर संघ भक्ति का लाभ लिया। इधर कुछ स्वास्थ्य लाभ कर गुरुवर्य्या पुनः केकड़ी पधारीं, क्योंकि सिद्धाचल तीर्थ की यात्रा को जाने वाले द्वितीय संघ का आग्रह था।

मालपुरा गुरुतीर्थ में फागुण अमावस्या कुशल जयन्ती के उपलक्ष में आपके द्वारा ही संस्थापित मेले के द्वितीय समारोह पर संघ का

आग्रह भरा आमन्त्रण आया, पर स्वास्थ्य की वजह से आप न पधार सकी। पू० तपस्विनी विज्ञान श्री जी म० मणिप्रभा श्री जी को लेकर जामुनिया, फतेगढ होती हुई मालपुरा पधारी, इधर अजमेर से प्रभा श्री जी, चन्द्रप्रभा श्री जी भी आगये थे। चौदस को रात्रि जागरण, अम्मावस को प्रात ध्वजारोहण, जयन्ती भाषण व चल समारोह एव दोपहर मे गुरुदेव की बडी पूजन, स्वामी वात्सल्य आदि मेले के सारे कार्यक्रम सम्पन्न होने पर नानसी पधारी। इधर केकडी से चरित्र नायिका भी सघ का अति आग्रह होने पर मन्दिर की प्रतिष्ठा कराने के लिए केकडी से नानसी पधार गई थी। प्रतिष्ठा का कार्य क्रम चालू हुआ, विधि-विधान कराने के लिए चित्तौड से यतिवर्य वालचन्द जी महाराज पधारे थे। इस प्रसग पर जयपुर, कोटा, केकडी, बीकानेर, जहाजपुर आदि आस-पास के यात्रीवर्ग भारी सख्या मे उपस्थित थे। जयपुर का नवयुवक मण्डल (भजन मण्डली) आजाने से महोत्सव मे चार चाँद लग गये थे।

नानसी से प्रतिष्ठा कार्य सानन्द सम्पन्न करवा कर आप जेतपुर पधारे। मन्दिर के दर्शन किये, दोपहर को प्रवचन देकर आप करोट पधारे, मन्दिर के दर्शन कर प्रवचन दिया, ग्रामीण जनता वहुत प्रभावित हुई। कई जनों ने कई प्रकार की प्रतिज्ञाएं ली, शीलव्रत भी धारण किया। वहाँ के धर्म प्रेमी ठाकुर साहब व ठुकराणी सा० के आग्रह से रावले मे प्रवचन फरमाया, वे भी बडे प्रभावित हुए। वहाँ से धनोप पधारे, मन्दिर मे प्राचीन मूर्तियों के दर्शन कर प्रवचन फरमाया, किसी समय यह नगरी भी विशाल एव समृद्ध थी। आज

भी खण्डित जिन प्रतिमाएं आदि प्राचीन अवशेष निकलते रहते हैं। वहाँ से विहार कर आप फूलिया कला पधार गईं

६४—फुलिया में प्रतिष्ठा

फुलिया में आप श्री के प्रवचन सुनकर स्थानीय संघने प्राचीन जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार का कार्य चालू किया, प्रतिष्ठा में अभी देर थी। परन्तु प्रतिष्ठा पर पधारने का संघ का बहुत आग्रह था। आपने समय पर जो बन जाए कहकर वहाँ से प्रस्थान कर दिया। कादेडा वालों का कादेडा पधारने का अत्यन्त आग्रह होने से आप कादेडा पधारी, वहाँ प्रवचन दिया, पश्चात् जहाज पुर पधारीं संघ ने स्नेहभरा स्वागत किया नवपद आराधना आपने जहाजपुर में ही की।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन भगवान महावीर का जन्म महोत्सव मनाया।

फूलिया से विहार कर आप श्री सौभाग्यमलजी मेहता के बीस स्थानक तपके उद्यापनार्थ कोटे पधारी। कोटे का कार्य सम्पन्न कर गर्मी की अधिकता से आप कुछ दिन कोटे विराजीं। इधर फुलिया में मन्दिर का जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न हो चुका था। प्रतिष्ठा पर पधारने कीं प्रार्थना फुलिया संघवालों की बहुत थी किन्तु आपका पहुँचना मुश्किल था। वे भी मान नहीं रहे थे अतः हारकर पु० विज्ञान श्री जी म० के साथ चन्द्रप्रभा श्री जी एवं सुरंजना श्री जी

म० को फुलिया प्रतिष्ठा पर भेजा। बडेही महोत्सव से फुलिया मन्दिर की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इधर आपने समाज रत्न प्रतापमलजी सेठिया के आग्रह को मान्यता देकर मदसोर पधारने का निश्चय किया।

कोटे से विहार कर आप ग्रामीण जनता के बीच अहिंसा धर्म का प्रचार करती हुई सघ के आग्रह से रामगज मडी पधारी, वहाँ आप ५ दिन ठहरी। प्रतिदिन आध्यात्मिक विपय पर प्रवचन प्रश्नोत्तर होते। समय किधर गया पता ही नही चलता। वहा से सुनारा होकर भानपुरा पधारी वहा ८ दिन ठहर कर प्रवचन से जनता को जागृत किया। वहाँ के लोगो ने चतुर्मासार्थ वहुत प्रार्थना व प्रयत्न किया, किन्तु आपने मन्दसौर का वचन सेठिया जी को भेज दिया था अत उनकी भावना सफल नही हो सकी।

भाणपुरा दादावाडी का जीर्णोद्धार आपने उपदेश देकर करवाया।

वहा से आप भवानी मडी पधारी, फिर पचपहाड होकर परासली तीर्थ की यात्रार्थ पधारी। परासली तीर्थ की प्रतिमाजी अति प्राचीन व अत्यन्त आकर्षक है। भगवान के दर्शन कर लौटने का मन ही नहीं होता। आप श्री चार रोज वहां विराजी। सवेरे से दोपहर वारह वजे तक आप श्री मन्दिर मे ही विराजमान रहती। आपकी भाव विभोरता देख दर्शक गद्गद् हो जाते थे। परासली से रगेजा, सुवासहा आदि गावों मे ठहरती हुई आप सीतामऊ पधारी।

६५—विश्वप्रेम प्रचारिका

आपका वि० सं० २०१८ का चतुर्मास मंदसोर (दशपुर) में होना निश्चित हुआ। यह आपके संयमी जीवन का ३८वां चतुर्मास था। साथ ही यह मन्दसोर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जानेवाला चतुर्मास था।

जिस समय आपका वि० सं० २०१० का चतुर्मास इन्दौर में हुआ था, तभी से श्रीमान प्रतापमल जी सेठिया की हार्दिक भावना थी कि साध्वी जी महाराज का एक चतुर्मास मंदसोर में हो। पर आप तो इन्दौर से सीधी गुजरात व सौराष्ट्र की ओर चली गईं। भावना में जब सचाई का बल रहता है तब वह प्रायः निकट भविष्य में साकार हो ही जाती है। सौराष्ट्र से आपका विचार बराड की ओर जाने का था। पर अजमेर के शताब्दि महोत्सव ने बलात् आपके चरणों को मोड़ दिया, आपको अजमेर आने के लिए विवश किया। और इसी निमित्त कोटा, अजमेर केकडी, जयपुर, के साथ मंदसोर के भाग्य भी जगे। हमारी चरित्र नायिका ने सं० २०१० की सेठ साहब की भावना को सं० २०१८ में साकार किया।

आषाढ़ कृष्ण तृतीया के दिन आपने मंदसौर में प्रवेश किया, स्वागत समारोह की तो बात ही क्या? सारा मन्दसोर नाच रहा था, अनेकों घरों के द्वार पर आपको बधाया गया। नयापुरास्थित पौषधशाला में आपका प्रवचन हुआ। प्रवचन का शुभ परिणाम यह आया कि श्री झमकलालजी चण्डालिया एवं जीतमलजी डोसी

जिनके कि धर्म से मनमुटाव चलता था वह दूर हो गया। दोनों प्रेम से गले मिले पश्चात् जनकपुरास्थित पौषधशाला मे आप चतुर्मास के लिए पधारी। और प्रतापगढ की अत्यधिक विनती पर हीरा श्री जी माणकं श्री जी आदि के साथ अपनी अध्यात्मरसिक, चारित्रनिष्ठ विदूषी शिष्या श्री विजयेन्द्र श्री जी का चतुर्मास वहाँ करवाया।

वैसे धार्मिक जागृति के आधार पर मदसोर मे विभिन्न गच्छ सम्प्रदायों के मुनिराजों, आर्याओं के चतुर्मास होते ही रहते हैं। किन्तु सगठन, समन्वय एव एकता की दृष्टि से यदि तुलना करें तो मदसोर वाले आपके चतुर्मास को अनुपम एव स्मर्णीय मानते हैं और इसी भावना के आधार पर मदसोर चतुर्मास का सागोपाग वर्णन करते हुए श्री प० मदनलाल जी जोशी ने स्मर्णीय चतुर्मास नाम की एक पुस्तक लिखी है, जिसे सेठ प्रतापमल जी सेठिया ने प्रकाशित करवाया है।

स्थान की दृष्टि से आपका प्रवचन 'गजेन्द्र विलास' मे रखा गया था। यहाँ आपने जैन सूत्रा के सिरमौर भगवती सूत्र पर प्रवचन प्रारम्भ किया। वृद्ध महानुभावों का कहना है कि ऐसा प्रवचन हमने हमारे जीवन मे कभी नही सुना। प्रवचन मे जैन, जैनेतर, मुसलमान भाई आदि सभी पधारते। मौलाना साहब तो आपके परम भक्त बन गए, अब भी दर्शनार्थ पधारते रहते हैं, वे रात्रि मे भोजन भी नही करते।

महीने मे दो-तीन बेर जाहिर प्रवचन भी होते। आपकी प्रशसा मदसोर के बच्चे-बच्चे की जबान पर थी।

एकसे लेकर ३१ उपवास तक की तपस्याएँ हुई। आपकी शिष्याएँ चन्द्रप्रभा श्री जी, मनोहर श्री जी एवं सुरंजना श्री जी म० ने भी अठाई की तपस्या कीं। श्रीमान प्रतापमल जी साहब की पुत्रवधू एवं पुत्री ने भी अठाई की थी। मंदसोर के सभी मन्दिरों में पूजा प्रभावना का ठाठ था।

प्रायः सर्वत्र सर्वदा एक ही स्थान पर बैठकर प्रवचन सुनने वाली हमारी समाज क्षमा एवं विश्वमैत्री के परम प्रतीक पर्यूषण पर्व के दिनों में तो अलग-अलग अपनी डफली पर अपना राग अलापना शुरू कर ही देता है। परन्तु मन्दसोर में इस वर्ष हमारी चरित्र नायिका के त्रिसूत्री सिद्धान्त—(१) समता, (२) स्नेह, (३) संगठन को अपना कर समस्त जैन समाज ने एक ही स्थान पर बैठकर श्री कल्प-सूत्र का श्रवण किया। इसे हम पारस्परिक प्रेम, एकता का अनुकरणीय उदाहरण कह सकते हैं। यहाँ जितने भी उत्सव, महोत्सव हुए उन सभी में भिन्न-भिन्न प्रचलित गच्छों व सम्प्रदायों के अनुयायी सभी बिना भेदभाव शामिल होते थे। इस चतुर्मास में भी प्रायः जैन समाज में मनाई जाने वाली सभी जयन्तियाँ मनाइ गई।

चतुर्मास समाप्त होते ही आपका विहार शिवना नदी के उसपार महादेव घाटपर बसे खिलचीपुरा ग्राम की ओर होने का था। इसी समय महादेव घाट पर परमहंस स्वामी प्रत्यक्षानन्द जी महराज के नेतृत्व में पञ्चकुण्डी यज्ञ एवं श्री महादेव की प्रतिष्ठा का आयोजन चल रहा था। साध्वी जी के प्रवचनों से प्रभावित मंदसौर की जैन तथा जैनेतर जनता के मानस में उमड़ती हुई पवित्र समता स्नेहमयी

धारा ने विशालतर रूप लिया। स्वामी जी के साथ ही हमारी चरित्र नायिका के प्रवचन की व्यवस्था की गई।

इसी उत्तम भावना के फलस्वरूप मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा को प्रात:काल ६ बजे शिवना नदी के सुरम्य तट पर बालूकामय विशाल प्रागण मे २० हजार जन-सख्या के बीच जैन आर्यारत्न हमारी चरित्र नायिका एव वैष्णव सन्त श्री प्रत्यक्षानन्द जी महाराज का अनुकरणीय सम्मेलन एव प्रवचन हुआ।

स्वामी जी ने आनन्दकन्द भगवान श्री कृष्ण एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के आदर्श जीवन पर प्रकाश डालते हुये, जैन तीर्थंकर श्री ऋषभदेव एवं भगवान महावीर स्वामी की लोक-कल्याण-कारी अहिंसा पर सुन्दर ढग से प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि भगवान श्री ऋषभदेव को हमारे शास्त्रों मे आठवाँ अवतार माना है, जैन प्रथम अवतार मानते हैं, इसमे भेद क्या पडा, एक ही तो बात है। सती चन्दनबाला के आदर्श जीवन पर भी स्वामी जी ने सुन्दर व्याख्या की। तत्पश्चात् हमारी चरित्र नायिका ने भगवान महावीर की विश्वमैत्री स्याद्वाद समन्वय दृष्टि से षट दर्शन की सरल एव रोचक विवेचना करते हुए भगवान श्री राम एव श्रीकृष्ण के आदर्श जीवन तथा सिद्धान्तों पर इतने सुन्दर ढग से प्रकाश डाला कि उपस्थित जन समूह के एक स्वर से राम और महावीर के जय जय कारों से आकाश गूंज उठा

चतुर्मास के बाद एक दिन सार्वजनिक व्याख्यान मे त्रिस्तुतिक पण्डित वर्य मुनि श्री सौभाग्य विजय जी म० तथा स्थानक वासी

श्रमण विद्वद्वर्य श्री केवल मुनि जी म० दिगम्बर क्षुल्लक वर श्री पूर्ण सागर जी म० तथा स्थानक वासी आर्यारत्न श्री कमलावती जी के साथ हमारी व्याख्यान भारती जी के प्रवचन का दृश्य अनुपम था जिसकी प्रशंसा मालवे के गांव-गांव में फैली थी मंदसोर के पत्रों ने उसे विशेष महत्व दिया था कई वेर आप के सार्वजनिक प्रवचनों में केवल मुनि जी म० के प्रवचन होते थे।

आस पास के गांवो व नगरों की जनता काफी संख्या में बसों की सुविधा का लाभ उठाकर प्रतिदिन आपके प्रवचन में आती थीं। दूरस्थ बम्बई, फलौदी, अजमेर, कलकत्ता, हैद्रावाद, वीकानेर, कोटा, जयपुर, देहली, पादरा आदि शहरो के व्यक्ति भी वहुत वडी संख्या में आते थे।

चतुर्मास के पश्चात् हमारे पूर्व परिचित जयपुर निवासी गृहस्थ सन्त श्री अमरचन्द जी नाहर की सुपुत्री, मिलापचन्द जी खवाड की धर्मपत्नी सौभाग्यवती भंवरीबाई की प्रबल दीक्षा-भावना हो जाने से, मन्दसौर आई और आपके सामने दीक्षा की बात रखी। उन्हें महाराज श्री ने वहुत समझाया, दो वर्ष ठहरकर दीक्षा लेने की सलाह दी, पर वे तो दो महीने भी ठहरने को तैयार नही थी। आपने कहा, देखो तीन लड़को में से वड़े को दो वर्ष वाद घर संभला कर दीक्षा लेना। पर वे तो मान ही नहीं रही थीं, उनका कहना था कि मैंने ग्यारह साल से अपनी भावना को दबा रखा है। छोटा लड़का ग्यारह साल का हो गया, अव मुझे कोई वन्धन नहीं है। यों तो संसार के जाल छूटने के भी नहीं, अतः मुझे तो अव जल्दी दीक्षा लेनी

है। वे पुज्या विजयेन्द्र श्री जी म० के दर्शनार्थ प्रतापगढ जाकर जयपुर आज्ञा लेने गई। इधर महाराज श्री ने उनके पिताजी व पति को सारे हाल का पत्र दिया और लिखा, "कि देखो सोच-समझ कर आज्ञा देना। आप लोग स्वय समझदार हैं, आगे पीछे सभी परिस्थिति विचार कर आज्ञा देना। पीछे पश्चाताप न करना पडे आदि।"

भवरीवाई ने तो जयपुर जाकर न जाने क्या मन्त्र पढा कि पिता व पति दोनों सहर्ष दीक्षा देने को तैयार हो गए एव पिता व पति दोनों उनको साथ लेकर मदसौर पधारे और दीक्षा देने की प्रार्थना करने लगे। सभी आश्चर्य चकित थे कि पिता की लाडली पति की पत्नी तीन लडकों की माता, भरा-पूरा परिवार, श्रीमन्त घर, आज्ञा मिलना सहज नही माना गया था, पर बात सच थी।

दीक्षा समारोह शुरू हुआ सास, पिता, भाई, भाभी, पति, पुत्र आदि परिवार मदसौर आया। जनता ने त्याग-भावों की प्रशसा मे जय-जयकारों से आकाश गूजा दिया।

शुभदिन देख मगल सूत्र (डोरा) बांधा गया। अनेक महानु-भावों ने भवरीवाई को अपने घर ले जाकर आगन पवित्र किया। दीक्षा के पूर्व राजेन्द्र विलास मे समारोह पूर्वक भवरीवाई को सम्मानित किया गया, अनेकों ने आशीर्वाद दिए। पश्चात् श्रीमान प्रतापमल जी सेठिया ने चन्दन का हार उनके गले मे पहनाते हुए इस प्रकार प्रेरणात्मक शब्द कहे, "जिस प्रकार यह चन्दन अपनी

सुगन्ध से विश्व को आकर्षित करता है, उसी प्रकार संयम-सौरभ से आप भी विश्व को आकर्षित करें।

दोपहर में दीक्षा का वृहद् जुलूस निकाला गया जो सर्वत्र घूमकर नागरिक जनता द्वारा स्थान-स्थान पर भंवरीवाई को सम्मानित करता हुआ, नियत स्थान पर पहुँचा। इस त्याग की चारों ओर प्रशंसा हो रही थी।

अमरचन्दजी व मिलापचन्दजी दोनों हाथों इस प्रसंग पर धन खर्च करते थे। आप के पिता श्री अमरचन्दजी ने इस अवसर-पर उपस्थित सभी व्यक्तियो को चाँदी के सिद्धचक्र गट्टाजी की प्रभावना देकर संघ का सन्मान किया।

मंदसोर एवं बाहर के हजारों लोग एकत्रित थे स्थानक वासी-मुनिराज केवल मुनि जी म०, दिगम्बर क्षुल्लकवर्य पूर्ण सागर जी म०, महासती कमलावती जी म० एवं चतुर्विध संघ के समक्ष हमारी चरित्र नायिका ने भंवरी वाई को सर्वपापमय व्यापारों से विरत होने रुप प्रतिज्ञा दिलवा कर दीक्षित किया नाम श्री निर्मला श्री जी रखा-गया।

मुनि मंगलसागरजी, केवल मुनिजी क्षुल्लक पूर्ण सागर जी, कमलावतीजी म० ने व आपने दीक्षा के महत्व पर दीक्षिता के आचार विचार एवं संयम साधना पर विशद रुप से प्रकाश डाला।

इसी चतुर्मास में सेठ प्रतापमल जी सेठिया के आग्रह से आपने श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म०, मनोहर श्री जी म० को प्रयाग साहित्य सम्मेलन की मध्यमा (विशारद) की परीक्षा दिलवाई। एवं सुरंजना

श्री जी म०, मणि प्रभा श्री जी म०, एव मुक्ति प्रभा श्री जी म० को साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा दिलवाई। जिसका परीक्षाफल सुन्दर आया।

इनके अध्ययन का सारा भार मदसौर के पण्डित प्रवर श्री मदन लाल जी जोशी ने निःशुल्क समाला।

इसी चतुर्मास मे आप श्री के शुभ निर्देश से "आर्यरक्षित सूरि जैन समा" एव "चरित्र निर्माण सघ" की स्थापना की गई। इस सघ मे ऐसे नियम रखे गए हैं जिनका पालन करने पर मानव क्रमशः मानवता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है। इस सघ मे यह सरलता है कि इसके सभी नियम पूर्णरूप से पालन करना अनिवार्य नहीं, जिससे जितना बने उतना पालन करे। किन्तु क्रमश॰ पूर्ण नियम पालन मे प्रयत्न शील रहना आवश्यक है। इसके नियमों की नकल परिशिष्ठ मे दी गई है।

मदसौर मे इसका सुपरिणाम यह हुआ कि सैकडों लोगों ने आप को प्रतिदिन सामायिक, मदिर-दर्शन पूजन, ब्रह्मचर्य व्रत रात्रि भोजन त्याग, सप्त व्यसन परिहार आदि की प्रतिज्ञाएं भेंट की। ग्यारह दम्पती युगलों ने आजीवन ब्रह्मचय व्रत पालन का नियम लिया। सैकडों ने ब्रह्मचर्य व्रत की मर्यादा की।

६६—संयम का प्रभाव

मदसौर पर इन्द्र महाराज की पूर्ण कृपा रहती है। परिणाम स्वरप शहर मे बाढ भी आ जाती है। घरों मे दो-दो मजिल तक

पानी भर जाता है। सड़कों एवं गलियों में बक्स, थाली, लोटे, चकले, बेलन वहते नजर आते है। काफी सावधान रहते हुए भी लोग अपने सामान की बर्बादी कर ही बैठते हैं।

पर्यूषण में एकदिन आप श्री राजेन्द्र विलास में प्रवचन कर रही थी। इन्द्र महाराज ने कृपा वृष्टि शुरु की जोरों का पानी आया। शहर के सभी नदी नाले भर गए। पानी शहर में आ गया, सभी सड़कें जलमग्न होने लगी। चारों ओर हो हल्ला मचा। आप श्री राजेन्द्र विलास के ऊपर के कमरे में थी। नीचे श्रावक लोग पौषध में बैठे थे। पानी का वेग बढ़ता देख लोग रात्रि में ११ बजे आप के पास आए और बोले, "जल्दी चलिए बाढ बढ़ रही है डूबने का खतरा है। राजेन्द्र विलास नीचा है। आपने कहा :—

भाई। रात्री में नीचे पानी, ऊपर पानी कहो हम कैसे चलें? आप जरा भी चिन्ता न करें, जैसा ज्ञानी ने ज्ञान में देखा हैं वैसा ही होगा, अनहोनी तो होवेगी नहीं अतः चित्त को अधीर न करें। शान्ति से घर जाएं, अपने बाल बच्चों को संभाले। भाद्रपद अमावस्या का दिन था अगले दिन भगवान का जन्मोत्सव मनाना था। आहार पानी की बात तो रही किनारे पर आप को इन्द्र महाराज ने उपाश्रय में भी नहीं आने दिया। राजेन्द्र विलास के आंगन में नदी लहरा रही थी। संघ के व्यक्ति चिंतित थे। आप ऊपरी मंजिल पर ध्यान मग्न विराजमान थी। दिवस बीता रात आई पानी ने विराम का नाम भी नहीं लिया। सभी साध्वी जी भगवान के स्मरण में दत्त चित्त बैठी थीं। संघ के व्यक्ति फिर आए, पर आप दृढ़ बनी

बैठी रही, रात्रि काल, ऊपर से घनघोर वर्षा, नीचे बहता पानी एक जैन मुनि ऐसे समय मे स्थान छोड बाहर कैसे जाए? उपसर्ग परिषह सहने मे ही साधुत्व है, भागने मे नही। पर सघ के व्यक्ति आप को विनाश के मुह मे छोड कर कैसे जाते? रात मे एक वजे बाढ ने उग्र रूप धारण किया। ऊपरी मजिल तक पानी आ पहुँचा लोग अब धैर्य खो चुके थे। आपने देखा अब ये लोग किसी भी प्रकार नही मानगें और हमे यहाँ से येन केन प्रकारेण ले जाकर ही चैन लेंगे। तब आपने कहा, 'धीरज रखिए, पानी को जितना बढना था उतना बढ़ चुका अब एक इच भी पानी बढने वाला नही है। जैसे ही आप के मुखारविंद से ये शब्द निस्सृत हुवे, वैसे ही पानी उतरना शुरू हुआ। लोग हर्षनाद करने लगे। कहाँ तो जीवन-मरण का प्रश्न था, और कहाँ भोर होते ही मगल प्रभात शुरू हुआ। प्रतिपदा को भगवान का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। आप की वचन सिद्धि के प्रमाण कई वेर मिल चुके हैं। लोग इसे चमत्कार मानेगे परतु सयम निष्ठ आत्माओं के सयम वल के समक्ष ये घटनाए सामान्य ही हैं।

क्रमेण मदसौर से विहार का समय आया। कोई भी नहीं चाहता था कि आप वहाँ से अन्यत्र जाएँ, पर जैन साध्वाचार की रीति-नीति के आधार पर आप का विहार-दिन निश्चित हुआ।

गजेन्द्र विशन मे आप के अभिनन्दनार्थ समारोह आयोजित हुआ। आप श्री के चरणों मे अभिनन्दन पत्र समर्पित कर, समस्त सघ एव मदसौर की जनता ने आप को "विश्व प्रेम प्रचारिका" की

योग्य पदवी से अलंकृत किया। डिग्री कालेज के प्रोफेशर शर्मा ने भी श्रद्धा भरे दो शब्द कहे।

श्वेताम्बर श्री संघ ने सेठ प्रतापमल जी सेठिया को भी अभिनन्दन पत्र प्रदान किया, क्योंकि आपके सत् प्रयत्न स्वरूप ही मन्दसौर को आप श्री के परिचय व चतुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हो सका था।

चतुर्मास में आप श्री की शिष्याओं को निःशुल्क अध्यापन कराने वाले पण्डित मदनलाल जी जोशी को भी अभिनन्दन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

६७—ग्रामीण जनता में

मंदसौर से पोष कृष्णा नवमी को प्रयाण कर अनेक व्यक्तियों के साथ आप श्री बोतलगंज होकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्मोत्सव के शुभ दिन पोष वदि दसमी को बही पार्श्वनाथ पधारी। यह तीर्थ मंदसौर से १० मील पर है पौष वदी दसमी के दिन यहाँ मेला लगता है। इस तीर्थ में प्रतिमाँ जी वड़े आकर्षक व चमत्कारी हैं। मन्दिर भी बड़ा मनोहर है। भगवान के दोनों ओर पद्मावती देवी व धरणेन्द्र देव हैं। दादा गुरु देव के छोटे-से चरण है सामने दीवार पर अभय देव सूरि के जीवन सम्बन्धी ३-४ चित्र अंकित है मेले के अवसर पर निकटवर्ती जनता काफी संख्या में पहुँचती है। इस वर्ष तो आपके पहुँचने के कारण

यात्रियों के आवागमन की बात ही क्या पूछना। सानन्द भगवान पार्श्वनाथ का जन्मोत्सव मनाकर, आप श्री पीपल्या स्टेशन पधारी। वहाँ चार दिन तक प्रवचन पीयूष वरसा कर कई व्यक्तियों को मासाहार, सप्त व्यसन परिहार, करवाकर, कुकडेश्वर वालों की दीर्घकालीन प्रार्थना स्वीकार कर, मल्हार गढ मे जागृति का शख नाद करती हुई, नारायणगढ पधारी। नारायणगढ का सघ हर्ष-विह्वल-सा हो उठा। उत्साह पूर्वक आपका प्रवेश हुआ। छोटे-छोटे ग्राम, सरल धर्मप्रिय जनता का हृदय आपके चरणों मे लोटने लगा। ऐसा हर्षातिरेक मानों रक ने स्वर्ग का राज्य पाया हो। प्रतिदिन सार्वजनिक प्रवचन होने लगे और मास, मदिरा, प्राणीवध आदि के त्याग की प्रतिज्ञाएं ली जाने लगी। इतना उत्साह कि जिसकी सीमा नही। जनता के आग्रहवश आचार्यदेव श्री वीरपुत्र आनन्दसागर सूरीश्वरजी म० की प्रथम वर्षी नारायणगढ मे मनाने के लिए पूरे आठ रोज तक रुकना पडा। यहा ही बूढा ग्राम का सघ आ वैठा। ग्राम्य जनता के स्नेहभरे आग्रह की अवहेलना नही कर पाई। नारायणगढ से चल पडी बूढा ग्राम की ओर। बूढा मे मदिर तैयार था, पर प्रतिष्ठा रुकी हुई थी। आप श्री के सामने वहा वालों ने प्रतिष्ठा का प्रश्न उठाया कि चारों ओर से उत्साह उमड पडा, चन्दा भी हो गया। पर आपकी इच्छा प्रतिष्ठा करवाने की कम होने से दो रोज ठहर कर मल्हारगढ पधार गई। वहा गच्छाधिपति श्री सुखसागर जी म० सा० की स्वर्ग जयन्ती मनाई गई। इसी प्रसग पर मन्नालाल जी घीसालालजी पटवा, एव मणासा से फूलचन्दजी

बापूलाल जी मनावत सपरिवार आए एवं कुकडेश्वर व मणासा पधारने की प्रार्थना की। पश्चात् आप मणासा पधारी। कई जन व्यसनादि त्याग निर्मल बनें। मणासा से चलकर आप श्री कुकडेश्वर वालों की दीर्घकालीन प्रार्थना एवं अपने वचनानुसार कुकडेश्वर पधारी। वहां आपका बड़ा ही भावभरा स्वागत हुआ। संघ का उल्लास दर्शनीय था।

कुकडेश्वर में प्रवेश के समय हर्षातिरेक में श्री-श्रीलाल जी पटवा ने अपने गृह द्वार पर सपत्नीक आजीवन ब्रह्मचर्य पालन की पावन प्रतिज्ञा ली। अन्य लोगों ने भी ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार किया। "भक्तों के वश भगवान्" वाली उक्ति को यथार्थ करने के लिए आपने पूरा एक मास यहां व्यतीत किया। स्थानकवासी साध्वीजी बीकानेर की तरफ से पधारे थे, उनसे भी आप मिली दोनो का साथ में प्रवचन हुआ। इसे देख वहाँ का संघ बड़ा प्रसन्न व प्रभावित हुआ। बूढावाले भी फिर आए और बोले प्रतिष्ठा का मुहूर्त फाल्गुन शुदि सप्तमी का आचार्य नन्दन सूरि म० ने भेजा है और इसे मान्य कर प्रतिष्ठा की तैयारी शुरू कर दी है। अतः आपको अवश्य पधारना होगा।

कुकडेश्वर से विहार कर आप रामपुरा पधारीं। रामपुरा में स्थाकवासी संध की बहुलता है आपके प्रवचन आपकी व्यवहार दक्षता ने सबको मुग्ध कर लिया, आप यहाँ अधिक दिन ठहरतीं पर माताजी विज्ञान श्री जी म० की तबियत खराब हो जाने से आप पुनः कुकडेश्वर, मणासा आदि गावों में एक-एक दिन ठहरतीं हुई

मासाहार, शराव छुड़वाती हुई रावजी पीपल्या गाव पधारी। यहा बीच वाजार मे प्रतिदिन प्रवचन होने लगा। ग्रामाधिपति ठाकुर एव ठकुराणीजी सपरिवार प्रतिदिन पधारते। सैकडों व्यक्ति मासाहार त्याग की प्रतिज्ञा मे आवद्ध हुए। वूढावाले पुनः आधमके, आपको ले जाये विना हम प्रतिष्ठा नही कराएंगे। ऐसे उनके भक्ति हठ के आगे पराजित होकर आप वूढा पधारी।

मदसौर मे दीक्षित निर्मला श्री जी की वडी दीक्षार्थ उनको लेकर कई साध्वी जी को रतलाम इन्दौर की ओर जाने की आज्ञा दी। कारण आचार्य जिन कवीन्द्रसागर सूरीश्वर जी म० के समाचार गोधरा से आए थे कि वे रतलाम इन्दौर होकर वापिस पालीताणा जाएंगे। अतः साध्वी जी को वडी दीक्षार्थ इधर विहार कराओ। उस आज्ञानुसार आपने पू०-विनीता श्री जी विजयेन्द्र श्री जी एव निर्मला श्री जी को इन्दौर की ओर विहार करवा दिया।

६८—सोचा क्या और हुआ क्या ?

वूढे के सघ ने जब यह समाचार सुना तो वह भी अपने लोभ का सवरण न कर सका। तुरन्त कई व्यक्ति दाहोद गोधरा आचार्य श्री के पास प्रतिष्ठा पर पधारने की विनती लेकर गए। सरलस्वभावी आचार्य देव ने "मुनिको तो चलना ही है" और उसके सिवाय ही क्या है ?, चलो वूढे ही सही कहकर वूढे की ओर प्रयाण कर दिया।

साध्वी जी म० को सूचना मिली कि आचार्य देव वूढा पधार रहे

हैं अतः वे वापिस लौट गईं और मंदसौर में आचार्य देव के दर्शन कर बूढ़ा पधारी इन समाचारों से चरित्र नायिका का हृदय हर्ष से भर गया। यथा समय आचार्यदेव ने अपने शिष्य श्री कल्याण सागर जी म०, तीर्थसागरजी म० एवं कैलाश सागर जी म० के साथ बूढ़ा में प्रवेश किया। सभी साध्वी जी म० के साथ आप श्री जी स्वागतार्थ सामने पधारी। बूढ़ा की जनता हर्षविभोर थी। आचार्यदेव व आपके सानिध्य में प्रतिष्ठा का आयोजन सम्पन्न होगा, इससे लोग बड़े ही उत्साही एवं प्रसन्न थे। पर नियति के क्रूर विधान के समक्ष मानव का सोचा हुआ सफल नहीं होता और न वह यह जान ही पाता है कि उसका सोचा सफल होगा या नहीं।

कुकडेश्वर वासी श्री लालजी पटवा को आमन्त्रण मिला कि बूढ़ा में आचार्य श्री की निश्रा में प्रतिष्ठा महोत्सव होगा। वे भी प्रवेश के समय आ पहुँचे। मेडता रोड में आचार्य श्री जिन हरिसागर सूरीश्वर द्वारा स्थापित वोर्डिंग व छात्रावास है। वहां की भजन व नृत्य मण्डली भी आ पहुँची। समारोह पूर्वक फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा शामको बूढ़ा में आचार्य जी का प्रवेश हुआ। आचार्य देव को ग्राम पंचायत भवन में ठहराया गया।

द्वितीया के दिन सवेरे मन्दिर के निकट बाजार में आचार्यदेव का प्रवचन सुनकर सभी अति प्रसन्न हुए। दोपहर में अठाई महोत्सव निमित्त नवपद पूजा पढ़ाई गई। तृतीया और चतुर्थी संयुक्त थी, उस दिन प्रवचन पश्चात् आचार्य देव ने फरमाया कि, "आज रात में तो मौत सामने आकर खड़ी हो गई हो, ऐसा प्रतीत

हुआ। हार्ट मे जोर से दर्द हुआ, पर दस मिनिट पश्चात् साफ हो गया, सम्भव हो वायु से ही दर्द हुआ हो। सारा दिन सानन्द शान्ति से व्यतीत हुआ, शाम को कुछ औषध भी ली। रात मे बारह बजे फिर वही दर्द आया और दस मिनिट पश्चात् पुन शान्त हो गया, मानो मौत आँखमिचौनी ही न खेल रही हो। सवेरे सभी दर्शनार्थ पधारे, स्थानीय चिकित्सक को दिखाया, उसने वायु का ही दर्द बतलाया।

आचार्य देव ने हमारी चरित्र नायिका से कहा —

बैठजाओ और बडी दीक्षा की विधि हमारे सामने ही पढलो, न जाने कब क्या जरुरत आ जाए। यों भी मेरा विचार है कि महत्तरा साध्वी जी से योगोद्वहन का मार्ग खोल दूं। देखो समुदाय के सभी श्रमण, श्रमणियो से परामर्श लेकर बाद मे ऐसा कदम उठाऊंगा।

आचार्य देव ने बडी दीक्षा की विधि आद्योपान्त आप को पढाई आप श्री ने कहा यदि आपकी तबियत ठीक न हो तो आज व्याख्यान का कार्य मैं निपटा दूं? आचार्य श्री ने कहा, "हाँ आज तो तुम्ही निपटा दो। व्याख्यान पश्चात् आहार पानी से निपट कर आप आचार्य श्री के पास पधारी, आते ही देखा कि आचार्य श्री तो अपने सिर व दाढी के बालों का लुचन कर चुके हैं। आपने कहा, "यह क्या आराम करना था के स्थानपर आपने लोच किया? तबियत स्वस्थ थी लोच फिर भी हो जाता। आचार्य श्री ने कहा —

बैठा बैठा क्या करता? यह भी काम करना ही था, निपटा

दिया। आचार्य अप्रमत्त स्वभावी थे, श्रम ही उनका जीवन था। खाने पहनने में उनकी दशा एक अवधूत मुनि की दशा थी। अच्छा खाना या बढ़िया पहनना उनके स्वभाव में ही नहीं था। जैसा सामने आया पहन लिया, खा लिया। सारा दिन वाचन मनन, चिंतन, लेखन, काव्य रचना आप का प्रिय विषय था। प्रभु भक्तिमय काव्य रचना में आप की कितनी ही पुस्तकें प्रकाशित हैं। जिनकी पुनः २ आवृत्तियाँ छपती ही रहती है। मेरा अपना उनसे निजी परिचय नहीं वत् होने से मे विशेष कुछ भी उनके जीवन पर प्रकाश नहीं डाल सकती, पर हमारी चरित्र नायिका द्वारा सुना गया उनका जीवन श्रद्धा का विषय हैं। संस्कृत में भी आपकी कई रचनाएँ हैं। रचनाएँ आपकी विद्वत्ता एवं अध्यात्म ज्ञान का खासा दिग्दर्शन कराती हैं।

दोपहर में बारह बजे पुनः दस मिनिट के लिए दर्द उठा, फिर शान्त होगया। उस दिन सारा दिन आचार्य श्री ने तत्व चर्चा ही की। प्रश्न-उत्तर, जो भी प्रश्न करता उत्तर पाकर प्रसन्न हो जाता था। शाम साढे पांच बजे तक सभी साध्वी जी उनके पास विराजे थे। वेर वेर दर्द उठने से मन में सभी चिन्तित थीं। आपने हेम गर्भ की गोली आचार्य श्री के पास भिजवाई और कहलाया कि इसे लेने से वायू का दर्द शान्त रहेगा। आचार्य श्री को गोली घिसकर पिलाई गई माणकचन्दजी वक्षी पासमें वैठे थे। आचार्य श्री ने फरमाया अपने कलकत्ते चलने का कार्यक्रम वना लें यहाँ से इन्दौर होकर सीधे कलकत्ता चलें। पश्चात् वूढा का श्रावक वर्ग आया, प्रतिष्ठा सम्बन्धी

वात चीत की। इसी प्रकार रात्रि के ग्यारह वज गए। आचार्य श्री ने विश्राम किया। सोते ही हारा थका शरीर निद्रा मग्न हो गया।

दिन मे यह भी विचार किया गया था कि प्रतिष्ठा पश्चात् शीघ्र ही मदसौर जाकर डाक्टर को बताया जाएगा कि दर्द क्यों उठता है ? हमारी चरित्र नायिका भी मदसौर का विचार करने लगी।

रात्रि मे ग्यारह बजे अचानक फिर वही दर्द आया। शिष्य कल्याण सागर जी सेवा मे लगे। आचार्य श्री ने कहा नवकार मन्त्र वोलते जाओ। साध्वी जी म० को चम्पालालजी बक्षी को एव श्री लालजी पटवा आदि श्रावकों को खबर दी गई। वे लोग पहुँचे-पहुँचे इतने मे तो नमस्कार महा मन्त्र के शुभस्मरण व ध्यान मे नमो अरिहंताण की पवित्र ध्वनि के साथ हिचकी आई और सब कुछ समाप्त हो गया। पचमी शनिवार साढे बारह बजे रात्रि मे झगमगाता दीपक अस्त हो गया। शिष्य परिवार वेदना से विचलित हो गया। हमारी चरित्र नायिका का हृदय हाहाकार करने लगा। सघ व्यथाभिभूत हाय मल रहा था। क्या सोचा था और क्या हो गया? किसी की कल्पना मे भी नही आया था कि आचार्य श्री का स्वर्गवास इतना शीघ्र यों हो जाएगा। उनकी मुखमुद्रा ध्यानस्थ योगी सी लग रही थी। पूर्ण स्वस्थ शरीर था। किसी प्रकार की बीमारी जन्य शिथिलता नजर नही आ रही थी। फिर भी यथार्थ-यथार्थ ही था, कल्पना की कोमल धरा किस कामकी ? आचार्य श्री कवीन्द्र सागर सूरी का देहान्त हो गया यह कठोर सत्य सभी को मानना

पड़ा। मानव अपने मनकी चाहता है, पर भावी अपने मन की करके मानती है विश्वास के लिए डाक्टर को बुलाया गया यहां वेचारा डाक्टर क्या करता ? उपचार का अवकाश ही खत्म हो गया था। बिना आत्मा की देह मिट्टी थी। मिट्टी में प्राण संचार करना उसकी शक्ति के बाहर की वात थी। वह भी जब हाथ मलकर खड़ा हो गया। तब सब लोग रो उठे। यह क्या हो गया ? आश्चर्य मिश्रित भयंकर वेदना सभी के चेहरों पर थी। हमारी चरित्र नायिका का चेहरा अन्तर व्यथा से श्याम हो गया। नयन शून्यता से भरे वरस रहे थे। विज्ञान श्री जी म० आदि समस्त साध्वी मंडल विकलता से बेचैन खड़ा था। मृत्यु के विश्व व्यापी डंक से बचने बचाने की शक्ति किसी भी संसारी हस्ती के हाथों में नहीं थी। प्रतिष्ठा की आनन्दमयी मंगलवेला में विषाद के बादल वरसने लगे। आसपास तुरन्त समाचार फैल गए। लोगों की टोलियां आस पास के गांवों से आने लगी। यो काफी लोग प्रतिष्ठा के कारण एकत्रित भी थे ही। सबेरे ही जलयात्रा का प्रोग्राम होने से अनेक स्थानों के लोग बैलगाड़ियों की रणकार के साथ मंगल गायन गाते हुए भी आ रहे थे। उन्हें इस शोक समाचार का पता ही नहीं था। पहुँचते ही शोक संतप्त लोगों को देख वे लोग आश्चर्य चकित हो रोने लगते। वूढ़ा में तार व फोन की सुविधा न होने से दूरस्थ शहरों व गांवो में समाचार नहीं पहुंच पाए। यद्यपि चार पांच व्यक्ति उसी समय रात में ही तार फौन करने व शव यात्रा की तैयारी का सामान लेने मंदसौर चले गए थे।

श्रीमान प्रतापमल जी सा बम्बई थे उनके सुपुत्र घनश्यामल जी से मिलकर भोपाल रेडियो से सम्पर्क साधकर इसकी सूचना प्रसारित भी की परन्तु लोगों को इस बात पर विश्वास नही आ रहा था। सामने रविवार आ गया। अतः खबर समाचार सर्वत्र नही जा सके। लोग ट्रकों मे भर-भर कर बूडा पहुँचे, सारा संघ शोक-मग्न था।

जिस दिन, जिस समय रथयात्रा रखी गई थी, उसी दिन, उसी समय आचार्यदेव की शवयात्रा प्रारम्भ हुई। शोकग्रस्त दर्शकों से बूडा गाव के मार्ग खचाखच भरे थे। अधिकतर लोग प्रतिष्ठा जुलूसमे शामिल होने आ रहे थे यहाँ का दृश्य देख बावले हो रहे थे।

"विधि के विधान टारे नाही टरे" आचार्य देव के स्वर्ग-गमन का समय व स्थान विधि ने उनके जन्म के साथ ही निश्चित कर दिया था। पर हम अनभिज्ञ थे, इसी अज्ञान का परिणाम यह रंग में भंग था।

हजारों लोगों के बीच आचार्यदेव का पार्थिव शरीर चन्दन की चिता पर धू - धू कर जल उठा।

संघ चिन्ता में निमग्न हो गया। साल भर पहले ही आचार्य श्री ज्ञानसागर मुनीश्वरजी के देहावसान की दुखद घटना भूले ही नहीं थे कि यह फिर आघात आया। किन्तु इस घटना का भावी कुछ ऐसा न जान सका होगा था। दूसरे दिन प्रतिष्ठा का पूर्ण होने से उसी दिन रात्रि में शोक सभा मंदिर के निकट की

पंडाल में मनाई गई। उनकी जीवनकी विशेषताओं पर यह यह मंच से जिस मनन आपने व श्रीमान जी पटवारी प्रधान शाला का समय उपस्थित जनता जोर से रो पड़ी।

उसी सभा में श्रीमान जी पटवा के प्रस्ताव पर बूढ़ा में आचार्य श्री का स्मारक बनाने की योजना बना कर सभा विसर्जित की गई। लगभग ढाई हजार की निधि वहीं ही एकत्रित हो गई थी।

इसी सभा में स्वर्गगमन के दिवस की स्मृति में फाल्गुन शुक्ला छठ के दिन पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा के साथ बूढ़ा गांव में प्रतिवर्ष मेला लगाने का निश्चय किया। इस प्रस्ताव का समर्थन श्रीमान प्रभुलाल जी पटवारी, पटेल साहब ने किया।

दूसरे दिन प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न हुआ। बड़ी दीक्षा का आयोजन स्थगित करना पड़ा।

आचार्य श्री की माता जी श्रीमती बवू बाई इस समय पालीताणा में थी। क्योंकि आचार्य श्री पालीताणा ही पधारनेवाले थे। पर भावि ने चरण घुमा दिए और वे बूढ़ा संघ के आग्रह पर इधर आ गए। बारह-बारह संतानों को खोकर बवू बाई मात्र आचार्य श्री के सहारे ही जीवन बिता रही थी, उनका जीवन आधार अब और कौन था? पर विधि ने इस होनहार तीसरी सन्तान को भी छीन लिया। मृत्यु से बचाने के लिए ही जिसे संयम मार्ग पर चढ़ाया था, वह भी आज गए। माताकी वेदना का वर्णन कौन लोह हृदय वज्र लेखनी करने में समर्थ हो सकेगी। उनका दिमाग खराब हो गया और अन्त में वे भी पुत्र की राह गई।

यथासमय सभी कार्य सम्पन्न करवाकर अपने अमूल्य आचार्य देव को खोकर कल्याण सागर जी म० आदि मुनिराजों एव चरित्र नायिका ने वहाँ से विहार किया।

बूढा से विहार कर आपश्री सभी के साथ नारायणगट मे प्रवेशी। वहाँ आचार्य श्री के स्वर्ग निमित्त अठाई महोत्सव करवाया।

"मुनिका मरण व जीवन दोनों ही महोत्सव होते है।" जो ससार त्याग कर त्यागो जीवन जीते हैं, उनका मरण भी धन्य हो उठता है।

वहाँ से नीमच सघ के आग्रह पर आप सब छावणी पधारी। वहाँ नवपद आराधना करवाई वैशाख मे पू० मुनिराज व आप श्री चित्ताखेडा मे मन्दिरजी की प्रतिष्ठा पर पधारे वहाँ की प्रतिठा करवाकर चन्दनमल जी नागोरी के आग्रह पर छोटी सादडी पधारी।

६६—सादडी में पार्टीबाजी का अन्त

आपका मालव देश मे आगमन हुआ तभी से चन्दनमल जी नागोरी की हार्दिक अभिलाषा आपको छोटी सादडी ले जाने की थी और इसी इच्छावश वे समय समय पर प्रार्थना करने पधारते थे।

चित्ताखेडा प्रतिष्ठा पर सघ के आग्रह से आप भी पधारी। और नागोरी जी भी विधि विधान कराने पधारे थे। यहा फिर सादडी के लिए आपसे निवेदन किया। चितारवेडा मे प्रस्थान कर आप श्री मुनि राजों के साथ सादडी पधारीं। सघ ने अच्छा स्वागत

किया। दो दिन तो निवास स्थान पर ही प्रवचन हुआ। जनता बढ़ने लगी अब स्थनकवासी बन्धुओ के आग्रह पर स्थानक में प्रवचन होने लगा।

यहां कुछ वर्षो से समाज में नाकुछ से कारण को लेकर दो विभाग हो गए थे। परस्पर समाज में आना जाना भी बन्द था। परन्तु आपके प्रवचन का प्रभाव सबके हृदय पर जांगुली मन्त्र सा पड़ा।

आप के प्रवेश के दिन ही नागौरी जी को मारवाड खीचन में प्रतिष्ठा करवाने जाना पडा। नागौरी जी प्रतिष्ठा उद्यापन आदि विधि विधानों के अच्छे ज्ञाता है। आप का धार्मिक जीवन भी प्रशंसनीय है साहित्य जगत में भी आपका अच्छा स्थान है। आपने अनेक पुस्तको के अनुवाद किए है। अनेक स्वयं ने लिखी भी है। विद्वत्ता के साथ-साथ धार्मिक क्रियाए भी वडे प्रेम से करते है। गच्छ कदाग्रह व सम्प्रदाय वाद से आप सदैव दूर रहते है। सभी गच्छ के आचार्य मुनिराज आप के श्रद्धाभाजन है। इसी लिए स्थान-स्थान पर आपके हाथों खरतर गच्छ दादा साहब के चरण व मूर्तियाँ प्रतिष्ठत हैं।

चरित्र नायिका के बिहार के एक दिन पूर्व नागोरी जी सादडी लौटे आपका बिहार रोकने का प्रयत्न करने लगे। आपको रावजी पिपल्या में गुरुदेव की चरण प्रतिष्ठा पर पहुँचना था, समय कम था, फिर भी आपने एक दिन का आग्रह स्वीकार किया।

प्रातःकाल बाजार में आपका प्रवचन रखा गया। प्रवचन के पर-

चात् नागोरी जी ने भाषण दिया। नागोरी जी ने कहा आप हमारे यहाँ से पधार रही हैं। हम आपको क्या भेंट दें? आप रुपया पैसा छूती नही। अतः हमारे यहाँ जो वर्षों से परस्पर फूट है व आप के प्रवचनों से सब के हृदय मे समन्वय की भावना जागृत हुई है। इस लिए मैं आपके समक्ष अपनी व अपनी पार्टी की ओर से ४० वर्ष तक सबके साथ जो पार्टीबाजी की थी उसका अन्त करता हूँ। सबके साथ सब व्यवहार खुला करता हूँ। और आज तक जो भी कटु व्यवहार किया है उसके लिए समस्त सघ से क्षमायाचना करता हूँ। और महाराज श्री के चरणों मे सगठन की भेंट धरता हू।

नागोरी जी की इस घोषणा ने चारो ओर हर्ष फैला दिया। लोग आनन्द मे जयनाद कर आकाश गू जाने लगे। सर्व मुक्त कठ से आप की प्रशसा होने लगी।

दूसरी पार्टी वालो ने भी उसी समय विरोध दूर किया। लोग गले मिले। ४० साल की छिन्न भिन्न समाज आज एक हुई। आप भी इस सगठन भेंट से अतीव प्रसन्न हुई।

सादडी मे प्रेम प्रचार करती हुई आप श्री रावजी-पिपल्या पधारी। प्रतिष्ठा का कार्य क्रम शुरु हुआ, शनिवार दिनाक १६-६-६२ को दादा जिन कुशल सूरि गुरुदेव की मूर्ति, व आचार्य प्रवर हरिसागर सूरीश्वर व कवीन्द्र सागर सूरीश्वर की चरण प्रतिष्ठा की गई।

मध्यान्ह मे शान्ति स्नात्र महोत्सव का कार्य सम्पन्न हुआ। पश्चात् विहार कर आप जामुनिया, बांगरेड, जावी, सरवाणिया,

मोटी होकर जावद पधारी। जावी दसम्राणिया में आपने जीर्णोद्धार की प्रेरणा कर काम चालू करवाया।

चतुर्मास नजदीक था। छोटी सादड़ी, जावद, रावजी पिपल्या आदि स्थानों की प्रार्थना थी। परंतु नीमच का जोर ज्यादा था। अतः आपने नीमच का चतुर्मास स्वीकृत किया व अपनी सुयोग्य शिष्यारत्न, व्याख्यात् विनीता श्री जी म० का सुयोग्या हीरा श्री जी म० व माणक श्री जी म० के साथ रावजी पिपल्या चतुर्मास स्वीकृत किया, तथा परम तपस्वी अविचल श्री जी म० के साथ अध्यात्मरसिक विदूषी सफल व्याख्यात् श्री विजयेन्द्र श्री जी प्रभा श्री जी, मुक्ति प्रभा श्री जी, एवं निर्मला श्री जी को चतुर्मासार्थ जावद भेजा।

वयोवृद्धा पूज्या तपस्विनी अनुपम श्री जी म० सा० जो पूज्या जतन श्री जी म० सा० की शिष्या है, आप की बड़ी गुरु बहन है, उनको अत्यन्त आग्रह कर अजमेर से नीमच छावनी चतुर्मासार्थ बुलाया।

७०—देवनार बूचडखाने के विरोध का प्रभाव

नीमच में यथा समय आप का प्रवेश हुआ। नीमच की धरती सौ गज फूल उठी। जनता का हृदय हर्ष से नाचने लगा। चतुर्मास प्रारंभ हुआ। सभी धर्मो व सम्प्रदायों की जनता उपदेश श्रवण को आने लगी। आपके प्रभाव से प्रभावित तत्रस्थ दैनिक पत्रों ने आप की प्रशंसा में बहुत कुछ लिखा।

ओजपूर्ण मधुर वाणी, वैराग्य गर्भित, अमृतमयी देशना, बिना भेद भाव के उसे सुनकर प्रत्येक मानव का हृदय सत्य तत्त्व को टटोलने लगता है। कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने के लिए क्रिया शील बनने की चेष्टा करने लगते हैं। आप के जीवन मे गुरु प्रदत्त शिक्षाएँ ऐसे घर कर गई हैं जिसके फलस्वरूप आप सर्वोदय की ओर निरन्तर अनायास प्रगति कर रही हैं।

आपके प्रवचनोंमे व्यवहार पटुता के साथ सीधी हृदय मे पैठ जाने वाली अध्यात्मिकता का पुट सदैव समाविष्ठ रहता है। जड-चेतन का भेद मैं कौन मेरा कौन, दृश्य-अदृश्य की भिन्नता आदि विषयों पर मात्र वागाडम्बर से नही, अपितु हृदयङ्गम सक्रिय वाणी से दूसरे के हृदयों को हिलाने का सामर्थ्य भरा रहता है।

नीमच मे तपस्या की भी प्रबलता रही, एक बहन ने महीने भर की तपस्या निराहार मात्र प्रासुक जल के आधार पर की। कईयों ने १५, ११, ९, ३ दिनों की तपस्या की। नवरंगी तप भी हुआ, जिसमें नौ जनों के ९ दिनों का उपवास, ८ जनों के ८ दिन का उपवास, ७ जनों के ७ दिन, ६ के ६ दिन, ५ के पाँच दिन, चार के चार दिन, ३ के तीन दिन, २ के दो दिन, व १ के एक दिन का उपवास होता है। इस प्रकार नवरंगी तप का आयोजन होता है। विशेषता यह थी कि पुरुषों ने भी तप का भारी लाभ उठाया। समय-समय पर आपने तप के महत्त्व पर, तप के प्रभाव पर, तप की महत्ता, किस तप से गुणगान और किस तप से लाभ आदि पर विचार व्यक्त किया।

प्रसंगवश आपने एक दिन देवनार में बन रहे बूचड़खाने के विरोध में अति प्रभावशाली मार्मिक उपदेश देते हुये कहा :—

"इस नश्वर शरीर की घृणित दशा को आवरित करने के लिए प्रकृति ने चमड़ी का आच्छादन लगा दिया। इसकी घृणित दशा को देख कर मानव का जीना दूभर हो जाए, ऐसी रचना हमारे शरीर की है। अतः इस चमड़ी की शोभा बढ़ाने के लिए इतर प्राणियों के जीवित चमड़े को छील कर, उतार कर, बढ़िया जूते, बैग, सूटकेश आदि का निर्माण करना और उससे चमड़े की शोभा वृद्धि मान लेना कितना भयंकर अज्ञान है।

सरकार बूचड़खाने का निर्माण कर रही है, इसमें सरकार ही केवल दोषी हो, ऐसी बात नहीं है, जनता भी बराबर दोषी है। भारतीय धर्मपरायण अहिंसक संस्कृति में जन्म लेनेवाली जनता के लिए गर्भस्थ, अथवा जन्मजात, नन्हे पशु-शावकों का, वृद्ध एवं जवान गाय, बैल, घोड़े आदि पशुओं का निर्दयता पूर्वक, क्रूर हिंसात्मक तरीकों से वध कर बनाई गई वस्तुओं का उपयोग कितना शर्मनाक व खेदजनक है।

हमारे महापुरुषों ने धर्म का कितना सुन्दर स्वरूप संक्षेप में वर्णित किया है, "अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वये, परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्" दूसरे का उपकार पुण्य और दूसरे को पीड़ा पहुँचाना पाप है। तो सोचिए, अपनी चमड़ी को सजाने के लिए अन्य प्राणियों की हिंसा करना, नश्वर शरीर को सबल बनाने की चेष्टा में इतर प्राणियों का मांस भक्षण करना, ऐसी प्रवृत्तियों

को प्रोत्साहन देना, अहिंसा के साथ-साथ मानवता का ही हनन है।

आपके उपदेश का ऐसा प्रभाव पडा कि अनेक उपस्थित जनों ने चमडे से निर्मित प्रत्येक वस्तु, सूटकेश से लेकर घड़ी के पट्टे तक का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया। कइयों ने मासाहार का त्याग किया।

हिंसा-विरोध मे माननीय प्रधान मन्त्री, महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री महोदय आदि को तार भेजे गए और एक पत्र जनता के हस्ताक्षर करवा कर भेजा गया।

सघ के आग्रह से आप कई वेर नीमच सिटी भी पधारी। वहाँ कुछ दिन ठहरी भी, यहाँ स्थानकवासी समीर मुनि जी म० जो खटीकों को जैन बनाने जैसा भगीरथ प्रयत्न करते हैं, के साथ आपका समागम प्रवचन हुआ। इसी समय उदयपुर से विद्वद्वर्य पूज्य गणेशीलाल जी म० के स्वर्गवास की सूचना तार से मिली। आप श्री ने सखेद श्रद्धाञ्जलि अर्पित की, यहाँ से बघाना पधारी। इस मार्ग पर एक छोटा-सा जैन मन्दिर व दादावाडी है, जिसका निर्माण नथमलजी चोखावत ने करवा कर सघ को सौंपा था। यहाँ आपकी प्रेरणा से यात्रियों के निवास के लिए एक कमरे की योजना बनी एव चन्दा भी हुआ। दादावाडी मे कार्तिक पुनम के दिन भगवान की सवारी जाती है, अत वह मूलचन्द जी मारु ने एक छोटा सा भवन बनाया व हमीरमल जी कोठारी ने उम्मेदबाई के स्मरणार्थ सगमर्मर का सिद्धाचल जी का पट स्थापित किया।

नीमच छावनी से प्रस्थान कर आप जमुनिया पधारीं। यहाँ आप ज्वराक्रान्त हो गईं। यों तो आप आराम हराम मानती हैं, पर जब शरीर आपकी ज्यादती से तंग आ जाता है, तब बीमारी के रूप में हड़ताल का नोटिस भेजकर आपको विश्राम के लिए बाध्य कर देता है। पूरे तेरह दिन तक आपको ज्वर ने पकड़े रखा, गाँव की जनता ने खूब सेवा की। नीमच संघ वापिस नीमच चलने का आग्रह करने लगा, पर आप जमुनिया ही विराजीं। ज्वर उतरने पर आप श्री ने जीरण की ओर विहार किया।

७१—जीरण में हमने क्या देखा

यथा समय आप श्री जीरण पधारीं।

हमलोग ता० २०-२-१९६३ के दिन दस बजे व्याख्यान भारती, विश्वप्रेम प्रचारिका, जैन कोकिला, आर्यारत्न, हमारी चरित्र नायिका के दर्शनार्थ नीमच जिले के जीरण गाँव में पहुँचे। उस समय बाजार में प्रवचन चल रहा था, जनता से सारा बाजार ठसाठस भरा था। प्रतिदिन सबेरे आठ बजे प्रवचन शुरू होता था। जैन जैनेतर जनता की अपार भीड़ साढे ग्यारह बजे तक एक धारा से चित्र-लिखित-सी बैठी प्रवचन सुनती। जीरण का उल्लास, उत्साह तथा आगन्तुकों की भक्ति श्लाघनीय थी।

यहाँ की परिस्थिति के अनुरूप आपके प्रवचनों में संगठन पर विशेष बल होता था। यहाँ कुछ वर्षों से एक सामान्य-सी बात पर

समाज मे दलबन्दी हो गई थी, गुत्थियाँ सुलझाने के प्रयत्न मे और उलझ रही थी। इधर आपकी विशेषता है समाज की या व्यक्ति की सुप्त अन्तःप्रेरणा को झकझोर कर जगा देना। सुधार की भावना पैदा करना आपका लक्ष्य रहता है। बाह्य उपचार स्वय हो जाता है। आप सार्वजनिक सभा मे दलबन्दी से होनेवाले नुकसान व सगठन के लाभों पर प्रकाश डालती।

चार दिनों के उपदेश ने ही समाज का हृदय परिवर्तन कर दिया। लोग विश्व प्रेम प्रचारिका के विश्व-प्रेम भरे हृदय के प्रभाव मे आकर अपने वर्षो के वैरभाव का त्याग करने के लिए छटपटाने लगे, किन्तु आपने यह नही कहा कि इस फूट को मिटा ले। आपकी विचारधारा कुछ मनोवैज्ञानिक पद्धति की है, कह कर या दबाव डाल कर कोई भी काम करवाना आपको इष्ट नही।

आपके विचारों से जनता मनोमन मथित होने लगी, कसमसाने लगी। आप प्रेम-भाव को उकसाने मे प्रयत्नशील बनी रही। अन्त मे चौथे रोज समाज के सभी व्यक्तियों ने मन्दिर मे एकत्रित होकर समाज की फूट को कैसे दूर किया जाए, इसपर विचार-विमर्श किया। मामला पेचीदा था, इधर विश्व प्रेम प्रचारिका के प्रवचन हृदय मे गूज रहे थे। प्रत्येक का अन्तर यह रहा था कि यदि यह अवसर चला गया तो फिर हम कभी भी एक नही हो पाएँगे। वीर-शासन की इस प्रेम विभूति की शीतल छाया मे भी हम एक न हों पाए तो फिर सदियों तक हम अलग ही रह जाएँगे। अत समाज के कुछ व्यक्तियों ने दोनों पक्ष वालों को उस रात एक बजे तक

समझाया, समझौते के सुझाव सुझाए। हम सभी उपाश्रय में बैठे उनकी बातें सुन रहे थे। आखिर जब सबने ठान ही लिया कि हमें एक होना ही है, तब कोई कारण नहीं था कि इसमें बाधा आती।

ता० २२-२-१९६३ के प्रवचन में समाज की सभी प्रमुख हस्तियों ने अपने मिथ्या अभिमान को दूर कर, विगत भेदभरी भूलों को भुला कर, परस्पर क्षमायाचना करते हुए हमारी चरित्र नायिका के समक्ष एक होकर रहने का वचन दिया। समाज की दरारें भर गईं, वर्षो के बिछड़े भाई गले मिल गए, यह एक अनोखा ही दृश्य था। चारों ओर से जय-जयकारों की ध्वनियाँ गूंजने लगीं। सभी ने विचार-भेद को लेकर समाज-भेद न करने की पवित्र प्रतिज्ञा की। लोग शत्-शत् मुखों से आपकी प्रशंसा कर रहे थे।

अगले दिन आपने विहार का विचार रखा, लोग उदास होने लगे। 'अभी नही' के नारे जोर-शोर से सुनाई देने लगे, आपको दो दिन और ठहरना पड़ा। इसी बीच १२ जोड़ों ने जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया, कइयों ने अल्प समय की मर्यादा की। अनेक किशोरों ने सप्त व्यसन के साथ-साथ बीड़ी, सिगरेट पीने का त्याग किया। कितनों ही ने मांसाहार त्यागा, शराब, जुआ त्यागा, अनेको ने परस्त्री गमन का त्याग किया।

आपने फिर विहार का विचार रखा, लोग फिर आ डटे। 'अभी नहीं।' आपने बहुत समझाया। प्रयाण का समय बीता जा रहा था। लोग राह में बैठ गए। मजबूरन आपको फिर दो दिन रुकना पड़ा।

अब लोग वही पार्श्वनाथ सघ की योजना लेकर आए। छोटा गाव भक्तिवश अपने खर्च की योजना बनाकर आया। पाव पैदल वही पार्श्वनाथ का सघ लेकर चलेंगे। आपने सबको शान्त किया, समझाया :—

"देखिए सघ निकालना उत्तम कार्य है—पर समय को पहचानना सर्वोत्तम काम है। आपके गाव मे पाठशाला है पर न होने के बराबर। अत: आप इस आवेग से मुक्त होकर गाव के नव निर्माण मे अपने धन का व्यय कीजिए। अपनी कन्याओं के शिक्षण का प्रबन्ध करिए। आपको इसकी परम आवश्यकता है, आपके गाववाले प्राय सभी वही पार्श्वनाथ की यात्रा कर चुके हैं।" सबने आप की बात मानी और अश्रुपूर्ण नेत्रों से आपको विदा किया।

ऐसे लुभावने समय मे हम भी सौभाग्यवश जा पहुँचे। जीरण की जनता ने हमारा जो सत्कार किया वह अविस्मरणीय है।

जीरण से विहार कर आप वही पार्श्वनाथ होती हुई रतिचन्दजी बापूलालजी के सुपुत्र हस्तिमलजी ज्ञानचन्दजी के आग्रह से मदसोर पधारे। वहाँ उद्यापन, अठाई महोत्सव, शान्ति स्नात्र मानपुरा मन्दिर मे हुये। दादा साहब के चरण पधराए गए, उत्सव सम्पन्न होने पर सघ के अत्यन्त आग्रह से प्रतापगढ पधारी। प्रतापगढ मे आपका कार्यक्रम शानदार रहा, प्रवचन मे वही चिर परिचित वातावरण रहा। पश्चात् अरणोद पधारी, अरणोद वाले भी आपके विहार काल मे गाव-धन्धा भूल बैठे, उनकी भी भक्ति प्रशसनीय थी। पश्चात् पोटडी, निम्बोद आदि गाँवों पर कृपा बरसाती हुई

आप सैलाना पधारीं। इस सारे प्रवास में हमने आपके प्रभाव को आनन्द भरे हृदय से देखा और सर्वत्र संघ ने हमारा भी खूब मान, सत्कार किया।

सैलाने में आपने प्रवचन दिया, ज्ञान मन्दिर भी देखने गईं। संघ को उपदेश दिया और वहाँ से चलकर धामनोद होती हुई आप रतलाम पधारीं। चैत्र की नवपद आराधना रतलाम में ही करने की आपकी भावना थी, पर आप यथा समय नहीं पहुँच सकीं क्योंकि सर्वत्र आपको रुकना पड़ा।

७२—रतलाम में महावीर जयन्ती

चैत्र शुदि त्रयोदशी के दिन भगवान महावीर की जन्म-जयन्ती का पावन दिवस निकट आ रहा था। आप कब रतलाम पधार रही हैं, इसकी सूचना भी रतलाम संघ को प्राप्त न हुई। जाएँ भी तो कहाँ जाएँ, पता भी नहीं था कि आप किस स्थान पर है। प्रतीक्षा करते-करते आप सैलाने पधारीं, तब रतलाम संघ पहुँचा। सबने कहा कि ओली तो जा रही हैं, पर कमसे कम महावीर जयन्ती पर तो अवश्य पहुँचें। आपने कहा, कोशिश तो एकदिन पहले पहुँचने की करूँगी अन्यथा त्रयोदशी को तो अवश्य पहुँचूँगी ही, फिर भी होगा ज्ञानी दृष्ट ही। कई साध्वीजीं जावरे में ओली का आराधन कर रही थीं। सैलाने से चलकर आप श्री चैत्र शुक्ला बारस को प्रातःकाल रतलाम पधारीं। उसी दिन आपके सामने महावीर जयंती

रतलाम में महावीर जयन्ती

का त्रिदिवसीय कार्यक्रम निर्धारित किया गया। प्रातः प्रवचन रखे गए, वर्धमान स्थानकवासी श्रमण सघ के मन्त्रीवर्य मुनिराज हीरालालजी म०, दिगम्बर क्षुल्लकवर पूर्णसागर जी म०, एव हमारी चरित्र नायिका, इन तीनों का प्रवचन त्रिवेणी सगम-सा तीनों दिन साथ-साथ रखा गया।

महावीर जयन्ती के दिन सवेरे ८ बजे पहले माननीय हीरालालजी म० का प्रवचन शुरू हुआ। पश्चात् क्षुल्लकजी ने हमारी चरित्र नायिका को प्रवचन की आज्ञा दी, पर आपने उनसे ही अति आग्रह कर पहले प्रवचन करवाया। उसके बाद विश्व प्रेम प्रचारिका ने प्रेम वर्षा बरसानी शुरू की। भगवान महावीर की जयन्ती जैसा पावन पर्व, उनका ही पावन विश्व-मैत्री का सन्देश और देनेवाली उनकी ही प्रेम प्रतीक आप जैसी पुत्री प्रवचन का क्या कहना, घण्टा-बीता दो घण्टे बीत गए बजाज खाने का विशाल चौक, उसमे बसे घरों के बराण्डे, छतें दूकानें, दूकानों की चौकियां ठसा ठस भरी थी। पाव रखने को भी जगह नही थी। चैत्र का ताप, धूप से भरा स्थान, पर जनता ने हटने का नाम नही लिया। न भूख लगी न प्यास ने सताया, अनवरत प्रेम पीयूप बरस रहा था। लोगों के चेहरों पर आनन्द अठखेलिया कर रहा था। आपने प्रवचन पूरा किया, लोग पागल बने थे'और, अभी और"। पर समय का तकाजा था और आप का गला भी तो गला ही था।

आप का प्रवचन सुनकर ही लोग चतुर्मास की जय बोलने लगे थे। सभा मे, दिन मे, जब देखिए लोग आप को घेरे रहते। चौमासे

की प्रार्थना करते। पर आप का मन नहीं था, अभी चौमासा भी दूर था आप के भ्राता अमरावती के लिए हर वर्ष आग्रह करते थे मातु श्रीविज्ञान श्री जी म० की वृद्धावस्था के कारण अमरावती वाले और भी अधिक प्रयत्न में थे कि एक वार ये हमारे यहाँ पधारे। पर अमरावती का मार्ग तो द्रोपदी का चीर बनता चला जा रहा था आपकी भावना थी कि रतलाम से विहार कर इन्दौर का मार्ग छोडते हुए माण्डवगढ़ होकर अमरावती का रास्ता लेंगे। क्योंकि इन्दौर जाने पर वहाँ से छूटने की आशा आपको कतई नहीं थी। आपने रतलाम संघ के आग्रह का मीठा उत्तर दे दिया व वैशाख वदी द्वितीया को विहार का निश्चय कर लिया। रतलाम संघ सारा दिन जमा रहता। किन्तु आपके पास एक ही उत्तर था चौमासा अभी दूर है समय पर जैसा संयोग होगा हो जाएगा। परन्तु रतलाम वालों की वाणी में ऐसा आत्म विश्वास नजर आता था कि हमारा हृदय भीतर से आवाज करता था कि यह चौमासा यहाँ ही होगा। आपने संघको अपना दूज के दिन विहार का निश्चय सुना दिया। संघ को एक ही मांग थी कि भले अभी पधारें पर चौमासा तो यहाँ ही करना होगा। हम सोचते देखो भक्त की जीत होती है या गुरुदेव की।

७३—भावि के मन और है मानव के मन और

वैशाख वदि प्रतिपदा के रोज आप श्री मंदिर से दर्शन करके

उपाश्रय आ रही थी। रास्ते मे न कीच था, न कूटा करकट था। पर भाग्य चक्र ने खेल रचाया एक छोटे से ककर ने आप को गिराया और असावधानी से गिरने के कारण आप की पसालियों मे चोट आई। हड्डी क्रेक हो गई। उधर जनता दिगम्बर मदिर मे आप को राह देख रही थी क्यों कि उस दिन आप का प्रवचन वहाँ ही रखा गया था। इधर यह घटना घटी। आप आत्म बल से उठकर उपाश्रय पधारी। सूजन शुरु हो गई थी, दर्द बढ रहा था। कानों कान खबर बिजली के वेग से फैल गई। लोगों से उपाश्रय भर गया। डाक्टरनी को लाया गया, उसने अच्छी तरह देखकर कहा—"फोटो लेना जरुरी है, हड्डी मे निश्चित चोट हैं, देर करने से या गफलत करने से सभव है दर्द रह जाए। लोग घबराए। आप श्री ने कहा क्या बात है। फोटो लेना है तो चलो घबडाने की क्या जरुरत है। अस्पताल मैं पैदल चलूगी। डाक्टरनी आश्चर्य से मुंह देखने लगी, बोली आप उठ भी नही सकेंगी, चलने की तो बात ही क्या? आप उसी समय उठ खडी हुई ओर धीरे धीरे चल पडी। आत्मबल एक अनूठी ही शक्ति रखना है। अस्पताल काफी दूर था। आप वहाँ धीरे-धीरे पहुँची, पसलियों का फोटो खीचा गया। फोटो देखकर आप श्री को कहा गया कि आप श्री नजदीक के किसी मकान मे ठहरें, क्यों कि सुविधा रहेगी समय-समय पर फोटो लेने होंगे। आप सागरमल जी आलोट वालों के मकान मे जो अस्पताल के निकट ही था में ठहरी। प्लास्टर हुआ और लगभग एक मास से ऊपर आप को उसी मकान मे रहना पडा। सागरमल जी ने खूब सेवा की।

इन्दौर वाले चतुर्मास की विनती करने आए थे। वापिस जाकर आप की चोट के समाचार नई दुनियाँ दैनिक पत्र में छपा दिये। लोगों का आगमन बढ़ा महीदपुर, जावरा, खाचरोद, जयपुर, इन्दौर, उज्जैन, आदि अनेक स्थानों से लोग आ पहुँचे। तत्रस्थ संघ ने सभी यात्रालुओं की भक्ति का लाभ उठाया, स्थानवासी श्रमण सतियाँ जी, दिगम्बर क्षुल्लकवर भी आप से मिलने व सुखशाता पूछने पधार कर परस्पर संगठन व स्नेह में वृद्धि की।

वैशाख शुदि तीज को स्थानक वासी संघ में एक बहन की दीक्षा का आयोजन हुआ ५० सतियाँ जी व ३० मुनिराज एकत्रित हुए थे। आप को भी निमंत्रण मिला आप श्री न जा सकी पर अपनी शिष्या अविचल श्री जी म० आदि को सभी को इस उत्सव में शामिल होने को भेजा। विनीता श्री जी ने दीक्षा के महत्व पर प्रवचन किया जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई। कुछ साध्वी जी ने दीक्षा गायन गाया।

वैशाख शुदि पंचमी को अजमेर में आप की गुरु बहन प्रवीण श्री जी म० का कैंसर की व्याधि से देहावसान समाधि पूर्वक होने के समाचार मिले। ये भी पूज्या जतन श्री जी म० की शिष्या थीं। अजमेर में अनुपम श्री जी म० के पास रहती थीं। आप ने उस आत्मा की शान्ति हित देववन्दन किया।

आपके स्वास्थ्य के निमित्त जिन दत्तसूरि सेवा संघ के उपाध्यक्ष श्रीमान गुलाबचन्द जी गोलेछा भी सपत्नीक रतलाम पधारे। प्रधान मन्त्री प्रतापमलजी सेठिया भी पधारे। रतलाम खरतर गच्छ संघ ने

इन दोनों के स्वागत सन्मान समारोह का आयोजन किया। अध्यक्ष महोदय गोलेछा जी को खरतरगच्छ सघ की ओर से मानपत्र भेंट किया गया। इसी समारोह मे श्वेताम्बर मूर्ति पूजक सघ, स्थानक वासी सघ त्रिस्तुतिक सघ, दिगम्बर समाज एव जैनेतर समाज ने आपसे पुनः चतुर्मास की प्रार्थना की क्योंकि चतुर्मास निकट था। आपकी भावना संलाने जाने की थी। अतः आपने स्वीकृति नही दी थी। रतलाम सघ के अत्यधिक आग्रह से आपने विवश चतुर्मास की स्वीकृति दी।

उसी दिन से चतुर्मास की व्यवस्था की योजना बनी। व्याख्यान के लिए एक भव्य विशाल पण्डाल का निर्माण किया गया। यात्रियों के निवास की व्यवस्था की गई। भोजन की भी व्यवस्था सघ ने करी। अन्य भी सभी व्यवस्थाएं सघ ने तुरन्त कर ली।

ये कार्य तो चतुर्मास के सूर्योदय के पूर्व ही हुए। चतुर्मास के प्रारम्भ मे अभी कुछ विलम्ब था।

७४—दादा जयंती

आषाढ़ शुक्ला ११ दिनाक २-७-१९६३ को शासन प्रभावक, युग प्रधान दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सूरीश्वर जी महाराज का स्वर्गगमन दिवस बडे समारोह के साथ मनाया गया।

प्रातःकाल प्रभातफेरी निकाली गई। ९ बजे से ११ बजे तक विद्वानों के भाषणों का व मध्याह्न को रथयात्रा का प्रोग्राम था।

किन्तु स्थानकवासी मुनिराज श्री चम्पालालजी का स्वर्गगमन हो जाने से संगठन व मैत्री भावना की प्रतीक हमारी चरित्र नायिका ने रथयात्रा व अन्य सभी आयोजनों को स्थगित कराकर, अपनी समय सूचकता का प्रमाण दिया। इसकी सर्वत्र सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

उस दिन मुनिराज की शवयात्रा के समय जब अरथी साध्वी जी महाराज के उपाश्रय के सामने से निकली, तब आप श्री भी उपाश्रय की ऊपरी मंजिल से नीचे पधार कर अपनी समस्त शिष्याओं के साथ मुनिराज को श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर अपने मानस की उच्चता का परिचय दिया। दूसरे दिन पुनः दादा जयन्ती का कार्यक्रम रखा गया।

३-७-१९६३ को प्रातः ९ बजे बजाजखाने के विशाल प्रांगण में सभा हुई जिसमें स्थानकवासी विद्वर्य मुनिराज श्री मूलचन्दजी महाराज ने भक्ति ही भगवान बनाती है इस विषय पर विस्तृत व्याख्यान करते हुए दादासाहब के जीवन पर प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डाला। मंदसौर के पण्डित श्री मदनलालजी जोशी ने गुरुदेव की विशद योग शक्तियों पर एवं संयम की अलौकिक साधना का वर्णन करते हुए उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। तत्पश्चात् विश्व प्रेम प्रचारिका का विचक्षण ढंग से मधुर भाषा में प्रवचन हुआ। आपने फरमाया।

"११ वीं सदी में दो सूर्य ज्ञान-जगत् में ज्ञानालोक फैला रहे थे,

एक थे श्रीमद् हेमचन्द्राचार्य जी जिन्होंने राजा कुमारपाल को पूर्ण प्रतिबोध देकर १८ देशों मे अहिंसाधर्म की ध्वजा फहराई थी। दूसरे थे युगप्रधान दादा जिन दत्त सूरी जिन्होने सात राजाओ को प्रतिबोधित कर मास भक्षण, मदिरापान आदि से बचाकर एक लाख तीस हजार नवीन जन बनाकर अहिंसा धर्म की विजय दुदुभी बजाई थी। ११ वी शताब्दी जैनियों के अपूर्व अभ्युदय की थी। गुरुदेव के जीवन से, उनकी जयन्ती मना कर हमे यही कार्य अपने जीवन मे अपनाना चाहिए कि देश मे बढती हुई हिंसा, बननेवाले कातिल कत्लखानों का खूब विरोध करे। हम इस घोर पाप से देशकी रक्षा अवश्य करें। यह प्रतिज्ञा हमे अपनानी ही होगी। हमरा सर्वप्रथम कर्तव्य देश मे बढती हुई हिंसा को रोकने का होना चाहिए। यदि हम अपनी शक्ति को सगठित एव पूर्ण विकसित कर अहिंसा ध्वज को उठावें तो भारत तो भारत हम समस्त विश्व मे अहिंसा का डका बजा सकते है। हमारे पास जो अहिंसा है, जो मैत्री भावना है उसकी शक्ति अजेय है। पर प्रयोग की शक्ति, प्रयोग की कला आनी चाहिए।" इस प्रकार दादा जयन्ती पर आपका भाषण हुआ।

मध्यान्ह मे कोटेवालों की पाठशाला से एक चल-समारोह प्रभु मूर्ति एव दादा गुरुदेव के चित्रपट के साथ निकाला गया। उसमे सभी जैन बन्धु बिना भेद भाव सम्मिलित थे। उस समारोह का दृश्य जैन एकता व सगठन का अद्भुत प्रतीक था। यह प्रभाव विश्व प्रेम की भावना के परमाणुओ का है जो साध्वी जी के हृदय मे कूट कूटकर भरे हैं। इसी प्रेम भावना के बल पर आप स्यान-

स्थान पर जन-जन की प्रिय होती जा रही है। और जैन शासन की अपूर्व सेवा कर रही है।

७५—चतुर्मास में

चतुर्मास शुरू हो चुका था। जगह जगह प्रवचन होने लगे। प्रतिदिन विशाल पण्डाल में आप श्री छठे अंग ज्ञातासूत्र व महासती अंजना के चरित्र पर प्रवचन करतीं। सभी बन्धु प्रेम से प्रवचन सुनते और स्थान-स्थान पर प्रवचन के लिए निमन्त्रण देते।

शासकीय बहु उद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बुनियादी महिला प्रशिक्षण संस्था, जैन हायर सैकण्डरी स्कूल, जैन बालिका हायर सैकण्डरी स्कूल, विद्यार्थी यूनियन आदि कई संस्थाओं ने आप श्री को निमन्त्रित कर अध्यात्मिक प्रवचन करवाए। स्कूलों के अन्य आयोजनों में वार्षिक पारितोषिक वितरणों में आप श्री ने समय-समय पर भाग लिया। राजेन्द्र जैन पाठशाला का द्वितीय वार्षिकोत्सव आप श्री की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर आप श्री को राजेन्द्र कोष के बहुमूल्य सातों भाग भेंट किए गए।

मंडलेश्वर निवासी वैष्णव सन्त विद्वद्वर्य स्वामीजी रमेश मुनि के साथ आपका प्रवचन हुआ। दिगम्बर जैन युवकों द्वारा तोपखाना दिगम्बर मन्दिर में आपका भाषण करवाया गया। स्थानीय जैन संघ ने आप श्री के चतुर्मास की यादगार रखने के लिए "श्री विचक्षण जैन संगीत शाला" की स्थापना की जो आज तरक्की पर है।

वर्धमान स्थानकवासी सघ के तपस्वी सन्त श्री सागरमल जी मुनिराज के ४६ दिन के उपवास की पूर्णता के अवसर पर नीमचौक स्थानक मे आयोजित तपोत्सव पर आपको आमन्त्रण आया। आपने वहाँ पधार कर तप के महत्त्व पर सुन्दर प्रवचन दिया। घोर, तपस्वी मुनिराज के तप की उल्लसित हृदय से वारम्वार अनुमोदना की।

कार्तिक मे स्वर्गीय दिनकर श्री चौथमल जी म० की स्वर्ग-जयती में पधार कर उत्सव में चार चाँद लगाए।

अध्यात्मिक प्रवचन के साथ-साथ सम्माननीय जैन समाज द्वारा अन्य अनेक उत्सव व जयन्तियाँ भी आपकी अध्यक्षता मे आयोजित की गई। उनमे श्री हेमचन्द्राचार्य, अकबर प्रतिबोधक युग प्रधान जिन चन्द्र सूरीश्वर श्री हीर विजय सूरीश्वर, शान्ति विजय जी म०, श्री आत्माराम जी म०, श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर म० आदि की स्मृति उत्सव मुख्य थे। सभी सार्वजनिक कार्यों के सयोजक व प्रेरक डाक्टर प्रेमसिंह जी राठौड़ M B B S भूतपूर्व स्वास्थ्य मन्त्री मध्यप्रदेश रहे। डाक्टर साहब बड़े ही सरल स्वभाव, धार्मिक वृत्ति के उत्साही व्यक्ति हैं। पूरे चतुर्मास आपने पूर्ण भक्ति व लगन से भाग लिया। आपके प्रवचनों का सुन्दर संग्रह कर आप ने "विचक्षण वाणी" नाम से पुस्तक तैयार की, जिसे रतलाम संघ ने प्रकाशित किया।

७६—श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

राग-द्वेष, तेरा-मेरा, अपना व पराया आदि अशुद्ध भावनाओं के कारण ही मानव का पतन होता है। साधना मार्ग के पथिक को प्रारम्भ से अन्त तक इन दोनों भाव शत्रुओं के साथ जूझना पड़ता है। इन दोनों का क्षयोपशम या क्षय करते हुए ही साधक आत्मा अपने साध्य मुक्ति की अधिकारिणी बन पाती है।

हमारी चरित्र नायिका का साधना-मार्ग भी यही है। उन्होंने राग-द्वेषात्मक भाव-द्वन्दों से निवृत्त होने के लिए सर्वत्र, सर्वसमय, विश्व-प्रेम, विश्व-मैत्री, विश्व-बन्धुत्व एवं विश्व-कल्याण की भावना रखती हुई प्रेम-बाँसुरी बजाना ही जीवन का मुख्य-ध्येय बना रखा है। प्रतिक्षण समन्वय मार्ग पर आपका एक-एक कदम पूर्वापेक्षा आगे ही मिलेगा।

भादवा बदि अष्ठमी को आपने श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाने की संघ को प्रेरणा दी और कहा कि विश्व में हो गए महापुरुषो में श्रीकृष्ण भी है। जैन आर्या के मुख से श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाने की बात सुनकर लोग आश्चर्य करने लगे। जोश की लहर जोर से आई, इस अपूर्व कार्य को करने में लोग जुट गए।

ता० १७-८-१९६२ को डिप्टी कलेक्टर श्री मुक्तेश्वर सिंह जी की अध्यक्षता में लगभग ७,००० मानव-समूह की उपस्थिति में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का आयोजन प्रारम्भ हुआ। लोगों के चेहरों पर एक अनूठा ही भाव था। हमारी चरित्र नायिका के साथ इस

प्रसग पर स्थानकवासी मुनिराज मूलचन्द जी म० ने भी प्रवचन दिया, महासतियाँ जी भी पधारी। सबने अपने-अपने विचार प्रकट किए। तत्पश्चात् हमारी विश्व प्रेम प्रचारिका ने भी भगवान श्रीकृष्ण के महत्त्व का वर्णन करते हुये कहा :—

"जिस प्रकार सागर मे अनगिनत ककर होते है, इसी प्रकार वहाँ कतिपय बहुमूल्य रत्न भी होते हैं। ससार के आवागमन क्रम मे भी असख्य साधारण व्यक्ति आते-जाते रहते है, परन्तु कभी-कभी ऐसे महापुरुष भी उत्पन्न होते हैं जो अपनी विशिष्टता के कारण इतिहास के पन्नों पर सदा के लिए अमर होकर अपनी अमिट छाप अकित कर जाते है। ऐसे ही एक विशिष्टतम महापुरुष की हम आज जयन्ती मना रहे है।

दीर्घकाल व्यतीत होने पर ससार मे धीरे धीरे विकृति आने लगती है। प्रकृति मे आई यह विकृति शनै -शनै सस्कृति मे प्रवेश करने लगती है। जब ससार के प्राणी इस विकृति के नागपाश मे फँसकर त्राहि त्राहि पुकार उठते हैं, तब उस विकृति का विनाश करने के लिए अवतारी पुरुष का जन्म होता है। आज की जयन्ती के नायक भगवान् श्रीकृष्ण भी उन उच्च अवतारी आत्माओं मे से एक हैं।

व्यक्ति अमर नही होते हैं, उनका व्यक्तित्व अमर होता है। हमारा व्यक्तित्व बीजरूप में आत्मा मे स्थित है। इस बीज का विकास सभी मे समान रूप मे नही होता। गीता मानती है कि ईश्वर का अश सभी जीवों मे है, जैन दर्शन कहता है कि सभी जीवों

में सिद्ध स्वरूप मूलतः विद्यमान है, मुसल्मान भाई कहते है कि सभी में खुदा का नूर है। कुछ भी कह लो, पर वह शक्ति सब प्राणियों में है। प्रश्न केवल उस शक्ति की अभिव्यक्ति का है, जो विशिष्ट पुरुष है, उनमें यह छिपी शक्ति शीघ्र प्रगट होती है। विशिष्ट पुरुष भी दो प्रकार के होते है —एक वे जिनका विकास जन्मजात है और दूसरे वे जिनके जीवन का विकास पुरुषार्थ द्वारा होता है। महापुरुष सभी धर्मों में, सभी देशों में, सभी जातियों में होते हैं। महापुरुषों की दृष्टि व्यक्ति के लिंग, शारीरिक वयन्, जाति और सौन्दर्य आदि पर नहीं होती, प्रत्युत आत्म-लक्षी होती है। वे भीतर ही आत्मा की निर्मलता को देखते हैं और जहां कहीं भी मलिनता नजर आती है, उसे दूर करने का प्रयत्न करते हैं। अतएव संसार के सभी महापुरुष हमारे लिए वन्दनीय हैं।

वन्धुओ! महापुरुष किसी एक देश के नहीं होते, वे किसी जाति विशेष व धर्म, समाज के ही नहीं होते, वे तो सारे विश्व के होते है और सारा विश्व ही उनका अपना होता है। हमें सभी धर्मों के महापुरुषों का आदर करना चाहिए। आप खरबूजा भी खाते हैं, नारंगी (सन्तरा) भी खाते हैं। खरबूजे के ऊपर फांकें दिखती है, पर छीलने पर अन्दर एकाकार है, कोई भेद नहीं है। नारंगी वाहर से एक दिखती है, पर छिलका हटाने पर अन्दर उसमें अनेक फाँकें होती हैं। हम खरबूजे-सा जीवन अपनाएं, नारंगी का नहीं।

भाइयो! ऐतिहासिक महाभारत का युद्ध तो कौरव पाण्डवों

के बीच कुरुक्षेत्र मे एक ही बार हुआ था, परन्तु हमारे हृदय मे कौरव-पाण्डव रूपी जो असद्-सद् प्रवृत्तियाँ हैं, उनका युद्ध हर समय, प्रतिक्षण होता रहता है। हमे निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए कि इस आन्तरिक युद्ध मे सत्-प्रवृत्तियों की विजय हो और असत् का दमन हो। महाभारत के युद्ध मे पाण्डवों का पक्ष सत् था, उनके साथ श्रीकृष्ण थे, अत: सैन्य-बल कम होने पर भी पाडवों की विजय हुई।

धर्म का पक्ष पाशविक बल मे भले ही कम हो, पर आत्म-शक्ति के कारण यश सदा उसी पक्ष को मिलता है।

महान् होने पर भी श्रीकृष्ण बडे ही सरल और नम्र स्वभाव के थे। माता पिता के भक्त व गरीबों के सखा थे। सादगी एव अमीरी गरीबी मे समानता का पाठ तो उन्होंने बचपन मे ही पढ लिया था। उज्जैन के सन्दीपन ऋषि के आश्रम मे श्रीकृष्ण ने विद्याभ्यास किया था। जहाँ श्रीकृष्ण जैसे राजकुमार पढते थे, वहाँ सुदामा जैसे गरीब ब्राह्मण पुत्र भी पढते थे। सब का खाना-पीना, रहन-सहन, पढ़ना लिखना, एक समान होता था। छोटे-बडे मे भेद नही था। कहाँ उस समय की कम खर्चीली शिक्षा, कहाँ आज की महा खर्चीली शिक्षा? हजारों रुपये का खर्च कर भी हम आज अपने बच्चों का चरित्र-निर्माण नही कर पाते, उन्हे सदाचारी, विनम्र नागरिक नहीं बना पाते। आज गुरु-शिष्यों के सम्बन्धों मे कटुता पाई जाती है। आज गुरुओं (अध्यापकों) मे विद्यार्थियों को प्रेम व सद्भावना नहीं मिलती और नही शिष्यों (विद्यार्थियों)

में विनय, आदर और सम्मान भाव पाया जाता है। यही कारण है कि आजकल छात्रों व अध्यापकों के वीच विरोध भाव कभी-कभी वड़े ही उग्र रूप में अनुशासन हीनता सर्वत्र वढ़ रही है और ऐसा ही दृग्गोचर होता है। वाल-सखा सुदामा जब श्रीकृष्ण से मिलने को जाते हैं, तब उनका आगमन सुनते ही श्रीकृष्ण सुधवुध भूल उनसे मिलने दौड़ पड़ते है, उन्हें गले लगाते है। वे उस समय अपनी महत्ता, राजवैभव व सत्ता को भूल जाते है, दरिद्रता की प्रतिमूर्ति सुदामा को खींच कर अपने राजसिहासन पर विठाते हैं। बड़े प्यार से उनके लाए मोटे कच्चे चावल चबाते है। मित्रता का ऐसा अनुपम उदाहरण और कौन-सा मिलेगा?

महाराजा युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ कर रहे थे, श्रीकृष्ण भी आमन्त्रित थे। सभी लोगों को काम बाँटा गया, सबने अपनी रुचि का काम ले लिया, शेष बचा मेहमानों के पाँव धोने का काम। श्रीकृष्ण ने सहर्ष यह काम अपने जिम्मे लिया और वड़े ही विनीत भाव से इस कार्य को सम्पन्न किया। कितनी महानता, सेवा भावी व्यक्ति के लिये कोई भी सेवा का काम तुच्छ या हेय नहीं होता। यह वात उन्होने अपने जीवन में अपना कर सिखाई।

बन्धुओ! श्रीकृष्ण महान् कर्मवीर थे। संसार व आत्मा के संरक्षण में वे पूर्ण सावधान थे। संसार के हितार्थ आसक्ति रहित हो कर निष्काम कर्म में उनकी पूर्ण प्रवृत्ति व आस्था थी। अनासक्त योग ही मोक्ष-योग है, अनासक्त ही सच्चा समत्व पा सकता है, समत्व पाने वाला ही योगी कहलाता है। भगवद् गीता में कहा है

कि 'समत्वं योगमुच्यते' समत्व का पाठ जिसने नही पढा, वह कभी भी पण्डित, ज्ञानी, योगी नही बन सकता है। अपने जीवन काल मे तो उन्होंने ससार का महान् उपकार किया है, पर गीता जैसा अमूल्य खजाना देकर उन्होंने ससार का सदा के लिये महान् उपकार किया है।

भाइयो! गीता मे आत्मा के सम्बन्ध मे कहा है कि 'अजो नित्य शाश्वतोऽय पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे'—यह (आत्मा) अजन्मा, शाश्वत, नित्य, प्राचीन है। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी यह नष्ट नही होता है। जैन आगम भी इस सम्बन्ध मे इस प्रकार कहते है—"नो इन्दियगेज्झ अमुत्त भावा, अमुत्त भावा विअ होइ निच्चो"—आत्मा इन्द्रियों के द्वारा जाना नही जा सकता है, क्योंकि वह अमूर्त्त है। अमूर्त्त होने से वह नित्य है।

वन्धुजनो! जड और चेतन का अन्तर समझो, यह आत्मा चेतन है, शरीर जड् है, पुद्गल है। यह आत्मा निकल जाती है, तब शरीर जलाया जाता है। इस सम्बन्ध मे गीता का कथन है कि—

वासासि जीर्णानि यथाविहाय, नवानि गृह्णातिनरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहायजीर्णान्यन्यानिसयाति नवानिदेही

जैसे हम फटे कपडों को उतार कर नए धारण करते हैं, वैसे ही आत्मा भी जीर्ण शरीर को त्याग कर नया शरीर ग्रहण कर लेती है।

उत्तराध्ययन सूत्र मे भगवान महावीर स्वामी ने कहा है कि—

अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाणय।
अप्पा मित्तममित्तं च सुप्पट्ठिओदुप्पट्ठिओ॥

आत्मा ही सुख-दुःख का कर्त्ता है, और आत्मा ही सुख-दुःख का हर्त्ता है। सदाचारी सन्मार्ग पर लगा आत्मा अपना मित्र है और कुमार्ग पर लगा दुराचारी आत्मा ही अपना शत्रु है।

धम्मपद में भगवान बुद्ध ने भी कहा है—"अत्ताहि अत्तनो नाथो"—आत्मा ही आत्मा का स्वामी है। गीता में भी यही बात इन शब्दो में कही गई है—

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानम वसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

मनुष्य को चाहिये कि वह अपनी आत्मा को ऊपर उठावे, किन्तु अपनी आत्मा को नीचे नहीं गिरावे, क्योकि आत्मा ही आत्मा का बन्धु है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।

भाइयो! ईश्वर किसी के भी पाप-पुण्य को अपने ऊपर नहीं लेता है। अज्ञान के कारण ही लोग भले बुरे फल को ईश्वर के साथ जोड़ते है। गीता इस सम्बन्ध में स्पष्ट बतलाती है कि—

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफल संयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते॥
नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृत्तं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः॥

ईश्वर लोगों के कर्त्तापन का, कर्म का, और कर्म के फल संयोग का निर्माण कर्त्ता नहीं है, स्वभाव ही सब कुछ कर्त्ता है। सर्वव्यापी

परमेश्वर न किसी के पाप को, और न किसी के पुण्य को लेता है। अज्ञान से ज्ञान आच्छादित हुआ है, इस कारण प्राणी मोहित होते हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर स्वामी फरमाते हैं कि—

एगया देवलोगेसु, नरएसु विएगया।
एगया आसुर काय अहा कम्मेहिं गच्छइ ॥

आत्मा अपने यथा कर्मानुसार कभी देव कभी नारक और कभी असुर काय मे जाता है। आत्मा द्वारा किये गये कर्मों का फल स्वय उसे ही भोगना पडता है, उसमे अन्य कोई भी हिस्सा नही वटा सकता है।

आकाशमुत्पततु गच्छतु वा दिगन्त—
मम्भोनिधि विशतु तिष्ठतु वा यथेच्छम्
जन्मान्तरार्जित शुभाशुभकृन्नराणा,
छायेव न त्यजति कर्म फलानुबन्ध ॥

जीव चाहे आकाश मे चला जाये, चाहे दिशाओं के अन्त मे चला जाये, चाहे वह समुद्र तल मे छिप जाये, चाहे और किसी सुरक्षित स्थान में चला जाये, परन्तु पूर्वोपार्जित शुभाशुभ कर्म परछाई की नाई उसका पीछा नही छोडते हैं। कृत-कर्मों का फल भोगे बिना कोई किसी भी प्रकार छुटकारा नही पा सकता है।

इसी लिये ज्ञानी कार्य करने से पहले उनके परिणाम या विचार कर अनेक पापों से बच जाते हैं। क्योंकि 'न गच्छइ सरण तम्मि

काले'—कर्म के उदय होने पर अथवा मृत्यु के समय कोई शरण नहीं है।

बन्धुओ ! यह जीवन क्षणभंगुर है, जितना परोपकार, जितना आत्म-विकास करना हो कर लो। भगवान् महावीर ने कहा है—'समयं गोयम ! मा पमाए'—हे गौतम ! समय (क्षण) मात्र भी प्रमाद मत कर। श्रीकृष्ण भी महान् योगी थे, उन्हों ने भी गीता में कहा है :—

"नहीं कश्चित्क्षण मपि जातुतिष्ठत्य कर्म कृत्"

कोई भी व्यक्ति एक क्षण भी कर्म किये विना नहीं रह सकता।

याद रखिए, जो मनुष्य सभी इच्छाओं को त्याग देता है और लालसाओं से शून्य होकर कार्य करता है, जिसे किसी भी वस्तु के साथ ममत्व नहीं होता और जिसमें अहंकार की भावना नहीं होती, उसे शान्ति प्राप्त होती है।

भाइयो ! अनासक्त भाव से कार्य करने का निष्काम बुद्धि से कार्य करने का अत्यधिक महत्त्व है। जैन तथा वैष्णव—दोनों के ग्रन्थो में इसका वखान किया गया है। गीता में भी कहा है :—

तस्मादसक्तः सततं कार्य-कर्म समाचर।
अनासक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुष ॥

तुम आसक्त होकर सदा करने योग्य कार्य करते रहो, क्योकि अनासक्त मनुष्य परम पद को प्राप्त करता है।

भगवान् श्रीकृष्ण के इस उपदेश की आज देश को बहुत जरूरत है। आज देश नौजवानो की तरुणाई का, नव-निर्माण के लिए

आह्वान कर रहा है। हमे भी अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का त्याग करके अनासक्त भाव से निर्माण कार्य मे लग जाना है। तभी हमारी जयन्ती मनाना सफल होगा।

इस प्रकार समयानुसार भाववाही कृष्ण जन्मोत्सव पर दिया गया आपका यह प्रवचन सुनकर जनता दंग रह गई, कैसा सुन्दर समन्वय है। मानों स्वपर की धर्मभेद रेखा ही मिट गई हो।

७७—समन्वय साधिका

तदन्तर पर्यूषण पर्व की आराधना बडी धूमधाम से सम्पन्न हुई। सामूहिक क्षमापना का आयोजन किया गया तत्रस्थ जनता व मुनि-आर्या मण्डल का पूर्ण सहयोग रहा। बाहर से भी हजारों यात्री पधारे थे। पचरगी तप, अक्षय निधी आदि सभी तप उत्साही वातावरण मे सम्पन्न हुए। आश्विन कृष्णा द्वितीया को अकबर प्रतिबोधक दादा जिन चन्द्रसूरि जयन्ती अनेक कार्यक्रमों के साथ मनाई गई। महिला-सभा, चरित्र निर्माण सघ दिवस, दादा वाडी मे पूजा, तत्पश्चात् एक विशाल सभा मे आपने भाषण करते हुवे फरमाया कि अकबर के जीवन मे दो महापुरुषों ने अहिंसा की स्थापना की पूर्व काल मे आचार्य हीर विजयसूरि और उत्तरावस्था मे जिनचन्द्रसूरि। अकबर प्रतिदिन एक सेर चिड़ियों की जीभ खाता था, ऐसे क्रूर सम्राट को प्रतिबोध देकर अहिंसक शाकाहारी बनाया। धन्य है ऐसे युग प्रधान-आचार्यों को।

सब मिलाकर लगभग सात महीने आप रतलाम में रहीं। संभवतः एक दिन भी ऐसा नहीं गया होगा जब जनता ने आपके उपदेश का रसास्वादन किए बिना चैन लिया हो। पसली में दर्द रहा प्रवचन बंद रहा फिर भी लोग आप से उपदेश तो ले ही लेते थे। व्याख्यान में भले ११ बजे, भले बारह बजे, एक बच्चा भी व्याख्यान पण्डाल से खिसकने का नाम नहीं लेता। विशेष अवसरों पर तो जनता के बैठने के लिए अतिरिक्त जगह की व्यवस्था करनी पड़ती। आप के प्रवचनो ने जनता पर जादू-सा असर कर रखा था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि इतने पुरुष, इतनी स्त्रियाँ इतने बाल गोपाल एकत्रित होकर भी चित्र लिखित से बैठे रहते। जरा भी हो हल्ला चीं चप नहीं होता। पर्यूषण जैसे पर्व में इतनी शान्ति अपूर्व सी थी।

ता० १६ अक्टूबर को बीकानेर की गद्दी के श्री पुज्य विजयेन्द्र सूरि के स्वर्गवास का समाचार मिलने पर रतलाम में आपकी अध्यक्षता में शोक सभा मनाई गई। उसमें आप श्री ने उनके नैसर्गिक गुणों पर अच्छा प्रकाश डाला।

चतुर्मास समाप्त होने पर आप श्री ने संघ समक्ष प्रस्थान का प्रस्ताव रखा। जनता का मुंह सूख गया मानो कोई भयंकर विपत्ति आ पड़ी हो। किन्तु बसंत ऋतु कब अधिक रुकी है वह तो समय से चली ही जाती है अधिक रुकने की प्रार्थना अस्वीकृत होने पर सभी ने एक स्नेह सम्मेलन का आयोजन करने की भावना व्यक्त कर आपको दो दिन और रोका।

स्नेह सम्मेलन मे वहाँ पर विराज मान सभी मुनिराज आर्या जी एवं जैन की सभी सम्प्रदायों के बधू, वहिनें, वैष्णव, मुसलमान, भाई, आदि उपस्थित थे। यह कार्यक्रम पूर्ण सफल रहा इसी सम्मेलन के अवसर पर आप को "समन्वय साधिका" यथानाम गुण सम्पन्न पदवी से अलकृत किया गया।

रतलाम शहर से रतलाम स्टेशन काफी दूर पड़ता है। तत्रस्थ बधु, बहने, यद्यपि प्रतिदिन प्रवचन मे आते थे, लेकिन मन चाहे मेहमान घर आने और जाकर दर्शन करने मे बहुतअतर होता है। स्टेशन वासी भी उत्सुक थे। आखिर यही निर्णय रहा कि सीधे न जाकर स्टेशन होकर सैलाने जाया जाए। और प्रस्थान दो दिन ठहर कर होगा। स्टेशन पर साध्वी जी को मागीलाल जी विजय वर्गीय के नव निर्मित मकान मे ठहराया गया और विजय वर्गीय जी की ओर से ही वहाँ भव्य पण्डाल की सुन्दर व्यवस्था थी, जिसमे जनता प्रवचन के समय आराम से बैठ सके। ६ नवम्बर को प्रवचन वही हुआ। पण्डाल भर गया जन समुद्र उमडा आ रहा था। अत मे यातायात वद करवा कर सडक का आश्रय लेना पडा।

मध्यान्ह मे नवपद पूजा रात्रि मे जागरण रखा गया। जावरे मे भजन मण्डली फान कर बुलाई गई। वैष्णव समाज की भजन मण्डली भी पीछे कैसे रहती ? रात भर बडी सख्या मे लोग जागरण मे शामिल रहे और सवेरे प्रवचन पश्चात् घर गए।

अगले दिन पूजा जागरण विजयवर्गीय जी के मकान मे रखा गया जनता तृप्त नही होती थी। फिर किसी प्रकार तान तून कर आप

को दो दिन और रोका गया। शहर से तपागच्छ की विदुषी साध्वी-जी श्री फल्गु श्री जी को भी स्टेशन बुलाया गया। दोनों के प्रवचन एक ही मंच पर होने लगे। समन्वय में एक और कड़ी जुड गई। दो दिन और पूजा वढी। फिर बिहार की बात हुई। लोगों ने कहा चार दिन तो पूजाएें हो गईं, चार दिन और रुकें तो अठाई महोत्सव व शान्ति स्नात्र भी हो जाए। पर आप ने कतई मंजूर नही किया। व्याख्यान में चारों ओर से प्रार्थनाऐ होने लगी। इस समय आयकर अधिकारी श्रीमान् बी-आर कुम्भट ने माइक पकडकर घोषणा कर दी कि महाराज साहव को चार दिन और रुकना ही होगा। बोलो पार्श्वनाथ भगवान की जय।

जय-जयकारो की आनन्द-लग्न ध्वनियों के वीच महाराज साहब की आवाज दब गई और विवश उन्हें रुकना पड़ा। प्रायः सभी धर्मावलम्बी यहां आते थे और सभी की बोलने की सुविधा दी जाती थी। पूजा भक्ति तो चालू थी ही। प्रस्थान के पहले दिन महिला सम्मेलन हुवा, उसमें प्रस्ताव पारित हुआ कि द्वितीय दिवाली तक (इस वर्ष दोदिवाली मनाई गई थीं, जैन समाज ने पहली दिवाली मनाकर चतुर्मास समाप्त किया था) रोका जाए। महिलाओं ने प्रार्थना की पर आप श्री ने नहीं मानी। किन्तु बहिनें अब स्वतंत्र भारत में कमजोर थोड़े ही रह गई थीं, जो हार जातीं। उन्होंने भी सत्याग्रह की शरण ली, एक बहिन ने कहा—क्या बात है कि पुरुषों के आग्रह पर आठ दिन रुक सकती है और हमारी प्रार्थना पर तीन दिन भी नहीं? आखिर आपकी निकट सम्बन्धिनी होने के नाते

हमारा भी अधिकार है। भारत के संविधान मे तो हमे पुरुषों के बराबर अधिकार है। भगवान् महावीर ने भी हमे पीछे नहीं छोडा, मुक्ति तक समान अधिकार दिया है। अतः हम अपना अधिकार किसी भी हालत मे नही खोएँगी। आखिर आपको फिर मानना ही पड़ा, अठाई महोत्सव शान्ति स्नात्र महोत्सव बडे ठाठ्बाठ से मनाया गया। वृद्धों का कहना है कि हमने जीवन मे ऐसा प्रभाव कहीं नहीं देखा। यह सब कुछ हार्दिक समन्वय साधना का परिणाम था।

ताः १३ गुरुवार को वैष्णव समाज के वेदान्ताचार्य बीकानेर निवासी श्री रामनारायण जी महाराज को आपने पहचान लिया और उनका परिचय देकर आग्रह पूर्वक उनसे भी उपदेश करवा कर जनता को अनुगृहीत किया।

अब प्रस्थान करने का मिगसर वद २ दिन निश्चित हुआ और समय पर विहार हुआ। सेठ नाथूलाल जी घाडीवाल ने व सागरमलजी आलोट वालों ने ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया और आप श्री ने नामली की ओर प्रस्थान किया।

७८—खचरोद में

रतलाम से चलकर गाँवों मे रात्रि निवास करते प्रामीण जनता को श्रमन मुक्त करती हुई आप नामली पधारी। नामली की जनता में खूब उत्साह था, वहाँ पूजा-प्रभावना, जागरण एवं स्वामी वात्सल्य

खूब ही भावपूर्वक हुये उपदेश का लाभ भी जनता ने सुरीत्या उठाया। यहाँ किसी कारणवश एक-दो व्यक्तियों को समाज च्युत किया गया था, आप श्री के सदुपदेश से उन भाइयों को पुनः समाज में शामिल किया गया।

नामली से आप सेमलिया तीर्थ पधारीं। यह तीर्थ ५०० वर्ष प्राचीन है। अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान दादा जिन चन्द्र सूरि ने इसे मन्त्र-बल से लाकर स्थापित किया था, ऐसी किंवदन्ती भी है और मन्दिर के खंभों पर ऐसा शिलालेख भी मौजूद है। सं० १५३३ में इसकी स्थापना हुई थी, यहाँ आपके दो प्रवचन हुये। ठाकुर साहेब रघुराज सिंह जी बड़े प्रभावित हुये। मालवे में जातीय बहिष्कार एवं दलबन्दी की प्रथा बहुत ही जोरों पर है, यहाँ भी समाज में मतभेद था। आपके सत् प्रयत्नों से विभेद की दीवार टूटी, सभी एक हो गए। यहाँ से आप सुखेडा गाँव पधारीं, वहाँ आज तक कोई भी साधु-साध्वी नहीं पधारे थे। आपके पदार्पण से एक हर्ष की लहर दौड़ पडी, गाँव आनन्द से थिरक उठा। यहाँ स्वामी वात्सल्य का रूप मर्यादा में न रहकर मानव वात्सल्य बन गया। समस्त गाँव का जीमन हुआ, घमोतर, बांगरोद में भी स्वामी वात्सल्य व पूजाएँ हुईं।

इस प्रकार गाँव-गाँव में आनन्द प्रेम बरसाते हुए आप श्री ने शुभ दिन खाचरोद में प्रवेश किया। यहाँ का संघ लम्बे अर्से से आपकी प्रतीक्षा में था। आज प्रतीक्षित मेहमान को प्रत्यक्ष पाकर जनता हर्ष-विह्वल होकर उमड़ पड़ी। प्रायः नयन हर्षाश्रुओं से

मीने हो गये थे। प्रवेश के समय आस-पास के गाँवो व शहरों के लोग भी उपस्थित थे। हजारों की सख्या मे नर-नारी, नन्हे-मुन्ने के जय-जयकारों से आकाश गजाने लगे। जगह-जगह दरवाजे बनाए गए थे, तोरण वन्दनवार वांधे गए थे। प्रवेश बडा ही शानदार था। यद्यपि आप निर्ग्रन्थो के लिए व्यर्थ खर्च व व्यर्थ आडम्बर की विरोधिनी हैं, पर कही-कही आपकी रुचि की उपेक्षा कर जनता अपनी मनमानी कर ही बैठती है। यथा समय १० बजे के लगभग आप जिनदत्त सूरि खरतर गच्छ उपाश्रय मे पधारी। पौन घण्टे तक उपदेश दिया।

इस प्रवेश की सूचना व प्रवेश पर पधारने का निमन्त्रण खाचरोद वालों ने माईक पर सारे रतलाम शहर मे फिरा दिया था और आग्रह भरी प्रार्थना की थी कि रतलाम सघ अधिक से अधिक सख्या मे प्रवेश पर खाचरोद पधारे। अत दोनो सघ खाचरोद मे एक हो रहे थे।

प्रवचन पश्चात् खाचरोद मे विराजमान जैन श्वेताम्वर स्थानकवासी आचाय श्री आनन्द ऋषि जी म० एव मुनि श्री सौभाग्यमलजी म० आदि के दर्शनार्थ उनके स्थानक मे पधारी। कारण, उनका आज डेढ़ बजे विहार था। दोनों ओर मे परस्पर स्नेह वरस रहा था, दोनों ही इस मिलन से वडे प्रसन्न थे। पश्चात् व्याख्यान मडप मे सघ के आग्रह से आचार्य श्री ने मागलिक श्लोक सुनाए और मुनि सौभाग्यमल जी ने प्रवचन किया। वाद मे हमारी चरित्र नायिका ने १५ मिनिट तक प्रवचन दिया, जिनका साराश सगठन था। जब

हम भगवान की आज्ञानुसार भेदभावों को भुलाकर अनेकान्त को अपनावेंगे और अपने-आप को एक ही वृक्ष की शाखा-प्रशाखा मानकर परस्पर भ्रातृभाव से मिलजुल कर रहेंगे, तभी भगवान महावीर का यह धर्म-वृक्ष हराभरा रहकर फूले-फलेगा। हमें हर वक्त यह ध्यान रखना होगा कि हमारे वृक्ष की किसी भी शाखा से दूसरी शाखा को किसी भी प्रकार की इज़ा (पीड़ा) न पहुँचे। हम सब भाई हैं, महावीर के उपासक है, हमारा आवश्यक सूत्र कहता है :—

अन्ने देशे जाया
अन्ने देशे वड्ढिया चेव
जिन शासन अनुरत्ता
ते मे बंधवा भणिया ॥१॥

कितना हृदयस्पर्शी भगवान् का वचन है ? न जाति का अडंगा न कुल या देश-लिंग का बखेड़ा, न धार्मिक वाडाबन्दी कि मुखपत्ति वाला मेरा भाई या काले, लाल, पातरे वाला, अथवा हाथ मुखपत्ति वाला मेरा भाई नहीं। जे जिन शासन अनुरत्ता, जो जिन शासन अनुरागी हैं, वे मेरे भाई हैं। कितनी व्यापकता, कितनी पवित्रता, हृदय प्रेम से भर जाता है।

खाचरोद में भी पूजा, प्रभावना, जागरण की धूम मची, संघ ने अठाई महोत्सव का आयोजन किया। बांसवाडा वाले सेठ कस्तूरचन्द जी, पन्नालाल जी की ओर से शान्ति स्नात्र भी हुई। विधि-विधान करवाने इन्दौर से यतिवर छोटमल जी पधारे थे।

जिन दत्त सूरि उपाश्रय के प्रमुख कार्यकर्त्ता स्व० सेठ पन्नालाल

जी चोपडा की धर्मपत्नी ने अपने पुत्रों से विचार-विमर्श कर बीसस्थानक तप का उद्यापन भी किया। पूजा, सवारी, जागरण व स्वामी वच्छल भी हुआ।

७६—हृदय परिवर्तन

खाचरोद से विहार कर आप श्री प्रत्येक ग्राम-नगर मे प्रवचन कर धर्म-प्रचार करती हुई नागदा पधारी। नागदा श्री सघ ने भी हृदय खोल कर आपका स्वागत किया। बीच बाजार मे सैकडों की उपस्थिति मे आप श्री का प्रवचन होता। दर्शनार्थ आगतुकों की स्वामी भक्ति का पुण्य श्रेय भी नागदा श्री सघ नेआनन्द प्राप्त किया। फाल्गुन अमावस्या के दिन दादा जिन कुशल सूरि जयन्ती भी धूम धाम से मनाई। पूजा एव प्रभावना तो प्रतिदिन होती थी।

कुछ दिन पश्चात् बिरलाग्राम स्थित जैन बन्धुओं की प्रार्थना पर आप श्री तीन दिन के लिए बिरला ग्राम पधारी। बिरलाग्राम मे तो नवयुवकों की ही बहुलता है। अत यहाँ आपके सामने कई प्रकार के धार्मिक प्रश्नों के अतिरिक्त अर्वाचीन एव प्राचीन विचार-धारा के संघर्ष की जटिलतम समस्याएँ भी उपस्थित की जाती। नवयुवक वर्ग कभी-कभी आप के आचार विचारों की टीका भी करने लगता, उन्हें स्वयं [illegible] भी देता। आज के नवयुवकों की शिक्षा [illegible] की विपरीत होती है। युवक धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बरों की आलोचना करने लगे और इसी कारण धर्म

के प्रति अपनी अश्रद्धा भी व्यक्त करते। आप उनके तर्कों, प्रश्नो तथा जिज्ञासाओं का समाधान बड़े ही संतोष जनक शब्दों में करतीं। इस से बिरलाग्राम का नवयुवक वर्ग बड़ा खुश एवं संतुष्ट हुआ। तीनों ही दिन वहाँ प्रवचन हुवे। आपने बिरलाग्राम निवासी भाइयों को संदेश दिया कि आप यहाँ रहने वाले सभी भाई सम्पन्न नजर आते है। आपका कर्तव्य है कि आप साधन हीन निर्धन छात्रों को छात्र वृत्तियाँ देकर उनकी कठिनाइयाँ हल करें। यदि एक-एक व्यक्ति एक-एक गरीब साधन हीन भाई को अपना कर उसे उठाने की चेष्टा में लगे तभी आप सच्चे सम्पन्न, सच्चे अर्थों में मानव बन सकेंगे, वर्ना अपने परिवार के लिए तो सभी कमाते और सभी खर्च करते हैं।

बिरला ग्राम से विहार कर आप श्री संघ के साथ सापेरा पधारीं। पश्चात् आपने महीदपुर की ओर चरण घुमाए।

महीदपुर में आपके आगमन की राह बड़ी ही तीव्रता से देखी जा रही थी। महीदपुर प्रवेश के समय महीदपुर संघ के साथ रतलाम, नागदा, खाचरोद उज्जैन, इन्दौर आदि के संघ भी उपस्थित थे।

महीदपुर में आपका प्रवचन प्रतिदिन होता था। भीडका तो क्या कहना? सदा ही स्थानाभाव रहता है, भले बजार हो। भले उपाश्रय या मैदान हो। यहाँ मध्य प्रदेश के प्रधान मंत्री श्री मिश्रीलालजी गंगवाल भी पधारे। वे आपके प्रवचनों से बड़े ही प्रभावित हुए और पन्द्रह मिनिट तक आपकी प्रशंसा मुक्त कण्ठ से

करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसी विरल विभूतियाँ क्वचित् ही उपलब्ध होनी हैं, ऐसी विभूतियाँ ही समाज का कल्याण करने मे शक्ति सम्पन्न होती हैं। १५ रोज की स्थिरता के बाद आपके विहार के समय जैन अजैन सभी रो पडे। मानों उनका अन्यतम प्रिय सम्बन्धी ही न बिछुड रहा हो। लोग दौड-दौड कर चरणों मे नत हो रहे थे और अपने हृदय परिवर्तनों की गाथाएं सुना रहे थे।

उन लोगों मे परस्पर वर्षों से एक दूसरे के प्रति वैर विरोध चला आ रहा था। खान, पान, व्यवहार बद था। उनमे कई श्वसुर दामाद थे, कई भाई-भाई थे, समधी थे, सास, बहू थी, ननद भाभी थी, देरानी जेठानी थी, काका भतीजे थे, मित्र दोस्त थे। सभी ने कहा—"माताजी ? हम वर्षो से एक दूसरे के जानी दुश्मन बने हुए थे। एक दूसरे को फूटी आँख भी देख सकना हमारे लिए दुष्कर था। न जाने आपके प्रवचनों ने क्या जादू किया कि हमारा वैरभाव काफूर हो गया, और वर्षो के बिछुडे हृदय मिलने के लिए तड़प उठे। हमारे हृदय मे प्रेम का ऐसा ज्वार आया कि बीच के सभी व्यवधान बह गए। हम मिले बिना बेचैन होगए।

एक सिंघी परिवार मे तो बडी ही जटिल समस्या थी पुरुष वर्ग मासाहारी एव शराब का शौकीन था जब कि महिला वर्ग मांस और शराब से परहेज करने वाला था। प्राय प्रतिदिन इसे लेकर तूं तू मैं मैं क्लेश "धकारा" मच जाता और मन मार कर बेचारी महिलाओं को मास पकाना ही पडता, न पकाएँ तो रहे कहाँ।

अतः गृह जीवन एकदम अशान्त हो उठा था। परस्पर विरोधी विचारों का संगम हो ही कैसे सकता था? किन्तु हमारी चरित्र नायिका के एक ही प्रवचन ने पुरुषवर्ग का हृदय बदल दिया। उनका हृदय अपनी भयंकर भूल का अनुभव करने लगा और समस्या का समाधान निकल आया। पुरुष वर्ग ने मांस शराब न खाने की प्रतिज्ञा की और उनके मायूसी भरे परिवारों में खुशियों का सागर लहरा ने लगा। घर में ऐसा आनन्द छाया कि मानों घर वाले कोई उत्सव मना रहे हों। वह सारा का सारा सिंघी परिवार आपका परम भक्त बन गया। उन की श्रद्धा का उत्कर्ष यहाँ तक था कि वे आप श्री के चरण धोकर पान करने को बड़े ही लालायित हो उठे। सब को समझाते हुए अपने कहा :—

"मेरे और आपके पाँवों में क्या भेद है, आप अपने ही पाँव धोकर पीजिए जो सदैव आपका भार उठाए फिरते है। इन चमड़े के पाँवो को धोकर क्या पान करना, ये तो मेरे व आपके समान ही हैं। भले मिला कर देख लें, कुछ भी अन्तर नहीं। यदि पान करना ही है, तो भगवान् महावीर की सत्य, अहिंसा, करुणा, मैत्री भावना का पीयूष पान कीजिए। स्वयं जीवित रहकर अन्य प्राणियो को जीने का अधिकार दीजिए। इन चमड़े के पाँवो को धोकर पीना तो थोथा आडम्बर-मात्र दिखावा है और है आपके व मेरे पतन का कारण।" यह सुन वे लोग बड़े ही प्रसन्न हुए। वे आज भी आपको रामावतार, कृष्णावतार के समान मानते हैं। सवेरे आपके नाम की माला फेरते हैं।

महीदपुर मे धर्म-प्रचार कर हृदय परिवर्तन का नजारा दिखाकर आप वहाँ से ६ मील दूर गाँव मे पधारी। ६०० व्यक्ति आपके साथ थे। यहाँ से लौटते समय उन लोगों का हृदय टूक-टूक हो रहा था। पर कर्त्तव्य की शृ खलाओं मे आवद्ध मानव को मन के विरुद्ध भी काम करने पड़ते हैं। महीदपुर से चलकर आपने उज्जैन सघ के आग्रह पर उस ओर विहार किया।

८०—व्याख्यान वाचस्पति

उज्जैन सघ ने भी आपका भक्तिपूर्ण भव्य स्वागत किया। वहाँ भी प्रतिदिन प्रवचन होते थे।

पहला प्रवचन शान्तिनाथ जी के मन्दिर मे हुआ, दूसरा तपागच्छ के वडे उपाश्रय मे रखा। यहाँ वडा उपाश्रय भी छोटा हो गया, वत्र तीसरे दिन विक्रमलाज मे व्यवस्था की गई। तदपि जन-सागर की बाढ यहाँ भी न समाई तो अन्त मे म्युनिसिपल निगम मे पण्डाल वँधवा कर व्यवस्था करनी पडी।

यहाँ रामनवमी के दिन श्री रामचन्द्र जी की जयन्ती मनाई गई। एकादशी के दिन सिनेमा हॉल मे महिलामण्डल का प्रोग्राम रखा गया। द्वादशी का प्रवचन नागरजी द्वारा सस्थापित आध्यात्मिक मण्डल गगा घाट पर, जहाँ निकट मे ही सदीपन-आश्रम है, हुआ। यहाँ के प्रवचन मे आपने फरमाया :—

"देखिए, यहाँ पास में ही संदीपन-आश्रम है, जिस में गरीब से गरीब और अमीर से अमीर राजाधिराज तक के बालक समान भाव से, समान इज्जत से शिक्षा पाते थे। यहाँ ही परम ऐश्वर्यशाली भगवान श्रीकृष्ण पढ़ते थे, और इसी में दरिद्रता की प्रतिमूर्त्ति कृष्ण-मित्र सुदामा भी पढ़ते थे। दोनों ने अटूट निस्वार्थ प्रेम के साथ अध्ययन समाप्त किया था। अमीरी व फकीरी उनके बीच में व्यवधान नहीं डाल पाई थी। जीवन पर्यन्त श्रीकृष्ण सुदामा के लिए लालायित रहे। अन्तिम घड़ी तक मैत्री-सम्बन्ध निभाया। क्या आज ऐसे आदर्श शिक्षालयों की आश्रमों की आवश्यकता नहीं है, जहाँ जीवन के सत्य का, परम सत्य का सक्षात्कार हो सके? मानव-मानव के बीच वैभव की दीवार उठा सके, मानव-मानव से सच्चा, निस्वार्थ प्यार करना सीख सके,मानव में मानवता विकसित हो सके। आज की शिक्षा मानव को मानव के प्रति घृणा का पाठ सिखाती है। छोटे बड़े का माप दण्ड आज ज्ञान की बजाए अर्थ (धन) ने ले लिया है। अनपढ मूर्ख धनवान सम्मान पात्र है पर निर्धन ज्ञानवान का आज के समाज में कोई मूल्य नहीं है। यह तो विदेशी रीति नीति है जो आज हमारे पतन का हमारी दुर्दशाका मुख्य कारण बनी हुई है।

"भाइयो! समाज के मध्यम व निम्नवर्ग की स्थिति को देखिए, उसी के अनुसार समाज की नव रचना कीजिए। भावी सुकुमारों के कोमल मानस पर वैभव की विनाशिनी रेखा मत खिंचने दीजिए। विलास, स्वच्छन्दता पर अंकुश करिए। ग्राम-ग्राम नगर-नगर में संदीपन आश्रम खोलिए।

"आज हमारे अध्यापक अर्थ लोलुपी बन गए हैं, पर इसके लिए हमारा समाज भी कम उत्तर दायी नही है। वह शिक्षकों की जरूरतों की ओर से आँखे मूद बैठा है। परिणामतः शिक्षकों के मन मे भी छात्रों के प्रति एक परायापन पनपने लगा, वे छात्रों की उन्नति अवनति का विचार त्याग मात्र उत्तीर्ण कैसे हों इसी चिन्ता के फेर मे पड गए। फलत. छात्र अविवेकी, उदण्ड, धृष्ट बनते जा रहे हैं। शिक्षकों के प्रति उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए इसे वे जानते ही नही केवल वेतन भोगी नौकरों का सा उनके प्रति छात्रों का व्यवहार विचारणीय बन उठा है। इसमे शिक्षकों का छात्रों का एव समाज के कर्णधारो का तीनो का समान रूप से दोष है।" इस प्रकार गगाघाट पर ज्ञानगगा प्रवाहित कर आप शामको शान्तिनाथ मदिर वापिस पधारी।

आपकी इच्छा थी कि भ० महावीर जयती का उत्सव मक्षीतीर्थ मे मनाऊं। किन्तु उज्जैन ने अपने हाथ का लड्डु मक्षी तीर्थ को प्रदान करने की उदारता नही दिखाई। अत आपने महावीर जयती उज्जैन मे ही मनाई।

दिगम्बर व श्वेताम्बर समाज ने सम्मिलित रूपेण ही जयती मनाने का निश्चय किया और उत्सव की रूप रेखा बनाई।

महावीर जयती के दिन दिगम्बर व श्वेताम्बर की शामिल सवारी निकली। बच्चों ने सास्कृतिक कार्यक्रम उपस्थित किया। उसी समय आपका प्रवचन सुन कर हमारी व्याख्यान भारती' की भाषण कला समिति ने "व्याख्यान वाचस्पति" पदवी प्रदान कर सम्मानित किया।

८१—इन्दौर की चाल में

आप की इच्छा उज्जैन से माण्डवगढ होकर अमरावती जाने की थी। इन्दौर संघ का आग्रह रतलाम से ही चालू था। आपभी जानती थीं कि इन्दौर पहुंच ने के वाद विना चौमासा विताए विहार कर सकना अशक्य है। पर इन्दौर वालेऐसे नादान कहाँ थे। वे तो महीदपुर से ही आपको घेर रहे थे। उज्जैन आने के वाद तो उज्जैन इन्दौर पथ पर प्रतिदिन वसें व कारें दौड़ने लगी। इन्दौर का संघ इस बीच व्यापार धंधा तो भूला सो भूला,पर उसने तो खाना पीना ही विसार दिया किंतु आपने मंजूरी नहीं दी।

इन्दौर वालों का धैर्य भी जवाव देने लगा। भक्ति और शक्ति में जोश आया और एक युक्ति भी सूझ गई। उन्होंने कहा, "आखिर इन्दौर ने आप का ऐसा कौन सा अपराव कर दिया है कि इन्दौर का नाम तक भी आप को नहीं सुहाता ? भले आप चौमासा मत करें पर इन्दौर छोड़कर आप बाहर से ही मालवे से निकल जाएँ यह तो न आज होने का है न कल होने का। खुशी से माने तो भी इन्दौर ज़ाना होगा और नाराज़गी से जाएँ तो भी इन्दौर जाना होगा। विना इन्दौर की भूमि को पवित्र किए आप के कदम मालवे से वाहर नहीं उठ सकेंगे। क्या हमी एक ऐसे हतभागी है कि दो साल से हमारी भावना साकार नहीं हो रही है विना इन्दौर पधारे ही आप ब़रार में प्रवेश करें यह आघात हम वर्दाश्त नहीं कर पाएँगे।'

जब आपको इन्दौर गए विना अपने छुटकारे का अन्य मार्ग नजर

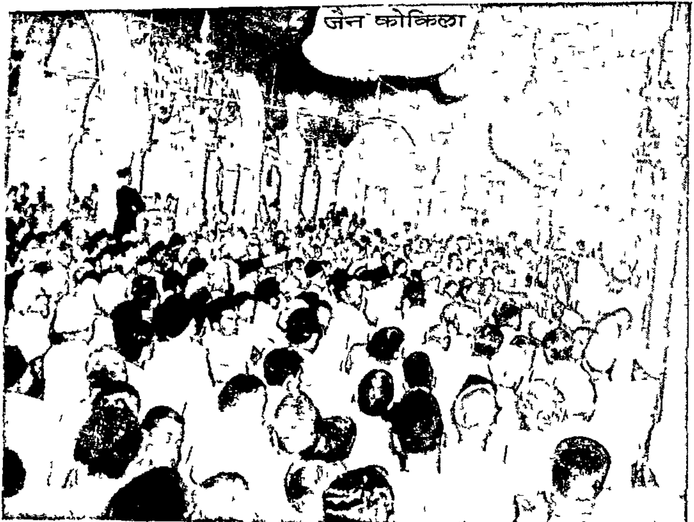

इन्दौर व्याख्यान का एक दृश्य

पृष्ठ—३०८

नही आया, तब आपने इन्दौर वालों से यह वचन लिया कि आप उनको इन्दौर चतुर्मास की प्रार्थना नही करेंगे। आगेवानों ने ऐसा विश्वास दिलाया और इन्दौर जाने की हामी भर कर आपने निश्चिन्तता की सास ली पर सरल हृदया आप इन्दौर सघ की युक्ति नही समझ पाईं।

इन्दौर के मार्ग पर आप चलतीं थी और रास्ते मे इन्दौर वाले कारो से प्रतिदिन आपकी पहरेदारी करते थे। चोर की दाढी मे तिनका वाली बात थी, इन्दौर वालों के मन मे भय था कि कही हमारी चाल को भाप कर आप मार्ग न बदल दें। आखिर इन्दौर की भावना ने मूर्त्त रुप लिया और दिनाक ७-४-६४ को प्रात काल सात बजे आपने मोरसली गली के उपाश्रय मे प्रवेश किया।

दूसरे दिन से ही राजवाडे का गणेश हाल जो आपके प्रवचन के लिए पहले से ही सुरक्षित था मे पाच-छः हजार जनता की उपस्थिति मे प्रतिदिन आप प्रवचन करती थी। सात दिन पश्चात् आपने विहार की बात की और समाज ने प्रस्ताव रखा कि पूज्या रत्नश्री जी महाराज की शिष्याएं वर्धन श्री जी, हीरा श्री जी, माणक श्री जी आदि आपके दर्शनार्थ व हीरा श्री जी के वर्षीतप के पारणार्थ आपश्री के पास आ रही हैं। अत' आप पारणा ता यहां ही स्थिर होकर करावें। यदि आप विहार मे रहेगी तो वे तपस्वी साध्वियां आपके लिए यहां वहां भटकेंगी। आपश्री ने भी ऐसा ही उचित समझा और ठहर गई। सभी साध्वी जी पधारी। अक्षय तृतीया को सानन्द तप का पारणा भी हो गया। आपने फिर विहार की तैयारी की।

इधर संघ ने तो पहले से ही निश्चय कर रखा था कि आपका चौमासा इन्दौर ही करवाना है।

जिन्होंने चौमासे की विनती न करने की प्रतिज्ञा की थी, वे स्वयं पीछे हट गए और अन्य व्यक्तियों को पीठ ठोंक कर आगे कर दिया। परिणामतः प्रतिज्ञा वाले ५-७ व्यक्ति पीछे हटे और समस्त जैन संघ सामने आ डटा एवं प्रार्थना करने लगा कि आपको चौमासा करना पडेगा। इसपर आपने फरमाया—"इस विषय में अव आप मुझसे कुछ भी न कहिए, मैं पहले ही प्रतिज्ञा करवा कर आई हूँ।

इन्दौर वालों ने तुरन्त कहा :—

जिनकी प्रतिज्ञा है वे पीछे हट जाएँ, समस्त संघ प्रतिज्ञाबद्ध नहीं था। प्रतिज्ञा वाले पीछे हटे जरूर, पर सहयोग तो उनका पूरा था। आप बड़ी ही दुविधा में पड़ गईं, यह रंग नया था, ऐसा मजेदार खेल आपने कभी नहीं देखा था। फिर भी आपने कहा :—

"अपनी जबान पर कायम रहिए।" सभी एक स्वर से बोल उठे कि हम प्रतिज्ञाबद्ध नहीं हैं, हम उस समय मौजूद ही नहीं थे। आपने कहा, "देखिए, १५ वर्षों से अमरावती की प्रार्थना चल रही है। विज्ञान श्री जी म० भी वृद्ध हैं, एक बेर मेरा अमरावती जाना अत्यावश्यक हो गया है। अतः अब आप हठ न करें।" संघ माना नहीं और आपने प्रवचन में फरमाया कि कल प्रवचन श्रीमद् विनोबा-भावे द्वारा संस्थापित विसर्जन आश्रम में होंगा, क्योंकि आचार्य दीपचन्द जी का ऐसा आग्रह है। तब इन्दौर वालों ने पूछा कि परसों का प्रवचन कहाँ होगा? आप श्री मौन रहीं, आपको मौन

देख सभी समझ गए कि आप बिना कहे बिना सुने विहार करने का विचार कर रही हैं। उनके हृदय तो धड़के, पर निश्चय दल उनके पास था।

अगले दिन सवेरे आप विसर्जन आश्रम मे पधारी। इन्दौर का समस्त जैन-सघ पूरी शक्ति से वहाँ पहुँचा और जोर-शोर से माइक पर विनती करने लगा। दो रोज तक आपको विसर्जन आश्रम मे ही ठहरना पडा, अब प्रार्थना का रग कुछ और ही था, जोश के साथ रोष, प्यार, भक्ति, विकलता, बेचैनी भरा आग्रह बरसने लगा। उपस्थित जन समुदाय का हृदय डोल उठा, नयन बरसने लगे, आश्रम गूँज उठा, क्षेत्र-स्पर्शना ने जोर मारा और मातु श्री विज्ञान श्री जी म० का हृदय भर आया। करुणा जागृत हुई और उन्होंने उसी गद्गद् वातावरण मे बिना आपकी सलाह लिए भावावेश मे चतुर्मास का आश्वासन दे दिया। सघ तो यही चाहता था, उसने तुरन्त जय-जयकारों से आकाश मण्डल गुँजा दिया।

अगले दिन आप श्री आश्रम से चलकर जीवनलाल जी के बगले मे पधारीं और चतुर्मास की स्वीकृति देकर सघ की मनोकामना पूर्ण की।

इन्दौर मे चतुर्मास स्वीकृत होने पर, आप श्री देवास पधारी। तीन दिन देवास ठहरी, वहाँ पर कलकत्ता वासी हरखचन्द जी नाँकरिया व उनकी पत्नी ताराबाई द्वारा आपके उपदेश से एक धार्मिक पाठशाला की स्थापना की गई। देवास से मक्सी पधारी। चार दिन

मक्षी में ठहर कर पुनः देवास पधारीं और चार दिन पश्चात् फिर इन्दौर की सीमा में प्रवेशीं।

प्रथम दिन महाजन के वंगले पर व दूसरे दिन भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध क्षयरोग के विशेषज्ञ डा० बोरड़िया के वंगले पर ठहरीं, तीसरे दिन सिनेमा वालों के बंगले पर ठहर कर आषाढ़ शुदि तृतीया को आप श्री ने पुनः इन्दौर मोरसली गली स्थित उपाश्रय में प्रवेश किया।

८२—इन्दौर में

अषाढ शुक्ला एकादशी को युग प्रधान दादा श्री जिन दत्त सूरि-जी म० की जयंती मनाने का निश्चय किया गया। यह कार्यक्रम तीन दिन का रखा गया। रविवार १८ जुलाई को प्रातः काल आठ बजे से दस बजे तक विदर्भ केसरी श्री बृजलाल जी बियाणी के सभापतित्व में सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ। १९ जुलाई प्रातः सभा, दोपहर में दादा बाड़ी में पूजा रात्रि में मंदिर जी में भजन आदि का कार्यक्रम था। २० जुलाई को प्रातः प्रवचन दोपहर में महिला सम्मेल रात्रि में जागरण।

२०जुलाई प्रातः प्रवचन के समय हम लोग पहुँचे। प्रवचन गणेश हाल में चालू था जनता से गणेश हाल खचा खच भरा था। जन समुदाय के आनन्द मग्न हजारों चेहरे देख कर हमारे भी मन हर्ष विभोर हो गये।

श्रावण मास मे तपम्या का जोर शोर रहा। व्याख्यान की छटा तो दर्शनीय थी मूसलाधार वर्षा मे भी जनता की हाजिरी मे कोई कमी न होती।

भादों मे पर्यूषण पर्व की तो बात ही क्या ? गच्छों के व्यवधान को दूर कर, सम्प्रदायों के वर्ग मिटाकर, सभी गच्छों, सम्प्रदायों व ममाजों की जनता गणेश हाल से बाहर विशाल चौक तक मे समाती नही थी। अनुमानत ८००० लोग प्रति दिन दोनों समय श्री कल्पसूत्र का श्रवण करते थे। हमारी माताए और बहनें भी बातों की स्वभाविक आदत को भूल गई थी। यहाँ तक कि हमारे बाल-मित्र भी रोना, हँसना, खेलना भूल आपकी मुद्रा के दर्शन से अभिभूत हो गये थे। जैन समाज मे व्याख्यान के समय इतनी भीड और इतनी शान्ति दर्शनीय एव अपूर्व-सी थी। सवत्सरी के दिन सूत्र वाचने के समय जन सख्या की गिनती ही नही थी। गणेश हाल से बाहर तक दरियाँ बिछी थी, सीढियाँ व बरामदे लाघ कर जनता सड़क तक खडी थी, पर्व सानन्द सम्पन्न हुए।

दूसरे दिन क्षमापना समारोह मे हमारी चरित्र नायिका एव स्थानकवासी सम्प्रदाय के मुनिरत्न विद्वान सौभाग्यमल जी महाराज एवं प्रतापमल जी महाराज आदि मुनि मण्डल के सान्निध्य मे सघ व मुनिराजों एव हमारी चरित्र नायिका ने परस्पर क्षमापना की। यह दिन परम आनन्दकारी व मगलमय पवित्र दिन था।

रविवार के दिन समुदायिक क्षमापना दिवस रखा गया, जिसमे समस्त जैन समाज शामिल था। प्रत्येक समुदाय के प्रमुख व्यक्ति

एक ही स्थान पर परस्पर क्षमापना कर रहे थे। यह जैन समाज के परम अभ्युदय का मंगल संकेत था।

तत्पश्चात् हमारी चरित्र नायिका तत्रस्थ सभी सम्प्रदाय के मुनिराजों एवं आर्याओं के यहाँ क्षमापनार्थ पधारीं। सभीने आपको सम्मान, आदर, प्रेम प्रदान कर क्षमापना की। जो सब को आदर एवं मैत्री भाव से देखता है, उसके लिए सर्वत्र सम्मान और मैत्री तैयार खड़ी रहती है।

स्थानकवासी समुदाय के आचार्य श्री गणेशीलाल जी म० के वर्तमान पट्टधर श्री नानालाल जी म० से क्षमापना करने के निमित्त आप श्री राजमोहल्ला पधारीं। उस समय श्री नानालाल जी का प्रवचन चल रहा था, आप श्री प्रवचन में विराजीं। शान्तिपूर्वक पूज्य श्री का भाववाही विद्वत्तापूर्ण प्रवचन सुनने के बाद आपने सविनय क्षमापना की। महाराज श्री ने भी आपसे क्षमापना की। तत्रस्थ संघ ने भी क्षमापना की, पश्चात् संघ के आग्रहवश पूज्य श्री की आज्ञा से आपने भी अपना प्रवचन महाराज श्री की अध्यक्षता में किया, जिससे संघ बड़ा ही हर्षित हुआ। पूज्य नानालाल जी म० का व आपका संयोग रतलाम में भी साथ था और इन्दौर में भी। रतलाम में उपाश्रय नजदीक होने से मिलने के मौके अधिक होते थे। यहाँ स्थान की दूरी थी।

पश्चात् वर्धा जैन महामण्डल की इन्दौर शाखा ने आपके सान्निध्य का लाभ उठाते हुए, आध्यात्मिक सप्ताह मनाने की योजना चालू की, जिसमें प्रधानवक्ता जबलपुर युनिवर्सिटी के दर्शन-शास्त्र के

सामूहिक क्षमापना, इन्दौर

पृष्ठ—३१४

प्रोफेसर श्री रजनीश, रामकृष्ण मिशन के रामानन्द जी स्वामी एव वैष्णव मण्डलेश्वर सन्त थे। दिगम्बर पण्डितप्रवर श्री नाथूलाल जी एव श्री लालबहादुर शास्त्री, स्थानकवासी पूज्य मुनिराज श्री सौभाग्यमल जी म०, प्रतापमल जी म० एव हमारी चरित्र नायिका के प्रवचन हुए। ये सारे ही प्रवचन एकसे एक बढकर थे। यह सप्ताह बडा ही ज्ञानवर्धक एव उत्साहजनक सिद्ध हुआ।

तपागच्छ सघ के नवयुवकों ने जैन नवयुवक समिति का वार्षिकोत्सव अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष श्री वसन्तराव वल्दोटा एव समाज विख्यात माननीय श्री ऋषभदासजी रांका की अध्यक्षता मे मनाया गया, उसमे भी आपका पूर्ण सहयोग था। आप श्री ने इस समय समाज के सभी व्यवधानों को दूर कर पूरा-पूरा भाग लिया। दूसरे दिन वल्दोटा जी व रांकाजी गणेश हाल मे प्रवचन सुनने पधारे। वहाँ दोनों महानुभावो ने भी बडा सुन्दर भाषण दिया।

यहाँ आप श्री ने नवलाख नवकार के जाप भी करवाए।

प्रति सप्ताह दोपहर में महिला सभा भी होती।

मदसौर निवासी प्रतापमल जी सेठिया की बहुत दिनों से प्रेरणा थी कि छोटी साध्वियाँ शतावधान सीखें। किन्तु आप श्री की रुचि इस ओर कुछ कम थी। सेठिया जी भी धुन के धनी व्यक्ति हैं। पहले उन्होंने मुझे शतावधान सीख कर साध्वियों को सिखाने की प्रेरणा की, किन्तु मेरी भी इस विधा के प्रति रुचि कम होने से आखिर उन्होंने हमारी राय ध्यान कर पण्डित मदनलाल जी जोशी

को बम्बई में श्री धीरजलाल टी० शाह से अवधान सिखवाए और मदनलाल जी को इन्दौर भेजकर उन्हें श्री चन्द्रप्रभा श्री जी, मनोहर श्री जी, मणिप्रभा श्री जी एवं मुक्तिप्रभा श्री जी म० को शतावधान सिखाने के लिए नियत किया। इसमें तरुण-हृदय वयोवृद्ध सेठियाजी भी बड़े उत्साह से साथ देते रहे और हर प्रकार से प्रोत्साहन देकर हमारी साध्वियों को तैयार करते रहे। बुद्धिसम्पन्ना साध्वियाँ भी अल्प ही समय में तैयार हो गईं। प्रतापमलजी साहब एवं इन्दौर वालों की इच्छा सभा में शतावधान दिखाने की रही, पर चरित्र नायिका की विचारधारा इस ओर न होने से ऐसा न हो सका। आप श्री के विचार ऐसे प्रदर्शन के पक्ष में न थे।

पूरे चतुर्मास में आगन्तुको का तो तांता ही लगा रहा। कभी पाँच, कभी पचास तो कभी सौ-दोसौ आते ही रहते। पर्यूषण पश्चात् तो यात्रियों का पार ही न रहा। सभी आगन्तुकों की भोजन व्यवस्था इन्दौर संघ ने पूरे चतुर्मास पर्यन्त उठाई।

स्थानकवासी महावीर भवन में मुनिराज सौभाग्यमल जी व प्रतापमल जी की अध्यक्षता में कई विद्वानों के भाषण होते थे। आप भी वहाँ पधारती थीं। डा० कैलाशनाथ काटजू, विश्वपद यात्री शतीशकुमार व उनके साथी प्रभाकरजी, आचार्य रजनीश आदि विद्वानों के भाषण समय-समय पर होते रहे, मुनिराज एवं श्रोतावर्ग तथा आगन्तुकों के आग्रह पर आपका भी प्रवचन होता। जब भी स्थानकवासी भवन में प्रवचन का विशेष आयोजन होता, आप अपना प्रवचन बन्दकर सारी जनता के साथ वहाँ पधारतीं। मुनिराजों को

जब भी सूचना दी जाती, वे भी तुरन्त पधारते थे। आपका और स्थानकवासी सन्त मुनिराज सौभाग्यमल जी व प्रतापमल जी का व्यवहार परस्पर बडा ही स्नेह-सौजन्य आत्मीयतापूर्ण रहा। यहाँ मेरे-तेरे की गन्धमात्र न थी, न बडे-छोटे का प्रश्न था, न 'पुरुषत्व प्रधानता' ही थी।

क्षय रोग विशेषज्ञ डाक्टर बोरडिया के तरुण डाक्टर पुत्र अशोक की भावना, त्याग, विराग प्रशसनीय था। वे रामकृष्ण मिशन से प्रभावित थे। किन्तु जब भी समय मिलता अशोक जी आप के पास आते और श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृत जिसे आप ने उन्हें पढने को दिया था का अर्थ जहाँ समझ मे न आता था समझते थे। आप भी हजार काम छोड श्री अशोक जी को समय देती थी। शान्त सरल आकृति अशोक जी की जिज्ञासा प्रशसनीय थी। वैभव सम्पन्न माता-पिता का इकलौता पुत्र और धार्मिक जिज्ञासा अद्भुत सयोग था।

पूजा प्रभावना, तपस्या आदि तो प्राय प्रतिदिन होते थे। कभी दादा वाडी तो कभी मदिर मे कोई न कोई उत्सव रहता ही।

प्राय. प्रतिदिन शाम को आप निवृत्ति हेतु शहर से बाहर दादा वाडी पधार जाती और शान्ति पूर्वक मनन चिन्तन मे रात्रि व्यतीत कर सवेरे गणेश हाल मे प्रवचन कर उपाश्रय पधारती।

दो अक्टूबर गाधी जयती के उपलक्ष मे आयोजित गाधी सप्ताह मे भी गाधीभवन पधार कर आप ने सहयोग दिया। बपहामार्केट स्थित कन्याशाला मे जाकर प्रवचन दिया, खादी प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह मे भी पधारी।

इस प्रकार वि० सं० २०२१ का चतुर्मास इन्दौर में सानन्द सम्पूर्ण हुआ।

८३—मालव से प्रस्थान

इन्दौर का चतुर्मास सानन्द सम्पन्न कर आप श्री ने अगहनबदि प्रतिपदा को विहार करने का निश्चय किया। संघ भी जानता था कि सीमातीत प्रयत्न के पश्चात् जहाँ चौमासा करवाया गया था वहां अब और रुकने का प्रश्न ही नहीं था। अतः विदाई समारोह की त्रिदिवसीय रूप रेखा तय्यार की गई।

प्रथम दिन कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद् हेमचन्द्राचार्य की जयंती, दूसरे दिन बीसवी शती के महापूरुष श्रीमद् रामचन्द्र को जन्म जयंती, एवं तीसरे दिन विदाई समारोह मनाने का निश्चय किया गया।

हेमचन्द्राचार्य जयंती के उपलक्ष में मिश्रीमल जी वोहरा एवं पूरे चतुर्मास पर्यन्त हमारे साध्विमण्डल को निःशुल्क स्याद्वाद मंजरी एवं शिशुपाल वध काव्य का अध्ययन करना वाले पण्डित प्रवर जवाहरमल जी जैन ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। हमारी चरित्र नायिका ने भी आचार्य देव के महान कार्यों पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

श्रीमद् राजचन्द्र जयंती के उपलक्ष में आगास आश्रम से निमंत्रित पण्डित जी ने उनके आत्म ज्ञान पर विशद रूप से प्रकाश डाला। आप श्री ने एक गृहस्थ संत की उत्कृष्ट आध्यात्मिक साधना को नमस्कार कर उसकी खूब अनुमोदना की।

तीसरे दिन अगहन वदि १ २० नवम्बर को आप का विदाई समारोह आयोजित हुआ।

उसमे सर्व प्रथम आपने १५ मिनिट तक सघ के नाम सदेश दिया और इन्दौर निवास की अवधि मे अपने द्वारा कोई भी शास्त्रीय आज्ञा विरुद्ध कार्य किया गया हो अथवा अपने द्वारा किसी का भी मन दुखा हो, इसके लिए क्षमापना की। पश्चात् रतनलाल जी कोठारी, श्री लाल जी पटवा पण्डित प्रवर जवाहरलाल जी जैन, मिश्रीमल जी बोहरा आदि अनेक महानुभावों ने आप श्री के प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त कर आप के समन्वय प्रचार आदि विशिष्ठ गुणों पर प्रकाश डालते हुवे कहा कि आपके जीवन की विशेषताओं के प्रति इन्दोर ही नही, अपितु सारा मालव-प्रान्त आभारी है। आपने मालव मे ऐक्य और प्रेम की वह वर्षा वरसाई है जिससे स्थान-स्थान पर ईर्षा, फूट आदि से सतप्त सघ आज प्रेम और सगठन की अभिनव शान्त समीर से लहलहा रहा है। आज आप सारे मालव प्रान्त की श्रद्धा-भाजन, आराध्य देवी बन चुकी हैं। अब आप मालव छोड वरार की विरह कातरा भूमि को जो कि आप की जन्म भूमि है हरामरा करने के लिए ४२ वर्ष बाद पधारने का कार्यक्रम बना रही है। आप कही भी पधारें, पर मालव आप की देन को सदियों तक भूल नही सकता। आपने विश्व-प्रेम प्रचार का यह प्रकाश दिया है, प्यार का वह ज्वार वहाया है, जिसमे मालव सदैव हरा-भरा रहेगा। आपने जन-जन के मन के मैल को अपने प्रवचन प्रवाह मे वहा दिया। समन्वय का केवल पाठ ही नही पढ़ाया, पर तदनुसार आचरण भी कर दिखाया।

इसमें बाधक रूप हमारी भूलों को आपने सुधारा और समस्त जैन समाज को आपकी निश्रा में हमने वर्गहीन, सम्प्रदायातीत एक ही भावना, एक ही श्रद्धा लिए देखा। क्या दिगम्बर, क्या स्थानकवासी, क्या तेरापंथी, सभी का आपने सहयोग प्राप्त किया। समाज के बिखरे मोतियो को आपने प्रेम-धागे में पिरोया, टूटती कड़ियों को जोड़कर दृढ़ किया। बिखरती शक्ति को बटोरा, गिरतों को सम्भाला और इसीका सुपरिणाम आज हमारे सामने है कि इन्दौर की राजवाड़े जैसी विशाल इमारत में जन-समुद्र समा नहीं रहा है। क्या करें, इससे बड़ा स्थान यहाँ सुलभ नहीं था।

आज जनता आपकी विदाई समारोह मनाने आई है, पर देखिए, ये सभी आँखें आज उदास है, विषाद से भरी हैं। आषाढ़ के बादलों-सी कातर बनी है। यहाँ से आपका विहार कोई नहीं चाहता, पर विवशता है। सागर को कौन बाँध पाया है, सूर्य-चन्द्र किसके विवशवर्ती बने है? चार मास रोक लिया, यह भी सन्तों की कृपा का ही प्रसाद था। आपका व्यक्तित्व, आपका प्रभाव, श्रद्धा की चीज है, अनुभव की वस्तु है, भावना की परख है।

आज यदि आप जैसे समन्वय विचारधारा के साधु एवं साध्वियाँ हमें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों तो हमारी जैन कौम का रूप ही कुछ और हो। दुनियाँ हमारी उन्नति देख दाँतों तले उँगली दबाए, हम स्पर्धा की चीज बनें, पर हमें तो हमारे दुर्भाग्य से फिरके परस्ती के गच्छागच्छ के और तँ-तँ मैं-मैं के पाठ पढ़ाए जाते हैं।

आप जा रही है, भले पधारें, पर इन्दौर के जैन जैनेतर समाज के हृदयों मे आप सदा के लिए बस गई हैं।

इस प्रकार पूरे तीन घण्टे तक विभिन्न महानुभाव अपनी भाव-भरी श्रद्धाञ्जलियाँ व्यक्त करते रहे, फिर भी काफी लोग रह गए। उन्हें दूसरे दिन मन्नालाल जी ठाकुरिया के बगले पर समय देकर सन्तुष्ट किया गया।

अन्त मे सभी ने आपसे प्रार्थना की कि इन्दौर को भूल न जाएँ, यहाँ पुनः पधारने की भावना रखे।

पश्चात् आपने सकल सघ से क्षमापना करते हुए फरमाया कि आपलोगों ने जितना मान मुझे दिया है, उतनी महान् मैं नही हूँ, किन्तु भगवान् ने सघ को माता-पिता की उपमा दी है। जैसे माँ-बाप अपने बच्चे की छोटी-छोटी बातो पर भी उसकी पीठ ठोंक उत्साह बढाते हैं, उसी प्रकार आप भी मुझे बढावा दे रहे हैं।

२१ नवम्बर को आप श्री ने दिनके सवा बजे मोरसली गली उपाश्रय से प्रस्थान किया। इस समय लगभग चार-पाँच हजार व्यक्ति आपके साथ चल रहे थे। मुख्य बाजारो मे घूमते हुए सभी मन्दिरों के दर्शन व तत्रस्थ सभी सम्प्रदाय के साधु, मुनिराज व आर्याओं सेमिलती हुई आप तीन बजे मन्नालाल जी ठाकुरिया के बगले पर पधारी। वहाँ समस्त श्री सघ की ओर से स्वामी वात्सल्य था, जिसमे २००० से भी ऊपर व्यक्ति सम्मिलित हुए। यहाँ भी प्रवचन हुआ।

वहाँ से विहार कर आप जाध्वा कोठी पधारी, आगन्तुक भाई

बहनों के लिए भोजन की व्यवस्था यशवंती बहन की ओर से थी।

वहाँ से आप कस्तूरबा ग्राम में पधारीं। वहाँ विनोबा भावे आश्रम में आपका प्रवचन था, क्योंकि शान्ति सेना की बहनों का कई दिनो से आग्रह था। तत्पश्चात् आपने इन्दौर की सीमा का त्याग किया।

इन्दौर से बडवाहा पधारीं, वहाँ दो दिन ठहर कर खण्डवे की ओर प्रस्थान किया।

८४—राम भरत मिलाप

मध्य-प्रदेश में बजाई गई समन्वय दुंदुभी एवं विश्व प्रेम की भैंरी का मधुर नाद सारे भारत में गूंज उठा था दैनिक व मासिक पत्रों ने आपकी प्रशंसा में कालम के कालम रंग दिए थे। आपको अपने-अपने प्रान्तो की ओर खींचने का प्रयत्न चारो ओर से चल रहा था। किन्तु आपके पास अब सिवाय महाराष्ट्र की ओर जाने के अन्य मार्ग नही था। जन्म भूमि वर्षों से पुकार रही थी, दीक्षा पश्चात् ४२ वर्ष बीत चुके थे, सब्र की सीमा समाप्त हो चुकी थी अतः आपने ज्यों ही इन्दौर से प्रस्थान कर महाराष्ट्र की ओर पांव उठाए त्यों ही भुसावल एवं जलगांव की विनती शुरु हो गई।

इन्दोर से चल कर आप गांव गांव में सदाचारी जीवन एवं जीवो और जीने दो का पाठ पढाती, लोगों से मांस मदिरा का त्याग

करवाती खण्डवा पहुँची। खण्डवा के दिगम्बर श्वेताम्बर सभी मदिरों के दर्शन कर आप अपने निवास स्थान पर पहुँची। यथा समय प्रति दिन प्रवचन होता, मौन एका दशी की आराधना आपने खण्डवा मे ही की। इस दिन दिए गए प्रवचन का सार भूत एक अश इस प्रकार था.-

बन्धूओं एव बहनों। जिस प्रकार श्रावण मास मे बहनें रग बिरगे कपडे पहन ओढ कर बागों मे, बगीचो मे भूलने जाती है, और बडी ही मस्ती के साथ गीत गा-गा कर भूलती है। भूला कभी ऊपर और कभी नीचे इतने तीव्र वेग से चढना उतरता है कि सामान्य मानस गिरने की कल्पना कर दहल उठता है, पर बहने हसती खेलती ताली बजाती, सही सलामत मन भर भूल कर नीचे उतर आती हैं। इसका कारण क्या? कारण मात्र एक ही था कि भूला भूलकर भी वे अपने आपको भूली नही और अपने आपको भूली नही तो सही सलामत हँसती खेलती उतर भी आई। इसी प्रकार यह ससार भी एक प्रकार का भूला ही है, इस पर सवार प्राणी मात्र रात दिन उत्थान और पतन के झोले खाता ही रहता है भव पर्यन्त खाता ही जाएगा, यहाँ हमारा फर्ज हो जाता है कि बहनो की तरह हम अपने आप को भूले नही, और ज्ञानियो के उपदेश रूप ज्ञान एव आचरण की डोर हाथों मे कसकर थामे रहेगें तो हम गिरने से अवश्य बच जाएगें व हमारे भी हाथ पैर सही सलामत रहेंगे। "एगोहं नत्थि मे कोई" यह आर्स वचन एक ऐसा सुद्रढ आलम्बन है कि मोह ममता के कितने ही जोर के तूफानी झूले पर बैठ कर भी

हम गिर नहीं सकते, पड़ नहीं सकते, और हंसते खेलते अपने घर यानी मुक्ति जा सकते है।

मैं आत्मा हुं संसार नहीं संसार का कोई पदार्थ मैं नहीं, मेरा नहीं, ऐसा सुद्रढ भान रखकर चाहे जैसा कार्य करने पर भी हमें संसार बंधन रुप न होकर मात्र उदय रुप होगा। और उदय रुप संसार को भोगने वाला, प्राणी अवश्यमेव अपना उत्थान कर के अनादि कालीन इस संसार भूले से मुक्त होकर अपने स्थिर, अचल, अकंप अविनाशी स्वभाव को प्राप्त करेगा यह निश्शंसय बात है।

श्री कृष्ण ने मौन एकादशी पर्व की आराधना की थी और आज तक यह पर्व शैव वैष्णव एवं जैनों में एक महान् पर्व के रुप में प्रतिवर्ष मनाया जाता है सभी इस पर्व की आराधना समान भाव से करते है।

जिस प्रकार श्री कृष्ण ने संसार भूले पर भूल कर भी अपना स्थान अपनाने के लिए टिकिट रिजर्व करवाया, उसी प्रकार यदि निर्लेप भाव से इस पर्व की आराधना उपासना हम भी करें तो हमें भी हमारा घर अवश्य प्राप्त होगा।

खण्डवे से आप बुरहानपुर पधारी यहाँ भुसावल एवं जलगांव के भाई आ पहुँचे। बुरहानपुर से भुसावल एवं जलगांव होकर अमरावती जाने से १०० माईल का चक्कर अधिक आता था। मातु श्री, श्री विज्ञान श्री जी म० की वृद्धावस्था शरीर स्वास्थ्य व खान देश की प्रसिद्ध गर्मी देखकर आप ने इस चक्कर को टाल देने का ही विचार किया था। नदी भले प्यासो के पास न जाए किंतु प्यासे स्वयं नदी के

पास पहुँच जाते है। दोनों स्थानों के व्यक्तियों ने अपने नगरों की फूट का वयान किया व आप को अपने नगरों तक पधारने की प्रार्थना की और वे इस प्रेम गगा के प्रवाह को अपनी ओर मोडने मे सफल वने।

जव तक आप भुसावल नही पहुची तव तक वहाँ के कर्मठ कार्यकर्त्ता फकीरचन्द जी एव पारस रानी के तार पत्र फोन स्थान स्थान पर आते ही गए।

दि० ३-१-६५ को सवेरे साढे नौ वजे आपने भुसावल मे प्रवेश किया। यों भुसावल अच्छा क्षेत्र है परन्तु मदिर मान्यता वाला जैन श्वेताम्वर घर यहा एक भी नही है, सारी जैन प्रजा स्थानक वासी एव दिगम्वर है। आप का वेश मात्र श्वेताम्वर है, किन्तु हृदय तो निखालिश सम्प्रदायातीत मात्र जैन ही है। और इसीलिए सभी जैन सम्प्रदायों की आप श्रद्धा पात्र वनी है। सभी ने आप का हार्दिक स्वागत किया और आप स्थानक मे ठहरी।

आप का प्रवचन प्रतिदिन पचायती भवन मे होता अधिकाधिक सख्या मे लोग उपस्थित रहते।

यहाँ सघ मे सगठन अच्छा, होने पर भी एक तुच्छ से कारण को लेकर दो युग यानी २४ वर्ष से दो भाइयो मे परस्पर झगडा चल रहा था। एक ही खून से निर्मित, एक ही जननी के जाए, दो सगे भाई परस्पर के स्वभाविक प्यार की अवहेलना कर जानी दुश्मन वने हुए थे। कई सत एव सतियाँ, कई वरिष्ठ जन इन्हे समझा कर हार चुके थे।

आप के प्रवचन मे सगठन का सदेश एव राम-भरत के पावन

भ्रातृ प्रेम का वर्णन करने वाला, वैमनस्य ग्रसित हृदयों को हच-मचाकर प्रेम प्रवाह प्रवाहित करने वाला गायन व वर्णन सुनकर श्रोता वर्ग का हृदय गद्गदित हो गया। वहाँ पर बैठे उन दोनों भाइयों का हृदय भर आया, प्रसुप्त भ्रातृ प्रेम उमड़ कर नयनों से लुढ़कने लगा, प्रेम के तूफान में २४ वर्ष पुराने मतभेदों के पत्ते उड़ गए, वैर विरोध रूपी खण्डहर धराधस हो गए। प्रेमावेश में ही दोनों भाई वहाँ ही सभा स्थल पर लिपट गए। वर्षों से बिछड़े, राह भूल कर भटके हुए भाइयों का यह मिलन राम-भरत मिलाप का सा दृश्य उत्पन्न कर रहा था। वहाँ उपस्थित जनता चकित-सी इस चमत्कार को देखकर जयनाद कर रही थी।

आप की यह विशेषता है, वाणी का अतिशय भी है, कि आप को जो कुछ कहना होता है प्रवचन में ही कहती है सीधी बात या आमने सामने बैठकर गुत्थियाँ आप नहीं सुलझातीं। आप कहती है, रेशम में पड़ी गुत्थियों को सुलझाने की चेष्टा में सफलता कम ही मिलती है, फिर पुरानी गाँठों को खोलते समय तो प्रायः निश्चित ही वे टूट कर ही खुलेगी। सुलझाव की बजाए उन ग्रन्थियों को बिना छेड़े ही हम दूसरे रेशम से काम लें और उन्हें अपनी मौत मरने दें, तभी हमारा काम शीघ्र और सुचारु रूप से हो सकता है। अतः आप दोनों पक्षों का सलटारा भी इसी तरीके से करती है, जिसमें प्रायः शत-प्रतिशत आप सफल होती है। प्रवचनों से जब हृदय में प्रेम का ज्वार उठता है तो विद्वेष की गन्दगी स्वतः ही बह जाती है।

राम-भरत के इस ऐतिहासिक दृश्य को आज प्रत्यक्ष देखकर लोगों

ने हमारी चरित्र नायिका के विषय मे बहुत कुछ कहा। पचायती भवन मे श्रीमान सुराणा जी ने कहा :—

महाराष्ट्र मे ही नही, अपितु अन्य प्रान्तों मे भी मैने अनेक साधु-सन्तों के प्रवचन सुने हैं और प्रशसा भी की है, किन्तु आपका प्रवचन तो अपने शानी का एक ही प्रवचन होता है, जिसे सुनकर जीवन मे परिवर्तन आए बिना नही रहता। समाज सठन व सघ ऐक्य की भावनाएँ हृदय को झकझोर देती है। प्रेम की उर्मियों से मानव का मन इस कदर आन्दोलित हो जाता है कि वह वैर को विसार कर शत्रु से लिपटने के लिए आतुर बन जाता है। मेरे हृदय मे सगठन व सेवा की जो भावनाएँ आपके प्रवचनों को सुनकर उमडी है, वैसी जीवन मे कभी नहीं उमडी। आज मेरा हृदय पुकार रहा है कि हम एक बनें ! हम एक बनें !! हमारे राष्ट्र का, हमारे देश, धर्म, समाज का कल्याण सगठन मे ही है। आप जितनी विदूषी हैं, उससे कई गुना सरल एव निर्भिमान हैं। आपको मिली विश्व प्रेम प्रचारिका, व्याख्यान भारती एव समन्वय साधिका, जैन कोकिला आदि सभी पदवियाँ यथार्थ हैं, वास्तविक हैं, सही हैं। मैं आपकी प्रशसा मे जो भी कहूँ, कम होगा।

म्युनिसपालटी भवन मे आपके प्रवचन के समय मे वहाँ के मुख्य कार्यकर्त्ता ने कहा :—

भुसावल मे आज तक अनेकों सन्त, सतियाँ, महात्मा, फकीर पधारे हैं और रीति अनुसार सभी के प्रवचन पचायती भवन मे होते आए हैं। किन्तु जिस प्रवचन के लिए पचायती भवन सकीर्ण पडा

और म्युनिसपल भवन में भी जनता न समा सकी, यह मौका भुसावल में पहला मौका है। यह महासती संसार की एक विरल विभूति है, जिसके प्रवचयों की आज भुसावल में धूम-सी मच रही है। इस प्रेम भरी वाणी की जितनी प्रशंसा व प्रचार करें कम है।

श्रीमती पारसरानी ने कहा :—

हम इस महान् विभूति के पद-चिह्नों पर चलेंगे तो अवश्य ही, हमारे हृदय में संगठन की भावना सशक्त बनेगी, आज तक हमारे में जो विचारों की संकीर्णता रही है, जैसे हम मन्दिर वाले, ये स्थानक वाले, ये दिगम्बर, ये तेरापंथ, ये बीसपंथ, इस प्रकार की संकुचित मनोवृत्ति हमारे में घर कर गई है, वे सभी संकीर्णताएँ खत्म हो जाएँगी हम महासती जी से प्रार्थना करेंगे कि आपने भुसावल की जनता में जो समन्वय का बीजारोपण किया है, उसे पुनः पधार कर ज्ञानामृत सींचन कर पल्लवित होने का सुअवसर प्रदान करें।

अन्य लोगों ने कहा, "जीवन में हमें मन्दिरवाले सन्तों का प्रवचन सुनने का सौभाग्य नहीं मिला, भुसावल की प्रजा दिगम्बर व स्थानकवासी है। यहाँ श्वेताम्बर संवेगी सन्तों का आवागमन नहींवत् है। जो भी आते है, रात्रिवास रहकर पधार जाते हैं। आप श्री को यहाँ लाने का सारा श्रेय श्री फकीरचन्द जी एवं पारस-रानी को है, जिन्हो ने पूर्ण प्रयत्न करके भुसावल की जनता को आपके प्रवचन पीयूष का पान कराया। यद्यपि यहाँ का संघ स्थानकवासी है, फिर भी सब की भावना को देखते हुए हम आप से सानुरोध निवेदन करते है कि आप सानन्द अमरावती का चतुर्मास सम्पन्न

कर और भूसावल पवार कर चतुर्मास करें और हमे आपके प्रवचनों से लाभान्वित करें।

इस प्रकार भुसावल मे प्रेम-वर्षा से जनमानस को भिगोकर विश्व-प्रेम प्रचार की छाप अकित कर आपने भी फरमाया :—

आपलोगों ने मेरी प्रशसा के जो पुल बाँधे हैं, वास्तव मे मैं इस योग्य नही हूँ। आपलोगों का स्नेह सदा याद रहेगा। आपलोगों के स्नेह दूध मे हमारे भाई श्रीपाल जी ने शक्कर मिला दी, जिससे इस दूध मे कुछ और ही विलक्षण मिठास आ गया। अपने भाई के साथ जो २४ वर्ष का वैर था, उसे खत्म कर आपने प्रेम की नदियाँ बहाई और मेरा बोलना सार्थक किया, इसके लिए आपको बार-बार धन्यवाद है।

मेरे पास विद्वत्ता नही, कोई डिग्री नही। मेरे हृदय मे निकेवल प्रेम है, उसी प्रेमपूर्ण हृदय से मैंने आपके सामने अपने विचार रखे और आपलोगों ने यत्किंचित् हृदय मे उतारे, इसके लिए पुन -पुनः धन्यवाद देती हूँ। आपलोग तासीनदी के किनारे बसे हैं, जिसमे स्नान कर अनेकानेक प्राणी अपने पापों को नष्टकर पवित्र बने हैं। उसी प्रकार आपने भी भगवान राम एव भरत के भ्रातृत्व प्रेम की महिमा सुनकर आज प्रेम की गगा मे स्नान कर वर्षों के सचित वैर को धो डाला, इसमे बड़ा सन्तोष है। प्रेम ही जीवन है, वैर तो इस जीवन को प्राणरहित बनाने वाला हलाहल विष है। इस विष से हम जितने बचेंगे, उतना ही जीवन का आनन्द हमे उपलब्ध

होगा। मैं भुसावल के समस्त भाई-बहनों को एवं इन दोनों भाइयों को बार-बार धन्यवाद देती हूँ।

भुसावल में चार रोज ठहरकर आप श्री ने जलगांव की ओर प्रस्थान किया।

आपके निकट सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के हृदय में आपके व्यक्तित्व की गहराई एवं चकाचौंध पैदा करनेवाले स्नेह, सौजन्य एवं सहनशीलता आदि गुणों से आपके प्रति भय, सम्मान, श्रद्धा तथा प्रशंसा के भाव साथ-साथ उदित होते है। आपकी बौद्धिक श्रेष्ठता, तत्कालिक मतिविचक्षणता, कुशल सतर्कता एवं सर्वाधिक मोहक व्यवहारपटुता प्रथम दर्शन में ही व्यक्ति को प्रभावित किए बिना नहीं रहती। यही कारण है कि जहाँ भी आपका पदार्पण होता है, वहाँ का जनमानस श्रद्धा से ओतप्रोत हो जाता है आपका चमत्कारी प्रभाव वहाँ के वातावरण को प्रभावित कर तत्काल अपने अनुकूल बना लेता है।

जलगाँव में आपका प्रवेश दिनांक ९-१-६५ को ११ बजे हुआ। समस्त संघ आपकी अगवानी में खड़ा था। जय-नादों से आकाश-मण्डल गूंज रहा था। जिन मन्दिर में भगवान के दर्शन कर, कांग्रेस भवन में छोटा-सा प्रवचन देकर आप अपने नियत स्थान सागर भवन पधारीं।

जलगांव अच्छा शहर है। यहाँ पर जैन समाज के करीबन २०० घर हैं। लगभग सभी घर सम्पन्न एवं सुखी है। शिक्षा का स्तर भी प्रशंसनीय है। किन्तु तीन वर्ष से स्थानक वासी समाज में

खाइयाँ पड रही थी। सामान्य सी बात का वतगड बनाकर दो धडे कर लिए गए थे। करते तो कर लिए पर अब मिटाना सहज बात नही रहा। तोडना जितना सरल होता है जोडना उतना ही कठिन हो जाता है। १०० घर एक तरफ बँट गए थे १५० घर एक तरफ थे। इसमे सगे भाई बट गए माँ बेटी बट गई, बहन भाई जुदा हो गए। सबकी सगे विमुख हो गए। परिणामत जन्म-मरण, विवाह, शादी सभी छोटे बडे कामों मे भाई भाई नही मिल पाते लडकी पीहर नही आती, जामाता सुसराल नही जाते, सब का कलेजा जलता, माताएं रो-रोकर उत्सव मनाती, उत्साह का नाम न रहा सर्वत्र एक मायूसी सी छा गई थी।

तीन वर्ष पहले जहाँ सभी हँसते खेलते, गाते थे, वहा अब हर घडी उदासी, छायी रहती थी। हालांकि झगडा स्थानकवासी भाइयों मे था परन्तु समाज तो एक ही था—सभी का परस्पर सम्बन्ध रहता ही है। अतः सभी के हृदय दुखी थे। इस फूट का अन्त लाने के लिए समाज ने प्रयत्न करने मे भी कसर नही उठा रखी थी। कितने ही साधु, साध्वी, सत, सतियाँ, कितने ही अन्य शहरों के वरिष्ठ सज्जन, प्रयत्न कर थक गए थे। कितनी ही पचायते व सभाएं की गई किन्तु सभी प्रयत्नों को विफल कर समस्या ज्यों की त्यों बनी रही। सभी के हृदयों मे घुटन होती कि क्या सम्प्रदाय की यह दशा जिन्दगी भर ऐसी ही रहेगी ?

वि० १०-१ ६५ का चातुर्मास श्री ... का पाचोरा स्थान में ही हुआ। ... ... को गवीने ... ...

जनता खड़ी थी। आप के प्रवचन का मुख्य विषय संगठन एवं विश्व प्रेम ही था। प्रवचन सुन लोगों के हृदय आलोकित होने लगे, परस्पर मिलने की उर्मियां उठने लगी।

कांग्रेस भवन में पूरे चार दिनों तक हमारी विश्व पेम पचारिका ने प्रेम जल की इतनी मूसलाधार वृष्टि की कि जलगांव वालों का हठीला हृदय-मिथ्या विचारों की कठोर भूमि कोमल बन गई। हृदय अन्दर ही अन्दर मिलने को तडपने लगे। आप ने प्रस्थान का बिगुल बजा दिया कि—"हम कल प्रातकाल जा रहे हैं। लोगों के हृदय कांप उठे, सभी के हृदयों में ऐसी आशा बंधी थी कि इस विभूति की वरद छाया में हमारा विरह संताप अवश्य दूर होगा। लोगों ने कहा :—

महाराज! हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप की दिव्य वाणी से हमारी यह दयनीय दशा अवश्य ही सुधर जाएगी आप कृपाकर कुछ दिन ठहरें। आपने एकदिन और बढ़ाया। दूसरे दिन आपने और अधिक जोश पैदा करने वाली वाणी बरसाई, लोगों का हृदय पानी-पानी हो गया।

कल प्रातः प्रस्थान होगा ऐसा जानकार दो पहर में श्रावक मिलकर आए और प्रार्थना करने लगे, कि आप के प्रवचनों से हमारे हृदय वज्र न रहकर प्रवाहित हो मिलने को आतुर है। किन्तु आप को अभी कम से कम अगले रविवार तक ठहरना होगा। आपने कहा :—

यदि ऐसी बात है तो मैं रविवार तक जरुर रुकूंगी।

जल गाव मे घर-घर पथ पथ पर आज एक ही चर्चा थी कि जैन समाज की दीवारें आज टूटेगी। यह बात धीरे धीरे सारे जलगाव मे फैल गई, और सवेरे प्रवचन के समय काग्रेस भवन मे जन समुद्र उमड आया। किसी भी प्रकार से जनता को समापाना कठिन हो रहा था। फिर भी दब पिस कर भी लोगो ने अपने लिए जगह बना ही ली। सबके चेहरों पर उत्सुकता थी परिणाम जानने की व्यग्रता लिए कलेजा थामे सभी परिणाम की राह देख रहे थे।

आज के प्रवचन मे द्राविड वारिखिल्ल दोनो भाइयों का दृष्टान्त चल रहा था वैसे इनका हृदय बदला और कैसे ये एक हुए। सभी के हृदय मिलन को प्रतीक्षा मे व्यग्र हो रहे थे, भीतर ही भीतर तडप रहे थे। प्रवचन समाप्त हुआ, पर मिलने के लिए कोई भी न उठा। अभिमान, द्वेष सभी गलकर बह गए थे पर निगोडी शर्म राह रोके खडी थी। आपने फरमाया —

हम आज शाम को विहार कर रहे है। एक दल के प्रधान नथमल जी लूकड ने कहा —

रविवार तक ठहरने की बात कल हो चुकी है, फिर आज प्रस्थान की बात कैसी? आपने कहा —

शर्त याद रखिए। शर्म का पर्दा हट गया, उन्होंने कहा—मैं तो तैयार हूँ। आपने कहा —

फिर देरी किस बात की है? आओ सब बन्द व्यवहार खुला करो, सबसे गले मिलो।

सेठ नथमल जी माइक के पास आकर बोलने लगे —

मैं सबसे क्षमा याचना करता हूँ, सभी भाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे विगत सभी अपरावों को भूलकर क्षमा करे, और मुझे अपनावें मैं हृदय से चाहता हूँ कि हमारे समाज का रुंधा व्यवहार आज से खुला हो जाए। हम सब भाई भाई है और भाई भाई बनकर ही सदा रहें ऐसी आप सबों से मेरी करबद्ध प्रार्थना है। करतल ध्वनियों से भवन गूंज उठा। दूसरे दल के अगुआ सेठ मोखचन्दजी भी उठे, उन्होंने भी सबसे क्षमायाचना की व्यवहार खोलने की प्रार्थना कर समाज का रुका व्यवहार मार्ग चालू किया।

वास्तव में नेता के पीछे ही सारा देश, समाज चलता है। दोनों नेताओ ने मिलने की ठानी और समाज से मिलने की अपील की अब क्या वजह थी जो समाज न मिलता। लोग उठउठकर गले मिलने लगे, हर्षविग से जनता रो पड़ी। पुत्रियाँ माताओं की गोद में जा पड़ी, बहनें भाइयों से लिपट गई वर्षो का विछोह आज मिलन में बदला, योजनो की दूरी आज निकटता में परिवर्तित हुई। वातावर्ण इतना करुण था कि देखनेवालों की आंखे भी गीली हुए बिना न रही। प्रवचन से ही बेटियाँ अपने बचपन बिताए पीहर गई। जामाता सुसराल गए। भाई भाई के घर गए, हिलमिल भोजन किया। समधी-समधी से मिले। जलगांव में आनन्द ही आनन्द छा गया। जन-जन का मानस खुशी से नाच उठा।

८५—महासती वनाम धोवी

हमारी विश्वप्रेम प्रचारिका के विषय मे लोगों ने कितना कुछ कहा होगा, यह कहने की बात नही हमारे मोखचन्दजी ने तो आपको गन्दा कपडा साफ करनेवाले धोबी की उपमा दे डाली। उन्होंने कहा :—

भाइयों ! बुरा न माने मैं तो महाराज श्री जी को धोवी की उपमा देता हूं। जिस प्रकार धोबी अत्यधिक गन्दे से गन्दे कपडे को भी साफ कर उज्ज्वल वना देने की सामर्थ्य रखता है, उसी प्रकार ये महासती भी जनमानस के अत्यधिक कलुष को साफ कर पवित्र बनाने मे समर्थ हैं। आप हमारे लिये भगवान है, राम है, माता है। हमारे हृदय मे आपके लिये कितना गहरा प्रेम व अनन्य भक्ति जगी है इसे प्रगट कर पाना सम्भव नही। उसे तो हम जानते हैं अथवा हमारा ईश्वर जानता है। हमने आशा त्याग दी थी कि हमारे जीवन मे कभी हम एक बन पाएंगे, किन्तु आप श्रीने ऐसा जादू किया कि हम मुर्दों ने नया जीवन पा लिया। आप तो साक्षात् समन्वय की देवी प्रेम की प्रतीक प्यार का सागर हैं मैं क्या कहूँ, मेरा हृदय इतना भाव विभोर है कि व्यक्त कर पाना कठिन हो रहा हैं।

उस दिन का आनन्द दर्शकगण के हृदयों पर इतना गहरा अंकित हो गया कि सदियों तक उसका स्वाद जाने का नही।

सारे महाराष्ट्र मे धूम मच गई कि आपने जऱगाव मे वह

काम कर दिखाया जिसे बड़े बड़े महारथी भी करने में असफल रहे थे।

जलगांव विद्यालय के प्रधान अध्यापक ने आपसे अपने देश के भाविरत्न छात्रों को उपदेश देने पधारने की प्रार्थना की, इसी प्रकार विभिन्न व्यक्तियों की प्रार्थना पर आपके प्रवचन क्रमशः राजकमल टाकीज में, कालेज एवं हाई स्कूल प्रांगण में रखे गए।

एक सिन्धी भाई ने प्रार्थना की कि –"हे देवी! क्या आप सिन्धीवाडे में पधार कर हम अज्ञानियों को ज्ञानदान नहीं दे सकतीं।

विश्वप्रेम का मन्त्र जपनेवाली आप ना कैसे करतीं। तुरन्त उस की प्रार्थना स्वीकार कर सिंधीवाडे चल दीं। वहां का प्रवचन अहिंसाप्रधान था। प्रवचन में इतना जोश आया कि कितने ही व्यक्तियों ने मांसाहार का त्याग किया, शराब का त्याग किया। अंडे को मांसाहार में मानने की समझ अपनाई और अंडा खाने का त्याग किया। वे सभी सिंधी भाई श्रद्धापूर्ण हृदय से आपके चरणों में लोटने लगे। समन्वय प्रचार एवं अहिंसा प्रचार का यह शुद्ध रूप दर्शनीय बना था।

पूरे तेरह दिनो तक जलगांव में विभिन्न प्रकार के स्वादोंवाला प्रेमजल पिलाकर आपश्री जामनेर समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता राष्ट्रसेवक श्रीमान राजमलजी ललवाणी के आग्रह पर जामनेर पधारीं। सेठसा के बंगले पर ही आप ठहरीं प्रवचन देने स्थानक में पधारती थीं।

तीन दिन तक जामनेर की जनता को अमृत पान कराके आप

ग्रामानुग्राम सुधावर्षण करती हुई मलकापुर पधारी वहा चार दिन तक प्रवचन पीयूष पिलाकर शेगाव निवासी सेठ मणिलाल माणक जी के आग्रह पर खामगाव होती हुई शेगाव पधारी शेगाव मे उनके पिताजी के स्वर्गवास निमित्त पचान्हि का महोत्सव रखा गया था।

शेगाव मे मुनिराज श्री गुण सागर जी म० अभ्युदय सागर जी म० (सागरानन्द सूरि समुदाय के) विराज मान थे। आप भी उनके दर्शनार्थ उनके निवास स्थान पर पधारी, वन्दना की प्रतिदिन उनका प्रवचन सुनने पधारती-अपना प्रवचन बन्द रखा।

मुनिराज ने आप की विनय से मुग्ध होकर बडी प्रशसा की और बडे ही प्रसन्न हुए। उन्होने कहा :—

आप का नाम तो वर्षो से सुनते आए है पर आप के व्यक्तित्व का साक्षात्कार करने का प्रत्यक्ष प्रसग आज बना। आप को देखकर बडी खुशी हुई। आप की विनय शीलता वास्तव मे बडी अनुकरणीय है, आप के व्यवहार से पता ही नही चलता कि आप इतनी शक्ति सम्पन्न हैं। वास्तव मे मीठे मधुर फलों से लदा आम्र वृक्ष झुक झुक जाता है।

शेगांव से विहार कर आप बालाघाट, होती हुई अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ पधारी।

यह तीर्थ १००० वर्ष प्राचीन है। नवअगो के टीकाकार, स्थम्भनतीर्थ प्रगटाने वाले श्रीमद् अभयदेवसूरि द्वारा अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई थी। यह प्रतिमा बडी ही मनोहर है। इसका अन्तरिक्ष नाम पडने का भी एक कारण है।

पहले यह प्रतिमा एक अच्छा ऊँचा घोड़ा नीचे से आसानी पूर्वक निकल जाए इतनी ऊंची आकास में अधर थी। वर्तमान में नीचे से आज भी एक मलमल का वस्त्र निकल जाता है। अभी तीन लाख रुपए खर्च कर बालाघार की एक सेठानी ने नया मंदिर बनवाया है।

यहाँ आप तीन रोज ठहरी दर्शन भक्ति का लाभ उठाया।

यहाँ पर आप की विदूषी विनय मूर्ति शिष्या श्री विनीता श्री जी एवं प्रख्यात व्याख्यातृ श्री विजयेन्द्र श्री जी म० जिनका पहला चतुर्मास बीकानेर में था। किन्तु मुनिराजों के विराजने से उस चतुर्मास में बीकानेर की जनता ने श्री विजयेन्द्र श्री जी के प्रवचन पीयूष का पान नहीं किया था। पर चतुर्मास पश्चात् मुनिराजों का प्रस्थान हो गया, और आप को श्री भैरुंदान जी कोठरी की पत्नी के आग्रह पर सेठ भैरुदान जी की मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष में किये उत्सव तक ठहरना पड़ा। इस बीच श्री विजयेन्द्र श्री जी म० का प्रवचन सुनकर बीकानेर संघ, ब्राह्मण, माहेश्वरी आदि बड़े ही प्रभावित हुए एवं आप का द्वितीत चतुर्मास बीकानेर में ही हो ऐसी भावना करने लगे।

हमारी विश्व प्रेम प्रचारिका चरित्र नायिका के पास ऊपरा ऊपरी तार पत्र आने लगे। हजार व्यक्तियों के हस्ताक्षर पत्र आए। किन्तु द्वितीय चतुर्मास की उनकी भी इच्छा कम थी, एवं इधर अमरावती वालों का आग्रह भी तीव्र था कि हमारी अमरावती की जन्मी इस साध्वी रत्न की समस्त शिष्याओं का चतुर्मास इनके

जन्मभूमि मे प्रवेश

पृष्ठ—३३६

साथ ही हो। और लगातार दो चतुर्मास एक ही स्थान पर करने कराने की इच्छा आप की भी नही थी।

इस प्रकार सभी कारणो को लेकर आप ने अनुमति नही दी थी। सघ को यह इनकार भेज दिया गया था।

पर जहाँ चाह तीव्रतम रूप मे होती है, वहाँ प्रयत्न भी तीव्रतम गति से ही होते हैं। बीकानेर सघ के ६ वरिष्ठ व्यक्ति समाज की प्रार्थना लेकर श्रीअन्तरिक्ष पार्श्वनाथ आए, और दो दिन के लगातार परिश्रम पश्चात् आखिर आप श्री से आज्ञा लेकर ही लोटे। पू० विनीता श्री जी एव विजयेन्द्र श्री जी, निर्मला श्री जी इन तीनों का दूसरा चतुर्मास आप श्री को बीकानेर मजूर करना ही पडा।

यहाँ अमरावती सघ, इन्दौर वाले धन्ना लाल जी मन्ना लाल जी दोनों भाई, श्री लाल जी पटवा दौलत मल जी छजलानी राजमल जी रामपुरिया आदि कई व्यक्ति कारों से पहुँचे। आप के साथ तीर्थ भक्ति एव गुरुभक्ति का लाभ उठाकर धन्य बनें।

८६—जन्म भूमि में

मात्र ११ वर्ष की सलोनी सुख्ला अनिप्रिय बालपुत्री के बाल हठ एव पूर्व सस्कारों से सस्कारित वैराग्य-तेज के सम्मुख परास्त होकर, स्वजन परिवार एव अमरावती के सघ ने अपनी चहचहाती फुदकनी, द्राक्षा से भी मधुर दाखीबाई को सदा सदा के लिये सांसा-

रिक भोग विलास, ऐश्वर्य, आराम से अति दूर होकर संयम के कठोर मार्ग पर आरुढ़ होने की आज्ञा दी थी। आज उस विदा-वेला को व्यतीत हुए ४२ वर्ष हो गये, चार युगों के परिमाण का सा दीर्घ समय वीत गया, वाला आज अवला न रहकर जिनशासन की विरल विभूति वन गई। उसने सर्वत्र भगवान महावीर की अहिंसा, सत्य, एवं विश्व प्रेम की अजस्र धाराएँ प्रवाहित की अज्ञान अंधकार में भटके भूले राहियों को मार्ग पर लगाया। प्यासों को अमृत के प्याले भरभर कर पिलाए, वे जहाँ भी गई वहाँ की जनता धन्य धन्य हो गई।

हजारो नहीं लाखों लोग उन चरणों में नत हो गये। आज अमरावती की द्राक्षा मात्र द्राक्षा न रहकर द्राक्षा की फलती फूलती विस्तृत वल्लरी वन चुकी थी। दुनियाँ के लोग आज इस बेल के रसीले, मधुर अनंत सुखकर वचन रूपी फलों का आस्वादन कर अपना जीवन सफल करने लगे थे। किन्तु विछोह से विरह कातरा अमरावती अबतक अपनी इस विरल विभूति वेटी के दर्शन से वंचित थी। वह अपनी जगतपूज्या पुत्री के पावन-पवित्र उपदेश व दर्शन के लिये तरस रही थी वह बाला आज अमरावती की ही सम्पति न थी, उसने तो अपना सम्बन्ध समस्त विश्व से जोड़ लिया था। विश्व के सभी ग्रामनगर उसके लिए अमरावती ही थे। जगत के प्राणी मात्र से उसने अपना नाता स्थिर किया था। मेरा तेरा अपना पराया ऐसी भावनाएँ उसके किसी रोम में भी न रही थी।

मोह ममता जैसी गूढ़ उलझी गुत्थियाँ उसने सुलझा ली थी। जहाँ भी, जिधर भी चरण मोड़े वहाँ ही उधर ही अपनत्व की, आदर

प्रेम व प्यार की नदियाँ बह गई। पर स्वजन परिवार और वह अमरावती जिसकी गोद मे आप जन्मी, पली, खेली कूदी कैसे भूलती ? आपने ममत्व को जीता था, पर आप के परिवार ने, जन्म भूमि के समस्त सघ ने अभी ममत्व कहाँ जीता था ? यों तो वर्षों से अमरावती पधारने के लिए प्रार्थना की जाती रही थी। किन्तु इधर १५-वर्षों से तो लगातार बडी तीव्रता से आप को अमरावती पधारने की विनती की जा रही थी। दूर दूर भी अमरावती वाले व आप के भ्राता श्री फूलचन्द जी साहब पधारते, प्रार्थना करते पर उत्तर मे वर्तमान योग (समय पर जो बन जाए) के सिवाय कोई आश्वासन न पाकर निराश लौट आते।

आप श्री प्राय लक्ष स्थिर कर विहार नही करती, अधिकांशत. आप का वर्तन उदयाधीन ही रहता है। अत' अमरावती पहुचने का भी विशेष प्रयत्न न था। हम जैसे कभी कहते भी तो आप का उत्तर होता-आत्मा की कोई जन्मभूमि होती है। जन्मभूमि इस चमडे की होती है। और न जाने ऐसी कितनी जन्मभूमियाँ इस आत्मा ने अपनाई है। अत अपनी जन्मभूमि तो समस्त विश्वही है।

इन्दौर चतुर्मास मे भी करीबन १०-११ व्यक्तियों के साथ आपकी भुवा जी, एव भ्राता श्री फूल चन्द जी साहाब पधारे और गणेश हाल मे हजारों जन समुदाय के बीच इतनी कातरता से प्रार्थना की कि उपस्थित जनता का हृदय विह्वल हो उठा। बहनों की आँखों से तो आँसुओं की झडी लगगई। प्रार्थना क्या थी मानों एक भगवान को की जाने वाली भक्त की पुकार थी।

अमरावती वालोंने चिरसंचित प्यार एवं मनुहार का भण्डार ही बिखेर दिया था। उस समय उपस्थित हमारे सभी हृदयों की एक ही पुकार थी कि अब धैर्य की सीमा आ गई, अब अमरावती न पहुँचना अन्याय ही होगा, आपको हामी भर लेनी चाहिये, आपने अपना चिरपरिचित साध्वाचार के अनुकूल वर्तमान योग मन्त्र दुहराया, पर अमरावती वाले मुनि तो नहीं थे। उनकी प्रार्थना में उपालम्भ आया, रोष भी आया और खेद भी प्रगट हुआ, क्या हम ही ऐसे अभागे है जो प्रति वर्ष वर्तमान योग कहकर टाल दिए जाते हैं। आपने मोह जीता है पर हमने नहीं जीता है। अब इन्दौर संघ का कर्तव्य हैं कि हमारी मदद करे। ऐसा कहकर वे लोग बैठ गये सभा स्तम्भित सी बैठी थी। सभी के हृदय भर आये थे। इन्दौर वालों ने अमरावती संघ की प्रार्थना का जोरदार समर्थन किया और मान्यवर श्रीलालजी साहाब पटवा ने माईक पर घोषणा की कि इन्दौर संघ आपका विहार इन्दौर से यथाशक्ति, यथा संभव, अमरावती के सिवाय अन्यत्र नहीं होने देगा। हम अमरावती वालों के साथ है। फलतः इन्दौर से आप श्री का प्रस्थान अमरावती की ओर ही हुआ।

निराशा की नींद में लीन स्वजन परिवार एवं अमरावती की जनता का हृदय आनन्द से भर गया। वे एक दम चौंके—क्या दादी आ रही है? वाह! धन्यभाग्य हमारे, आखिर हमारी भावना सफल तो हुई ऐसी आश्चर्यकारी ध्वनियों से नगर गूंजने लगा।

जिस दाखी को सिर आंखो पर नचाया था, जिस के धूल धूसरित शरीर को प्यार से थप थपाया था। जिसकी मीठी मीठी चपलता भरी बातें मन को मुग्ध कर लेती थी, ऐसी प्यारी दाखी बेटी का इतनी दीर्घ कालीन प्रतिक्षा के पश्चात, एक महान् धर्म गुरु के रूप मे आगमन कितने हर्ष की बात थी।

साथ मे खेलने वाले सगी, सखियाँ आज दादा, दादी, नाना, नानी बन गए थे। गोद मे खिलाने वाले आज लकडी के सहारे चल रहे थे। जिन्हें आपने गोद मे खिलाया था वे तरुणावस्था पार कर चुके थे। कितने स्वर्गवासी बन गये थे। और कितने नये पैदा हो गये थे। काल के स्वभाव ने सभी कुछ परिवर्तित कर दिया था। अमरावती का रूप रग बदल गया था। आपको पाकर सभी आनन्द मग्न थे।

अमरावती की जनता आज अपनी स्वामिनी के दर्शन को उत्सुक पलक पसारे खडी थी। रोम-रोम मे आनन्द भरा था। आज उसकी चिरसचित कामना का सफल प्रभात उदित हुआ था। अमरावती वालों के आनन्द का वर्णन उन्ही के शब्दो मे पढिये।

ता० ५।३।१९६५ का प्रभात हमारी चिर प्रतीक्षित कामना को पूर्ण करने के लिए आ पहुँचा।

आज उषा काल से ही हमारे हृदय मे आनन्द की उर्मियाँ उछलने लगी, सभी अपने अपने आवश्यकीय कार्यों से निवृत होकर शहर से बहुत दूर पहुँच रहे थे। सभी के हृदय मे प्रसन्नता एव शीघ्र दर्शनों की उत्सुकता थी।

इधर आप श्री अपनी दिव्य प्रभा, एवं अलौकिक व्यक्तित्व की छटा, सर्वत्र विखेरती आर्यामण्डल से सुशोभित होकर साध्वाचार पूर्वक चलती हुई ठीक साढ़ेआठबजे केसर बाग में पहुँची, केसर बाग में नागरिक जनता एकत्रित होने लगी।

आज नगर के हर बाल वृद्ध के हृदय में पूज्या विचक्षण श्री जी म० के दर्शनों की उत्कट इच्छा जगी थी। नगर के वृद्धजन आपके पूर्व जीवन का ख्याल कर-कर के बड़े ही आनन्दित हो रहे थे। आपके आगमन की खुशी से सभी हृदय थिरक रहे थे। नगर के मुख्य मुख्य स्थानों पर दरवाजे बनाए गये थे। प्रत्येक बाजार में झण्डियाँ एवं आपके नामांकित परदे लगाए गये थे। जिधर दृष्टि व कान पहुँचते उधर से ही दर्शनों की तीव्र उत्कंठा व आप श्री के आगमन-प्रश्नों की ध्वनियाँ कर्ण-रन्ध्रों को पूरित कर रही थी।

क्षणभर के लिये आप माँ बनकर कल्पना करिए कि वर्षों से बिछुड़ा हुआ आपका लाल आज आनेवाला है, ऐसी खबर यदि आपको मिलती है उस समय आपके हृदय की क्या अवस्था होगी ?

जिह्वा मौन एवं हृदय स्तब्ध बन जायगा किन्तु नेत्र प्रिय सन्तान के आगमन की खुशी में नाच उठेंगे।

ठीक यही हाल आज अमरावती में देखा गया, कई वृद्ध पुरुष एवं महिलाएँ सामने आये, व कितने ऐसे वृद्ध कि जिनसे चला भी न जा सके उनके घरके सामने से जब आप निकली तब वे लोग ेत्र नेत्रों से ही आपका स्वागत कर पाए, कारण उनका हृदय भर आया था।

४२ वर्ष के दीर्घ समय मे शारीरिक स्थिति वदल जाने से अधिकाश लोगों ने यही कहा क्या यही है हमारी लाडली वेटी। और इन्हीं शब्दोंके साथ उनके नयनों से हर्षाश्रु टपकने लगे। आज का दृश्य सचमुच कठोर हृदय को भी पिघलाने वाला था।

नगर के मुख्य-मुख्य स्थानों से होती हुई आप जिन मदिरों मे पधारी। पश्चात् आपके ससार पक्ष के वडे भ्राता श्री फूलचन्द जी मुथा आपको अपने घर ले गए। यद्यपि गहुँलिया स्थान २ पर की गयी थी, सभी ने हार्दिक स्वागत किया था। आपके लिये समस्त विश्व कुटुम्ब है किन्तु मोह माया के बन्धन मे वधे हुये प्राणियों के लिए यह कम सम्भव है।

श्रीमान फूलचन्द जी का पूरा परिवार एकत्रित था। घर के भीतर आज पूरे ४२ वर्ष पश्चात् आपके चरणों को पाकर सारा परिवार सुख हो रहा था। गहुँली इत्यादि करके। स्वर्ण एव रौप्य निर्मित फूलों की वर्षा की गयी। इन फूलों के माध्यम से इस परिवार ने अपने ४२ वर्ष के सचित स्नेह को प्रगट किया। परिवार का प्रत्येक सदस्य मौन स्तब्ध एव नेत्रों मे हर्षाश्रु लिये हृदय से आपको वधा रहा था। हर्षावेग से सभी के कठ अवरुद्ध थे। पश्चात् आप सकल सघ के साथ नियत स्थान राजीबाई धर्मशाला मे पधारी। आज के स्वागत मे ठीक वैसी कल्पना थी जैसी आप के नगर मे देश के मुख्य नेता के आगमन पर जो स्वागत किया जाता है। उसी प्रकार विचक्षण श्री जी भी धर्म व वीर शासन की नायिका बनकर पधारी थी। इनका जो भी स्वागत किया गया वह कम था।

संघ की आज्ञा लेकर आप श्री धर्मशाला में प्रवेश कर काष्ठ निर्मित पाट पर विराजी। आप की रत्नकुक्षी जननी श्री विज्ञान श्री जी महाराज भी आपके साथ में हैं।

जुलूस में आने वाले सभी भाई बहन बाल गोपाल यथा स्थान बैठ गये। प्रथम आप के भतीजे श्री प्यारेलाल जी मुथा ने स्वागत गीत सुनाया। फिर कुमारी बिलकिस जहानखान एवं पुष्पा जैन ने स्वागत गीत गाए।

पश्चात् गंभीर ध्वनि के साथ इस महान विभूति ने अपनी वक्तृत्वकला को प्रसारित किया, जिसे सुनकर सभी स्तब्ध एवं आश्चर्य चकित हो गए। आप की व्याख्यान शैली की अलौकिक छटा की प्रशंसा राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के बच्चे २ की जबान पर है।

प्रथम मांगलिक प्रवचन ने ही सभी को मुग्ध कर लिया। आपने प्रवचन के अंत में बताया कि आप कोई भी यह न सोचें की यह फूलचन्द जी की बहन है। मैं तो महावीर शासित वीर संघ की सेविका मात्र हूँ। प्रभु महावीर ने हमें विश्वव्यापीभावना सिखाई है, और उसी भावना को लेकर मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुई हूँ।

उपर्युक्त शब्द आपने इसलिये कहे थे कि परिवार वालों ने आपको बहिन, भूवा, दादी, मौसी आदि कई सांसारिक सम्बन्धों में बांधकर भजन गाए थे। परिजनों का ममत्व स्वाभाविक था, एवं विशाल दृष्टि वाली आपका भी परिजनों एवं समाजको एक ही दृष्टि से देखना भी स्वाभाविक था।

आपने अपनी सयम साधना के बलपर विश्वमैत्री की दिव्य ज्योति पाई है। इसमे तनिक भी संदेह नही।

व्याख्यान समाप्त हुआ। कतिपय महानुभावों ने दो-दो शब्द कहकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

विशेष महत्वपूर्ण उल्लेखनीय बात तो यह हुई कि जिस प्रकार समस्त नागरिकों को प्रसन्न करते हुए आर्यरक्षित सम्पूर्ण विद्याओं मे निपुण होकर अपने नगर मे आए, और अपनी माता की प्रसन्नता के लिए दूसरे ही दिन प्रातः काल अपने दीक्षित मामा के पास अध्यात्मज्ञान का अभ्यास करने के लिए जाने लगे, और सामने गन्ने के शकुन हुए। ठीक उसी प्रकार यह विश्वविभूति ४२ वर्ष पर्यन्त सयम साधना करके जब अपनी जन्मभूमि मे पधारी व लोगों ने आपके प्रथम प्रवचन को सुना तो बडे ही प्रभावित हुए।

श्री राजमल जी चोरडिया ने शकुन के रूप मे ही कहे हों इस तरह से आप श्री के विषय मे कहा कि आज आपका प्रवचन क्या सुना मानो गन्ने के रस का ही आस्वादन किया हो। आज तो हमने ईख के एक टुकडे को ही चखा हैं। किन्तु पूरी ईख चूसने से तो अधिक रस एव मधुरता मिलती है। इस प्रकार यह विभूति भी कम नहीं है, ज्यों-ज्यों इनका सम्पर्क एव सहवास मिलेगा त्यों त्यों हमारा जीवन अधिक मधुर एव रस पूर्ण बनेगा। प्रथम प्रवचन मे ही आपको ईख की उपमा दी। ईख के शकुन जितने मांगलिक गिने जाते है। प्रथम बार मे ही जो मांगलिक शब्द निकलते हैं वे पूरे जीवन भर जीवन को आबाद रखते है।

वस्तुतः आज अमरावती की भूमि पावन हो गई। भूमि तो जिस क्षण आप ने जन्म लिया था उसी क्षण पावन बन गई थी, किन्तु आज तो यहाँ के जन जनका हृदय पावन बन गया था। अमृत प्रवाहिनी ज्ञान-गंगा आज साक्षात यहाँ पर प्रगट थी।

४२ वर्ष की अखंड संयम साधना ने व ब्रह्मचर्यने आपके जीवन को अलौकिक तेजोमय बना दिया, तो इधर विनय भक्ति एवं नम्रता ने आपको सर्वोपरि स्थान पर बिठा दिया।

आप श्रीको अमरावती का व्यामोह नहीं था, न परिजनों का कोई बन्धन ही है, १० वर्ष की उम्र में आपने इस जन्मभूमि को छोड़ा था और आज ५२ वर्ष की उम्र में पुनः पधारी है। आपके लिये समस्त विश्व अपना है। समत्व की भावना आपके रग-रग में भरी है। यही है आपकी समन्वय साधना व विश्व प्रेम प्रचारकी साक्षात प्रतीक, ज्वलन्त उद्धारिकाएँ व्याख्यान के पश्चात् सभी हर्षनाद कर, प्रफुल्लित होते हुए अपने स्थान पर गए।

धन्य है विचक्षण श्री जी के रूप में आई हुई दाखीबाई को, इन्हीं शब्दोंके साथ सभी आनन्द विभोर थे।

८७—कटु-मधुर

चिर प्रतीक्षित मेहमान आज अमरावती वासियों के मधुर स्वप्नों की, दीर्घकालीन अरमानों की सफल घड़ी लेकर उपस्थित था। उनके हृदय आनन्द की अनुभूतियोंसे लबालब भरे थे। उल्लास एवं उत्साह

तो सभी के अङ्ग प्रत्यगों से उमड़ा पड़ता था। यह ऐसा प्रसग था जिसका वर्णन वर्णनातीत बना था। हमारी चरित्रनायिका ने मगल प्रवचन समाप्त किया। अमरावती का सघ व समाज अपने ही गौरव से गौरवान्वित था। फाल्गुन मास सानन्द व्यतीत हुआ। चैत्र मासकी नवपद आराधना शुरु हुई महावीर जयन्ती का कार्यक्रम बनाया गया। राजीबाई धर्मशाला से प्रभातफेरी निकलकर गुलामपुरी स्थानक (जैन भवन) अम्बापेठ मे पहुँची। वहाँ आपकी अध्यक्षता मे आम सभा हुई। मनोहर श्री जी म० एव मणिप्रभा श्री जी म० ने भगवान महावीर की जयन्ती का गायन गाया व प्यारेलाल जी मुथाने भी एक गीत प्रस्तुत किया। अनुरागी जी आदि के भाषणोंके पश्चात् आपका भाववाही भगवान महावीर के आदर्श सिद्धान्त "विश्व प्रेम" पर प्रवचन हुआ। जयन्तीका कार्यक्रम समाप्त होने पर आप श्री शामको केसरबाग दादावाडी पधारी। दादावाडी के निकट ही आपकी भूवाजी सुगनी बाई का बगला है। रात मे आपने दादाबाडी मे आराम किया। दादवाडीका निर्माण भी आपकी भूवाजी ने ही करवाया था और आपके आगमन की प्रतीक्षा मे प्रतिष्ठा रुकी हुई थी।

आपको अमरावती लाने मे सारे सघ की ही प्रेरणा व प्रयत्न था, किन्तु आपकी भूवा सुगनीबाई का प्रेम, उत्साह, व लगन कुछ और ही थी। आपके आगमन पश्चात् वे खाना, पीना, सोना सभी भूलगई थी 'सारे दिन रात का अधिकांश भाग उनका अपनी महान् भतीजी के सानिध्य मे ही बीतता। उनके हृदय में इतने अरमान भरे

थे कि इस अवसर पर क्या करूं और क्या न करूं ? इसकी सूझ भी उन्हें नहीं रही, जो भी करती थी उन्हें कम ही अनुभव होता था। दोनों हाथों द्रव्य लुटा रही थीं। किन्तु विधि ने कब मानव के अरमान पूर्ण किए है। मानवकी कल्पनाओं का अधिकांश भाग विधि की विडम्बना से कल्पना ही रह जाता है।

जिसने अपने जीवन में कभी एक आयंम्बिल भी नहीं किया था। उसी सुगनी बाई ने लगातार नौ आयम्बिल कर नवपद आराधना की, आज आठवाँ आयम्बिल था। अपने बंगले के एक कमरे में रात्रि के ११ बजे तक वे चरित्रनायिकासे धार्मिक चर्चा करती रही। प्रातः काल भगवान की पूजा निमित्त अपनी फुलवारी में फूल तोड़ने गईं। रात्रि में आए तूफान व पानी के कारण बिजली के तार टूटकर फूलों के पेड़ों के निकट जमीन पर पड़े थे। मानव के अज्ञान से लाभ उठाकर मृत्युने अपनी योजना सफल करने की ठानी, सुगनी बाई इस योजना से अनभिज्ञ रही और ज्यों ही वे पेड़ पर से फूल उतारने गई एक फूल एक हाथ में, दूसरे फूल पर दूसरा हाथ गया और त्योंही कैरेन्ट के रूप में मृत्यु नागिन ने उनको डस लिया, वे गिरीं किन्तु अभाग्यवश दूर न गिरकर जमीन पर बिछे मृत्युपाश तारों पर ही गिरी और सुगनी बाई की आत्मा अपनी भतीजी के सहवास सुख, एवं उत्सव, महोत्सव, के अरमान लिए ही मृत्यु लोक से विदा होकर स्वर्ग चली गईं, इस आकस्मिक निधन से शोक होना अनिवार्य था। एक सरल स्वभावी विभूति अमरावती वालोंने खो दी थी। नगर शोकाभिभूत हो गया। जिसने भी सुना स्तम्भित रह गया।

वे समस्त अमरावती के दीन दुखियों असहायोंकी माता थी। उनकी अपनी सन्तान नही थी। उनके हृदय का सारा मातृत्व दीन, दुखी, अनाथों के सिर का साया बना हुआ था। अनाथों की सेवा मे ही उन्होंने अपने समस्त वात्सल्य को सफल बनाया था। जन-जनका हृदय चित्कार उठा, सभी लाचार थे। मौत आ चुकी थी, चोरी-चोरी कायर की तरह, सभव है इस वत्सत्य मूर्ति के सामने आने की उसकी भी हिम्मत न पडी हो। समय बीतने लगा। शोक की अभिव्यक्ति मौन होने लगी।

८८—विनोवा जी के साथ

अमरावती से लगभग चार मील के अन्तर पर डाक्टर पटवर्धन एव उनकी धर्मपत्नी पार्वती बहिन द्वारा सस्थापित व उसी दम्पति युगल की वात्सल्यमयी सरक्षणता मे सचालित, कुष्टरोग पीड्ति मानव समाज की महान् कठिनतम सच्ची सेवा करने वाली "जगदम्बा कुष्ट निवास तपोवन" नाम की पावन सस्था है। वहाँ इस समय लगभग इस भयानक व्याधी से ग्रसित ४२५ भाई, बहिन व बालक रहते हैं। डाक्टर युगल द्वारा इन सभी को, माता पिता जैसा प्यार व निर्भरता उपलब्ध है। दर्शकों को वे स्वय साथ मे चल कर निरीक्षण करवाते हैं जिस से कोई भी उन दुखियों के प्रति घृणा प्रदर्शित कर उन्हे और कष्ट न पहुँचावें। सस्था की अपनी उद्यागशाला भी है, जिस मे स्वास्थ्य लाभ कर रोगी काम भी करते

है। काष्ट का सामान, मोटा कपड़ा बनाना, सिलाई आदि कई प्रकार का काम कराया जाता है।

वहाँ की स्वच्छता एवं व्यवस्था देख कर मन मुग्ध हो जाता है। सच्ची सेवा का पाठ इस संस्था को देख कर पढ़ने को मिलता है। अन्तर से सहसा ही इस सेवाभावी युगल की प्रशंसा के उद्गार फूट पड़ते हैं। वास्तव में सेवा करो, सेवा करनी चाहिये ऐसा उपदेश देना बड़ा सहज है, जब कि सेवा करना उस से अत्यधिक कठिन व्रत है। हम अपने पूज्यजनों, आश्रितों की सेवा ही नहीं करपाते, इतरजनों की तो बात ही क्या ? क्यों कैसी है तबियत ? दवाई ली या नहीं। घूमते फिरते पूछ लिया हो गई हमारी सेवा यह सेवा नहीं रोगी की अवहेलना ही है। इस संस्था की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

रविवार दिनांक ११-७-६५ दस बज कर तीस मिनिट पर इस भवन के नव निर्मित ज्योति मंदिर के उद्घाटन का समय रखा गया था। उद्घाटनार्थ आचार्य विनोबा भावे पधारे थे। इसी प्रसंग पर डाक्टर पटवर्धन युगल एवं वहाँ के अन्य अधिकारीगण जो कि हमारी चरित्र नायिका से काफी परिचित व प्रभावित था के आग्रह पर आप श्री भी यहाँ पधारी और इसी निमित्त को लेकर विधि ने दो संतो के मिलन के प्रसंग की योजना बनाई।

यथा समय उद्घाटन कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ। सभी के निवेदन पर चरित्र नायिका का आशीर्वादात्मक प्रेरणा प्रद प्रवचन हुआ। आपने शान्ति, समता, स्नेह, एवं सेवा के महत्व पर मार्मिक

प्रकाश डाला। पीटिनो को वेदनीय कर्म की गहनता समझाई। पश्चात् डाक्टर साहेब की इस महान् पवित्रतम सेवा की हृदय से अनुमोदना कर भूरि-भूरि प्रशसा की व सभी का इस पाठ को पढने की सलाह दी। आपने कहा दुखियों का दुख दूर करने मे जो समय जाता है वही समय जीवन का सार्थक समय है। सेवा त्याग मागती है, कामना, नामना की भूख को मिटाकर की जानेवाली सेवा ही सेवा होती है।

तत् पश्चात् विनोवा जी ने फरमाया दु खी मानवों के दु'ख को देख कर जिसे दु'ख न हो व मानव नही अपितु जानवर से भी गया गुजरा है। जो परदु ख से पीडित होकर दुख मिटाने को तत्पर होता है वह मानव है। सुख और दुख की अभिव्यक्तियों से ऊपर उठने वाला तो पूर्ण सत ही होता है।

पुन' सभी के आग्रह पर मध्याह्न के समय हमारी चरित्र नायिका का प्रवचन हुआ। जिसे सुनकर सभी प्रभावित हुए। डाक्टर पटवर्धन ने आपका आभार मानते हुए कहा कि जैन श्रमण, व साध्वी का चारित्रिक जीवन स्तर बहुत ही उठा हुआ व महत्त्वपूर्ण है। मेरे आग्रह पर आप यहाँ पधारी व सभी को उपदेश दिया, इससे मुझे बडी ही प्रसन्नता व आनन्द है।

तत्पश्चात् एक घण्टे का समय आप श्री व आचार्य विनोवाभावे का वार्तालाप समय रखा गया। ज्यों ही आप विनोवा जी के पास पधारी आपने उनका आदर किया उन्होंने आपका सम्मान किया खडे होकर वन्दना की। विनोवा जी वृद्धावस्था के कारण कान मे

कम सुनते हैं, अतः आपने स्लेट पर लिख कर बताया कि हम स आपके आदर्श एवं अनुकरणीय जीवन की अनुमोदना करते हैं। इ प्रकार आपने जो भी कहा अथवा प्रश्न किए सभी को एक भाई लिख कर विनोवा जी को बताया व उन्हों ने योग्य उत्तर दिया हमारी चरित्र नायिका ने कहा कि हम मराठी भाषा से अनभि है अतः आपका प्रवचन हम अच्छी तरह समझ नहीं पाई। हमा पल्ले तो इतना ही पड़ा कि दूसरों को दुखी देख कर दुखी होनेवाल तो मनुष्य है और जो दूसरों को दुखी देख कर उसकी पर्वाह नह करता वह जानवर है।

विनोवा जी ने फरमाया :—

आपने सारे प्रवचन का मक्खन तो निकाल लिया हैं अब छाछ विलोने से क्या लाभ। अधिक परिग्रह नहीं बढ़ाना ही अच्छा है। मुस्कराते हुए विनोवाजी ने कहा, "मैं तो जैनधर्म को हिन्दूधर्मका मक्खन मानता हूँ। अहिंसा का श्रेष्ठतम प्रतीक जैन धर्म ही तो है। मैंने भी जैनधर्म के समयसार, तत्त्वार्थ सूत्र, छढाल आदि माननीय ग्रन्थों का अध्ययन किया है। जैनधर्म के लिये मेरे हृदय में पूर्ण श्रद्धा व विश्वास है। जैनदर्शन की नयदृष्टि (अपेक्षावाद) समन्वयवाद की पूर्ण पोसिका है। कृश्चियन धर्म की सेवा भावना, वौद्ध दर्शन की वुद्धि विलक्षणता भी प्रशंसनीय है।

संत विनोवा का सरल सहज शान्त स्वभाव सभी को आकर्षित कर रहा था। जैन दर्शन के अनेकान्त और अपरिग्रह पर वार्तालाप

समाप्त हुआ। इस सारे कार्य-क्रम की तन्नस्त लोगों ने एक बडी ही सुन्दर रगीन फिल्म ली है जिसे लोग समय-समय पर देखने की इच्छा प्रदर्शित करते रहते हैं।

८६—जन्म दिवस

आषाढ़ कृष्णा प्रतिपदा का पावन मगल दिवस आया। इसी दिन तो अमरावती के आगन मे उसके नाम को अमर करने वाली इस अमर विभूति ने अवतार लिया था। ऐसे पवित्र दिन को भला सघ कैसे भूलता। प्रात' काल से ही सभी के हृदय आनन्द विभोर बने थे। सवेरे एक जुलूस निकाला गया। ६ बजे एक सभा का आयोजन किया गया जिस की अध्यक्षता बाबा साहेब वैद्य ने की थी। आप के भव्य चित्र का अनावरण नगरपालिका के अध्यक्ष श्री-उमरलाल जी केडिया ने सम्पन्न किया। नगर का विशाल जन समूह सभा स्थल पर बैठा आप के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करने को व्याकुल बना था। सभी आप की चिरायु की कामना कर रहे थे। जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी कान्फ्रेन्स के मन्त्री जवाहरलाल जी मुणोत, एडवोकेट देवराज जी बोथरा, प्यारेलाल जी एव आपकी शिष्या चन्द्र प्रभा श्री जी ने आप के जीवन पर प्रकाश डाला। सभी ने इस अवसर पर मन भर प्यार बरसाया।

आप जब से अमरावती पधारी थीं तभी से अमरावती वालों के हृदयों में एक तमन्ना जगी थी कि आप की जन्म अर्ध शताब्दि बड़े ही समारोह के साथ मनाएँ। इस भावना को अन्य नगरों व ग्रामों से भी भर पूर प्रोत्साहन मिला। कैसे, किस प्रकार मनाना इसके सुझाव भी आने-जाने लगे। किन्तु चरित्र नायिका की इच्छा न होने से सफलता नहीं मिल रही थी। हृदय की प्रबल भावना ने कब किसी का बन्धन स्वीकार किया है। भावना का निर्बन्ध प्रवाह रोके से भी न रुका—विचारों ने नया मोड़ खाया, एक नया मार्ग दर्शन मिला और अर्ध शताब्दि की भावना को भव्य अभिनन्दन समारोह में परिवर्तन कर संघ ने एक नई योजना का निर्माण किया।

भव्य अभिनन्दन समारोह मनाने की योजना के अन्तर्गत अजमेर में संवत् २०१२ वैशाख सुदि त्रयोदशी को दादा श्री जिन दत्तसूरि अष्ठम शताब्दि महोत्सव पर संस्थापित जिन दत्त सूरि सेवा संघ का तृतीय अधिवेशन अमरावती में करवाकर भव्यअभिनन्दन समारोह को शानदार बनाने का प्रयत्न चालू हुआ। सेवा-संघ के कार्य कर्त्ताओं से पत्र व्यवहार कर अधिवेशन के लिए निमंत्रण दिया गया। संघ के कार्यकर्त्ताओं ने विचार किया, भला आप की अध्यक्षता में अधिवेशन मनाया जाय इसमें दोमत हो ही कैसे सकते थे। लौटती डाक से स्वीकृति आगई और अमरावती वासियों की अमर भावनाएँ अपने आयोजन को अमर बनाने के प्रयत्नों में जुट गई। अमरावती वालों की कार्यदक्षता, सेवा भावना एवं लगन

की कसौटी का समय था। इतना बडा समारोह सफलता के साथ सम्पन्न करना सामान्य बात नही थी। पर भावनाएं और तदनुरुप कार्य करने पर सफलता क्यों न मिलती? चरित्र नायिका के फूफा जी श्री घनराज जी मुणोत ने दादावाडी की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भी इसी उत्सव के साथ सलग्न कर दिया। यह उत्सव जेठ मास मे मनाने का विचार किया गया था किन्तु गर्मी की भयकरता व समय की अल्पता के कारण आचार्यदेव नन्दन सूरि जी म० को पुनः दूसरा मुहूर्त पूछा गया। उन्होंने श्रावण शुक्ला छठ सोमवार का मुहूर्त दादावाडी प्रतिष्ठा के लिए भेजा और पहले मुहूर्त से भी इस मुहूर्त को श्रेष्ठ बताया, एव श्रावण मास मे प्रतिष्ठा कार्य होता है ऐसे शास्त्रीय प्रमाण भी भेजे। आचार्य देव की आज्ञा शिरोधार्य कर सघ ने तृतीया चतुर्थी को अधिवेशन, पचमी को अभिनन्दन समारोह एव छठ को दादावाडी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम निश्चित कर तैयारियाँ शुरू की। इस तिथि परिवर्तन की सूचना सघ के मत्री प्रतापमल जी सेठिया को दि० १७-६-६५ को दी गई और २६ ७ ६५ को उत्सव की शुरुआत थी।

समय बहुत कम था, अधिवेशन के नए अध्यक्ष का निर्णय करना था। प्रचार भी आवश्यक था। अत हमारे उत्साही बुजुर्ग कर्मठ कार्यकर्त्ता, चरित्र नायिका के परमभक्त श्री सेठिया जी ने रातदिन परिश्रम व दौडधूप करके इस कार्य को सफल बनाने का प्रयत्न किया।

सभी निजी कार्यों को छोड कर वे अध्यक्ष के लिए कलकत्ता

पधारे और हमारे सुप्रसिद्ध व्यवसायी, दानवीर सेठ परीचन्द जी वोथरा के कनिष्ठ भ्राता गम्भीरचन्दजी वोथरा को अध्यक्ष एवं सरल स्वभावी सुशिक्षित श्रीमंत श्री रतनचन्द जी मोघा को उपाध्यक्ष चुनकर स्थान-स्थान पर इस की सूचना भेजनी प्रारंभ की समयाभाव से सर्वत्र सूचना समय से नहीं पहुँच पाई फिर भी इस अवसर पर अच्छी संख्या में लोग अमरावती पधारे।

६०—शुभारंभ व अधिवेशन

पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दिवस २६-७-६५ को इस उत्सव की मंगलमयी सफलता के लिए मंगल कलश की स्थापना की गई।

सत्कार समिति का सुन्दर गठन किया गया था। आगन्तुक अतिथियों के सत्कार की सुन्दर व्यवस्था देख कर हृदय गद्‌गद्‌ हो जाता था। सभी आने वालों की सूचना मिलने पर समिति के कार्यकर्त्ता गाड़ियाँ लेकर रात में बारह, एक वजे भी वडनेरा स्टेशन पर खड़े मिलते थे। इस वात का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया था कि आगन्तुकों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। हर संभव उपयोगी प्रवन्ध हमें अमरावती में मिला, इतना वड़ा समारोह और इतनी सुव्यवस्था अमरावती वासियों का प्रेम व निष्ठा का ही परिणाम था।

प्रथम दिन : -

३१ जुलाई को अधिवेशन के माननीय अध्यक्ष कलकत्ता निवासी बाबू गम्भीरचन्द जी बोथरा जे० पी० के हाथों जोशी हाल में ध्वज वन्दन करवाया गया। पश्चात् बहनों ने मधुर कंठ से ध्वज वन्दन गीत गाया।

पश्चात् बम्बई के जीव दया प्रेमी कर्मठ कार्यकर्त्ता जो सौभाग्यवश अचानक अमरावती पधारे थे, और हमारी चरित्र नायिका के विचारों व प्रवचनों से प्रभावित होकर यहाँ इस उत्सव की शोभा बढाने रुक गए थे, श्री चन्दूलाल टी० शाह ने समयोचित भाषण देकर सम्मेलन का उद्घाटन किया। स्वागताध्यक्ष श्री छोटमल जी बुछा थे, जो अमरावती के प्रख्यात सेवा भावी सज्जन हैं। पश्चात् हमारी चरित्र नायिका के मंगल प्रवचन से कार्य प्रारंभ हुआ।

स्वागताध्यक्ष श्रीमान छोटमलजी सहब बुच्चाने श्री गम्भीरमलजी बोथरा कलकत्ता, पूनमचन्द जी गोलेछा मद्रास, रामलाल जी लूणिया अजमेर, प्रतापमल जी सेठिया मदसौर, अगरचन्द जी नाहटा बीकानेर, चन्दूलाल टी० शाह बम्बई, जवाहरलाल जी लोढा आगरा, धनरूपमल जी भमाली देहली, रतनचन्दजी मोधा कलकत्ता, ताजमल जी बोथरा कलकत्ता, भवलाल जी नाहटा कलकत्ता, डा० प्रेमसिंह जी राठौड रतलाम, श्री श्रीलालजी पटवा इन्दौर, पन्नालालजी सिनेमावाले इन्दौर आदि अनेकों बाहर गाँव से पधारे सज्जनों का पुष्पहारों से स्वागत किया। अमरावती की बालिकाएँ जिन्हें हमारी संगीत प्रेम दक्ष साध्वी जी श्री मनोहर

श्री जी ने तैयार किया था ने साभिनय स्वागत गीत गाया जिसकी प्रथम लाइन इस प्रकार थी।

"स्वागत—स्वागत—आज तुम्हारा ;
धन्य दिवस यह प्यारा प्यारा।"

इन बालिकाओं के स्वागत—अभिनय व मधुर गायन की चारों ओर भरपूर प्रशंसा हुई, उपहारों व रुपयों की वर्षा होने लगी। वास्तव में स्वागत गायन व बालिकाओं का अभिनय सजीव, मुखर एवं साक्षात् हो उठा था।

संघ के मंत्री प्रतापमल जी सेठिया ने नौ वर्ष का संघ का कार्य जनता के सामने पढ़ कर सुनाया, एवं इस अवसर पर बाहर से आए लगभग १७४ शुभ सन्देश सुनाए जिसमें मुख्य ये थे, आचार्य विजय समुद्र सूरि जी, आचार्य म० विजयनन्दन सूरीश्वर जी, आचार्य म० विजय पूर्णानन्द सूरि, आचार्य म० विजय ह्रींकार सूरि, आचार्य म० श्री विद्यानन्द सूरि, आचार्य म० धुरन्धर सूरि, आचार्य श्री तुलसी, उपाध्याय म० लब्धि मुनि जी, गणाधीश हेमेन्द्र सागरजी, आर्यपुत्र उदयसागर जी, अनुयोगाचार्य कान्तिसागर जी, मुनिराज चन्द्रप्रभ सागर जी (चित्रभानु), प्रवर्तनी ज्ञान श्री जी, प्रमोद श्री जी, श्री पुज्य जी श्री विजयसेन सूरि व धरणेन्द्र सूरि आदि मुनिराज एवं साध्वी जी म० के थे।

इसी तरह हमारे उपराष्ट्रपति जाकिर हुसेन, मैसूरके गवर्नर, लोकसभा के स्पीकर हुकमसिंह जी, प्रसार मंत्रिणी श्रीमती इन्दिरा गांधी, राजस्थान के मुख्य मन्त्री सुखाड़िया, बंगाल के श्रममन्त्री

विजयसिंहजी नाहर, महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री, विकास मन्त्री, उपमन्त्री प्रकाशचन्द्र सेठी, मेयर इन्दौर, मेयर नागपुर आदि के मुख्य थे। लगभग ६५ नगरों व ग्रामो के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सेवा सघ के १२ प्रस्ताव किए गए। जो सक्षेप मे इस प्रकार है।

१—अखिल भारतवर्षीय श्री जिनदत्त सूरि सेवा सघ का यह अधिवेशन ५ वर्षो मे स्वर्ग पधारे हुए आचार्य विजयलब्धि सूरिजी, आचार्य दानसूरिजी, आचार्य कवीन्द्र सागर सूरिजी, आचार्य श्री विजयलावण्य सूरिजी, आचार्य विजय यतीन्द्र सूरिजी, वर्धमान स्थानक वासी श्रमण सघ के आचार्य श्री आत्माराम जी म०, उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म०, गणिवर्य वुद्धि मुनि जी म०, प्रवर्तनी वल्लभ श्री जी म० और श्री पूज्य जी श्री जिन विजयेन्द्र सूरिजी म० एव अन्य साधु साध्वियो मे से जो भी स्वर्गस्थ हुये है उनके लिए हार्दिक शोक प्रगट करता है।

२—श्रद्धेय पद्म श्री मुनि श्री जिन विजय जी ने चित्तौड मे बन रहे श्री हरिभद्र सूरि स्मृति मन्दिर को भूमि सहित सेवा सघ को भेंट किया है, यह सम्मेलन इसके लिए मुनि श्री का आभारी हैं।

३—श्री पूज्य श्री जिन विजय सेन सूरि म० ने अपना ज्ञान भण्डार सेवा सघ को समर्पित किया है, तदर्थ हम उनके आभारी है।

४—वर्तमान समय मे गुरु मूर्तियों को मुकुट, कुण्डल पहनाने आदि की प्रथा कहीं-कहीं देखने मे आई है। सेवा सघ इस प्रवृत्ति को सिद्धान्त एव व्यवहार से प्रतिकूल मानता व समझता है, अतः यह प्रवृत्ति शीघ्र बन्द की जाए।

५—श्री जिनदत्त सूरि सेवा संघ का अधिकाधिक प्रचार हो एवं समाज में संगठन बढ़ाने के लिए यह सम्मेलन अनुभव करता है कि अधिक स्थानों पर सेवा संघ की शाखाएँ खोली जाएँ।

६—सेवा-संघ के उद्देश्यों को वेग देने के लिए यह सम्मेलन प्रान्त-प्रान्त के प्रतिनिधि जिनकी संख्या १०१ तक हो कि एक प्रतिनिधि समिति बनाई जाय यह आवश्यक समझता है। कम से कम वर्ष में एक बार इसकी मीटिंग अवश्य हो।

७—वर्तमान में हमारे अहिंसा प्रधान भारत में हिंसात्मक कार्य प्रतिदिन बढ़ते जा रहे है, सेवा-संघ उन पर खेद प्रगट करता है। जो भी इन कार्यों का विरोध करते है, उनका समर्थन करता है।

८—आठ साल पश्चात् भगवान महावीर के निर्वाण को २५०० वर्ष पूरे हो रहे है। इस अवसर पर समस्त जैन समाज संगठित हो कर सम्मिलित रूप से सार्द्ध द्वय सहस्त्राब्दि मनाए।

९—दादा साहब मणिधारी जिनचन्द्र सूरिजी के स्वर्गवास को सम्वत् २०२३ भादवा वदी १४ को आठ सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। अतः उनका अष्टम शताब्दि महोत्सव उनके स्वर्गवास नगर देहली में मनाने का प्रस्ताव पूर्व पारित है। इसलिए इसकी तिथि का निर्णय किया जाए।

१०—सेवा-संघ का यह अधिवेशन समाज से सानुरोध निवेदन करता है कि जैन समाज में अलग-अलग मान्यताओं के संघों में मूलभूत एकता व प्रेम भावना को बल देने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों को अपनाने का प्रयत्न करें।

(१) किसी भी सम्प्रदाय की मान्यता को आघात लगे ऐसे साहित्य का प्रकाशन कोई भी सम्प्रदाय वाले न करें।

(२) हर सम्प्रदाय के धार्मिक उत्सवों मे दूसरे सम्प्रदाय वाले सम्मिलित होकर व सहयोग देकर एकता बनाए रखने मे सहायक बनें।

(३) जैन समाज के श्रमण व साध्वी जी म० से भी हम अनुरोध करते है कि वे अपनी मान्यताओं का प्रतिपादन करते हुए भी अन्य सम्प्रदायों के प्रति सहयोगात्मक भावना दृढ बने, ऐसी दृष्टि को अपने प्रवचनों मे मुख्यता देवें व ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि सभी धार्मिक समारोह सामूहिक रूप मे मनाए जाएँ।

(४) यह सघ उन सभी सम्प्रदायों के साधु, साध्वी गण का अभिनन्दन करता है, जिन्होने उपरोक्त विचारों को अपने उपदेशों मे प्रायमिकता दी है।

११—सेवा सघ का यह अधिवेशन समाज से अनुरोध करता है कि जिन सज्जनों की आय सतोपजनक है, वे अपनी आय का कुछ भाग समाज के जरूरतमद व्यक्तियो को शैक्षणिक, व अन्य आर्थिक कठिनाइयों मे सहयोग देने के लिए ट्रस्ट के रूपमे निकालें और उसका सदुपयोग करे।

१२—सेवा-सघ का कार्यालय मद्रास से बम्बई लाने का निर्णय किया गया।

इसके बाद स्वागताध्यक्ष ने आगतुक अतिथियों का साभार

आभार स्वीकार करते हुए कहा कि, आप लोग हजारों मीलों का प्रवास कष्ट उठाकर अनेक असुविधाओं का सामना करके यहाँ पधारने की हमारे ऊपर कृपा की है अतः आप समस्त महानुभावों के प्रेम का मैं अपने हृदय से स्वागत करता हूँ

स्वागत मंत्री श्री देवराज जी बोथरा एडवोकेट ने कहा :—

हमें सेवा और शान्ति के प्रयत्नों को आगे बढ़ाना है, अपनी सद्‌भावनाओं में बल भरना है। आज सौभाग्य से हमारे बम्बई के सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री चन्दूलाल टी० साह एवं अध्यक्ष बाबू गम्भीरचन्द जी बोथरा दोनों ही सज्जन जे० पी० (जस्टिश आफ पीस) है अतः हमारे कार्यक्रम अवश्य बड़ी गम्भीरता और शांति के साथ शक्तिशाली बनेगें।

कार्यक्रम की समाप्ति पश्चात् नवीन जैन उपाश्रय का उद्‌घाटन श्री स्वरूपचन्द जी जैन अमरावती वालों ने किया। और अपनी तरफ से उपाश्रय को ५००१) रुपए भेट किए। सेवा संघ के अध्यक्ष श्री गम्भीरचन्द जी बोथरा ने १००१ रु० भेट किए। हमारी चरित्र नायिका का प्रवचन हुआ।

रात्रिमें श्री गुलाबसुन्दर जी बाफना कोटा निवासी की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन का आयोजन राजीबाई धर्मशाला में रखा गया, स्वागताध्यक्षा श्रीमती जवाहरलाल जी मुणोत थी। कई महिलाओं ने भिन्न भिन्न विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए जिसमें मुख्य ये थे—भारत में बढती हुई फैशन, हिन्सा, पाश्चात्य नकल, गर्भपात को वैध मनाने वाली विचार धारा का विरोध, मध्यम वर्ग

की-बहेनों के लिए उद्योगशाला, पाठशाला आदि स्थापन की आवश्यकता आदि थे। मुख्य वक्ताओं मे श्री हीरा वहिन वोरडिया एम० ए० (भारत के विख्यात टी० वी० के स्पेशलिस्ट डा० वोरडिया की पत्नी) माहेश्वरी स्कूल की अध्यापिका श्री आशा वहिन, श्री धनपतसिंह जी भसाली की पत्नी, वल्लभ कुमारी सेठिया मदसौर, मोहनदेवी जी मदसौर थी।

अधिवेशन की दूसरी बैठक मे अध्यक्ष महोदय का प्रभावशाली भाषण हुआ।

६१—भव्य अभिनन्दन

दि० १-८-६५ को प्रात काल से ही जनता मे पूज्य श्री का स्वागत करने के लिए हर्ष की लहर दौड रही थी। यथा समय नियत स्थान जोशी हाल जनता से ठसाठस भर गया था।

इस समारोह के अध्यक्ष अजमेर निवासी रामलाल जी लूनिया थे, स्वागताध्यक्ष जवाहरलाल जी मुणोत व उद्घाटक श्री लाल जी पटवा इन्दौर थे, मन्त्री श्री देवीचन्द जी बुच्चा एव सयोजक प्रतापमल जी सेठिया थे।

सर्व प्रथम बालिकाओं ने अभिनन्दन गायन गाया जिसकी प्रथम पक्ति इस प्रकार थी।

आओ सखि अभिनन्दन करिए,
विचक्षण श्री जी महाराज,
इकतालीस वर्ष आप पधार्या,
अमरावती पावन आज,
मिश्रीमल रूपादेवी की जाई,
विदूषी नारी के ताज ॥ १ ॥

बालिकाओं को चारों ओर से उपहार व रुपये इनाम में मिलने लगे लगभग ५०० रुपये आए होंगे।

पश्चात् कलकत्ता निवासी वीणादेवी बदलिया ने अभिनन्दन गायान गाया।

[तर्ज—बार बार हम क्या समझाएँ।
आजभरा है हर्ष हृदय में भावों का भण्डार।
अभिनन्दन है...वन्दन बारम्बार....
वर्षो से जो आश लगी थी आज बनी साकार।
स्वागत, स्वागत, स्वागत हे अविकार...॥ १ ॥
नही जाना तुम इतनी महान निकलोगी।
शंकर बन कर राग-द्वेष विष निगलोगी
घर-घर में पहुँचाओगी तुम विश्व मैत्रिका तार। ॥ २ ॥
त्याग, तपस्या, संयम की पावन ज्वाला
दीपशिखा सी प्रगटाओगी हे बाला।
चकाचौंध आश्चर्य चकित करदोगी तुम संसार ॥ ३ ॥

देख तुम्हारी महिमा जग दिग्मूढ है।
आगम वाणी सार शारदा गूढ है।
गगा सी पावन यमुना सी निष्कलक अविकार ॥ ४ ॥
फूलचन्द और भँवर लाल ये भाई हैं,
मिश्रीमल जी रूपा देवी जाई है।
हर्ष पूर्णसघ स्वागत करता लेना हाथ पसार ॥५॥

गायन पश्चात् स्वागताध्यक्ष श्री जवाहरलाल जी मुणोत ने स्वागत अभिभाषण दिया। श्री मुणोत जी ने कहा :—

अमरावती के नागरिकों की ओर से आप सब का स्वागत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आजका मगल प्रभात हमारे लिये चिरस्मरणीय रहेगा, जब कि अपने पुनीत जन्म से हमारे नगर को गौरवान्वित करने वाली इस विश्व विभूति के अभिनन्दन का पुण्य प्रसग हमे प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर अमरावती नगर अपने आपको धन्य मानता है।

आप महानुभावों के समक्ष में अभिनन्दनीया साध्वी श्री जी के जीवन दर्शन व विराट व्यक्तित्व की एक सक्षिप्त रूपरेखा रखने के पूर्व इनके पुनीत जन्म से धन्य होने वाले अमरावती नगर के सम्बन्ध मे दो शब्द कह देना आवश्यक समझता हूँ।

अमरावती विदर्भ का एक महत्वपूर्ण प्राचीन नगर है। भारत के सास्कृतिक एव राजनैतिक मानचित्र मे अमरावती एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। पौराणिक मान्यता के अनुसार महाभारत काल मे अमरावती एक सुन्दर नगर था। कुण्डयपुर के राजा रुक्मि की रूपवती कन्या

रुक्मिणी का हरण करके यदुनाथ श्रीकृष्ण यहाँ पर आए थे, व अम्बा जी के मन्दिर में विवाह सूत्र में बंधे थे। रुक्मिराज ने अपने जीवन का सन्ध्याकाल अमरावती के निकट भातकुली में व्यतीत किया था। नल-दमयन्ती की प्रणय-कथा भी इसी क्षेत्र से सम्वन्धित है। ई० पू० तीसरी शताब्दी में यहाँ पर सम्राट अशोक का शासन रहा, व पश्चात् तैलंगण का, राष्ट्रकुल व चालुक्य वंश के राजाओं की छत्र-छाया में अनेक उत्थान पतन देखते हुए यह नगर मध्यकाल में मुसलमान बादशाहों की अमलदारी में आ गया। भारत की राजनैतिक घटनाओं के साथ बदलते हुए ई० सन् १९०५ से अमरावती एक स्वतन्त्र जिले के रूप में उन्नति कर रहा है।

स्व० दादासाहेब खापर्डे, श्री मुधोलकरजी, श्री सर मोरोपंत जोशी, श्री वीर वामनराव जोशी, पंजाबराव देशमुख, आदि नेताओं के अथक प्रयत्नों से अमरावती भारत के राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में अग्रगण्य बना। शिक्षा, उद्योग, व्यवसाय आदि दृष्टि से अमरावती का महाराष्ट्र में ही नहीं, अपितु भारतवर्ष में भी प्रमुख स्थान है। विज्ञान, कला व प्रशिक्षण केन्द्रों में अमरावती का पूना के बाद नाम लिया जाता है। यहाँ पर शिवाजी एज्युकेशन सोसाइटी, तथा राठी एज्युकेशन सोसाइटी जैसी शिक्षण संस्थाएँ शिक्षण कार्य को सुचारु रूप से अग्रसर कर रही है। शारीरिक प्रशिक्षण के क्षेत्र में यहाँ की प्रमुख संस्था "हनुमान व्यायाम प्रसारक मण्डल" भारतवर्ष में अपने ढंग की एक संस्था है। एशिया, यूरोप, अमेरिका आदि में इसकी अच्छी प्रख्याति है। राजनीति, शिक्षा,

एव उद्योग व व्यवसाय मे अमरावती अग्रगामी है, वहाँ मानव सेवा के क्षेत्र मे भी वह पीछे नही है। राष्ट्र-सन्त तुकडो जी द्वारा अमरावती नगर से २० मील दूर मोझारी मे सचालित "गुरु-कुञ्ज" मे मानव धर्म व मानव सेवा का विशेष शिक्षण व कार्य किया जाता है। अमरावती नगर मे ही डा० पटवर्धन के स्नेहिल एव सेवापरायण छत्र छाया मे "तपोवन" मे महारोगियों की सेवा-सुश्रुषा तथा उन्हे कार्यक्षम बना कर उद्योग कला द्वारा स्वावलम्बी बनाने का प्रशसनीय कार्य चल रहा है। धार्मिक परम्परा से भी इसका विशिष्ट स्थान है। यहाँ के अम्बाजी के मन्दिर मे प्रतिवर्ष हजारों नर-नारी बाहर से दर्शन करने आते हैं। अमरावती के निकट व आस-पास मे अनेक प्राचीन जैन तीर्थ हैं, जैसे मानकुली, सिरपुर, भद्रावती, मुक्तागिरी। जहाँ पर प्रतिवर्ष दर्शनाभिलाषी व्यक्तियों का ताता लगा रहता है। इस प्रकार धर्म, संस्कृति, सेवा, शिक्षा, राजनीति व उद्योग आदि दृष्टियों से अमरावती का अपना वैशिष्ट्य है।

अमरावती नगर की इस उज्ज्वल परम्परा के साथ हम साध्वी श्री जी के जीवन को देखते है। आज से ५२ वर्ष पूर्व वि० सं० १९६९ की आषाढ कृष्णा प्रतिपदा को अमरावती नगर आपके जन्म से धन्य हुआ था।

इसके पश्चात् श्री गुणीता जी ने आपके जीवन पर आद्योपान्त प्रकाश डाला—किस प्रकार आप का वैराग्य हुआ, किस प्रकार किन २ बाधाओं को पार कर आपने माताजी से दीक्षा की अनुमति प्राप्त की और दीक्षा पश्चात् आपने किस प्रकार शानदार ढंग से अपना

जीवन निर्माण किया, किन-किन स्थानों पर आप को सार्थक पद प्रदान किए गए, आदि का सांगोपांग आँखों देखा अनुभव वर्णन प्रस्तुत किया।

अन्त में मुणोत जी ने कहा :—

कुछ समय पूर्व जब मैंने इन्दौर में आपका प्रवचन सुना तो आप के हृदयग्राही व्यक्तित्व ने मुझे आकर्षित कर लिया। आप की विद्वत्ता, सरलता, स्नेह-शीलता एवं मधुरता ने मुझपर बहुत ही प्रभाव डाला। तब से मुझे ऐसा लगने लगा कि क्या ही अच्छा हो कि आपके चतुर्मास का लाभ अमरावती वासियों को मिले। मेरी यह मनो कामना आज साकार हो रही है। यह हम सब का सद्-भाग्य है। आज पहली बार साध्वी श्री जी का अपनी जन्म-भूमि हमारे नगर में चतुर्मास हो रहा है। यह हमारे लिए जितना गौरव का विषय है उतना ही कर्त्तव्य का भी कि हम आपके सानिध्य से अपने जीवन को लाभान्वित करें।

मानव सेवा के लिए आपके सद् प्रयत्नों, चरित्र निर्माण के कार्य-क्रमों व समता, सरलता, सादगी के उपदेशों से जो लाभ देश को मिल रहा है वह अतुलनीय है। मानव समाज के साथ-साथ आपने नारी-जीवन के अभ्युत्थान में जो योग-दान दिया है उसको देखते हुवे आप का यह अभिनन्दन बिलकुल सार्थक है। सही मायने में आपका यह अभिनन्दन ज्ञान, त्याग और सेवा का अभिनन्दन है, समता और सरलता का अभिनन्दन है। भारत वासियों का मस्तक हमेशा ही वैभवशाली सम्राटो के समक्ष नहीं अपितु अकिंचन संतों

के चरणों मे झुकता रहा है। यहाँ वैभव और भोग का अभिनन्दन नही, किन्तु त्याग और योग का अभिनन्दन होता रहा है। आज हम भी उसी पुनीत परम्परा का पालन करते हुए समवेत रूप से आर्या-रत्न परम विदूषी साध्वी जी श्री विचक्षण श्री जी म० सा० का एक वार पुनः हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

इसके साथ हम एक वहुत ही महत्वपूर्ण कार्य को नही भुला-सकते वह है पूज्या तपस्विनी, सरलमना, शान्ति मूर्ति श्री विज्ञान श्री जी म० सा० का अभिनन्दन, वास्तव मे तो यह अभिनन्दन आपका ही है जिसने ऐसी महान् पुत्रीरत्न को जन्म दिया, आपके प्रति मैं अपनी हार्दिक भावनाओं को एक पद द्वारा अभिव्यक्त करके पुनः आपका श्रद्धाभिवादन करता हूँ।

धन्य आज मातृत्व तुम्हारा,
दिव्य ज्योति को जन्म दिया।
जिसने तिमिराकुल अग जग मे,
अजर अमर आलोक किया॥

आपके साथ मे विराज मान साध्वी मडल जिसका आप ने स्वर्ण मडल नाम दे रखा है, वास्तव में स्वर्ण की कमनीय कान्ति की भाति ही निर्मल है, जिस मे तपस्या, अध्ययन, धर्म, प्रभावना आदि का सतत प्रवाह चल रहा है। इन सब का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

अन्त मे हमारे माननीय अध्यक्ष महोदय का अभिवादन किए बिना नहीं रहता जिन्होंने हमारे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए राज-

स्थान से यहाँ पधार कर अनुग्रह किया है। अजमेर क्षेत्र में आपकी सज्जनता, सरलता व धर्म निष्ठा का बहुत प्रभाव है। मैं अमरावती नगर की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

इस समय आप के समक्ष विराजमान महाराज श्री के भ्राता फूलचन्द जी भंवरलाल जी मुथा एवं भतीजे श्री प्यारेलाल जी मुथा का भी हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ जिस परिवार ने यह रत्न जैन समाज को दिया।

पश्चात् इन्दौर के प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्ता नेता, एवं महाराज श्री के परम भक्त श्री लाल जी पटवा ने अपने प्रभावशाली भाषण से अभिनन्दन समारोह का उद्घाटन किया। पटवाजी ने अपने भाषण में स्वर्ण-मण्डल की समस्त साध्वी जी म० के नाम लेकर बड़ा ही सुन्दर अभिनन्दन किया। इसके पश्चात् श्री चन्दू भाई टी शाह, दैनिक हिन्दुस्तान (मराठी) के सम्पादक बाला साहेब मराठे, पदम श्री डॉ० पटवर्धन, जिला कांग्रेस के अध्यक्ष बाबा साहेब वैद्य, महेश्वरी समाज की ओर से श्री चुन्नीलाल मन्त्री, इन्कम टैक्स आफीसर इन्दौर श्री बलभद्र जी मुम्भट, श्री रतनचन्द जी कोठारी, श्वेताम्बर जैन के सम्पादक जवाहरलाल जी लोढ़ा, "सुप्रभात" अमरावती के सम्पादक अण्णा साहेब काले, श्री उमरलाल जी केडिया अध्यक्ष नगर पालिका एम० एल० ए०, "उदय" के सम्पादक दादा वैद्य, "मातृभूमि" के सम्पादक नागर जी, नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ० वाठोडकर, सूरेश भट्ट, वल्लभ मुसा, पत्रकार राव पी० टी० आय। मूंदड़ा प्रिन्सीपल राज महाविद्यालय, प्रिन्सिपल भारतीय

महाविद्यालय अन्नावेंद्य, डॉ० प्रेमसिंह जी राठोड रतलाम, अगरचन्द जी नाहटा बीकानेर, ताजमल जी बोथरा कलकत्ता, वल्लभचन्द जी कुम्भट, हीरा बहिन बोरडिया, प्रतापमल जी सेठिया मदसौर, धनपतसिंह भसाली देहली, विचक्षण सगीत मण्डल रतलाम, आदि लगभग १०० नगरों के प्रतिनिधियों ने आपका भावभरा, श्रद्धापूर्ण हृदय से अभिनन्दन किया।

देवेन्द्रसिंह जैन बी० ए० ने हमारी चरित्र नायिका का अभिनन्दन एक सुन्दर कविता रच कर किया जो इस प्रकार है।

आज मन के वीण की झकार से स्वागत तुम्हारा।
अमरावती मे जन्म पाया, धन्य भारतवर्ष जिससे,
धर्म पुष्पों की भ्रमर, है देश का सम्मान जिनसे,
आज पाकर आप श्री को, है मिला गौरव सभी को।,
साध्वी महाराज साहब, जैनियो की शान तुम हो।
धन्य हम हैं आज अपने भव्य तुमसा रत्न पाया।
नम्रता विदुषी तुम्हारी, और यह अमृत-सी वाणी
कर रही सबको प्रभावित, आप की ये निर्भिमानी ?
सगठन के साथ समता, पथ हमे दिखला रही हो।
विश्वप्रेम-प्रचारिका बन, देश का हित कर रही हो।
स्वर्ण मण्डल धन्य है जिसमे चमकता यह सितारा।

तत्पश्चात् कलकत्ता नगर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री भवरलाल जी नाहटा ने आप का प्राकृत भाषा मे बडे ही सुन्दर गुणानुरूप निम्न पद्यों से स्वागत किया।

जय-जय जग-पिम्म- महामणा
जय अज्जारयण वियक्खणा
जय अरिहा-सासण सेविया
जय-जय निग्गंठो रेहिया
जय-जय आगम अत्थ समत्था
जय संजम साहण अपमत्ता
धन्न-धन्न णयरी अमरावई
अभिणंदन कय हरि समणावई

श्री मदनलाल जी जोशी "भागवत भूषण" ने स्वरचित ५१ पद्यों की एक भाव भरी कविता प्रस्तुत की जिस से प्रभावित होकर अमरावती संघ ने उनको सैकड़ों रुपये भेंट कर सम्मानित किया।

श्री चन्दूलाल टी० शाह ने एक स्वरचित पद्य सुनाया।

चरित्र नायिका के भतीजे श्री प्यारेलाल जी जैन "साहित्य सुधाकर" अमरावती ने एक भक्ति अंजलि समर्पित करते हुए कहा :—

एक रोशनी है आई अमरावती में आज।
जिसके प्रकाश में मिले जीवन के सारे साज॥
जिन धर्म, देश, वंश को इसने दिया उजाल।
महावीर, सेविका है ये भवसिन्धु में जहाज।
मानवता विश्वप्रेम से शोभित है छत्र साल,
भारत में कर रही हैं ये एक छत्र धर्मराज्य॥

इसका सन्देश है हमे जागृत रहो सदा।
आता है काल इस तरह तीतर पे जैसे वाज।
हर रागिनी "विचक्षणा" विज्ञान गारही,
वागेसुरी कि जैत श्री हो भूप या खमाच॥
धरती को गर्व है स्वय ऐसा मिला रतन।
धरती पे पग पडा वहाँ होता है रामराज्य।
सुवरण चरण प्रताप से अक्षय मिला है ज्ञान।
उज्ज्वल भविष्य दे रहा हरदम इसे आवाज॥
अविचल, तिलक, श्री मजुला, निपुणा, प्रभा, है धीर
मनोहर, है कठ कोकिला वन्दू में मुक्ति, काम।
चन्द्र प्रभा, सुरजना, मणि, ज्योति, ज्ञान वान,
मण्डल स्वर्ण के सदा सेवा मे सव समाज॥
भक्ति के फूल जग रखे इसके सुपथ में,
विजया और कांति सरपे रखती है इसके ताज।
जिसने सदा ही रखी लाज इस युगमे धर्म की।
रख ऐ "प्यारे" भगवन् हरदम ही इसकी लाज॥

इसके पश्चात् इस जैन कोकिला पुस्तकके कुछ फर्मे चरित्र नायिका की सेवा मे समर्पित किए गए।

६२—अभिनन्दन पत्र व शासन प्रभाविका

महाराज श्री के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए वहाँ

उपस्थित जनता में से इतनी मांग थी कि उन सब को एक-एक मिनट का समय भी देना असम्भव था। अतः इस समारोह के मुख्य कार्यकर्ता ने जनता से क्षमायाचना करते हुए अपीलकी-कि आप अपनी श्रद्धाएँ लिख-लिख कर मुझे दे दें और मैं नाम वार उसे सुना दूं। इसके सिवाय और अन्य उपाय नहीं है। शीघ्र ही जनता के श्रद्धा भरे शब्दों के पर्चे मंचपर आने लगे जिनकी संख्या ७७ थी। इसी प्रकार वाहर गांव व नगरों से आए तार व शुभ कामनाओं की संख्या भी लगभग १०० के करीव थी सब नाम से सुनाई गई।

पश्चात् जवाहरलाल जी मुणोत ने श्री संघ की ओर से प्रस्तुत अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया और अध्यक्ष श्री रामलाल जी लुणिया अजमेर ने यह पत्र समस्त जैन संघ की ओर से हमारी चरित्र नायिका को समर्पण किया। जो इस प्रकार था—

॥ श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

दासानुदासा इव सर्व देव। यदीय पादाब्जतले लुठन्ति।
मरुस्थली कल्पतरुः सजीयाद्, युग प्रधानो जिनदत्तसूरिः॥

माननीया, परमपूज्या, विश्वप्रेमप्रचारिका, समन्वय-साधिका, जैनकोकिला, गुरुतिर्थोद्धारिका, विदुषीरत्न, व्याख्यानभारती, बालब्रह्मचारिणी।

श्री १०८ श्री विचक्षण श्री जी महाराज

की

पुनीत सेवामें

अभिनन्दन पत्र

परमपूजनीया,

महाराष्ट्र की मङ्गलमयी पावनस्थली इस अमरावती नगरीमें आज आपके दर्शनों का अलभ्य लाभ लेकर अभिनन्दन की इस शुभवेला में आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए श्री संघ के श्रद्धापूर्ण मानस में जिस आनन्दातिरेक का अनुपम अनुभव हो रहा है, वह वर्णनातीत है।

बालब्रह्मचारिणी,

"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत" इस पवित्र सिद्धान्त को आत्मसात कर आपने मात्र ११ वर्ष की अल्प आयु में भागवती दीक्षाग्रहण करते हुए जिस उत्कृष्टतम वैराग्य भावना के अंकुर को सिंचित करने का दृढ़ संकल्प किया, आज उसका पल्लवित, पुष्पित, एवं फलितस्वरूप आपकी अखण्ड ब्रह्मचर्य की अदम्य शक्ति का प्रबल परिचायक हो गया है। फलस्वरूप आप "बाल ब्रह्मचारिणी" के वरिष्ट विरुद से विभूषित हो, जिस प्रकार अपनी साधना में लीन हैं, संघ आपके चरणकमलों में नत हो, आत्मगौरव का अनुभव करता है।

महामनस्विनी,

आत्म-साधना की अमरभूमि इस अमरावती में जन्म लेकर अपनी जन्मजात विलक्षण प्रतिभा, अप्रतिम अध्ययन् शक्ति, एवं अनुपम निष्ठा का परिचय देते हुए आज आप अपनी महिमा-मयी मनस्विता के आधार पर जो यशस्विता प्राप्त कर रही हैं, उससे निस्सन्देह इस नगरी का मस्तक उन्नत हुआ है।

दर्शन एवं अध्यात्म के दुरूह तथा दुष्कर पथको सफलता के साथ पार करने के अतिरिक्त आपने अपने अध्यात्म वाद के प्रखर प्रकाश से, भौतिकवाद एवं वर्ग वैषम्य की विभीषिका से विदग्ध मानव जाति की शान्ति, समृद्धि एवं प्रगति के हेतु जो मार्ग प्रशस्त किया है, वह सदा सर्वदा न केवल स्मरणीय ही रहेगा, अपितु प्रत्येक मानव के मानस में अभिनव आशा, नूतन उत्साह एवं नवीन जीवन का सुखद संचार करता रहेगा।

स्याद्वाद पोषिका,

जैन दर्शन का मूल सिद्धान्त स्याद्वाद-अनेकान्तवाद रहा है, एवं आपने अपने आदर्श एवं तपोमय सात्विक जीवन में इस पवित्र सिद्धान्त से जिस प्रकार तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित किया है, उससे आपकी प्रत्येक गतिविधि एवं प्रवृत्ति में हमें स्याद्वाद के प्रत्यक्ष दर्शन हुए बिना नहीं रहते। यही कारण है कि समन्व-यात्मक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण विश्व के साथ प्रेम-पूर्ण व्यवहार को आपने अपने जीवन का महान् लक्ष्य निर्धारित किया एवं

क्रमश गति-प्रगति के साथ आप स्थान २ पर इसका पोषण करती रही हैं। आपके इन्हीं गुणोंसे प्रभावित हो अनुयोगशास्त्र के प्रखर विद्वान् जैनाचार्य श्री आर्य रक्षित सूरि के जन्मस्थान, मालव (मध्य प्रदेश) के प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर दशपुर (मन्दसौर) के श्री सघ ने आपको "विश्वप्रेमप्रचारिका" तथा रत्नपुरी (रतलाम) के श्री सघने "समन्वय साधिका" के विरुदालकार से अलंकृत कर अपने को धन्यभाग्य माना।

जिनशासन सेवा परायणा,-

'पारमार्थिक रूपेणमदा कार्याऽऽत्मसाधना" आत्मसाधना के साथ पारमार्थिकवृत्ति भी यदि साधक की साधनावस्था में हो तो इतर जन भी आत्मसाधना के मार्गमे प्रवृत्त होते हैं। इस सूक्ति की चरितार्थता के साथ आपकी आत्मसाधना पारमार्थिकरूपेण इस प्रकार होती है, जिससे सततगत्या जिनशासन उत्तरोत्तर उन्नत होता रहा है। उदाहरण के रूपमे मालपुरा तीर्थ (गुरुदेव के स्थान) का तथा अनेक देवमन्दिरों एव गुरमन्दिरों के जीर्णोद्धार कार्य, ऐसे शुभ कार्य हैं, जो आपकी जिनशासन सेवापरायणता का परिचय प्रदान करते हैं।

इसके अतिरिक्त दीक्षा पर्याय में भारत के अनेक स्थानों में विचरण कर अपने अमृतमय प्रभावोत्पादक प्रवचनों द्वारा प्रत्येक स्थान पर पारस्परिक प्रेम, स्नेहमय संगठन, साधनशील सदाचार एवं निष्ठापूर्ण चरित्र निर्माण आदि की जिस प्रकार

प्रतिष्ठापना की तथा उससे श्री संघ एवं जिनशासन की जो उन्नति हुई व हो रही है, निस्सन्देह वह स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी।

पीयूषरसवर्षिनी,

"वाणी का आभूषण उसका अपना माधुर्य होता है" इस परम मानवीय सिद्धान्त के आधार पर आपकी रसमयी वाणी में अमृतोपम माधुर्य के साथ ही जो तात्त्विकसार अभिव्यक्त होता है, उससे ऐसा प्रतीत होता है, मानो आप साक्षात् "भारती" का द्वितीय रूप हो; यही कारण है कि आपके प्रवचनों एवं व्याख्यानों में जहाँ आपकी अपार विद्वत्ता प्रवचन पटुता एवं प्रभावशालिताके दर्शन होते हैं वहां, वाणी का रसमय मधुर प्रवाह मानवमात्र-जीवमात्र के मानस को स्नेहार्द्र किये बिना नहीं रहता।

जैन दर्शन के विशाल नन्दन-वन में सुविकसित, सत्सिद्धान्त-सुमनों की रसमय सुरभि का रसास्वादन कर कोकिल के समान अपने मधुर कण्ठ से आप जिस प्रकार प्रवचन एवं व्याख्यान प्रदान करती हैं, निस्सन्देह उससे मानव के हृदयाकाश में नवीन संस्कारों का सूर्योदय हो जाता है। आपके इसी प्रभावशील प्रखर पाण्डित्य एवं ज्ञानगरिमा से व्याप्त वर्चस्वशील व्यक्तित्व के फलस्वरूप परमपूज्य आचार्यप्रवर श्रीमद् विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज ने आपको "जैन कोकिला" का आशीर्वाद दिया,

जयपुर श्री संघने "व्याख्यात भारती" की श्रद्धामयी पदवी से विभूषित कर अपनी गुणग्राहिता एव श्रद्धापूर्ण भावना व्यक्त की।

वात्सल्यभाव की प्रतिमूर्ति,

आचार्य श्री सोमप्रभसूरि के शब्दों में आवद्यमुक्ते पथि य प्रवर्तते, प्रवर्तमत्यन्यजनं च नि स्पृह" अर्थात् वस्तुत गुरु वही होता है जो स्वयं सन्मार्ग पर चालता है एव निस्पृह होकर अपने शिष्यों को भी चलाता है। आचार्यवर के ये शब्द आपके जीवन में अक्षरश चरितार्थ होते हुए हमे उस समय दिखाई देते हैं जब हम आपकी शिष्याओं के दर्शन करते हैं आपके परम पवित्र एव निर्मल निश्चल हृदय व समुद्भूत प्रेम एव वात्सल्य का ही यह सुपरिणाम है कि आपका समस्त मण्डल आदर्शता का केन्द्र है, जहाँ से सहज ही अनुशासन, पारस्परिक प्रेम, ऐक्य, निरभिमानिता, विनम्रता, मधुभाषिता, आज्ञाकारिता, स्वाध्याय निष्ठा, कर्तव्यपरायणता धर्माभिरुचि एवं सस्कृतिनिष्ठ शिष्टता का दर्शन होता है। आपकी समस्त शिष्याएँ यथानाम तथा गुण की उक्ति को सार्थक करती हैं। इसका श्रेय आपके वात्सल्य-पूर्ण हृदयको ही है।

सर्वतोमुखी प्रतिभामयी,

धर्म के माध्यम से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपकी प्रतिमा स्पष्टरूपेण प्रतिभासित होती है। आपकी इसी सर्वतोमुखी प्रतिमा के कारण वर्तमान प्रवर्तिनीजी महाराज ने अपने ही सम्मुख

आपको प्रवर्तिनी पद का दायित्व प्रदान करने की अपनी इच्छा प्रकट की परन्तु आपने इसे स्वीकार नहीं किया। यह आपकी विनयता व महत्वता का परिचायक है।

इस प्रकार के आपके अनन्त गुणों का वर्णन हम किस प्रकार करें? इस लिये कि भावों, एवं विचारों को अभिव्यक्त करनेवाली यह भाषा, यह वाणी तथा ये शब्द आपके महान् व्यक्तित्व को एवं अपार वैदुष्यको व्यक्त करने में अपने आपको पंगु एवं निर्बल अनुभव कर रहे हैं। अतः अभिनन्दन के हर्षप्रदायी इस मंगलमय पुनीत अवसर पर हम इस अभिनन्दन पत्र के रूप में अपने श्रद्धापूर्ण मानस के पवित्र भावों की शब्द सुमनाञ्जलि आपके चरणों में समर्पित कर याचना करते हैं कि आप स्वपर का कल्याण करती हुई अपनी समस्त शिष्याओं के साथ शतशतायु होकर जिनशासन की उत्तरोत्तर उन्नति करती रहें।

श्रावण शुक्ल ४ सं० २०२१
दिः ३१-७-६५ रविवार

विनीत :
समस्त श्रीसंघ

अमरावती संघ व अन्य सभी प्रान्तो से पधारे हुए सज्जनों का प्रबल-अनुरोध था कि आप श्री को इसी समय प्रवर्तनीपद से सुशोभित किया जाए, परन्तु इसमें सफलता नहीं मिल सकी।

इस पद के लिए पहले भी वर्तमान प्रवर्तनी महोदया श्री ज्ञान श्री जी म० ने अथक परिश्रम किया था आप को समझाने में, और राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री चन्दनमल जी नागोरी ने भी

पत्रों व समाचार पत्रों से काफी प्रयत्न किया था किन्तु इस पद के लिए आप ने सर्वथा इन्कार करदिया, और आज समस्त सघ मिल-कर भी आप को इस पद-भार ग्रहण के लिए मनाने मे असमर्थ रहा। आप का कहना था अब इस भार को ग्रहण करना मेरे लिये सभव नही। आखिर उम्र बढती है बुढापा आ रहा है यदि ऐसी जिम्मे-वारियाँ लेती रहूँगी तो फिर मै मेरा कल्याण कब करूँगी अब तो निवृत्ति का समय है ये सभी प्रवृत्तियाँ बन्द करनी होगी।

आखिर जनता के प्रबल अनुरोध व उग्र भावना का वेग भी नही रुका और अपनी भावना की पूर्तिरूप प्रस्ताव आया कि महाराज श्री को इसी समय "शासनप्रभाविका" पद से अलकृत किया जाए। सभी ने एक स्वर से इसका समर्थन किया और महाराज श्री के भ्राता श्री फूलचन्द जी साहब मुथा ने समस्त श्री सघ व अमरावती सघ की ओर से आप श्री के लिए शासन प्रभाविका पद की घोषणा की जिसका समर्थन श्री स्थानक-वासी जैन कान्फ्रेन्स के मत्री श्री जवाहरलाल जी मुणोत ने बडे भावभरे सुन्दर शब्दों से किया। "जोशी हाल" का विशाल सभा मण्डप करतल ध्वनियाँ व शासन प्रभाविका के जयनादों से गूज उठा।

आप श्री ने फरमाया, न तो मैं इस सम्मान के योग्य हूँ, और न मुझे इसकी चाह ही है। किन्तु आपलोग मानते ही नही हैं। मेरी एक न चली और आपने किसी न किसी रूप मे अपनी मनमानी चाह पूरी करके ही दम लिया तो मैं विवश हूँ। अब आप मानते ही नहीं है तो भले आप यह सारा सम्मान इस भगवान महा-

चोर के ओघे (जैन मुनि ध्वज) ना करें। और वास्तव में यह सारा सम्मान है भी इसी का ही। मुझे कौन पूछता यदि यह न होता तो। मैं तो सम्मान योग्य हूँ नहीं।

इसी प्रकार शासन प्रभाविका पदवी के लिये भी आपने फरमाया :—"शासन प्रभाविका" की बजाय मुझे आप "शासन सेविका" पद दे दें क्यों कि मैं शासन की एक क्षुद्र सेविका ही हूँ। किन्तु लोगों ने आपकी एक न चलने दी और आप को शासन प्रभाविका घोषित कर दिया।

श्री जवाहरलाल जी लोढ़ा ने कहा :

आपने अभी संघ को मुनि का माता पिता कहा था। माता पिता को अधिकार है कि वह अपनी सन्तान का नाम अपनी इच्छानुसार रखे। अतः श्री संघ आज से आप को "शासन-प्रभाविका" के नाम से सम्बोधित करता है। आप हमारे अधिकार छीनने का प्रयत्न न करें। उपस्थित जनता ने शासन प्रभाविका के जय नादों से पुनः हाल गूंजा दिया।

६३—अखिल भारतीय स्वर्ण सेवा फंड

अभिनन्दन समारोह का सारा ही कार्यक्रम लगभग समाप्त होने आया परन्तु लोगो का उल्लास एवं उत्साह अभी वही का वही था दोपहर होने आया पर भूख प्यास का कहीं नामो-निशान नहीं था।

आप श्री ने अन्त में फरमाया कि, मैं तो इस संघ की एक

अकिंचन सेविका हूँ। इतने सम्मान के योग्य मैं नही हू। आज मैं जो कुछ भी वन पाई हूँ अपनी सुवर्ण गुरुवर्या की ही कृपा के बलपर वन पाई हूँ।

पश्चात् समाज सेवा, मध्यम वर्ग व गरीब वन्धुओ की सहायता की परम आवश्यकता पर मार्मिक प्रकाश डालते हुए आप श्री ने फरमाया, आप सबने मिलकर बडा ही शानदार उत्सव मनाया और मेरा भी शानदार सम्मान किया, पैसा भी खूब खर्चा, परन्तु मेरा सच्चा सम्मान तो तभी होगा जब आप सभी श्रीमन्त मध्यम वर्ग के भाई वहिन व वालगोपालों की सहायता के लिए कोई ठोस कदम भरे। वर्ना ऐसे प्रदर्शन तो हमारे समाज मे आजकल रोज मर्रा के दाल भात बन गए हैं। देखादेखी होडा होड हमारा समाज ऐसे दिखावों व आडम्बरों मे प्रति वर्ष लाखों रुपये व्यय करता है। हम मुनि हैं घर-घर मे जाना, घर का चौका चुल्हा देखना हमारा आचार है। आप ऐसा न समझें कि आप जैसा खाते पहनते हैं वैसा ही आपका समाज खाता पहनता है। हम देखते है बहुत मे घरों मे साग सब्जी के दर्शन वार त्योहार होते हैं, घी नाम मात्र का वर्ता जाता है। ऐसी हालत मे जहाँ पेट ही न भरा जा सके वहाँ वालकों को पढ़ाने लिखाने की वात ही कहाँ ? विना पैसे क्या करे। समाज की भीतर ही भीतर हो रही इस जर्जर दशा, खोखलेपन को देख कर मेरा हृदय रोने लगता है, मेरे पात्र मे आया अन्न, माल मलीदे देख मेरा कण्ठ रुक जाता है, ग्रास मेरे गले से नही उतरता। अरे समाज के बच्चे, हमारे महावीर के प्यारे लाल रोटी के महताज, पढ़ाई का

खर्च उठाने में असमर्थ और इधर हमारे श्रीमंतों के घरों में रोज पूड़ी, मिठाई, हल्वा, गोली व चूर्ण खा-खा कर हजम किया जाता है। रोज ५०, ६०, रुपए के फल मेवे मिठाइयाँ आती है जिन्हें वे खा नहीं सकते नौकर चाकर व कुत्तों तक को खिलाते है। बन्धुओं हमारे लिए यह बड़ी ही डूब मरने जैसी बात है। अब अधिक समय तक यह धाँधली बर्दास्त नहीं होगी। सरकार सचेष्ट है। अतः हमारा फर्ज है कि हम स्वयं अपने भाइयों की सहायता करें, उन्हें अपनाकर उठावें। यदि आप मुझे सन्माननीय मानते है, आप के हृदय में मेरा सम्मान करने की चाह है तो आप इस समय एक स्वर्ण सहायता फंड की स्थापना करें, और उसके द्वारा बन सके उतने परिवारों की सहायता करें तभी आपका यह समारोह सफल होगा, वर्ना पैसे को पानी की तरह बहाकर अपने क्या पाया? दूसरों को क्या दिया? इस पर विचार करें।

आपके भाषण से और उत्साह आया, एक भावना प्रवाह उमड़ा। सभास्थल पर ही "सुवर्ण सहायता फंड" के नाम पर चन्दा बरसना शुरू हुआ बात की बात में १५ मिनट में लगभग साठ हजार रुपयों के वचन मिले। अभी भी निधि संग्रह जारी है। स्वर्ण सहायता फंड के नियम परिशिष्ट में दिए गए हैं। समय अधिक हो गया था मेहमान भूखे प्यासे बैठे थे अतः कार्यक्रम संकोचना लाजमी था।

अन्त में हमारे माननीय अध्यक्ष महोदय का भाषण हुआ जिसमें उन्होंने चरित्र नायिका का अभिनन्दन करते हुए कहा :—

ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, कला आदि क्षेत्र मे भारत विश्व का गुरु रहा है। वेद, उपनिषद आगम सूत्रों के अध्ययन से हमे पता चलता है कि हमारे आचार्यों का ज्ञान आत्मा-परमात्मा से लेकर भूगोल, खगोल, गणित, ज्योतिष प्राणिशास्त्र, आदि के सम्बन्ध मे कितना उच्च कोटि का था। सीता सुभद्रा, चन्दनबाला जयन्ती आदि सती साध्वियों ने अपने सतीत्व तेज एव ज्ञानबल से नारी जाति के मस्तक को सदैव ऊंचा रखा है। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, शकराचार्य आदि की अमर परम्परा उज्ज्वल आदर्शों एव अमृतमय उपदेशों से भारतीय जन जीवन सदा जगमगाता रहा है। गौरवशाली भारतीय भूतकाल पर प्रकाश डालते हुए हमारे अध्यक्ष महोदय ने कहा :—

अब मैं आर्यारत्न विचक्षण श्री जी महाराज के सम्बन्ध मे दो शब्द कहकर अपने हृदय की पवित्र श्रद्धा व्यक्त करके अपने भाषण को समाप्त करूंगा।

आर्यारत्न श्री विचक्षण श्री जी म० का जीवन स्नेह, सरलता, शुचिता, समन्वय एव सदाचार की बोलती हुई तस्वीर है। आप के उपदेशों मे जहाँ ज्ञान की गरिमा भरी रहती है वहाँ जीवन निर्माण की पवित्र प्रेरणाएं भी गूजती रहती है। आपके उपदेशों व कार्यक्रमों का पूर्ण परिचय इस समय न देकर सिर्फ आप द्वारा प्रेरित चरित्र-निर्माण योजना के सम्बन्ध मे ही आप के समक्ष चर्चा करूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय ने चरित्र निर्माण सघ के विषय पर प्रकाश डाला। जिस के नियम परिशिष्ट मे दिए गए हैं।

अन्तमे मैं तपोपूत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धा प्रगट करता

हुआ कोटि-कोटि अभिनन्दन करता हूँ। तथा आप अपने पुनीत उपदेशों से देश के जन जीवन को सदाचार की ओर चिर काल तक प्रेरित करती रहें यही शुभ कामना प्रगट करता हूँ।

इसके साथ-साथ पूज्या माता श्री विज्ञान श्री जी का भी हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ जिनकी रत्नकुक्षी से ऐसी मूल्यवान मणि का जन्म हुआ। आपके साथ आप की तपस्विनी, प्रतिभाशाली, एवं ज्ञानाभ्यास निरत सभी शिष्या मण्डली के प्रति अपनी भक्ति भावना व्यक्त करता हूँ, जिनके सत्संगमय पवित्र परमाणुओ से आज हमारा अन्तस्थल पावन हो रहा है।

इस प्रकार आपके भव्य अभिनन्दन समारोह का कार्य-क्रम बड़े ही शानदार व भावभीने वातावरण में सम्पन्न हुआ जिसका वर्णन लेखनी में सम्भव नहीं।

इसी अवसर पर कलकत्ता श्रीसंघ की ओर से जोर देकर कलकत्ते चतुर्मास की प्रार्थना की गई। कलकत्ते से पधारे ३० व्यक्तियों ने आपसे कलकत्ते पधारने की भावभरी प्रार्थना की व सभी के हस्ताक्षर युक्त एक पत्र आप की सेवा में भेट किया, जिसका आप ने वर्तमान योग कहकर प्रत्युत्तर दिया। अभी भी हमारे प्रयत्न आप श्री को कलकत्ता लाने के चालू है, संघ के पत्र तार जाते है।

६४—शतावधान प्रयोग

आपका शिष्या मण्डल ज्ञान एवं बुद्धिबल में अद्वितीय है उसी प्रकार त्याग, तप में भी पीछे नहीं है।

दिनांक १ अगस्त को मध्यान्ह के समय मे सबसे अधिक आकर्षक कार्यक्रम शतावधान प्रयोग का रखा गया। प० मदनलाल जी जोशी, भागवत भूषण ने शतावधान क्या है, इसपर प्रकाश डाला। यह प्रोग्राम मध्यान्ह मे दो बजे शुरू होने वाला था, परन्तु सवेरे का कार्यक्रम अधिक लम्बा हो जाने से इसे प्रारम्भ करने में तीन बज गए। अतः पूरे अवधान नही हो सके मात्र ३१ अवधान देखकर ही जनता को सतोष करना पडा।

इस समारोह के अध्यक्ष गम्भीरचन्द जी बोथरा जे० पी० कलकत्ता, मन्त्री प्रतापमल जी सेठिया मदसौर, निर्णायक चन्दूलाल टी० शाह जे० पी० वम्बई एव श्रीलाल जी पटवा इन्दौर थे, सयोजक प० मदनलालजी जोशी एव श्री चन्द जी सुराणा "सरस" थे। अवधानकार हमारी चरित्र नायिका की शिष्या श्री मनोहर श्री जी म० थी। ३१ अवधानों मे शत प्रतिशत अवधान सही आए। सभा आश्चर्य चकित रह गई इस स्मरण शक्ति के चमत्कार को देख कर। हमारी चरित्र नायिका की अन्य तीन शिष्याएँ श्री चन्द्र प्रभा श्री जी, मुक्ति प्रभा श्री जी, एव मणिप्रभा श्री जी भी शतावधानी हैं।

अवधानकार से जितने भी अवधान कराने होते हैं उतने ही गणित, साहित्य सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं, जिन सबों को अवधानकार अपने दिमाग मे सुरक्षित रखकर एक साथ सभी प्रश्नों का उत्तर दे कर सभा को आश्चर्य मुग्ध कर देता है।

रात मे सेवासघ का खुला अधिवेशन हुआ।

६५—गुरुदेव की चरण-प्रतिष्ठा

अमरावती से एक माइल दूर वदनेरा रोड पर दादा वाड़ी की जमीन पर धनराज जी मुणोत ने अपनी स्वर्गीया पत्नि सुगनीबाई की इच्छानुसार "गुरु मन्दिर" का निर्माण करवाया था। किन्तु प्रतिष्ठा के पूर्व श्रीमती सुगनीबाई का स्वर्गवास हो गया था। और सेठ सा० ने उनकी इच्छानुसार दादावाड़ी प्रतिष्ठा का कार्य हमारी चरित्र नायिका की संरक्षणता में सम्पन्न करवाया।

श्रावण वदि १३ को कुम्भ स्थापना व अठाई महोत्सव शुरू हुआ, दि० २-८-६५ श्रावण शुक्ला ६ को प्रातः स्मरणीया हमारी चरित्र नायिका एवं चारित्र पात्र विज्ञान श्री जी म० एवं स्वर्ण-मण्डल की समस्त साध्वी जी म० की अध्यक्षता में कारञ्जा व बम्बई के यतिजी ने दादा गुरुदेव की चरण प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न करवाया।

श्रीमान धनराज जी ने इस समारोह का समस्त खर्च स्वयं ही उठाया, मन्दिर का निर्माण भी इन्होंने ही करवाया था। प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के तुरत पश्चात सेठ जी ने यह स्थान संघ को सौप दिया। तत्काल कमेठी नियुक्त हुई। कमेटी ने दादाबाड़ी के पीछे पड़ी जमीन पर कमरे बनवाने की योजना संघ के समक्ष रखी एक कमरे के लिये ३१००) रखे गए थे। उसी समय ६ कमरों के लिए वचन मिला और एक हाल बनवाने के लिए समस्त खर्च का अलग वचन मिला।

श्रीमान धनराज जी मुणोत को एवं स्वागताध्यक्ष श्रीमान

छोटमल जी बुत्रा को उनके कार्यों एव सेवाओं के उपलक्ष मे श्री जिनदत्त सूरि सेवासघ की ओर से सघ के उपाध्यक्ष श्री मान रतनचन्द जी मोघा ने मान-पत्र भेट किया।

सेवासघं के मन्त्री श्रीमान प्रतापमल जी सेठिया मन्दसौर को अमरावती सघ ने उनकी सेवा, लगन, व ९ वर्षों से लगातार सेवासघ को अपना प्राण मान कर सेवा करने आदि से प्रभावित होकर मान-पत्र भेंट किया। ये सभी मानपत्र चांदी के कास्केट मे रखे गए थे।

इस समारोह का सचालन जवाहरलाल जी मुणोत एव एडवोकेट देवराज जी बोथरा ने बडे ही शानदार ढग से किया।

रात्रि मे बालिकाओं द्वारा सास्कृतिक कार्य क्रम दिखाया गया जिसमे जम्बू कुमार का नाटक प्रशंसनीय था।

९६—तपोत्सव

ता० ९-९-६५ को परम शान्त, चारित्र निष्ठ, परम तपस्विनी श्री प्रमा श्री जी म० के ६३ वर्ष की वृद्धवस्था मे ३१ उपवास के उपल्क्ष में अमरावती सघ ने तपोत्सव समारोह रखा।

इनके साथ श्राविकाओं ने भी भारी तपस्याएं की थी। २२ उपवास ११ उपवास ९ उपवास एव अठाइयों की तो गिनती ही नहीं थी।

महान तपस्विनी प्रमा श्री जी म० के महान तप का पारणा श्री मान फूलचन्द जी साहब मुथा एव प्यारेलाल जी साहब गाधी ने

आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर के करवाया। घर घर अठाइयाँ और घर-घर स्वामी वात्सल्य हुआ। साध्वी जी म० का अभिनन्दन किया गया। तप की महिमा पर हमारी चरित्र नायिका का प्रवचन हुआ। श्री चन्द जी सुराणा ने तपस्विनी का अभिनन्दन गायन गाया। और भी कई व्यक्तियों ने अभिनन्दन किया। पश्चात् अमरावती संघ ने अभिनन्दन पत्र प्रदान किया।

९७—श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

श्रावण मास सानन्द उत्सव महोत्सवों में व्यतीत हुआ, भादो की सुहावनी वेला प्रस्तुत हुई। जैन समाज में पर्यूषणा पर्व की तैयारियाँ प्रारम्भ हुई। इतर समाज में श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आनन्द उर्मियाँ उछलने लगीं।

आप श्री ने समाज के समक्ष कृष्ण-जन्मोत्सव मनाने का सुझाव रखा—समाज के प्रमुख व्यक्ति वैष्णव बंधुओं से मिले दोनों ओर एक नया ही जोश, नया ही आनन्द एवं नया ही संदेश गूँज उठा। इस नवीन आश्चर्य कारी सुझाव को वैष्णव समाज ने सानन्द अपनाया और कृष्ण-जयन्ती की योजना बनाई।

भादो वदी अष्टमी को सवेरे साढ़े आठ बजे जोशीहाल के विशाल प्रांगण में परम विद्वान ओजस्वी, प्रभावशाली वक्ता, समन्वय के समर्थक गोस्वामी मिथिलेश्वर जी एवं हमारी चरित्र नायिका के सानिध्य में जैन एवं जैनेतर समाज ने सम्मिलित होकर श्री कृष्ण

जन्मोत्सव मनाया। दोनों ही महात्माओं का सगम गगा यमुना सा पवित्र-तृषातुर समाज के लिये सुधापान सा था।

स्वामी जी ने कहा, राम, कृष्ण महावीर एव बुद्ध के पीछे सारा जगत पागल है। इनकी जय-जय कार बोलकर आकाश गूँजाता है। पर जीवन मे जय नही हो पाती। इनके जन्मोत्सव मनाता है अपने जीवन मे उत्कृष्ठ तत्त्व की उपलब्धि नही हो पाती। श्रेष्ठ तत्त्व की उपलब्धि ही उत्सव है। महान उत्कृष्ट तत्त्व का प्रगट होना ही महोत्सव है। हमने वाह्यभाव से उनके अनेकों महोत्सव मनाए पर अन्तर में महोत्सव नहीं हुआ। अन्तर मे सुलगती आग को शान्त करना ही उस महान को प्राप्त करना है। महापुरुषों के आदर्श को जीवन में उतारना ही सच्ची जयन्ती है।

भारत मे एक भी कोना ऐसा नही जहाँ झगडा नही, झोंपडी से लेकर सत्ता की पराकाष्ठा तक क्लेश एव अशान्ति का वातावरण मिलता है।

जिन महापुरुषों ने भारत को महान् बनाया, जिन्होंने सेवा, स्नेह, समता और समर्पण का उपदेश विश्व को दिया। उनके हम अनुयायी एक दूसरे की सेवा तो दूर रही, पर गिराया कैसे जाय ऐसी चिन्ता करते हैं। सेवा के नाम पर स्वार्थ साधना चाहते हैं। अन्यको सुख पहुँचाना सेवा, किसी का दुख मिटाना सेवा, आपत्ति में सहयोग देना सेवा, क्या हम आज ऐसी सेवा करते हैं ?

हम सभी को ठग सकते हैं पर हमारी आत्मा, हमारा भगवान हम से नहीं ठगा जाता।

वाक् पटुता की नहीं अब आचरण पटुता की जरूरत है।

भगवान महावीर का तप, राम की तितिक्षा, श्री कृष्ण का तत्त्व-ज्ञान, बुद्ध का त्याग, ये चारों तकार हमें इन महात्माओं के जीवन से लेने होंगे, तभी हमारा अपना उत्सव, जयन्ती, महोत्सव होगा। इस प्रकार श्री गोस्वामी जी का सार भूत प्रवचन समाप्त हुआ।

हमारी चरित्र नायिका ने कहा :—

बंधुओं और बहनों। आज श्री कृष्ण जयन्ती का यह पुण्य-प्रसंग पाकर सभी को आनन्द हो रहा है। इस भारत भूमिपर समय समय में महापुरुषों का आविर्भाव हुआ है, और हमारी संस्कृति में आई हुई विकृति को अपने प्रखर व्यक्तित्व, बलवान साधना शक्ति द्वारा शंसोधन कर संस्कृति को पुनः उज्ज्वल बनाया है। राह भूले प्राणियों को राह पर स्थापित किया, कर्तव्य विमुख मानवों को कर्तव्य-बोध दिया। ऐसे महापुरुषों में से श्री कृष्ण भी एक विरल विभूति है। जिनकी जन्म जयंती मनाने को हम आज यहाँ एकत्रित हुए हैं।

जयन्तियाँ मनाने का लक्ष्य क्या है, क्यों मनाई जाती है? क्यों मनानी चाहिए? इन सब का उत्तर एक ही होता है कि हम उस जयन्ती नायक महापुरुष की महानता का लक्ष्य अपना कर अपने जीवन को उनके अनुरूप सांचे में ढालें। उनके जीवन से प्रेरणा पाकर अपने जीवन का निर्माण करें।

जैसे दीपक की रोशनी अनेक दीपकों को प्रज्वलित करने में

कारण भूत बनती है, वैसे ही महान् पुरुषों का जीवन वृत्तान्त विश्व का मार्गदर्शन कराने वाला बनता है।

आज आप के परम सौभाग्य से एक परम विद्वान, श्री कृष्ण के परम भक्त, स्वामी श्री मिथिलेश्वर जी पधारे हुए है आपने उनसे बहुत कुछ सुना है। भगवान श्री कृष्ण ने हमे समत्व का पाठ दिया, समानता का पाठ दिया, प्राणीमात्र से प्रेम का व्यवहार सिखाया पर हमने पढा नही, सीखा नही, अपनाया नही, हमने अपने मूलभूत सिद्धान्तों को, सस्कारों को त्यागा नही, छोडा नही। प्राणीमात्र मे समान सत्ता के दर्शन किये नही, ईश्वरत्त्व की झाकी पाई नही। यदि हम इस पाठ को पढ लेते तो अन्य मानव के साथ अमानवता का व्यवहार हम से हो ही नही सकता। किसी के साथ विश्वासघात हम से बन नही सकता। मानव की सेवा ईश्वर की सेवा है क्योंकि मानव मे ईश्वर मौजूद है। प्राणी को शान्ति पहुँचाना ईश्वर को शान्ति पहुँचाना है। किसी भी प्रकार की सद् असद् क्रिया किसी के साथ करना, ईश्वरत्त्व के साथ उसे करना है। यह मानव के साथ नहीं मानव जिसके अश है उस ईश्वर के साथ करते हैं।

साम्यवाद का गाना शब्दों मे नही आचरण मे लाना होगा। श्री कृष्ण ने हमारे सामने एक आदर्श उदाहरण रखा था कि साधारण से साधारण सामान्य व्यक्ति के साथ हमे कैसा आचरण रखना चाहिए यह पाठ हम कृष्ण-सुदामा के प्रसग से सागो-पाग पढ़ सकते हैं।

जहाँ भगवान महावीर के अहिंसक पुत्र हों, श्री कृष्ण के साम्य-

वादी पुत्र हो उस देश में हिंसा, चोरी, झूठ बेइमानी, अनीति का बोलबाला हो यह बड़े ही शर्म की बात है।

व्यक्ति का व्यक्तित्व ही आदरणीय होता है।

यदि प्राणीमात्र की रक्षा का भाव हमारे हृदय में नहीं है तो इन जयन्तियां से कोई लाभ नहीं। बोलना अलग बात है, वर्तन करना अलग बात है, सही में जो आचरण करता है उसे ही कहने का अधिकार है।

मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप अपने असमर्थ भाई बहनों को अपनावें, उठावें, गले लगावें जैसे श्री कृष्ण ने अपने बालमित्र सुदामा को लगाया था। इसके साथ-साथ हमें हमारा शिक्षा का क्रम भी बदलना होगा। हमें हमारे संस्कारों के अनुकूल, हमारे भारतीय आदर्श के अनुरूप शिक्षा चाहिए, ऐसी शिक्षा जिस से हमारे बच्चों का चरित्र बल उठे। उनमें विलासिता के स्थानपर त्याग आवे, उनमें वर्गहीन समाज की भावना जगे, छोटे-बड़े धनी गरीब का भेद मिटे। हमें ऐसी शिक्षा चाहिये जिससे हमारी भारतीय आदर्श परम्परा पूर्ण रुप से विकसित होकर भारत में अमन चैनकी श्रीकृष्ण की पावन पवित्र वांशुरी बजे।

इस अवसर पर अमरावती का जैन व जैनेतर समाज बड़ा ही प्रभावित हो रहा था। श्री कृष्ण जन्मोत्सव की बात उसको मनाने की योजना, रूपरेखा एक जैन साध्वी के मुंह से सुनकर उस कार्य को सानन्द सम्पन्न करवाना एक अनहोनी अपूर्व-सी बात लगती थी। यह सारा कर्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

श्री गो-स्वामी जी ने आप की प्रशसा मे बहुत कुछ कहा।
सभा विसर्जन हुई।

६८—क्षमापना

भाद्रपद शुक्ला एकादशी से परम पावन मगलकारी पर्वाधिराज पर्यूषण प्रारम्भ हुए। जन-जन का मन नाचने लगा, तपस्या की झड़ियाँ लगी, हमारे साध्वी मण्डल मे भी पाँच, दस, तीन आदि उपवास शुरु हुए। मुक्ति प्रभा श्री जी ने पाँच किए, नव दीक्षिता ज्योति प्रभा श्री जी ने दस उपवास पर दो उपवास किए, श्राविका वर्ग मे भी अच्छी तपस्या हुई।

राजीबाई धर्मशाला के निकट ही आपकी भुवा जी सुगनी बाई द्वारा निर्मित "सुगनी बाई सभा गृह" है उस मे आपका प्रवचन रखा गया था, किन्तु जनता का समाना कठिन देख कर सघ के प्रमुख व्यक्तियों ने सड़क बंदी की सरकारी अनुमति प्राप्त करके बाहर पूरे राजमार्ग को छाकर पण्डाल बनवाया था।

यथावसर श्री कल्पसूत्र का वाचन प्रारम्भ हुआ। इस समय समस्त नगर के जैन श्वेताम्बर खरतर गच्छ, तपागच्छ, तेरापथ व स्थानकवासी सभी ने इसी सभा भवन मे एक ही साथ पर्वारा धन-क्रिया, जनता समाती न थी परन्तु शान्ति प्रशंसनीय थी।

व्यवस्था की तो बात ही क्या। भगवान महावीर का जन्माधिकार सामूहिक रूप से मनाया गया। स्वप्न तपा व खरतर के एक ही साथ उतारे गये पश्चात् संग्रहित निधि का बराबर बटवारा कर लिया गया। इस संघ ऐक्य व आप की व्याख्यन शैली की प्रशंसा चारों ओर थी। बाहर से भी लोग काफी संख्या में आए थे, सब की भोजन व्यवस्था अमरावती वालों की ओर से रही। यों पूरे चतुर्मास में ही आगन्तुकों की भोजन व्यस्था अमरावती वालों ने ही की थी।

ज्योति प्रभा श्री जी के तप का पारणा सानन्द हुआ, ये पादरा के हिम्मतलाल पानाचन्द की पुत्री है। इनकी दीक्षा पादरे में श्री निपुणा श्री जी व तिलक श्री जी के हाथों हुई थी, यथा समय सब ने संघ सहित संवत्सरी प्रतिक्रमण कर सर्व प्राणीमात्र से क्षमापना की। पर्व सानन्द सम्पन्न हुए।

भाद्रपद शुक्ला ६ को स्वामी मिथिलेश्वर जी की अध्यक्षता में क्षमापना दिवस मनाया गया। हमारी चरित्र नायिका का क्षमा के महत्त्व पर बड़ा ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ। मिथिलेश्वर जी ने जैनधर्म के अनेकान्त, द्रव्यसमुच्चय, लेश्यादि सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुए बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रवचन दिया। दोनों का व्यवहार बड़ा ही स्नेहपूर्ण रहा। कविवर रतन "पहाड़ी" ने दो सुन्दर कविताएँ पढ़ी जिसमें "आज गठरिया कसलो" कविता बड़ी ही भावभरी व सुन्दर थी। कोकिल कंठी मनोहर श्री जी ने "धर्म एक फिर लड़ना क्या" एक भाववाही भजन गाया, श्री चन्दजी सुराणा ने भी एक कविता पढ़ी; प्यारेलाल जी जैन ने भी एक सुन्दर रचना सुनाई।

समाज के कर्मठ कार्यकर्ता जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी कान्फ्रेन्स के मन्त्री श्री जवाहरलाल जी मुणोत, एडवोकेट समाजसेवी शान्त स्वभावी श्री देवराज जी चोथरा ने सघ की ओर से परस्पर क्षमा याचना करते हुए सुन्दर भाषण दिए। एक समाज ने दूसरे समाज से क्षमापना की। स्वामी मिथिलेश्वर जी का सभी सस्थाओं व समाजों द्वारा पुष्पहारों से स्वागत किया गया। इस पुनीत पर्वाराधन प्रसग पर लगभग ४०० व्यक्ति बाहर से आए हुए थे। भगवान महावीर की जयध्वनि के साथ आज पर्वाराधन का महत्त्वपूर्ण अन्तिम क्षमापना दिवस सानन्द सम्पूर्ण हुआ।

---

६६ मैंने क्या देखा

अमरावती मे मैं जिस दिन पहुँची वहाँ की भावनाएँ, वहाँ का स्वागत, वहाँ की व्यवस्था देख कर मेरा हृदय गद्गद् हो गया। वास्तव मे जहाँ प्रेम होता है वहाँ सहज स्वागत दर्शनीय अनुकरणीय बन जाता है। इस समय लगभग १०० नगरों व गांवों के हजारों लोग उपस्थित थे। परन्तु अमरावती वालों की लगन-प्यार व सर्वोपरि कार्यदक्षता, सेवा-भावना व अपनत्व प्रशसनीय था। जिसका वर्णन शब्दों द्वारा व्यक्त करपाना शक्य नही। जिसे जिस समय जिस चीज की, जिस सेवा की जरूरत पडी सघ के व्यक्तियों ने तुरन्त पूर्ण की, उपेक्षा नाम की भावना अमरावती के एक छोटे से बच्चे मे भी

नहीं थी। भोजन के समय श्रीमंत कार्यकर्ता, विद्वान सज्जन एवं समाज के कर्णधार, कांग्रेसी नेता एकपग खड़े रहते थे। विशेष क्या कहूँ समय पर तो उन लोगों ने अतिथियों की जूठी थालियाँ व जूठन तक उठाने में संकोच नहीं किया सारा नगर एक पग नाच रहा था। भावनाओं से सारा नगर ओत प्रोत था। गच्छ पंथ व मजहब की दीवारें स्वांस तोड़ चुकी थी, इमारतें ढह गई थी। भाई-भाई आज कंधे से कंधा मिलाकर काम करते देखे गए।

अमरावती संघ की दान की भावना सीमातीत बनी थी। रुपयों की तो वर्षा हो रही थी। जो भी इस अवसर पर चन्दा लेकर आया, अथवा कुछ पाने की भावना से आया, उसे अमरावती वालों ने दिल खोलकर संतुष्ट किया कोई भी निराश नहीं होने पाया। न कोई खाली हाथ लौटा। सम्मान प्रेम वात्सल्य एवं आतिथेय की तो बात ही क्या? मै ने दो मास रहकर अनुभव किया कि अमरावती के संघ में कितना अपनत्व व प्यार है संघ का एक भी घर ऐसा नहीं था जिसे हम दूसरे का घर कह सकें, कच्छी, गुजराती, मारवाड़ी मालवी महाराष्ट्री सभी में अपनत्व भरा था। जिस घर में हम गए वही हमारा हो गया। आज भी वे हमें याद करते हैं; पत्र भेजते हैं और भेजते हैं निमन्त्रण कि हम फिर एक वेर उनके घर आवें। उनका हृदय आतिथेय के लिए तड़पता है, हमारा हृदय उनके लिए तड़पता है।

पिता पुत्र का मिलन

आश्विन मास मे नवपद आराधना व कार्तिक मास मे भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव कर दीपावली पर्व मनाया। अब विहार की वेला निकट आ रही थी। अमरावती से बाहर रहनेवाले सघ के व्यक्तियों ने आप से उधर पधारने का आग्रह किया। तब आप श्री अमरावती के बाहर बसे लोगों के घर आगन पवित्र करने दादाबाडी पधारी। दादावाडी से प्रतिदिन कभी कही कभी कही आपके प्रवचन होने, लोग समाते न थे हृदय की निकटता ने स्थान की दूरी को भी निकट बना दिया था।

जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष जवाहरलालजी मुणोत व उनके पिता श्री दोनों मे अर्से से कुछ मनोमालिन्य चल रहा था। आपके प्रवचन ने दोनों के हृदयों को पवित्र कर दिया और पिता पुत्र का मिलन बडे ही प्रेम भरे वातावरण मे हुआ।

जवाहरलालजी ने अपने नवनिर्मित बगले पर "शान्ति स्नात्र" कराने का आयोजन किया और आपकी अध्यक्षता मे श्री चन्दनमलजी नागोरी ने विधि विधान से "शान्ति स्नात्र" सम्पन्न करवाई।

अगहन बदी चौथ को शान्ति स्नात्र करवाकर पचमी को सवेरे आपने विहार का निश्चय किया।

विदाई

संयोग के साथ ही निर्मित वियोग की घड़ियाँ आ पहुंची। ४२ वर्ष पहले जिस दाखी को अमरावती वालोंने संयम से सजा क-

विदा किया था। उस दाली के दर्शन तरसते-तरसाते आज ४२ वर्ष बाद अमरावती वालों को मिले थे। कारण वन मिलन का यह नौ मास का समय उत्सव, महोत्सव हर्ष आनन्द में हंसते खेलते किधर बीत गया, पता ही न चला और पुनः प्रथम विदा बेला में भी अति दुखद यह दूसरी विदा बेला आ गई। समय तो अपना काम करता ही है।

अगहन कृष्णा पंचमी को सवेरे आपका विदाई समारोह था। सारी अमरावती आज यहां एकत्रित थी। सभी उदास गुमसुम थे, सभी के नयन बोल रहे थे वाणी मौन थी, चेहरा गमगीन था। उनकी प्यारी बेटी, बहन तो जा ही रही थी, पर सर्वोपरि जा रही थी, उनकी धर्मगुरु, उनकी आत्मा।

माइक पर बोलने को लोग खड़े हुए पर बोल नहीं पाए, रो पड़े आँखें बरस रही थी, मुख म्लान था। पर विवशता थी समुद्र कब किसके बन्धन में रहा है। साधु ने कब किसका प्रतिबन्ध स्वीकारा है। यह तो क्षेत्र अप्रतिबद्ध विहारी होकर विचरता है।

बच्चों व बालिकाओं ने विदाई गीत गाए, उनकी गाथाएं इतनी करुण थी कि लोग सिसक पड़े। बच्चों को पुरस्कार दिया गया।

ठीक १०॥ बजे बैण्ड बाजे के साथ हजारों लोग जिसमें अमरावती के मेयर, विधान सभा के सदस्य, संसद सदस्य, नगरपालिका के सदस्य, काटन मार्केट के सदस्य, जिला व नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष आदि से घिरी हुई आप ठीक १२॥ बजे श्रीकृष्ण पेठ में कोठारीजी के बंगले पर पधारीं वहाँ आप का प्रवचन हुआ पर लोगों

की आखों से अश्रु झडियाँ रुक नही रही थी सभी की एक ही प्रार्थना थी आप एक वेर और जल्दी पधारें। अब की देर न करे।

राष्ट्रसंत तुकडोजी के साथ

अमरावती से विहार करके आप मोझारी "गुरुकुज" पधारी। गुरुकुज मे राष्ट्र सत तुकडोजी महाराज मानव सेवा का पाठ पढा कर जगत कल्याण का प्रयत्न करते हैं आपके आगमन से वे बडे ही प्रसन्न हुए।

सतजन हमारी भारतीय सस्कृति के प्राण है। अनादि काल से इसकी रक्षा करने का सम्पूर्ण श्रेय इन महापुरुषो को ही है। इन्ही की वजह से हमारा देश आर्य देश कहलाता है। समय समय पर भारतीय जननी ऐसे नर-रत्नों को, वीर-नारियों को जन्म देती रही है जो स्वय के लिए ही प्रकाश पुज न रहकर समूचे जगत को अपनी प्रतिभा से प्रकाशित कर देश का गौरव उज्वल करते है। भारत के सज्जन सन्तों मे से आजके युग मे सत तुकडोजी म० एवम् परम विदूषी साध्वी विचक्षण श्री जी भी विशेष उल्लेखनीय है। इन्ही दो महान व्यक्तियों का सम्मेलन १८।११।६५ बृहस्पतिवार को गुरुदेव सस्थापित "गुरुकुज" आश्रम मे हुआ। पूज्य साध्वीजी अमरावती से विहार करके ता० १७ को वहाँ पहुँची और सायकाल को आश्रमवासियों के सम्मुख मौखिक प्रवचन हुआ। [illegible] लगते ही बम्बई से पधारे हुवे

राष्ट्र संत तुकड़ोजी म० उनके दर्शनार्थ पधारे और उपस्थित जन समुदाय के बीच आश्रम की निचली भूमि पर बैठकर ही लगभग एक घण्टे तक दोनों सन्तों में धर्मचर्चा और प्रवचन हुआ।

अमरावती की यह ज्योति आज अमरावती से पुनः प्रस्थान कर आर्वी, हिंगनघाट होती हुई श्री भद्रेश्वर तीर्थ की ओर जाने का विचार रखती है।

हम आशा करते हैं कि हमें इस जैन कोकिला का दूसरा खण्ड इससे भी दुगुना चौगुना लिखने का सौभाग्य प्राप्त हो। अमरावती की यह "विचक्षण ज्ञान प्रभा" युगों तक विश्व का अज्ञान तिमिर हटाकर सत् ज्ञान, सत् दर्शन एवं सत् चारित्र का आलोक प्रसारित करें। पथभूले मानवों को सत्य राह सुझावें।

अलम्

१००—आंध्र एवं दक्षिण भारत भ्रमण

संत तुकडोजी के आश्रम से प्रस्थान करके आप आर्वी पधारी। उत्साहपूर्ण वातावरण मे जैन एव जैनेतर जनता के बीच एक सप्ताह ठहर कर आप वर्धा पधारी—वर्धा से सेवाग्राम आश्रम आई। आश्रम मे मिट्टी निर्मित भारतीय परम्परा के प्रतीक ग्राम्य-जीवनके अवशेष देखकर आप श्री को आनन्द आया।

स्थान के साथ व्यक्ति का कितना गहरा-घनीभूत सम्बन्ध रहता है। आश्रम में कदम रखते ही आपको श्रद्धेय महात्मा गांधी की स्मृति आई और उन विश्वविभूति संत के चरणोंमें आपका हृदय-नत हो गया। आश्रम के कण कण मे महात्मा गांधी के पुण्य श्लोक जीवन की गाथाएँ गूंजने पर भी प्राय व्यक्ति के पश्चात स्थान की जो अवस्था देखने मे आती है, उससे यह आश्रम भी अछूता नहीं रह पाया है। व्यक्ति के प्रत्यक्ष समागम के समय जैसी भावना एव लगन समष्टि मे देखी जाती है वैसी भावना एव लगन व्यक्ति के अवसान पश्चात नहीं पाई जाती। धीरे-धीरे अपने मार्गद्रष्टा द्वारा प्रदर्शित मार्ग को, उनके द्वारा निर्धारित लक्ष्य को, भूलकर जनता प्राय स्वार्थाभिभूत होकर उन मार्गों से च्युत नजर आने लगती है। इसका ज्वलन्त उदाहरण हमारे सामने महात्मा गांधी जी है।

महात्मा गाँधी की एक आवाज पर हजारों नहीं वल्कि लाखों लोग प्राण न्यौछावर करने को तत्पर रहते थे। उनके एक वचन पर हमारे कारागार—ठसाठस भर जाते थे। उनका एक नारा लाखों स्वरों में गूंज उठता था। उनकी नजर जिधर उठ जाती लाखों नजरें उस ओर घूम जाती थी। उनके चरण जिस ओर वढ़ जाते उस मार्ग पर लाखों-करोड़ों चरण नजर आने लगते थे। उनके एक आदेश पर करोड़ों का विदेशी माल सुन्दर, कीमती वस्त्र हमारी वहनों ने होली में फूंक दिए थे। उसी प्रताप एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व ने वृटिश सल्तनत के तख्त उलट कर रख दिए थे। सैकड़ों वर्षों की गुलामी से हमें मुक्त करके स्वाभिमानयुक्त यदि किसी ने वनाया था तो महात्मा गांधी ने ही। किन्तु आज उस रोशनी के अवसान पश्चात हम उनके लक्ष्य को, उनके कार्य को, उनके अरमानों को कितना पूरा कर पाएँ हैं ? हम कितना आगे बढ़े हैं एवं कितना स्वाभिमान वचा पाएँ हैं ? सभी प्रश्न विना उत्तर मौन हो जाने को विवश है।

भारतीय मानस में भावनाएँ हैं, जोश भी है, कुछ कर गुजरने की हविश भी है। शक्ति, बल, एवं सामर्थ्य होने पर भी नेतृत्व की भारी कमी है। दुर्भाग्य से भारतीय नेतृत्व सफल, सुयोग्य एवं इमानदार हाथों में नहीं रह पाया। नेतृत्व के पतन के कारण भारत जैसा सुखी, समृद्ध एवं गौरवशाली राष्ट्र अपना सुख, सौभाग्य खोकर, धर्म, ईमान व नैतिकता से हाथ धोकर पतन के मार्ग पर दौड़ रहा है। दाने-दाने के लिए विदेशों का

मुँहताज बन रहा है। दुनियाँ का पेट भरने वाला सोने की चिड़ियाँ जैसी माख रखने वाला भारत आज गरीब देशों की श्रेणी मे गिना जाने लगा है। समय का फेर है। हमारा अभी दुर्भाग्य जागृत है, वास्तव मे महात्मा का ध्येय महात्मा के पश्चात पूरा करने वाली सन्तान मिलना कठिन है। एक मरे और दो पैदा हों ऐसा सौभाग्य विरले ही राष्ट्रों को प्राप्त हो पाता होगा। हमारे दुर्भाग्यसे गाधीजी जैसे दो सत तो दूर पर एक भी न हो सका और भारत का सौभाग्य आज तो दुर्भाग्य की ओर ही जाता नजर आता है।

इस प्रकार महात्मा गाधी के प्रति भावनाएँ व्यक्त करती हुई आप श्री आश्रम से विदा होकर हिंगनघाट पधारी—हिंगनघाट की जनता ने आपका अच्छा स्वागत किया। यहाँ भी आप के प्रवचनों की अच्छी धूम रही स्थानक एव उपाश्रय मे प्रवचन होते, जन समूह उमडा पडता था। यहाँ ठहरने का काफी आग्रह किया गया किन्तु किसी प्रकार यहाँ से छूट कर आप मण्डोली पधारी।

मण्डोली सघ ने आप का हार्दिक स्वागत किया, पूजा प्रभावना, एव प्रवचनों की रेलमपेल थी। इतर समाज बड़ा ही प्रभावित था, रोज प्रवचन में एव प्रवचन के पश्चात मदिरा, मांस, जूआ त्याग करने वालों का तांता लग जाता था। लोग आप को रोकने के प्रयत्न में थे किन्तु आप श्री किसी प्रकार छूट कर भांदक (भद्रावती) पधार गई।

भद्रावती तीर्थ भी किसी दिन एक शानदार शहरों का सिर मौर था। समय ने इसे भी अछूता नहीं छोड़ा। यहाँ पोषवद दसमी का भारी मेला लगता है। खेतिया संघ की ओर से यहाँ पञ्चाह्नि का महोत्सव एवं शान्ति-स्नात्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई स्थानों के व्यक्ति तीर्थ व आपके दर्शनार्थ एकपंथ दो काज करने पधारे थे। सभी ने आप के प्रवचन व मधुर व्यवहार की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं अपने गांवों व शहरों को पवित्र करने की प्रार्थना की। आप तो एक है प्रार्थनाएँ करने वाले अनेक, किधर जाएँ और किसे छोड़ें। बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है। किन्तु आप की प्रत्युत्पन्नमति उलझन में भी मार्ग निकाल ही लेती है। शिष्या मण्डल में से किसी को किधर किसी को किधर भेजकर लगभग सभी की भावना का मान रख लेती हैं।

यहाँ हैद्राबाद से सेठ कपूरचन्दजी श्रीमाल एवं इन्द्रचन्द्र जी लूणिया आदि प्रमुखजन हैद्राबाद का आग्रह लेकर आए थे। चान्दकरण जी गोलेछा ने चान्दा चतुर्मास का आग्रह किया।

भद्रावती से प्रस्थान कर आप श्री ने चान्दा में पदार्पण किया। वहाँ लगभग १५ दिन विराजी। इन पन्द्रह दिनों में वही भीड़ वही चिरपरिचित भावविभोरता वही चतुर्मास का हठ, वही प्रेमगंगा का प्रवाह समस्त संघ स्थानक वासी, तेरा पंथी आदि सबका सम्मिलित चतुर्मासार्थ आग्रह। किन्तु अभी

तो सर्दी का मौसमथा, चतुर्मास के बीच मे पूरी गर्मी पडी थी।

चान्दा से चलकर आप वालारस पधारी। भद्रावती से आते आप श्री वणी भी ठहरी थी, जहाँ पर जैन समाज के ५०-६० लगभग घरो की वस्ती है। चान्दा और वलारसा के बीच ३० माइल तक जैनवस्ती का सर्वथा अभाव है। मार्ग भी वडा विकट है। ऐसे विकट मार्ग को तय कर आप श्री महान प्रभावी कुलपाक तीर्थ पधारीं। कुलपाकतीर्थ एक अति प्राचीन, भव्य, महान् चमत्कारी, प्रभावशाली तीर्थ है। छोटा सा गाव भी इस तीर्थ के कारण प्रतिदिन आवाद रहता है। चैत्री पूर्णिमा के दिन तो यहाँ मानव मेदनी फुलवारी सी छा जाती है। कंगूरे कगूरे आदमी औरते एव वच्चे दिखाई पडते है। क्योंकि जैनेतर समाज की भारीभक्ति है इस तीर्थ पर। यों प्रतिदिन प्राय यात्री आते ही रहते है। यहाँ की प्रतिमाजी वडे ही विशाल भावोत्पादक, मनोहरता लिए हुए है। यहाँ से हटना जीवन की विवशता है। वडा ही शान्त, सुहावना, सात्विक वातावरण है। यहाँ की व्यवस्था भी सुन्दर है, आनेवाले यात्रियो के लिए भोजन, विस्तर आदि का भी अच्छा प्रवन्ध है।

ऐसे पवित्र, प्रभावशाली क्षेत्र मे पहुंच कर आपने परम शाति का अनुभव किया, जनरव से दूर इस तीर्थ पर आपने अध्यात्म-रस पान का, आत्मसाधन सामग्री एकत्रित करने का निश्चय किया। विलक्षण आत्मशान्ति का स्वाद पाया, आत्म जागृति प्रद एक अपूर्व उद्घोप सुना एवं वाह्य प्रवृति के अभाव मे, आत्म

प्रवृतिप्रद एक अत्यावश्यक निजध्येय की पूर्ति में आप श्री सब कुछ भूलाकर जुट गई। इसी बहाने आप श्री को आत्म संतुष्टी-पुष्टी का सुअवसर प्राप्त हुआ।

यहाँ व्याख्यान आदि प्रवृत्तियों के अभाव में, एवं लोगों का सीमित आवागमन होने के कारण आपने अपना पूरा समय आत्म सम्बल की प्राप्ति में ही व्यतीत किया।

प्रातः लगभग ढाई तीन बजे आप श्री शैया त्याग कर अपने नित्यनियम में लग जाती थी। मौन, जाप, ध्यान, स्वाध्याय, पाठ, प्रतिक्रमण, पडिलेहण आदि समस्त मुनिचर्या से आप ६ बजे तक निवृत्त होकर सीधी मन्दिरजी में पधार जाती, लगभग बारह बजे तक के समय में आप श्री मन्दिरजी में जाप, ध्यान में मस्त रहती। एक समय सामान्य-सा आहार ग्रहण कर पुनः रात्रि में लगभग ग्यारह बजे तक वही मौन, जाप, ध्यान चालू रहता। यहाँ आपने आयम्बिल से नवपद ओली की आराधना भी की, पूरा डेढ़ मास का समय आप ने कुलपाक तीर्थ पर आत्महितकारी प्रवृत्तियों में पसार किया।

यहाँ आप श्री का शिष्या वर्ग भी विशेष ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय रत रहा।

लोक हितकारी प्रवृत्तियाँ तो आप के जीवन में चलती ही रहती है। जिसका जीता-जागता चित्र तो यह सारी पुस्तक ही है। किन्तु बीच-बीच में आप श्री आत्म हितकारी निवृत्तिमय साधनाका भी अवसर निकाल लेती है। विहारके समय में मार्ग

मे प्राय' ऐसे स्थल आपको मिल ही जाते है और वहा अधिक ठहर कर आप ऐसे स्थानों का उपयोग आत्म साधना, आत्म निरीक्षणमे कर अपना कार्य साध लेती हैं। इसी अन्तर विकास, अन्तर शुद्धि का महत प्रभावशाली परिणाम बाह्य जीवनमे दृगोचर होता है। आपके जीवन की विशेषता यही है कि आप जैसा अवसर होता है बाह्य अन्तर दोनों काम बना लेती है।

कुलपाक एवं भादक ये दोनों ही तीर्थ प्रभावशाली, सात्विक वातावरण से परिपूर्ण हैं। यहाँ की प्रतिमाएँ भी बडी ही विशाल, मनोहारी एव प्रभावशाली है। यह डेढ मास का समय आप श्री ने आत्म मंगल की प्राप्ति मे व्यतीत किया। चतुर्मास तो यहाँ मुनि जीवन की मर्यादानुकूल व्यवस्था के अभाव मे सभव न होने से हैदराबाद सघ के अत्यधिक आग्रहवश आप हैदराबाद पधारीं।

हैदराबाद का चतुर्मास भी आपका बडा ही शानदार रहा, स्थान-स्थान पर प्रवचन, जनसागर का दृश्य एव लोगों का अनुराग, प्रशसा स्मर्णीय थे।

चतुर्माम के मध्य मे अमरावती मे स्थापित श्री सुवर्णसेवा फण्ड का प्रथम वार्षिक समारोह मनाया गया एवं जिनदत्त सूरि सेवा सघ की कार्यकारिणी की मीटिंग भी रखी गई। जिसमें भाग लेने अमरावती से श्री धनराजजी मुणोत, फूलचन्दजी मूथा, देवीचन्दजी बुच्चा, देवराजजी वकील आदि कलकत्ता से श्री गम्भीरचन्द जी बोथरा, ताजमलजी बोथरा, रतनलालजी बोथा,

साहित्यसेवी श्री अगरचन्दजी नाहटा आदि पधारे। आपकी छत्रछाया में सारा कार्य निर्विघ्न सानन्द सम्पन्न हुआ। कलकत्ते वालों ने आप श्री से कलकत्ते पधारने की पुनः प्रार्थना की।

यहाँ पर भी आपका चतुर्मास विभाजित था। आप श्री हैदराबाद एवं आपकी प्रधान शिष्या श्री तिलक श्री जी आदि सिकन्दराबाद में थी।

यहां पर श्री चन्द्रप्रभा श्री जी, मनोहर श्री जी, मणिप्रभा श्री जी एवं मुक्ति प्रभा श्री जी ने "साहित्य रत्न" प्रथम खण्ड की परीक्षा दी और शानदार अंकों से उत्तीर्ण हुई। सुरंजना श्री जी एवं मंजुला श्री जी ने प्रथमा की परीक्षा उत्तीर्ण की।

चतुर्मास पश्चात आप श्री ने शीघ्र प्रस्थान की तैयारी की किन्तु आपकी उपेक्षा से तंग आकर शरीर ने यहाँ पर सत्याग्रह मांड दिया ज्वर तथा खांसी ने आघेरा और लाचार आप आराम लेने को विवश बनी। बिना व्याधी, वह भी बडी व्याधी के बिना आप श्री कभी भी शरीर को विश्राम नहीं देती और इसी के प्रतिफल में शरीर सत्याग्रह कर देता है। यों गैस, आँव, पाँव दर्द, कमर दर्द आदि व्याधियाँ तो रोजमर्रा के रोग हैं। इधर कई महीनों से एडी में दर्द रहता है उपचार का समय ही नहीं मिलता। देह चिन्ता से ही जो मुक्त है, उनके उपचार कैसे संभव हो ?

आपके साथ-साथ आपकी प्रधान शिष्या अविचल श्री जी म० को भी भयानक व्याधी ने आ दबोचा। दिन में ५-६

उल्टियाँ केवल लाल-लाल थक्का-थक्का खून की होती शरीर कमजोर होता गया। व्याधी पकड मे नहीं आई। डाक्टर, वैद्य परेशान थे, खून किसी प्रकार बन्द नहीं हो पा रहा था। अचानक एक जंगली जडी ने प्रभाव दिखाया और खून बन्द हो गया।

पश्चात फागुन वदी मे आप श्री को प्रस्थान योग्य सुविधा मिली। यहाँ से आप पुन कुलपाक पधारी, कुछ दिन ठहर कर वरगल होती हुई विजयवाडा पधारी विजयवाडा से आप श्री गट्टर पधार रही थी। गट्टर सघ आपके आगमन की घडियाँ वडी ही आतुरता से गिन रहा था। आगत-स्वागत की जोरदार तैयारियाँ की। इधर मार्ग मे आप जाप करती-करती आगे-आगे चल रही थी कि अचानक एक कुत्ते ने जघापर काट खाया। आपने असीम धर्य से काम लिया। घाव पर मोटी पट्टी वाध कर आप चलती गई, खून पट्टी भिगोता गया, यहाँ तक की साथ रहे शिष्या परिवार व माताजी को भी इस काण्ड की गध नहीं आने दी।

यथासमय गट्टर पधारी, गट्टर सघ का प्रेम, भक्ति सिर आँखो पर उठाया। प्रवचन भी शानदार दिया प्रवचन करके आप श्री उठी तब तक खून पट्टी की मर्यादा अस्वीकार कर बाहर आ गया था। आपके कपडे खून से लथपथ देखकर सभी ने प्रश्न किया यह क्या ?

आप ने फरमाया मार्ग मे कुत्ते ने स्वाद ले लिया। कुत्ते का नाम सुनकर सभी घबराए और आविलम्ब इन्जेक्सन की

व्यवस्था की गई—गंटूर में आप श्री को पूरा एक मास ठहरना पड़ा।

गंटूर से प्रस्थान कर के आप श्री मार्ग में स्थान-स्थान पर प्रवचन करती शाकाहार का प्रचार एवं मांसाहार का परिहार करवाती हुई मद्रास पधारी। लगभग आषाढ़ शुदि में आप श्री ने मद्रास में प्रवेश किया।

—— :x: ——

मद्रास में

आषाढ़ शुक्ला द्वितीया के दिन प्रातः काल भारी जन समूह के साथ आप श्री ने मद्रास में प्रवेश कर साधारण-भवन के विशाल प्रांगण में मंगल प्रवचन किया।

एकादशी को दादा श्री जिन दत्त सूरि जयंती का कार्यक्रम तीन दिन तक बड़े ही शानदार ढंग से मनाया।

मद्रास में आप श्री के प्रवचन का मुख्य विषय विशेस्यावश्यक सूत्र एवं राजा यशोधर का चरित्र था। आप के प्रवचन में बड़ी भारी भीड़ रहती थी। जनता का समाना एक विकट समस्या सी थी। जिनमें युवक और युवतियाँ तो बड़ी भारी संख्या में उपस्थित रहते थे। आप के प्रवचन में युवकों का वाहूल्य देखकर समाज के अग्रगण्य, माननीय वृद्धजन कई बेर आनन्दित होकर बोल उठते; यहाँ पर बड़े-बड़े मुनिराजों ने भी

चतुर्मास किये हैं, किन्तु युवक वर्ग मे जो जागृति आप के चतुर्मास में देखी वह हमने अपने जीवन मे कभी नहीं देखी। हम बूढे तो मुनिराजों के भक्त व श्रद्धालु है ही किन्तु आप की विशेषता है कि युवक समाज आपका परमभक्त है। नई पीढी मे धार्मिक चेतना लाने का सारा श्रेय आप श्री को ही है। हमने तो अपने जीवन मे इन नवयुवकों और युवतियों को यों उपाश्रय में जमते नहीं देखा।

स्थानकवासी, तेरापंथी भी आपके प्रवचन मे, प्रत्येक कार्यक्रम मे बराबर उपस्थित रहते थे।

श्रावणमास में तपस्या का जोश सभी मे भरपूर रहा। चारों ओर तप की आराधना होती रही।

भादो मे पर्यूषण पर्वाराधन शुरु हुआ। आप की सभी शिष्याएँ योग्य एव प्रवचन दक्ष होने से मद्रास के सभी पुरों में आप ने अपनी शिष्याओं को भेजकर पर्वाराधना करवाई। मद्रास का सघ काफी विस्तृत होने से एक ही स्थान पर पर्वाराधना सभव नहीं रहती। अत गुजराती वाडी, साहूकार पेठ, नया मन्दिर, व्यापारीसूले, सूलेपटालम्, साधारण भवन, रायपुरम् महिलापुर आदि स्थानों मे सर्वत्र पर्वाराधना सानन्द सम्पन्न हुई।

इस वर्ष रायपुरम् में मान्या प्रवर्तनी महोदया श्री वल्लभ श्री जी, म० की विदूषी शिष्या समता श्री जी म० कुसुम श्री जी म० का चतुर्मास था। यहाँ भी विशेष कार्यक्रमों के अवसर

पर आप श्री कई बेर पधारी। वे भी कई बेर आप के कार्य-क्रमों में पधारीं।

चतुर्मासान्तर्गत आनेवाली जयँतियाँ हेमचन्द्राचार्ज, चन्द्र सूरि, विजयधर्मसूरि, हरिविजयसूरि, देवचन्द्रजी म०, वल्लभसूरि आदि महापुरुषों की स्वर्ग जयंतियाँ आप श्री ने मनाई। जैसी की पहले नहीं मनाई जाती थी।

गुजराती बाड़ी में पार्श्वनाथ जैन महिला मण्डल की स्थापना की गई जो वर्तमान में बहुत ही प्रगति पर है। अनेक प्रशंसनीय कार्य इस मण्डल द्वरा किए गए हैं। और होते रहते हैं।

आप श्री के उपदेश से प्रभावित होकर मद्रास संघ ने दादा बाड़ी में एक छात्रावास बनवाने की योजना बना कर कार्य शुरू किया है जिसकाशिलारोपण आप की ही अध्यक्षता में श्री मानक चन्दजी वेताला द्वारा माघ सुदि तेरस को कराया गया। पांच लाख का चन्दा हो चुका था।

लालचन्दजी ढड्ढाट्रस्ट द्वारा एक धार्मिक पाठशाला चालू की गई जिसमें समाज के सैकड़ों बच्चे धार्मिक शिक्षण पाते हैं।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्री जिनदत्तसूरि मण्डल की स्थापना की गई, जिसमें युवक संगीत की शिक्षा प्राप्त कर समाज में भक्तिरस प्रवाहित करते हैं। मण्डल के सदस्यगण पर्व दिनों व पूजाओं में भाग लेकर भक्ति का रंग जमाते रहते हैं।

बीकानेर के भूतपूर्व महाराजा कर्णीसिंह जी आप के प्रवचन में पधारे, मद्रास संघ ने उनका शानदार स्वागत आप श्री की

अध्यक्षता मे ही किया। वर्णीसिंहजी भी आप के प्रवचन से वडे प्रभावित हुए।

उन्नीसवा विश्व शाकाहारी अधिवेशन मद्रास विश्वविद्यालय टिपलीकेन के विशाल प्रागण मे हुआ उसमें भी आप श्री का वडा ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

विजयशान्तिसूरि रजत जयती समारोह पूर्वक मनाई गई।

पुलेमादुजी अर्थात रेडहिल्स मंदिर मे ध्वजारोपण महोत्सव आठाई महोत्सव अखण्ड नवकार के जाप पूर्वक कराया गया।

चतुर्मास पश्चात् आप श्री मद्रास के सभी पुरो में पधारीं सर्वत्र अच्छी जागृति रही। मामवलम् मे जैनो की अच्छी वस्ती होने पर भी मन्दिर का अभाव था। आपने सघ का ध्यान इस ओर खींचा। उसी समय चन्दा शुरू होकर लगभग दो लाख की धनराशि एकत्रित हो गई। मन्दिर निर्माण का कार्य चालू है।

महिलापुर मे भी मदिर निर्माण का कार्य चालू है। वहाँ मदिर का अभाव था। टिपलीकेन मे भी मदिर वनवाने का चन्दा शुरू हुआ। इन सभी स्थानो पर सघ काफी विस्तृत है एव मंदिर नहीं इसीलिए आप श्री ने मदिर की प्रेरणा सर्वत्र दी।

यहाँ आप के वैराग्यपूर्ण उपदेश से कई लडकियाँ दीक्षार्थ उद्यत हुई, जिनमें भारती वहिन २१ साल हायर सेकण्डरी पास (कच्छ निवासी जगजीवनदास तारा वहिन की पुत्री) की दीक्षा माघ शुद्ध दूज को आप श्री के कर कमलो से हुई नाम

भाग्ययशा श्री जी रखा गया। अन्य लड़कियों को अभी कुछ समय ठहर कर दीक्षित करने की आप श्री ने भावना व्यक्त की। उनसब की दीक्षा आगे होगी।

भारती बहिन का दीक्षा समारोह भी एक दर्शनीय समारोह था, मद्रास संघ व परिवार में अदम्य उत्साह था पूरे एक मास तक महोत्सव चला, जिसमें चार-चार पांच-पांच परिवार सामिल होकर महोत्सव करते थे।

सैलाना म० प्र० में आचार्य श्रीमद् आनन्दसागर सूरीश्वर जी द्वारा निर्मित आनन्द ज्ञान मंदिर की भव्य इमारत वर्षों से बेकार पड़ी थी। आप श्री ने अपनी समुदाय के पूज्य मुनि-राजों एवं साध्वीजी म० राजों से परामर्श कर उस में एक छात्रावास चालू करने की योजना बनाई और उसका श्री गणेश भी मद्रास में ही हुआ। छात्रावास में रहने वाले लड़कों के भोजन आदि की व्यवस्था के लिए एक-एक दिनका खर्च एक एक व्यक्ति के जिम्मे रखा गया जिनमें लगभग आधे वर्ष तक छात्रावास चलाने का खर्च केवल माद्रस ने ही उठा लिया। इस छात्रावास में काफी संख्या में बच्चे निवास करते हैं जिनको हायर सेकण्डरी तक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक अभ्यास भी कराया जाता है।

पूरे आठ मास की अवधि मद्रास में पूरी करके आप श्री ने जाने का प्रस्ताव संघ के समक्ष रखा। किन्तु आप के गमन का नाम तो मद्रास के बच्चे से लेकर वृद्ध तक को रुचिकर नहीं

था। सभी ने एक स्वर से कहा बस एक चतुर्मास और। सभी पुरों मे निवास करने वाले संघों ने आप से बहुत ही अनुरोध किया कि मात्र एक चतुर्मास आप और करने की कृपा करें। आप श्री ने बडी ही नम्रता के साथ अब और अधिक ठहरने में मजबूरी व्यक्त की। क्योंकि अकारण दूसरा चतुर्मास आप के विचारों के विपरीत था।

दूसरे इसी वर्ष आचार्य तुलसी एव स्थानकवासी मुनिराज केवल मुनी जी म० का चतुर्मास मद्रास में ही होना निश्चित हो चुका था। इस कारण भी सघ का आपको रोकने का प्रयास प्रबल रहा। किन्तु आपके विचारों मे यह चतुर्मास बिल्कुल उचित न होने से आपने फरमाया —

यह चतुर्मास एक तो बिना कारण मेरा दूसरा चतुर्मास होगा, जैसा कि मुझे मान्य नहीं। दूसरे आप कहते हैं कि आचार्य तुलसी एवं स्थानकवासी मुनिराज केवल मुनि जी का चतुर्मास यहाँ हैं। मात्र हमारा ही उपासनागृह गुरुविहीन रहेगा इसलिए आप रुकें। किन्तु यह कोई दलील नहीं।

यह चतुर्मास मेरे सिद्धान्त के अनुकूल नहीं। साम्प्रदायिकता का जहर उगल-उगल कर समाज के स्वस्थवातावरण को विपाक्त बनाना, इसी बहाने एक दूसरे के चतुर्मासों को विफल बनाने की चेष्टा करना, साम्प्रदायिक अखाड़ा जमाना, यह महावीर सिद्धान्तों के सर्वथा विपरीत है, आप चाहते हैं हमारे अखाड़े की जीत हो इसलिये मैं रुकूं। इस दगल मे आप मेरा

उपयोग करना चाहते हैं। पर मैं आपके होलिका दहन का नारियल बनने में मजबूर हूं। मेरा तो एक ही ध्येय है, स्वयं प्रगति करो, दूसरे की प्रगति में दीवार बनने का काम मत करो। किसी के मार्ग में अवरोध पैदा करना, किसी की निन्दा, बुराई कर अपनी नैतिकता खो देना मुझे स्वीकार नहीं।

हम झगड़ें भी तो किससे, भगवान महावीर के हम बेटे-बेटी हैं इस नाते हम भाई-भाई हैं, भाई बहिन हैं। छोटे-मोटे मतभेदों से भाई-भाई के घर अलग होते हैं किन्तु मतभेदों को लेकर निरंतर झगड़ते रहना कोई बुद्धिमानी नहीं। कोई भी अपना सिद्धान्त गलत मानकर छोड़ने को तैयार नहीं होगा। सभी की दृष्टि में अपना सिद्धान्त सही है। हमारी इतनी शक्ति भी नहीं कि हम अपनी बात मनवा सकें। फिर समाज में व्यर्थ वितंडावाद खड़ा कर थूक उछालना मुझे तो पसंद नहीं।

जिस दिन हम सभी सम्प्रदाय वाले नेक बनकर एक होने की आवाज बुलंद करेंगे उस दिन ये मतभेदों की दीवारें धरा-धसक होकर दम तोड़ देंगी और महावीर के शासन का विशाल आंगन दिवारों से मुक्त होकर पुनः विशाल बन जाएगा। व्यर्थ वितंडावाद में उतरकर समाज में सिरफुडौवल कराना मेरे विचारों से ठीक नहीं। आप रोटी-बेटी के प्रसंग पर एक रहने वाले धर्म के नाम पर हमें अगुवा बनाकर परस्पर फूट परस्ती का मजा लूटने में बड़े उस्ताद हैं। इस फन में आप हमारे भी कान काटते हैं। किन्तु यह चालाकी आपके उत्थान में बाधक

है और इसीलिए आपकी प्रगति रुकी है। आप से मेरी तो यही करबद्ध प्रार्थना है कि आप अपनी इस बनिया बुद्धि का उपयोग धर्म के नाम पर त्याग दें। शान्ति से भाई-भाई-सा व्यवहार करें। समाज में एक बनकर रहते हैं तो धर्म में भेद क्यों? जहाँ एक होना आवश्यक है वहाँ दो क्यों? एक दूसरे की नुक्ता चीनी छोड़ दीजिए। अपनी-अपनी भूल सुधारने में अपनी शक्ति का उपयोग करते रहिए।

मैं तो जा रही हूं। आई तभी से आप को यही सदेश देती रही हूं कि सम्प्रदायवाद से मुक्त बनिए। भले अपनी सम्प्रदाय को सुरक्षित रखें। सम्प्रदाएँ मिटाने में तो अभी बहुत अधिक समय लगेगा। कई युगप्रधान आचार्यों का श्रमदान इन सम्प्रदायों को मिटाकर मिलाने में लगेगा तभी यह काम सम्पन्न होगा। अतः सम्प्रदायवाद को त्यागकर परस्पर शान्ति से रहिए हिलमिल कर रहिए। एक दूसरे का दाहिना हाथ बनकर रहिए। एक दूसरे के काम आइए, काम में हाथ बटाइए। मेरा तो आपसे यही कहना है कि झगड़ा त्याग कर एकता से रहिए।

मैं तो शान्ति से आई थी, शान्ति से रही, और शान्ति ही के साथ सभी सम्प्रदाय वालों का प्रेम लेकर जा रही हूँ। आप भी शान्ति से रहना मतभेदों से ऊपर उठकर संघ का संगठन तोड़कर अशान्ति पैदा मत करना। अब आप मानो या न मानो आप की इच्छा। मुझे तो जाना है रुकना नहीं।

आप श्री ने चैत्र शुक्ला छठ का दिन अपने प्रस्थान का निश्चित किया। संघने प्रतिपदा के दिन साधारण भवन में विदाई समारोह रखा। विदाई समारोह सही में विदाई समारोह ही था। सभी के चेहरों पर मायूसी थी। आँखों में जल था। बोलने में कंठ अवरुद्ध था। कई वक्ताओं ने बोलने का प्रयास किया किन्तु मन की बात कहने से पहले ही आँखें बरसने लगी। सभा में भारी आश्चर्य व्याप्त था कि बड़े-बड़े आचार्यों के विहार पर भी जिनकी आँखें गीली नहीं हुई उन ट्रस्टियों की आँखें भी आज बरस रही हैं।

यह आपका अद्भुत प्रभाव था। यों तो मद्रास का संघ संस्कारी है ही पर आप के पधारने से और भी अच्छा संगठन रहा।

पार्श्वनाथ महिला मण्डल। चन्द्रप्रभु महिला मण्डल, दत्त-सूरि मण्डल आदि ने विदाई गीत गाकर सब को रुला दिया। कितने ही जन तो रोना रोक नहीं पाए और शर्म के मारे सभा से बाहर चले गए।

मद्रास की आज भी प्रार्थना है कि आप एक बेर और पधारें।

बंगलोर में

चैत्र सुदी द्वितिया के दिन प्रातःकाल आप श्री ने मद्रास से प्रस्थान किया मद्रास का संघ अश्रुभीने नयनों से आप के

गमन करते चरणों को निहारता हुवा पीछे-पीछे सागर की भाँति चल रहा था। सभी के हृदय भारी एवं वाणी मौन थी। शोक का गहन संताप सभी के चेहरों पर छाया था। आँखें आप के वियोग की वेदना मे सूनी सूनी लगरही थी। आप सभी को उपदेश देती-देती यथा समय दादावाडी पधारी वहाँ पूजा एवं स्वामी वात्सल्य का आयोजन था। दादावाडी मे संघ आपके साथ रहा। पश्चात आप श्री विहार कर चगमपेठ पधारी।

चंगमपेठ मे भगवान महावीर जयन्ती का भव्य कार्य-क्रम रखा गया था। लोगों की अपार भीड मे आप श्री ने भगवान महावीर को श्रद्धाजली भेंट की व सभी को भगवान महावीर के पावन पवित्र विश्व मैत्री के संदेश पर अपने जीवन की इमारत सुरक्षित बनाने का उपदेश दिया। जनता आपके प्रवचन से बडी ही प्रभावित हुई कइयों ने शाकाहारी होने का नियम लिया। चत्रीपूर्णिमा पश्चात आपका विहार का इरादा था किन्तु आप श्री को स्वास व खासी ने आ दबाया और आपको अधिक रुकना पडा। यहाँ टिण्डिवनम् जाने का विचार स्थगित कर आप श्री आरकाट, वेलूर आदि स्थानों मे भ्रमण करती हुई कोलार गोल्ड फील्ड (के० जी० एफ०) पधारी।

उधर मद्रास से मातु श्री विज्ञान श्री जी म० सा० आदि ८ साध्वी जी पूनमली, काजीवरम् होती हुई आरकाट मे आपके सामिल हुई।

चंगमपेट से तीन साध्वीजी को टिण्डिवनम् भेजा, ये तीनों पनरोटी कडलूर, पाण्डीचेरी आदि स्थानों का भ्रमण करती हुई वंगलोर पधारीं।

के० जी० एफ में आपश्री का शानदार स्वागत हुआ और चतुर्मास की प्रार्थना की गई, अभी चतुर्मास में देर थी व वंगलोर संघ का वंगलोर दर्शनार्थ पधारने का आग्रह भी था। आपकी हार्दिक भावना तो कुलपाक में निवृत्तिपूर्ण चतुर्मास व्यतीत करने की थी, किन्तु स्पर्शना जहाँ की होती है वहाँ ही रुकना पड़ता है। के० जी० एफ वालों की प्रार्थना-प्रार्थना के रूप में ही रखकर आप श्री वंगलोर पधारीं। वंगलोर में आपश्री गांधीनगर उपाश्रय में ठहरी वहाँ आपका प्रवचन हुआ और चतुर्मास के आग्रह ने जोर पकड़ा। उस वर्ष वंगलोर में आचार्य विजय जयन्त सूरि एवं विजय विक्रम सूरि का चतुर्मास लगभग निश्चित था। अतः आपके चतुर्मास की गुन्जायश ही न थी। क्योंकि किसी भी गच्छ के आचार्य के रहते आपश्री व्याख्यान दें और उनको कुछ अटपटा लगे ऐसा कार्य आप वनतेकोशिश नहीं करती। साथ में चतुर्मास करने से व्याख्यान दोनों ही स्थानों पर चलता और संघ विभाजित होकर व्याख्यान श्रवण करे इस में आचार्य श्री की अविनय होने का आभास आप श्री को हुआ, आप ने इसे किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं किया।

मानव की सभी योजनाओं को पलट देने की ताक़त भावी रखती है। मद्रास में इसी वर्ष तेरापंथी आचार्य तुलसी एवं

स्थानकवासी मुनिराज केवल मुनिजी का चतुर्मास निश्चित हो चुका था। मद्रासवाले आप को रोकना चाहते थे पर आप रुकी नहीं। उन्हें अपना उपाश्रय खाली रखना इष्ट नहीं था। मद्रास की नजर भाग्यशाली बंगलोर की तरफ घूमी जहाँ इस समय दो विभूतियाँ विराजमान थी एक थीं आप, दूसरे थे आचार्य विजय जयत सूरि एव विजय विक्रम सूरि जी। आप के पधारने का प्रश्न तो आपने मद्रास से चलते ही हल कर दिया था। विजय जयत सूरि जी पर दबाव आया और उन्होंने स्वीकार कर बंगलोर से प्रस्थान कर दिया।

अब बंगलोर ने आप श्री को पकड़ा क्योंकि अब कोई रुका-वट का प्रश्न शेप नहीं था। के० जी० एफ और बगलोर के बीच खींचतान चली अंत मे के० जी० एफ वाले इसी शर्त पर मान गए कि अच्छे व्याख्याता कुछ साध्वीजी हमे भी दिए जाएँ। आप श्री बगलोर पधारी थीं तभी उनके मन मे पुन लौट आने मे शका ही थी। ऊपर से आचार्य श्री का मद्रास पधार जाना तो उनकी आशा लता पर तुषारापात ही था।

आप श्री बगलोर, एव आप श्री की तपस्विनी शिष्या अवि-चल श्री जी सुयोग्य वक्तृतिलक श्री जी मधुर वक्ता चन्द्रप्रभा श्री जी एव नवीन ज्योति प्रभा श्री जी, का चतुर्मास कोलार, गोल्ड फिल्ड में निश्चित रहा।

आषाढ शुक्ला एकादशी के दिन युगप्रधान आचार्य दादा श्री जिनदत्त सूरिश्वर जी की स्वर्ग जयंती के पुण्य अवसर पर आप

श्री ने चिकपेठ उपाश्रय में प्रवेश कर जयंती का तीन दिन का भव्य कार्य-क्रम पूरा कराया।

तत्पश्चात श्रावण मास में वर्षा की झड़ियों के साथ-साथ तपस्या की झड़ियाँ शुरू हुइ। साध्वी जी श्री सुरञ्जना श्री जी म० ने १५ उपवास, मंजुला श्री जी म० ने १० उपवास, वैरागण मुन्नाबाई ने मासक्षमण, अन्य दो वहिनों के १५ उपवास, नौ उपवास अठाई, तेलो का तो पूछना ही क्या था। नवरङ्गी, पञ्चरङ्गी आदि कई तपस्याएँ हुई।

कलकत्ता, बम्बई, बड़ोदा, मंदसोर, हैदराबाद, जयपुर, देहली आदि कई नगरों से यात्रीगण आए। निकटवर्ती मद्रास, मैसूर, नीलगिरी, ऊटी आदि से तो आगन्तुओं का तांता ही लगा रहता। सारा दिन धर्मचर्चा, उपदेशों से उपाश्रय गूँजता रहता। तपस्या के उपलक्ष में अठाई महोत्सव, जुलूस निकाला गया।

बंगलोर में तपगच्छ का जोर है किन्तु पूरे चतुर्मास में गच्छ की भावना हमारे देखने में नहीं आई सभी भगवान महावीर के बनकर काम में जुटे रहते थे।

आपके प्रवचनमें उपाश्रय भरा रहता। समय से पहले ही लोग अपना स्थान रोक कर आपके आगमन की प्रतीक्षा में बैठे रहते थे। प्रवचन में अक्सर लोगों की आँखों में भावना का प्रवाह बहने लगता।

यों भी जनता धार्मिक संस्कारवाली है। वहां धार्मिक

अभ्यास की सवेरे, शाम, दोपहर अलग व्यवस्था भी है। लगभग सभी धार्मिक अध्ययन करते हैं। व्यर्थ की वार्तों में हमारी महिलाओं की भी कम ही रुचि देखने में आई। छोटी छोटी बच्चियाँ भी व्यवहारिक शिक्षण के साथ धार्मिक शिक्षण भी प्रगति के साथ करती है।

श्रावण गया, भादों आया पर्वाराधन शुरू हुआ। प्रथम दिन ही उपाश्रय छोटा हो गया। लोग निराश लौटने लगे। दूसरे दिन नेमिनाथजी के हाल में, मूल मन्दिरजीके नीचे हाल में, सामने चौकमें माइक की व्यवस्था कर स्थनाभाव की पूर्ति की गई। आठों ही दिन आपश्री ने प्रवचन दिया जिसकी टेप रेकार्ड ली गई। इतनी भारी जनसख्या होने पर भी शान्ति अपूर्व थी। सभी शान्त बैठे रहते।

पर्वों के समय में बोली जानेवाली सभी बोलियाँ बहुत तेज गई लगभग डेढ़-दो लाख रुपए की आमदनी हुई होगी।

साथ-साथ धार्मिक पाठशाला बढ़ाने का चन्दा था। स्वर्ण-सेवा-फंड, एवं सैलाना-छात्रावास का चन्दा था बाहर से आने-वाले चन्दे भी थे। सबसे भारी चन्दा था आपके उपदेश से बननेवाले आदिनाथ जैन छात्रावास का चन्दा, छात्रावास के लिए ट्रस्टी महोदय ने ६४ कमरों का नक्सा संघ के सामने रखा, जब कि संघ ने ६४ कमरे कम बनाकर ८०० कमरों का प्रस्ताव पास किया और खुले हाथों धन बरसाया यह था आपके प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण। एक एक व्यक्ति ने लाख-पच्चास हजार की

रकम वहाँ ही लिखा दी। सारांशतः जो भी काम सामने आया समाज ने चौगुने उत्साह से उसे सिर-आँखों पर उठाया।

छोटे छोटे गाँवों से मन्दिरों के जिर्णोद्धार हित काफी चन्दे आए, सन्तुष्ट होकर गए।

कालेज में भी आप का प्रवचन रखा गया था जिसकी भारी प्रशंसा जैन अजैन सभी ने की।

स्थानक वासी सम्प्रदाय में मुनिराज विजय मुनिजी की अध्यक्षता में एक वहन ने ६१ उपवास की तपस्या की थी। उस महान तपस्विनी वहिन की अनुमोदना, अभिनन्दन एवं जैन समाज में होनेवाले महान तप की प्राभावना हित एक वड़े भारी स्वागत पण्डाल में समारोह का आयोजन किया जिसमें प्रधान अतिथि थे महाराष्ट्र के प्रधान मन्त्री महोदय। स्थानकवासी संघ ने व पुज्य विजय मुनि म० ने आपको आमन्त्रित किया। यथा समय आप श्री ने पधार कर तपस्या की अनुमोदना के साथ-साथ वर्तमान राजनीति पर वड़े ही सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला और भारत में प्रतिदिन वढ़नेवाली हिंसा पर रोक लगाने के लिये मन्त्री महोदय को सुन्दर प्रभावशाली ढङ्ग से प्रेरित किया आप के इस प्रवचन से उपस्थित जनता वड़ी ही प्रभावित हुई, माइक पर गूँजती आपकी वाणी जनता के मन्त्री महोदय के हृदय में सीधी उतर रही थी। तालियों की गड़गड़ाहट से जनता अपना हर्ष व्यक्त करती हुई आपके वचनों का समर्थन कर रही थी।

तपस्वी वहिन की शान्ति धैर्य एव तप निष्ठा प्रशमनीय थी।

तपस्या के निमित्त जुलूस मे भी वँगलोर का श्री संघ सामिल था।

आश्विन वदी दूज को मणिधारी दादाजी की जयन्ती वडे ठाठ से मनाई गई दादावाडी मे लगभग ६०० व्यक्ति पूजा व स्वामी वात्सल्य मे थे।

नवपद आराधना कर भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव दीवाली सानन्द सम्पन्न किया।

यहाँ पर आपकी शिष्या श्री मनोहर श्री जी ने, मणिप्रभा जी ने एवं भक्ति प्रभा श्री जी ने साहित्यरत्न द्वितीय श्री खण्ड की परीक्षा सफलतापूर्वक दी।

अव आपकी विदाई का समय नजदीक आ रहा था। सभी का हृदय वेदना अनुभव करने लगा। परन्तु सयोग वियोग तो स्वभाविक ही है

वँगलोर सघ की भक्ति, वहाँ की व्यवस्था सराहनीय थी।

लगभग आपकी सभी शिष्याएं अव शासन-सेवा योग्य वन गई हैं—वन रही है। कोई भी शिष्या नहीं जिसे अलग चतुर्मास कराने मे दिक्कत हो। लगभग सभी सुन्दर प्रवचन कार, व्यवहार कुशल, चरित्र निष्ट हैं। वगलोर मे भी सर्वप्रथम आप स्वय प्रवचन न देकर अपनी किसी न किसी शिष्या को ही भेजती रहती जैसा कि प्राय सर्वत्र ही आप करती है। इससे सभी को वोलने का अभ्यास, साहस एव वर्तन की शिक्षा मिलती रहती है। यहाँ इस कार्यपद्धति की भारी प्रशसा होती। जिनका भी

प्रवचन होता एक-एक से सुन्दर। लोग इस नजारे को देख दाँतों-तले अंगुली दबाते, कहते साधु भी आये, साध्वी जी भी पधारे, बड़े-बड़े आचार्य महाराजों के पधारने का सौभाग्य भी पाया। पर सभी व्याख्यान दाता, एवं सुयोग्य हों, ऐसा तो हमने आपके ही शासन में पाया। सभी व्याख्यान दें और एक एक से अधिक यह आपकी शिष्याओं को तैयार करने की कला का ही परि-चायक है। बंगलोर में इस बात की भारी प्रशंसा होती। वास्तव में बात भी प्रशंसा योग्य थी। प्रायः सभी सुयोग्य कम ही स्थानों पर पाए जाते हैं।

आपकी छत्रछाया में स्वर्णमण्डल वास्तव में स्वर्ण समान दे दीप्यमान बनता जा रहा है। जिस प्रकार स्वर्ण का नाम सुनते ही संसारी प्राणी के मुंह में पानी भर आता है। स्वर्ण के दर्शन कर नयन तृप्त हो जाते हैं। और पाने के पश्चात् तन मन प्रफुल्लित हो जाते हैं, ठीक यही बात आपके मण्डल की है जो नाम अपनी गुरुवर्य्या जी स्वर्ण श्री जी के नाम पर चलाया है उसे स्वर्ण बनाने में भी आप सफल रही है। सोने में सुगन्ध यह आप श्री के स्वर्णमण्डल की सर्वोपरि विशेषता है। सभी विद्वान विनयशील, चरित्रनिष्ठ, मधुर व्यवहारवाली होकर उपदेश कुशल भी हैं।

अगहन मास में मौन एकादशी की अराधना पश्चात आप श्री ने प्रस्थान का प्रस्ताव रखा। बंगलोर संघ की इच्छा अभी और रोकने की थी। आप श्री ने आगे का कार्यक्रम बता कर

सबको मौन रहने पर विवश कर दिया। आपके प्रस्थान का दिन निश्चित हुआ। बगलोर संघ ने विदाई समारोह रखा। प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री लक्ष्मीचन्द जी ने कहा —

साध्वी जी म० पधार रही हैं, इससे हमारा मन बडा ही दुखी है। किन्तु मुनि जीवन तो चलने वाला जीवन ठहरा। हम चाहते थे आप और रुकें, पर आप नहीं ठहरीं।

आप के चतुर्मास मे शासन प्रभावना के अनेक काम हुए। जो अमृत प्रवचन सुने वैसे हमने पहले कभी नहीं सुने। और अनेक कार्यों के लिए हमे प्रेरित भी किया। आप तो पुण्यात्मा है, प्रभावशालिनी हैं। आप तो जहाँ भी पधारेंगी वहाँ ही भक्त मिलते रहेंगे पर हमे तो ऐसा लाभ न जाने कब मिलेगा। आपके कहे अनुसार जैन-जन-गणना का कार्य चालू हो गया है। वोर्डिङ्ग की जमींन जयनगर मे तैयार है, इमारत का कार्य इस वर्ष चालू हो जायगा ऐसा हम विश्वास रखते है, क्योंकि हमारा सघ हमारे किसी भी कार्य को अधूरा रहने देने वाला नहीं है।

हमारे महान् पुण्य का उदय था जो आप जैसे सत का समागम हमे अचानक ही मिल गया—मानो घर बैठे गंगा आई। शास्त्र मर्यादा एव मुनिचर्या के अनुसार आप अब ठहर नहीं सकेगी और हमे विवश अनुमति देनी ही होगी। आप कहीं भी पधारें पर बंगलोर सघ को नहीं भूले ऐसी मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है।

केवल चन्द जी ने कहा आपके प्रवचन में इतना प्रभाव इसीलिए है कि आप में विद्वत्ता के साथ-साथ सरलता भी उतनी ही मात्रा में है।

श्री पुखराजी एवं सुकनराजजी ने विदाई का गहन दुख संगीत द्वारा प्रगट कर सभी को रुला दिया।

श्री राजमलजी ने कहा "यों तो वर्षों से हम सुनते आ रहे थे कि साध्वी जी विचक्षण श्री जी म० का प्रवचन बड़ा ही हृदय-स्पर्शी होता है, अब जब प्रत्यक्ष प्रवचन सुने तो और भी अनेकों विशेषताएँ पाई। सम्प्रदायवाद व कदाग्रह से तो आपके मन वचन काया सर्वथा मुक्त है पूरे पांच मास में आपने किसी भी धर्म सम्प्रदाय किंवा शाखा के प्रति सहज में भी कटाक्ष नहीं किया, यह आपकी कितनी बड़ी महानता का परिचायक है। बंगलोर के लिए दिया गया आपका सङ्गठन आदेश सदैव याद रहेगा। विद्वत्ता के साथ सरलता का होना सोने में सुगन्ध जैसा मेल है। और इसीलिए संघ का इतना आग्रह है कि आप कुछ दिन और रुकें।

इस प्रकार सभी ने अपने २ हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। अन्त में आप श्री ने फरमाया :—

बंगलोर संघ का सङ्गठन, कार्य करने की क्षमता, धार्मिक प्रेम वास्तव में अनुकरणीय एवं सराहनीय है। यहाँ की व्यवस्था देखकर मन में ऐसा आता है कि काश ! सर्वत्र ऐसे ही सुयोग्य कार्यकर्त्ता जैन समाज को मिल पाते। चतुर्मास में मुझसे जैसा

बना आपको उपदेश दिया। अब अन्य स्थानों में विचरण करने की सघ अनुमति प्रदान करें।

छात्रावास का कार्य अवश्य पूरा करना उस पर सभी ने एक साथ कहा, "यह कार्य हम अवश्य पूरा करेंगे।

बगलोर सघ की भक्ति भावना, स्नेह व प्रेम सिक्त हृदय को देखकर मेरा भी हृदय प्रसन्नता अनुभव करता है। आपने मुझे अपनाया अपना अमूल्य समय देकर मेरी बात सुनी, मानी, यह सब आपकी महानता का द्योतक है।

हम सबको एक ही सिद्धान्त बनाकर चलना है "जो महावीर का प्यारा वह हमारा प्यारा" महावीर का प्यारा यानी जिसे महावीर प्यारा हो।

गच्छ सम्प्रदायों का सम्बन्ध आचार्यों के साथ है जब कि जिन शासन का सम्बन्ध भगवान महावीर से है।

दि० ६-१२-६८ सोमवार को प्रात ६ बजे आपने बगलोर से प्रस्थान किया-बगलोर की जनता आपके पीछे सागर-सी उमडी आ रही थी, सभी के नयन बरस रहे थे। सभी के हृदय विरस थे। आपने मगल प्रवचन सुनाया और आगे बढ़ गईं।

तीनों साध्वीजी की साहित्यरत्न द्वितीय-खण्ड की परीक्षा का समय नजदीक होने से चार साध्वी जी को बगलोर में परीक्षार्थ रखकर आप श्री आसपास के गावों में विचरण कर, पश्चात् मैसूर, नीलगिरी, ऊटी, एव श्रमण बेलगोला होती हुई हैद्राबाद में

मन्दिर की प्रतिष्ठा एवं कई दीक्षार्थिनी बहनों की दीक्षा एवं अंगूरी बाई का उद्यापन वैशाख तक निपटा कर आगे बढ़ने का विचार रखती है। बाकी तो समय पर जैसा बन जाए वही सही मुनि के लिए तो वर्तमान में जैसा संयोग बन जाए वही कर लेने का है। हम कलकत्तेवाले भी आपके आगमन की आशा लगाए बैठे हैं। उधर मणिधारी दादा जिनचन्द सूरीश्वर जी का अष्टम शताब्दि महोत्सव बनाने को वर्षों से उत्सुक देहली संघ आपको पुकार रहा है। रायपुर, नागपुर, चान्दा तो निकटवालों में है ही। देखें भावी कब किसे यह सुयोग प्रदान करती है। दक्षिण रोकने पर आमाद है ही।

मैंने इस पुस्तक को अमरावती चतुर्मास तक ही रखकर बन्द कर दिया था। किन्तु इसकी छपाई में प्रेसवालों ने तीन साल का समय जिल्दसाज से झगड़ा हो जाने से निकाल दिया। बंगलोर वालों का भी आग्रह था व मेरा भी विचार था कि जब रुक ही गए हैं तो ये तीन चतुर्मास बाकी क्यों रखे जाएँ। इतने में मान्या मणिप्रभा श्री जी म० का आदेश आया कि दक्षिण भ्रमण के नाम से इन तीनों चतुर्मासों को और मिलायें।

अतः इन तीनों चतुर्मासों का विवरण छपा कर इस प्रथम खण्ड को शेष किया गया है। आगे द्वितीय-खण्ड इससे भी बड़ा लिखने का सौभाग्य मिले यही कामना है।

परिशिष्ट

चरित्र निर्माण संघ

नियमावली

१ प्रतिदिन कम से कम मिनिट प्रभुस्मरण प्रार्थना अवश्य करूँगा।

२ प्रतिदिन कम से कम मिनिट का सामयिक स्वाध्याय अवश्य करूँगा।

३ प्रतिदिन किसी भी रूप से देव (परमात्मा) दर्शन पूजन एव गुरु वदन यथाशक्य अवश्य करूँगा।

४ प्रतिदिन माता पिता सास स्वसुर एव पूज्यजनों को अवश्य प्रणाम करूँगा।

५ प्रतिदिन नवकारसी (सूर्योदय के ४८ मिनिट पश्चात) तीन नवकार गिनकर अन्न-जल ग्रहण करूँगा। नवकारसी न होने पर भी तीन नवकार जप कर ही अन्न जल ग्रहण करूँगा।

६ चलने फिरने वाले निरपराध त्रस जीवों की इरादे पूर्वक हिंसा नहीं करूँगा।

७ आत्महत्या के किसी भी मार्ग को नही अपनाऊँगा।

८ हिंसा (जीव हनन) को प्रोत्साहन देने वाली किसी भी संस्था का न तो सदस्य बनूगा और न उसका समर्थन करूँगा।

९ प्राणीमात्र के साथ मैत्रीभाव रखूगा। लडाई झगडा होने पर भी

किसी के प्रति प्रतिशोध एवं वैर विरोध की भावना को मन में स्थान नहीं दूंगा न किसी प्रकार का व्यवहार वन्द करूँगा।

१० मांस, मत्स्य और अण्डों का सेवन नहीं करूँगा।

११ मदिरापान नहीं करूंगा। भांग, तमाखू, गांजा, बीड़ी, सिगरेट नहीं पिऊँगा।

१२ मांस, मत्स्य, अण्डों और मदिरा का व्यापार नहीं करूँगा।

१३ कीड़ों से निर्मित रेशम का उपयोग नहीं करूँगा।

१४ क्रूरता पूर्वक किये गये पशुवध से प्राप्त चर्म से निर्मित वस्तुओं का उपयोग नहीं करूँगा।

१५ झूठी गवाही न दूंगा न होली आदि किसी भी प्रसंग पर अश्लील व गंदी गालियें दूंगा।

१६ झूठे दस्तावेज, पत्र, वही खाते आदि नहीं बनाऊंगा एवं जाली हस्ताक्षर नहीं बनाऊँगा।

१७ जान बूझकर किसीको भी अनुचित अथवा गलत सलाह नहीं दूंगा।

१८ धरोहर अथवा बंधक के रूप में रखी गई वस्तुओं के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का धोखा नहीं करूँगा।

१९ लोभवश चोरी की वस्तुओं को (ज्ञात हो जाने पर) क्रय (खरीद) नहीं करूँगा।

२० खोटे तोल-माप नहीं रखूंगा।

२१ किसी को चोरी करने में सहायता नहीं करूँगा।

२२ नकली चीज को असली वताकर किसी को धोखा नहीं दूंगा।

२३ न तो रिश्वत लूंगा और न दूंगा ही।

२४ किसी भी सस्था का ट्रस्टी या अधिकारी रहकर उस सस्था के धन का अपहरण या दुरुपयोग नही करूँगा।

२५ महीने मे   दिन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।

२६ आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूँगा।

२७ वेश्या, कुमारी अथवा परस्त्री गमन नही करूँगा एव कुचेष्टाए नही करूँगा।

२८ पर पुरुष से गमन नही करूँगी।

२९ पचास वर्ष की उम्र के बाद पुन' विवाह नही करूँगा।

३० एक पत्नी के होते हुए दूसरा विवाह नही करूँगा।

३१ चल अथवा अचल सभी प्रकार की सम्पत्ति   से अधिक नही रखूँगा।

३२ जुआ नही खेलूँगा।

३३ सामूहिक भोजों मे जूठन नही छोड़ूँगा।

३४ मृत्युभोज न करूँगा और न उसमे सम्मिलित होऊँगा।

३५ स्वजनों के मरणोपरान्त   दिन से अधिक शोक नही रखूँगा।

३६ अपनी आय मे से   प्रतिशत शुभ कार्य मे व्यय करूँगा।

३७ महीने मे   से अधिक सिनेमा–नाटक नही देखूँगा।

३८ महीने मे   दिन, रात्रि भोजन नही करूँगा। (दवा दूध जल पिया जा सकता है)

३९ महीने मे   दिन, रात्रि मे आहार और जल दोनों का सेवन नही करूँगा।

४० प्रतिमास में..........दिन, आत्म साधन में व्यतीत करूँगा। इन दिनों में :—

(क) किसी भी प्राणी का अहित या अनिष्ठ न सोचूंगा न करूंगा।

(ख) सामायिक, स्वाध्याय विशेप रूप से करूँगा। आवश्यक कार्य सिवाय व्यापार व पत्र व्यवहार नहीं करूँगा।

(ग) उपवास आयंबिल या एकासना करूँगा व ब्रह्मचारी रहूँगा।

(घ) यथाशक्ति मौन रक्खूँगा गाली एवं झूठ नहीं बोलूंगा न चोरी करूँगा।

४१ प्रति वर्ष एक दिन आत्मनिरीक्षण पर्व मनाऊँगा। उस दिन—

(क) छत्तीस घंटे का निर्जल/सजल उपवास रखूँगा/एकासणा करूँगा।

(ख) ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करूँगा।

(ग) झूठ नहीं बोलूँगा न किसी प्रकार का व्यापार ही करूंगा।

(घ) आचरित अपराधों को स्मरण कर पश्चातापपूर्वक क्षमा-याचना करूँगा।

(ङ) इस दिन का अधिकांश समय आत्म निरीक्षण, प्रभु प्रार्थना जप आदि में व्यतीत करूँगा।

नोट—यह प्रतिज्ञापत्र हस्ताक्षर करके प्रकाशक को भेज देवें, वहाँ से आपको वापिस भेज देंगे।

प्रकाशक :—

श्री जिनदत्त सूरि सेवा संघ

३८, मारवाड़ी बाजार, बम्बई नं० २

अखिल भारतीय श्री सुवर्ण सेवा फंड

प्रिय बधुओं !

आज का युग जिन परिस्थितिओं मे गुजर रहा है वह आपसे छिपा नही है । समाज के अनेक होनहार बालक अर्थाभाव के कारण विशेप शिक्षा प्राप्त नही कर सक्ते, उनको शिक्षा के लिए उचित सहयोग करना व असहायों की सेवा करके उनकी आत्मा को शान्ति पहुँचाना, और धार्मिक तथा नैतिक साहित्य का प्रकाशन करके सस्ते मूल्य पर विनरण करना आज परम आवश्यकीय है । इसी पुनीत भावना से "श्री सुवर्ण सेवा फट" की योजना आपके समक्ष प्रस्तुत की जा रही है ।

हम देखते है कि आज पारसी, ईसाई व सिख समाज आदि अपने जाति और धर्म के अभ्युत्थान के लिए कितने प्रेम व आत्मीय भाव से सेवाफड कायम करके सेवाकार्य कर रहे हैं । अपने समाज मे इस प्रकार के सेवा फड की बहुत वडी कमी थी, आज उसी कमी को दूर करने के लिए यह प्रयत्न किया जा रहा है यह जानकर आप सवको हार्दिक प्रसन्नता होगी और हम विश्वास करते हैं कि खुले हाथों से दान देकर यश एव सुकृत भण्डार भरने मे आप पीछे नहीं रहेंगे ।

समाज के बच्चे आपके बच्चे हैं, समाज की वहनें आपकी वहनें हैं, आज हिन्दी भाषी समाज मे इस प्रकार की कोई भी सस्था नहीं है जहाँ वहनों को हिन्दी व धार्मिक शिक्षण के साथ उद्योग आदि सिखा कर उन्हें स्वावलम्बी वनायें । सुवर्ण सेवा फड ने ऐसी सस्था का विचार किया है । आप के वहा से कोई वहन सस्था मे अध्ययन

करना चाहे तो उसका नाम लिखे। आप भी उन्हें प्रेरणा करें, ५ वर्ष में वे धर्म क्षेत्र की सुयोग्य अध्यापिकाएं वन सकेगी, इस माध्यम से स्थान स्थान पर धार्मिक शालाएं खुल सकेगी। जहां उन्हें अवश्य पढ़ने को भेजें।

आज हमारे सामने जैन रत्न भामाशाह, जगडुशाह, मंत्री पेथडशाह और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का महान आदर्श है जिन्होंने सेवा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। आप भी उन्हीं नररत्नों के उत्तराधिकारी है, "आपका कर्तव्य है कि सर्वस्व नहीं तो अपनी सम्पत्ति का कुछ अंश समाज व संस्कृति के लिए अर्पण करें।"

—शासन प्रभाविका आर्यारत्न श्री विचक्षणश्री जी महाराज के दिनांक १–८–६५ को अभिनंदन समारोह के अवसर पर दिये गये भाषण से :—

'श्री सुवर्ण सेवा फंड' में अनेक उदार वन्धुओ द्वारा सहायता की गई है। इसके द्वारा समाज साहित्य और संस्कृति के प्रत्येक अंग के अभ्युत्थान के लिए प्रयत्न किया जाएगा। सेवा के इस अभियान में आपका सहयोग नितान्त आवश्यक है इसे अपना ही मानकर निम्न तरीकों से सहायता कर व सदस्य बनकर के सुदृढ बनाएं।

(१) अपने निजी तथा सम्वन्धित व्यवसाय केन्द्रों में समाज के व्यक्ति को स्थान देकर समाज की वेकारी मिटावें।

(२) अपने व्यापार में चैरिटी रखकर एक चौथाई लाभ उसमें निकाले, यदि इतना नहीं कर सके तो दो आना या एक आना ही समाज सेवा में अर्पण करें। इस विभाग के माध्यम से

आप वह चेक तैयार कर सकेंगे जो यहाँ से विदा होते समय जब कि सारा धन-माल यही घरा रहेगा, वह चेक आपके साथ चलेगा।

(३) आप जिस प्रकार अपना, पत्नी एव पुत्र-पुत्रियो का आर्थिक बँटवारा करते है, उसी प्रकार समाज को भी अपना एक पुत्र समझ कर उसको कुछ भाग देकर आप भी समाज के माता-पिता एव भ्राता बनें।

(४) आप अपने घर मे वचत योजना की तरह सेवा योजना के डिब्बे रखकर नित्य सिर्फ १० पैसे उसमे डालकर निन्य दान का लाभ उठावें।

हमे दृढ विश्वास है कि आप हमारी उपर्युक्त योजना मे सहयोगी बनकर सेवा के महान कार्य मे हाथ बटायेंगे।

विनीत :—
धनराज झुणोत
अध्यक्ष,
श्री सुवर्ण सेवा फड समिति

निवेदकगण :—

गमीरचन्द बोथरा, कलकत्ता	गुलाबचन्द गोलेछा, बम्बई
रतनचन्द सावनसुखा, मद्रास	लालचन्द वैराठी, जयपुर
रामलाल लूणीया, अजमेर	मन्नालाल ठाकुरीया, इदौर
चतुरभुज वाफना, इन्दौर	प्रतापमल सेठीया, बम्बई
जवाहरलाल मूणोत, अमरावती	फूलचन्द मूथा, अमरावती

सदस्यताओं के नियम

(१)	आजीवन संरक्षक सदस्य अथवा अधिक एक मुश्त देनेवाला	रु० ५०००
(२)	आजीवन सम्माननीय सदस्य अथवा अधिक एक मुश्त देनेवाला	रु० २०००
(३)	आजीवन सदस्य अथवा अधिक एक मुश्त देनेवाला	रु० १०००
(४)	सहायक सदस्य अथवा अधिक एक मुश्त देनेवाला	रु० ५०१
(५)	विशेष सदस्य प्रथम श्रेणी अथवा अधिक एक मुश्त देनेवाला	रु० २५१
(६)	विशेष सदस्य द्वितीय श्रेणी अथवा अधिक एक मुश्त देनेवाला	रु० १५१
(७)	साधारण सदस्य अथवा अधिक एक मुश्त देनेवाला	रु० १००

जानकारी एवं सहायता भेजने के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें :—

देवीचन्द बुच्चा
संयोजक,
अ० भा० श्री सुवर्ण सेवा फंड
प्रताप चौक, अमरावती

आजीवन संरक्षक सदस्य

श्री गुलाब सुन्दरी बाफना, कोटा
श्री धनराजजी मुणोत, अमरावती
श्री श्री संघ, हिंगनघाट
श्री चतुर्भुजजी बाफना, इन्दौर
श्री सौभाग्यमलजी लूनिया, जगदलपुर
श्री चांदमलजी वीरचन्दजी नाहटा, रायपुर
श्री अमरचन्दजी धर्मचन्दजी नाहर, जयपुर
श्री चन्द्रकान्ता बाई महाजन, इन्दौर
श्री इचरज बाई जतन बाई नाहटा, करजगाव
श्री छुटनलालजी वैराठी, जयपुर
श्री उमराव बाई भडगतिया, अजमेर
श्री श्री संघ, वणी
श्री जवाहरलालजी मुणोत, अमरावती

आजीवन सम्माननीय सदस्य

श्री मोना बाई वैराठी, जयपुर
श्री चेतना बाई सकलेचा, अमरावती
श्री चान्दाबाई कोठारी, बीकानेर

श्री लूणकरणजी घासीलालजी सजांथी, चान्दा
श्री रामलालजी लूनिया, अजमेर
श्री छोटमलजी देवीचन्दजी बुच्चा, अमरावती
श्री प्रतापमलजी सेठिया, मन्दसौर
श्री लक्ष्मीचन्दजी गोलेछा, धमतरी

आजीवन सदस्य

श्री स्वरुपचन्दजी वैद, अमरावती
श्री शान्तिलालजी पारख, बडौदा
श्री इन्दरचन्दजी लूणावत, अमरावती
श्री केशरीचन्दजी बोहरा, देहली
श्री यशवंती बहन जवेरी, इन्दौर
श्री पांची बाई, मालीवाड़ा
श्री शुभैराजजी नाहटा, बीकानेर
श्री बेलजी नरशी, अमरावती
श्री अणची बाई भंसाली, खेतिया
श्री गोदावरी बाई, अमरावती
श्री सुगनचन्दजी कोठारी, अमरावती
श्री लक्ष्मीचन्दजी गोलेछा, बागबारा
श्री कस्तुरचन्दजी रतनलालजी काटेड़, जावर
श्री लूणकरणजी दुलीचन्दजी, राजनांदगाव

सहायक सदस्य

श्री पूनमचन्द रायचन्द भाई मेहता, अमरावती
श्री ॐकारलालजी बाफना, अमरावती
श्री अनुपम श्री जी म० के सद उपदेश से अजमेर महिला सघ
श्री हस्तीमलजी पारख, अमरावती
श्री मागीलालजी विमलचन्दजी चौधरी, नागपुर
श्री चुन्नीलालजी पन्नालालजी फलोदिया, वरोए
श्री पारसमलज चोरड़िया, अमरावती
श्री हरिचन्दजी बडेर, जयपुर
श्री मेघराजजी हनुमतमलजी, महासमुदर
श्री देवीचन्दजी मारु, सिवनी
श्री अगूरी बाइ चौधरी, हैद्राबाद
श्री सूरज बाई कोचर, बालाघाट
श्री एक बहिन, नागपुर
श्री चन्दन बाई बाठिया, नागपुर
श्री रतिचन्दजी हस्तीमलजी
श्री रतिचन्दजी, बापूलालजी
श्री हस्तीमलजी ज्ञानचन्दजी, मदसौर
श्री भैरूलालजी लोढ़ा, नीमचकेन्ट
श्री रतनचन्दजी बदलिया, कलकत्ता

श्री मूलचन्दजी पूनमचन्दजी, नीमचकेन्ट
श्री गणेश बाई, अजमेर
श्री कालूरामजी बाफना, बालाघाट
श्री हस्तीमलजी पारख, राजीम
श्री सूरज बाई अजीतमलजी सुराना, बीकानेर
श्री राजी बाई कोचर, परतवाड़ा
श्री भंवर बाई रामपुरिया, खुजनेर
श्री राजमलजी संचेती, मन्दसौर
श्री सागरमलजी भंसाली, अमरावती
श्री हजारीमलजी समरथमलजी, अमरावती
श्री फूलचन्दजी भंवरलालजी मुथा, अमरावती
श्री मानक बाई बोथरा, कलकत्ता
श्री रतन बाई मेहता, आर्वी
श्री कालूरामजी माणकचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री बच्चुभाई चिमनलाल शाह, अहमदाबाद
श्री चान्दमलजी मूलचन्दजी चंगेडिया, बरोड
श्री लाडबाई नवलखा, मद्रास
श्री अमृतलाल देवराज कच्छी, मद्रास
श्री माणन्दजी झवेरभाई, मलकापुर